महावीर ग्रंथ अकादमी-पंचम पुष्प

आचार्य सोमकीर्ति एवं ब्रह्म यशोधर

[१६ वीं शताब्दि के पांच प्रतिनिधि कवियों—आचार्य सोमकीर्ति, सांगु, ब्रह्म गुणकीर्ति, भ. यशःकीर्ति एवं ब्रह्म यशोधर के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ में उनकी २७ कृतियों के मूल पाठों का संकलन]

लेखक एवं सम्पादक

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

एम. ए., पी-एच. डी., शास्त्री

प्रकाशक

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर

प्रथम सस्करण १९८२ भाद्रपद २५०९ प्रतियां १०००

प्रकाशक – श्री महावीर ग्रंथ अकादमी
८६७, अमृत कलश, बरकत कालोनी,
किसान मार्ग, टोंक रोड,
जयपुर – ३०२ ०१५.

मुद्रक – मनोज प्रिन्टर्स,
७६९, गोदीकों का रास्ता,
किशनपोल बाजार,
जयपुर – ३०२ ००३
फोन · ६७९६७

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी
एक परिचय

राजस्थानी एवं हिन्दी के विकास मे जैन कवियो का सर्वाधिक योगदान रहा है। उन्होने अपनी अनगिनत रचनाओ से इसके भण्डार को समृद्ध बनाया है और बिना नाम एव यशलिप्सा के वे अपनी सेवाये देते रहे हैं। राजस्थानी एव हिन्दी भाषा के विशाल साहित्य को देखना हो तो हमे राजस्थान, देहली, आगरा आदि के जैन ग्रथागारो मे सग्रहीत साहित्य को देख सकते हैं। लेखक को प० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ के सहयोग से राजस्थान के जब विभिन्न ग्रथागारों के हस्तलिखित ग्रंथो की सूची बनाने का अवसर मिला तो हिन्दी के विशाल कृतियो को देख कर हृदय गदगद हो गया और उनके रचयिताओ के प्रति सहज श्रद्धा उमड पडी। राजस्थान के जैन ग्र थागारो मे संग्रहीत ग्रथो के सूचीपत्र तो पाच भागो मे प्रकाशित हो गये लेकिन राजस्थानी एव हिन्दी भाषा मे निबद्ध साहित्य के प्रकाशन की कोई योजना नहीं बन सकी। यद्यपि राजस्थान के जैन सन्त एव महाकवि दौलतराम कासलीवाल-व्यक्तित्व एव कृतित्व इन दो कृतियो के प्रकाशन से जैन कवियो द्वारा निबद्ध हिन्दी साहित्य की विशालता की विद्वानो को अवश्य जानकारी मिली लेकिन पचासो ऐसी महत्त्वपूर्ण कृतिया प्रकाश मे आने से रह गयी जो हिन्दी साहित्य के लिये अनुपम कृतिया हैं। इसलिये एक ऐसी सस्था की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी जो योजनाबद्ध प्रकाशन कार्य कर सके।

सन् १९७७ के प्रारम्भ मे श्री महावीर ग्रथ अकादमी के नाम से जयपुर मे एक स्वतन्त्र सस्था की स्थापना की गयी जिसका प्रमुख उद्देश्य समस्त हिन्दी जैन साहित्य को पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत निम्न प्रकार २० भागो मे प्रकाशित करने की योजना बनायी गयी।

१. महाकवि ब्रह्म रायमल्ल एवं भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति	प्रकाशित
२. कविवर बूचराज एव उनके समकालीन कवि	,,
३. महाकवि ब्रह्म जिनदास-व्यक्तित्व एव कृतित्व	,,
४. भट्टारक रत्नकीर्ति एव कुमुदचन्द्र	,,
५. आचार्य सोमकीर्ति एवं ब्रह्म यशोधर	,,

६ बुलाकीचन्द, बुलाकीदास एव हेमराज
७. कविवर वीरचन्द एव महिचन्द
८ रूपचन्द जगजीवन एव ब्रह्म कपूरचन्द
९. विद्याभूषण, ज्ञानसागर एव जिनदास पाण्डे
१०. महाकवि भूधरदास
११ कविवर द्यानतराय
१२ प० भगवतीदास एव भाउ कवि
१३. जोधराज गोदीका एव उनके समकालीन कवि
१४. खुशालचन्द काला एव अजयराज पाटनी
१५. कविवर किशनसिंह नथमल बिलाला एव पाण्डे लालचन्द
१६. कविवर बुधजन एव उनके समकालीन कवि
१७. कविवर नेमिचन्द एव हर्षकीर्ति
१८. भैय्या भगवतीदास एव छत्तदास
१९. मनराम, मन्ना साह एव लोहट कवि
२०. २० वी शताब्दि के जैन कवि

हिन्दी जैन साहित्य तो इतना विशाल है कि पूरे साहित्य के लिये ५० भाग भी कम रहेगे लेकिन अकादमी की योजना को अभी २० भागो तक ही सीमित रखने का निर्णय लिया है ।

योजना का क्रियान्वय

उक्त योजना तैय्यार होने के पश्चात् उसके क्रियान्वय मे एक वर्ष निकल गया । योजना को समाज मे साहित्य प्रेमियो के पास अकादमी का सदस्य के रूप मे सहयोग प्राप्त करने के लिये भेजा गया । विद्वानो से योजना के सम्बन्ध मे विचार विमर्श किया गया । मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि समाज के सभी महानुभावो ने अकादमी की स्थापना का स्वागत किया और अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया । जिन महानुभावो का अकादमी की प्रकाशन योजना को प्रारम्भिक समर्थन मिला इनमे सर्व श्री स्व० श्री साहु शान्तिप्रसाद जी जैन, गुलाबचन्द जी गगवाल रेनवाल, अजितप्रसाद जी जैन ठेकेदार देहली, डा० दरबारीलाल जी कोठिया वाराणसी, प० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ जयपुर, डा० कोकिला सेठी, सेठ कन्हैयालाल जी मद्रास, कमलचन्द जी कासलीवाल जयपुर, कन्हैयालाल जी सेठी जयपुर, श्रीमती सुदर्शनदेवी जी छाबडा, सुशीला देवी जी बाकलीवाल के नाम विशेषत उल्लेखनीय

है। अकादमी का प्रथम पुष्प जून १९७८ में प्रकाशित होकर सामने आया तब तक अकादमी के १०० सदस्यो की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी थी।

"महाकवि ब्रह्म रायमल्ल एव भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति" नामक प्रथम भाग मे १६-१७ वी शताब्दि के प्रतिनिधि कवि ब्रह्म रायमल्ल ने राजस्थान के अधिकाश नगरो को अपनी साहित्यिक सुरभि मे सुरभित किया था। जुलाई १९७९ मे अकादमी के दूसरे भाग का एक भव्य समारोह मे विमोचन किया गया जिसमे १६ वी शताब्दि के बूचराज, छीहल, ठक्कुरसी, चतुरुमल एव गारवदास जैसे प्रतिनिधि कवियों का जीवन परिचय, मूल्याकन एव उनकी सभी कृतियो के मूल पाठो को सुसम्पादित करके प्रकाशित किया गया। अकादमी का तीसरा भाग "महाकवि ब्रह्म जिनदास-व्यक्तित्व एव कृतित्व" का मारवाड राजस्थान के पाचवा ग्राम मे पञ्चकल्याणक के अवसर पर पूज्य क्षुल्लकरत्न सिद्धसागर जी महाराज के करकमलों द्वारा विमोचन किया गया। इसके लेखक डा० प्रेमचन्द रावका हैं जो एक उदीयमान युवा विद्वान है।

अकादमी का चतुर्थ भाग गत वर्ष नवम्बर १९८१ मे बिहार के भागलपुर नगर मे इन्द्रध्वज विधान के अवसर पर क्षुल्लकरत्न पूज्य सिद्धसागर जी महाराज लाडनूवालो के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। पूज्य क्षुल्लक जी महाराज स्वयं अच्छे लेखक एव प्रभावक वक्ता हैं तथा साहित्य प्रकाशन मे विशेष रूचि लेते रहते हैं। अकादमी पर आपकी विशेष कृपा दृष्टि है।

अकादमी का पञ्चम भाग "आचार्य सोमकीर्ति एव ब्रह्म यशोधर" पाठको के हाथो मे देने मे हमे बडी प्रसन्नता है। इसमे १६ वी शताब्दि के पाच कवियो आचार्य सोमकीर्ति, सागू, ब्र० गुणकीर्ति, भ० यशकीर्ति एव ब्रह्म यशोधर के जीवन, व्यक्तित्व एव कृतित्व पर विशद प्रकाश डाला गया है तथा उनकी अब तक उपलब्ध सभी ३६ कृतियो के मूल पाठ दिये गये हैं इन कवियो की रचनायें १६ वी शताब्दि की प्रतिनिधि रचनाये है जो भाव, भाषा, शैली एव वर्णनकी दृष्टि मे राजस्थानी की महत्वपूर्ण कृतिया है। हमारा यह दृढ विश्वास है कि इसके प्रकाशन से हिन्दी साहित्य के इतिहास मे महत्त्वपूर्ण मोड आ सकेगा।

इस प्रकार अब तक पाचो भागो मे १६ वी १७ वी शताब्दि के २२ प्रतिनिधि कवियो का जीवन, व्यक्तित्व एव कृतित्व के साथ २ उनकी १९० छोटी बडी कृतियो के मूल पाठो का भी प्रकाशन किया जा चुका है।

षष्टम भाग

अकादमी का षष्टम भाग कविवर बुलाकीचन्द, बुलाकीदास, एवं हेमराज के नाम से रहेगा। तीनो ही कवि १८ वी शताब्दि के प्रथम एव द्वितीय चरण के कवि है।

इनमे बुलाकीचन्द तो साहित्यिक जगत के लिये एक दम नवीन कवि हैं जिनका साहित्यिक जगत् को प्रथम बार परिचय मिलेगा । इस वर्ष दीपावली तक इसके प्रकाशन की आशा की जाती है ।

विद्वानों का सहयोग

यह प्रसन्नता का विषय है कि अकादमी के प्रकाशनो मे जैन विद्या के सभी मनीषियों का सहयोग प्राप्त है । अब तक जिन विद्वानों का सहयोग प्राप्त हो चुका है इनमें हिन्दी जगत के मूर्द्धन्य विद्वान डा० सत्येन्द्र जी जयपुर, डा० हीरालाल महेश्वरी जयपुर, डा० दरबारी लाल कोठिया वाराणसी, डा० ज्योतिप्रसाद जैन लखनउ, डा० नेमिचन्द जैन इन्दौर, प० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ जयपुर, प० मिलापचन्द शास्त्री जयपुर, डा० नरेन्द्र भागवत जयपुर, प० भवरलाल न्यायतीर्थ जयपुर, डा० भागचन्द भागेन्दु दमोह, श्रीमती सुशीला बाकलीवाल जयपुर के नाम उल्लेखनीय है । प्रस्तुत भाग के सम्पादन मे डा० महेन्द्र कुमार प्रचडिया अलीगढ, नाथूलाल जी जैन जयपुर एवं डा० कोकिला सेठी जयपुर का जो सहयोग प्राप्त हुआ है इसके लिये हम उनके पूर्ण आभारी हैं । डा० प्रचडिया जैन विद्या के जाने माने विद्वान है, जिनके निर्देशन मे बीसो शोद्यार्थी अपनी शोध पूरी कर चुके है । श्री नाथूलाल जी जैन राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध विद्वान हैं जो वर्तमान मे राजस्थान के महाधिवक्ता पद पर कार्य कर रहे है इसके पूर्व आप केन्द्रीय भाषा आयोग के एव राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य रह चुके है । डा० कोकिला सेठी उदीयमान विदुषी है ।

नये सदस्यों का स्वागत

अकादमी के अब तक ३७० सदस्य बन चुके है जिनमे १०० सदस्य सचालन समिति एव २७० विशिष्ट सदस्य हैं । चतुर्थ भाग के प्रकाशन के पश्चात् सर्व श्री निर्मल कुमार जी सा० सेठी, महावीर प्रसाद जी सा० सेठी सरिया (बिहार) एव श्री कमलचन्द जी सा० कासलीवाल सरक्षक सदस्य बने है । श्री निर्मलकुमार जी सा. सेठी के नाम से सारा समान परिचित है । आपने दि० जैन महासभा के अध्यक्ष के रूप मे समाज को जो नेतृत्व प्रदान किया है उससे समाज मे एक नयी चेतना आयी है । श्री महावीर प्रसाद जी सा० सेठी बिहार के कुशल व्यवसायी एव धर्म प्रेमी सज्जन हैं । अपने गाव सरिया मे आपने एक विशाल जैन भवन का निर्माण कराने के अतिरिक्त समय २ पर आप सामाजिक एव धार्मिक कार्यों मे विशेष रूचि लेते रहते हैं । श्री कमलचन्द जी कासलीवाल जयपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति हैं । जयपुर मे सन्मति पुस्तकालय के विकास मे आपका प्रशसनीय योगदान रहा है । इसी तरह जयपुर मे टोडरमल स्मारक भवन के सस्थापक निर्माता श्री पूरणचन्द जी गोदीका अपनी दानशीलता के लिये सारे समाज मे प्रसिद्ध हैं । श्री गोदीका जी ने अकादमी

का कार्याध्यक्ष बनने की स्वीकृति प्रदान की है। इनके अतिरिक्त श्री रतनलाल जी विनायक्या भागलपुर, सम्पत कुमार जी जैन कटक, पदम कुमार जी जैन नेपालगज, डा० ताराचन्द जी बख्शी जयपुर ने अकादमी के उपाध्यक्ष बनने की कृपा की है। हम उक्त सभी महानुभावों के पूर्ण आभारी हैं। आप सभी ने अकादमी का सदस्य बनकर उसको गौरव प्रदान किया है।

परम सरक्षक

मूडबिद्री के युवा भट्टारक स्वामी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति पडिताचार्यजी महाराज की अकादमी पर प्रारम्भ से ही विशेष कृपा रही है। अकादमी की साहित्य प्रकाशन योजना के आप पूर्ण समर्थक है तथा आपका उसे पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है। भट्टारकजी की साहित्यिक एव धार्मिक सेवाओ पर अकादमी के पाच पुष्पो मे जिस प्रकार प्रकाश डाला गया है उससे आपने सन्तुष्ट होकर अकादमी का परम सरक्षक बनने की स्वीकृति प्रदान की है। इस प्रकार परम सरक्षक के रूप मे भट्टारकजी महाराज का आशीर्वाद अकादमी के लिए एक उपलब्धि है। आशा है अन्य साहित्य प्रेमी महानुभाव भी इस प्रकार सहयोग देने की कृपा करेगे।

सहयोग

अकादमी की साहित्य प्रकाशन योजना को वैसा तो समाज का पूर्ण सहयोग मिलता रहा है लेकिन हम पूज्य क्षुल्लकरत्न सिद्धसागरजी महाराज, मागीलालजी सा सेठी सुजानगढ, श्रीमती चन्द्रकलाजी रावका रामगज मडी, जयकुमारजी जैन मुलतान वाले जयपुर एव ताराचन्दजी प्रेमी फिरोजपुर झिरका के विशेष आभारी हैं जिन्होने अकादमी के सदस्य बनाने मे विशेष रुचि ली है।

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल
निदेशक एव प्रधान सम्पादक

जयपुर

संरक्षक की ओर से

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी का पन्चम पुष्प "आचार्य सोमकीर्ति एवं ब्रह्म यशोधर" को पाठको के हाथो मे देते हुए हमे अतीव प्रसन्नता है। इस प्रकार अकादमी की २० भागो के प्रकाशन की योजना का २५ प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। इस पुष्प के साथ अब तक जिन अज्ञात एवं अल्प-ज्ञात हिन्दी जैन कवियो के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डाला जा चुका है। उनका विवरण निम्न प्रकार है—

	कवि का नाम	समय	मूल कृतियो की सख्या	भाग
१	महाकवि ब्रह्म रायमल्ल	१६-१७वी शताब्दी	४	प्रथम
२	भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति	,,	१	,,
३	कविवर बूचराज	१६वी शताब्दी	८	द्वितीय
४	,, छीहल	,,	६	,,
५	,, ठक्कुरसी	,,	१३	,,
६	,, गारवदास	,,	१	,,
७	,, चुतुरुमल	,,	२	,,
८	महाकवि ब्रह्म जिनदास	१५वी शताब्दी	१४	तृतीय
६	भट्टारक रत्नकीर्ति	१७वी शताब्दी	३७	चतुर्थ
१०	,, कुमुदचन्द	,,	६३	,,
११	,, अभयचन्द	,,	१	,,
१२	,, शुभचन्द	,,	३	,,
१३	,, रत्नचन्द	,,	—	,,
१४	,, श्रीपाल	,,	१	,,
१५	,, जयसागर	,,	—	,,
१६	,, चन्द्रकीर्ति	,,	—	,,
१७	,, गणेश	,,	—	,,
१८	आचार्य सोमकीर्ति	१६वी शताब्दी	४	पन्चम
१९	कविवर सागु	,,	१	,,

२०	ब्रह्म गुणकीर्ति	१६वी शताब्दी	१	पञ्चम
२१	भट्टारक यश.कीर्ति	,,	४	,,
२२	ब्रह्म यशोधर	,,	२६	,,
			१६०	

इस प्रकार १६वी एव १७वी शताब्दी के २२ प्रतिनिधि कवियो का मूल्याङ्कन एव उनकी छोटी-बडी १६० कृतियो का प्रकाशन एव महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसके लिए अकादमी के निदेशक एव प्रधान सम्पादक डॉ० कासलीवाल अभिनन्दनीय हैं। वास्तव मे डॉ० कासलीवाल का यही प्रयत्न रहा है कि अज्ञात कोनो मे से प्राचीन सामग्री एव परम्पराओ का अन्वेषण कर उन्हे प्रकाश मे लावें। प्रस्तुत ग्रन्थ भी उनकी इसी शुभवृत्ति का सुफल है। प्रस्तुत ग्रथ के लेखक एव प्रधान सम्पादक भी डॉ कासलीवाल ही हैं। वैसे तो वे गत ३५ वर्षो से साहित्यिक कार्यों मे सलग्न हैं लेकिन गत ४ वर्षो से तो उनका पूरा समय ही साहित्य देवता के लिए समर्पित है।

पचम भाग के सम्पादक मण्डल के सदस्यो मे डॉ० महेद्रसागर प्रचडिया अलीगढ, श्री नाथूलाल जैन, मुख्य अधिवक्ता राजस्थान सरकार, जयपुर एव श्रीमती डॉ० कोकिला सेठी हैं। तीनो ही विद्वानो ने प्रस्तुत ग्रथ के सम्पादन मे जो परिश्रम किया है उसके लिए हम इनके आभारी हैं। आशा है अकादमी को सभी विद्वानो का भविष्य मे भी सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

अकादमी की लोकप्रियता मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। चतुर्थ भाग का विमोचन पूज्य क्षुल्लक रत्न १०५ श्री सिद्धसागर जी महाराज द्वारा भागलपुर मे इन्द्रध्वज विधान महोत्सव पर हुआ था और उन्ही की प्रेरणा से विमोचन समारोह मे मैंने स्वय ने देखा था कि, उपस्थित समाज ने अकादमी की साहित्यिक योजना मे अपना पूर्ण सहयोग देने मे प्रसन्नता प्रकट की थी। चतुर्थ भाग के प्रकाशन के पश्चात् अ. भा. दि. जैन महासभा के उत्साही अध्यक्ष एव श्रावक रत्न श्री निर्मलकुमार जी सेठी,सरिया लखनऊ (बिहार) के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री महावीर प्रसाद जी सेठी एव जयपुर के उद्योगपति श्री कमलचन्द जी कासलीवाल ने अकादमी का सरक्षक सदस्य बनने की अतिकृपा की है उसके लिए हम तीनो ही महानुभावो के आभारी है। इसी तरह मूडबिद्री के भट्टारक एव पण्डिताचार्य स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी महाराज ने अकादमी का परम सरक्षक बनने की स्वीकृति दी है। भट्टारक जी महाराज स्वय साहित्य-प्रेमी, अच्छे वक्ता एव लेखक है। अकादमी को आपके द्वारा जो सरक्षण प्राप्त हुआ है हम उसके लिये पूर्णाभारी हैं। वैसे अकादमी के पाँचो ही प्रकाशन मध्य काल मे होने वाले भट्टारको एव उनके शिष्य प्रशिष्यो की अभूतपूर्व साहित्यिक सेवा के

परिचायक हैं। वास्तव मे डॉ० कासलीवाल ने अपने इन प्रकाशनो द्वारा भट्टारकों के साहित्यिक एव सास्कृतिक योगदान को पुन प्रकाश मे लाकर समाज का प्रशस्त मार्गदर्शन किया है।

चतुर्थ भाग के विमोचन के पश्चात् हम सभी नये उपाध्यक्षो–सर्वश्री लेखचन्द बाकलीवाल, पद्मकुमार जैन नेपालगज, सम्पतराय अग्रवाल कटक, रतनलाल विनायक्या भागलपुर एव डॉ० ताराचन्द बख्शी जयपुर का हार्दिक स्वागत करते है। सभी उपाध्यक्ष हमारे समाज के जाने माने सज्जन है तथा सामाजिक क्षेत्र मे इनका महत्व-पूर्ण योगदान रहता है। इसी तरह सचालन समिति के सभी माननीय नये सदस्यो एव विशिष्ट सदस्यो के प्रति आभार प्रकट करता हू जिन्होने अपना सहयोग देकर अकादमी को गति प्रदान की है। मैं सर्वश्री मागीलाल सेठी सुजानगढ एव ताराचद प्रेमी फिरोजपुर—झिरका का विशेष आभारी हू जो स्वय अकादमी के सदस्य बन गये है एव अन्य महानुभावो को भी सदस्य बनाने मे अपना पूर्ण सहयोग देते है। हम चाहते है कि षष्टम भाग के प्रकाशन के पूर्व अकादमी की सदस्य सख्या कम से कम ५०० तक पहुँच जाय। आशा है कि इस दिशा मे सभी का सहयोग प्राप्त होगा।

झरिया (बिहार)
दिनाक १०-८-८२

पूनमचन्द गगवाल

सम्पादकीय

वैदिक, बौद्ध और जैन साहित्य मिलकर भारतीय साहित्य के रूप को स्वरूप प्रदान करते हैं। वैदिक साहित्य के लिए वेद, बौद्ध-वाङ्मय के लिए पिटक और जैन साहित्य के लिये आगम शब्द का व्यवहार आरम्भ से ही होता रहा है। सम्पूर्ण आगम को (१) प्रथमानुयोग, (२) करणानुयोग, (३) चरणानुयोग, तथा (४) द्रव्यानुयोग इन चार भागो मे विभाजित किया गया है।

प्रथमानुयोग के शास्त्रो से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अथवा जिनेन्द्र देवो पर आधृत अनेक ज्ञानपूर्ण कथाएँ तथा पुराणो का समावेश है। करणानुयोग के शास्त्रो मे कर्म सिद्धान्त और लोक व्यवहार का विशद व्याख्यान है। चरणानुयोग के शास्त्रो मे श्रावक तथा यति अर्थात् साधु-सगठन और आचार-सहिता का विशद विधान वर्णित है। द्रव्यानुयोग के शास्त्रो मे चेतन-अचेतन, षट्द्रव्यो तथा तत्त्व लक्षणो का विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया गया है।

प्राकृत भाषा अपने अनेक प्रातीय रूपो को समेटती भारतीय-संस्कृति को शब्दायित करती रही है। मागधी, अर्द्धमागधी, पालि आदि रूपो को ग्रहण करती हुई उसका जो रूप घिस-पिस कर स्थिर हुआ वह अपभ्रंश के नाम से समादृत हुआ। अपभ्रंश के उत्स से पुरानी हिन्दी ब्रजभाषा का आदिम रूप उगा—अकुरित और पल्लवित हुआ। इस प्रकार उकार बहुल ब्रजभाषा हिन्दी का आदिम रूप अपभ्रंश के क्रोड से उत्पन्न हुआ। सस्कृत हिन्दी की जननी है, यह धारणा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से चिरञ्जीवी नही रह सकी।

राजस्थानी डिंगल और पिंगल स्वरूपा हिन्दी विविध कालो मे अपने-अपने समुदाय और समाज के स्वरूप को अभिव्यक्ति देती रही है। राज्याश्रित कवियो द्वारा राज-सत्ता और महत्ता का सातिशय वर्णन शब्दायित हुआ। कही कही अमुक-अमुक काव्य-धाराओ से अनुप्रेरित कवियो ने तत्सम्बन्धी सकीर्ण विचारणाओ को व्यक्त किया है। इस प्रकार काल-क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य का कलेवर वृद्धङ्गत होता गया।

पदयात्री सतो की अपनी एक परम्परा रही है। जैन सन्त इस परम्परा के नायक और उन्नायक रहे हैं। जैन मुनियो, आचार्यो तथा सिद्ध-साधको, मनीषियो ने देश के प्रधान-उपप्रधान तथा क्षेत्रीय भाषा और उपभाषाओ मे जनकल्याणकारी

विपुल साहित्य की आगम के अनुरूप रचना की है, फलस्वरूप इसमें शुभ, सत्य और सुखद सम्भावनाओं का समीकरण आरम्भ से ही परिलक्षित है। जैन साहित्य जिन-वाणी संग्रहो में सुरक्षित रहा जिसके स्वाध्याय की नियमित परम्परा जैन समुदाय में विद्यमान रही। देश मे अनेक 'स्वाध्याय सैलियाँ' स्थिर हुयी जिनके द्वारा शास्त्र-प्रवचन, शका समाधान, तत्त्व चर्चा आदि दृष्टियो से साहित्य का अध्ययन-अनुशीलन चलता रहा।

कालान्तर मे जब साहित्यिक इतिहास रचे गये तब हिन्दी भाषा मे रची गई कृतियो की खोज-खबर ली गई। शक्ति और सामर्थ्यानुसार जिन-जिन साहित्याचार्यों ने काम किये वे अनुशसित हुए परन्तु जैन हिन्दी साहित्य को प्रकाश मे लाने और उसे हिन्दी साहित्य के सिहासन पर प्रतिष्ठित करने-कराने का श्रेय महापण्डित राहुल साकृत्यायन, नाथूराम प्रेमी, बाबू कामताप्रसाद जैन, मुनिवर जिन विजय जी महार ज आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पडित अगरचन्द नाहटा तथा डॉ० रामसिंह तोमर आदि अनेक अनुसधित्सुओ और साहित्य-साधको को रहा है परिणामस्वरूप आज साहित्यिक इतिहास नये सिरे से रचे जाने लगे है।

जैन कवियो ने हिन्दी मे आरम्भ से ही लिखना आरम्भ कर दिया और बडी विशेषता यह है कि अभिव्यक्ति के अनेक रूपो को स्थिर करने मे इन कवियो ने अगुवा बनकर जिस सृजनात्मक भूमिका का निर्वाह किया वह विद्वत् समाज मे आज भी समादृत है। भाव-सम्पदा, भाषा अलकार छन्द, व्याकरण, काव्य रूप तथा शैली शिल्प आदि अनेक काव्य शास्त्रीय दृष्टि मे यदि जैन हिन्दी साहित्य को अन्वित और और समन्वित नही किया गया तो हिन्दी साहित्य कभी पूर्ण नही कहा जा सकता, यह वस्तुत गवेषणात्मक सत्य है।

अनेक अब्दियो और दशाब्दियो पूर्व जब मेरी पहले-पहल अनुसन्धान की दृष्टि से राजस्थानी-यात्रा प्रारम्भ हुई थी उस समय हिन्दी जैन साहित्य को उजागर करने का प्रश्न सामने आया था। अनेक शोधार्थियो की समस्या और उसके समाधान पर आदरणीय प्रियवर डॉ० कस्तूरचन्द जी कासलीवाल, प० अनूपचन्द्र जी शास्त्री आदि जयपुरिया साहित्यिक खोजियो से विचार-विमर्श हुए और तय हुआ कि लुप्त विलुप्त भाडारो मे भरी पडी सामग्री को प्रकाशित कराया जाय। दशाब्दियो बाद यह सौभाग्य बन पाया कि श्री महावीर ग्रथ अकादमी के माध्यम से हिन्दी साहित्य को इस रूप मे व्यवस्थित और प्रकाशित किया जा रहा है। हर्ष का विषय है कि मुझ जैसे अनेक भाइयो के निर्देशन मे अनेक विश्वविद्यालयो के अधीन, पी-एच० डी० उपाधि के लिए हिन्दी जैन कवियों पर अध्ययन हुआ है और कार्य चल रहा है।

इस कार्य सम्पादन मे भाई कासलीवाल जी को कितने पापड बेलने पडे है, इसकी प्रतीति मुझे है, वस्तुत विचारणीय बात है। वे इस भागीरथ काम को पार लगा रहे हैं वस्तुतः बहुत बडी बात है।

सामाजिक श्रेष्ठियों को इस दिशा मे सक्रिय सहयोग देना चाहिए ताकि जिनेन्द्र वाणी—हिन्दी साहित्य धारा में भी समवेत होकर कल्याणकारी मार्ग का प्रवर्तन कर सके।

आकादमी के प्रस्तुत पचमी पुष्प मे सोलहवीं शताब्दी के समर्थ कविमनीषी सोमकीर्ति, ब्रह्म यशोधर, सागु, गुणकीर्ति तथा यश.कीर्ति का प्रामाणिक व्यक्तित्व तथा कृतित्व परक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी के समकालीन गुरु नानक, कबीरदास, चरणदास, अनन्तदास तथा पुरुषोत्तम आदि अनेक कवि उल्लेखनीय है जिनके साथ इन कवियो का तुलनात्मक तथा साहित्यिक मूल्याङ्कन होना चाहिए। मान्य शोध—निदेशक–बन्धुओ से निवेदन है कि वे कतिपय मेधावी शोधार्थियो का चयन कर जैन कवियो के साहित्य का स्तरीय अङ्कन और मूल्याङ्कन प्रस्तुत करावें।

इस प्रकार प्रस्तुत पुष्प के प्रकाशन की आवश्यकता-उपयोगिता असंदिग्ध है। आशा ही नही पूरा भरोसा है कि श्री महावीर ग्रथ अकादमी की यह पुष्प-प्रकाशन की परम्परा चिरञ्जीवी रहेगी और हिन्दी साहित्यिक के कलेवर को अभिवृद्ध करेगी तथा साहित्यक कुलकरो की कुल-कीर्ति को सुरक्षित रख सकेगी। हम इस मूल्यवान योजना के सतत् साफल्य की हार्दिक मगल कामना करते है।

आगरा रोड
अलीगढ
२६.७.८२

महेन्द्र सागर प्रचंडिया
कृते सम्पादक मण्डल

लेखक की कलम से

राजस्थानी एव हिन्दी भाषा की पाण्डुलिपियो के लिये राजस्थान के जैन ग्रन्थागार विशाल भण्डार है जिनमे सैंकडो महत्वपूर्ण, अज्ञात एवं अल्प-ज्ञात कृतियो का सग्रह मिलता है। इस दृष्टि से जैनाचार्यों, भट्टारक गण एव विद्वानो की साहित्यिक सेवाएं अत्यधिक उल्लेखनीय है। जिन्होने विगत ६००-७०० वर्षों से अपनी सैंकडो कृतिया साहित्यिक जगत् को भेट करके अपने हिन्दी प्रेम को प्रदर्शित किया है और आज भी कर रहे हैं। प्रस्तुत पञ्चम भाग मे १६ वी शताब्दि के पाँच ऐसे ही कवियो को लिया गया है जो राजस्थानी/हिन्दी के लिये समर्पित रहे है तथा जिनका व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनो ही विद्वानो के लिए अज्ञात अथवा अल्पज्ञात रहा है।

सोमकीर्त्ति १६ वी शताब्दि के प्रथम चरण के कवि थे। राजस्थानी उनकी प्रिय भाषा थी जिसमे उन्होने दो बडी एव पॉच छोटी रचनाये निबद्ध की थी। 'गुरु नामावली' मे उन्होने राजस्थानी गद्य का प्रयोग करके गद्य साहित्य की लेखन परम्परा को बहुत पीछे ला पटका है। राजस्थानी/हिन्दी साहित्य के इतिहास के लिये गुरु नामावली एक महत्वपूर्ण कृति है। सवत् १५१८ (सन् १४६१) मे निर्मित यह कृति गद्य पद्य मिश्रित है। यह सस्कृत की चम्पु कृति के समान है। कवि ने अपने गद्य भाग को बोली लिखा है जिसमे यह स्पष्ट है ऐसी ही भाषा उस समय बोलचाल की भाषा थी और उसे बोली कहा जाता था। बोलचाल की भाषा के लोकप्रिय शब्द कुण, आपणा, बोलता, ढीली, नयर, पालखी, इसी, इणी, का खूब प्रयोग हुआ है। सोमकीर्त्ति अपने युग के प्रभावशाली भट्टारक थे। काष्ठासघ की भट्टारक गादी के सर्वोपरि साधु थे। साथ मे वे भाषा शास्त्री भी थे। सस्कृत कृतियो के साथ ही राजस्थानी मे कृतियो का लेखन उनकी राजस्थानी के प्रति गहरी रुचि का सफल है।

सांगु इस काल के दूसरे कवि थे। अभी तक इनकी एक ही कृति 'सुकोसल राय चुपई' उपलब्ध हो सकी है लेकिन यह एक ही कृति कवि की काव्य प्रतिभा परिचय के लिये पर्याप्त है। यह एक लघु प्रबन्ध काव्य है जिसमे काव्य-गत सभी लक्षण विद्यमान है काव्य पूरा रोमाञ्चक है जिसमे कभी विवाह, कभी युद्ध, कभी

गृह त्याग, कभी तपस्या एवं कभी उपसर्ग के समय का वर्णन मिलता है।

महाकवि ब्रह्म जिनदास के शिष्य ब्रह्म गुणकीर्ति इस पुष्प के तीसरे कवि हैं जिनका परिचय भी साहित्य जगत् को प्रथम बार मिल रहा है। रामसीतारास एक खण्ड काव्य है जो राजस्थानी भाषा की अत्यधिक सुन्दर कृति है। महाकवि तुलसीदास के १४० वर्ष रचित यह एक लघु रामायण है जो अपने गुरु महाकवि ब्रह्म जिनदास के रामरास का मानो लघु सस्करण है। रामसीतारास भाव, भाषा, शैली एव विषय की दृष्टि मे उत्तम कृति है।

चौथे कवि भ. **यशःकीर्ति** है जिनके दो पद एव दो लघु रचनाये प्रस्तुन ग्रथ मे दिये गये हैं।

ब्रह्म यशोधर पाचवे कवि हैं जो भ. यश कीर्ति के प्रशिष्य एवं विजयसेन के शिष्य थे। भ. यशोधर अपने युग के जबरदस्त प्रभावशाली कवि थे जिनका समस्त जीवन साहित्य सेवा मे समर्पित रहता था। यद्यपि वे भट्टारक नही थे किन्तु उनकी ख्याति एव सम्मान किसी भट्टारक मे कम नहीं था। साहित्य रचना के क्षेत्र मे तो वे अपने गुरु से भी आगे थे। उन्होने चुपई सज्ञक काव्य लिखा, नेमिनाथ, वासुपूज्य एव मल्लिनाथ पर स्तुति परक गीत लिखे, अपने गुरु की प्रशसा मे विजयकीर्त्ति गीत लिखा जिसे हम ऐतिहासिक गीत की सज्ञा दे सकते हैं, एव विभिन्न राग रागनियों मे नेमि राजुल से सम्बन्धित पद लिखे। बलिभद्र चुपई एक ऐसा प्रबन्ध काव्य है जिसमे कवि की काव्य प्रतिभा के स्थान २ पर दर्शन होते हैं। नेमिनाथ गीत में कवि ने गागर मे सागर भरने जैसा कार्य किया है। वर्णन इतना रोचक है कि पढते ही कवि के प्रति श्रद्धा के भाव जाग्रत होते है। भ. यशोधर द्वारा अपनी कृतियो मे शब्दो का चयन भी पूर्ण विद्वत्ता के साथ किया है। कवि ने नेमिनाथ गति मे पान बीडी का उल्लेख किया है। विवाह मे पानो का बीडा देकर बरातियों का स्वागत करने की प्रथा है जो १५वी शताब्दि मे भी यथावत थी। इसी तरह 'लू' शब्द के लिये 'लूय' का प्रयोग किया है। लूय शब्द ठेठ राजस्थानी भाषा का शब्द है।

भाषा के अध्ययन की दृष्टि से इन पाचों ही कवियो की रचनाये महत्वपूर्ण है। जैन कवि अपनी रचनायें सरल बोलचाल की भाषा मे निबद्ध करते रहे हैं। यद्यपि वे काव्य गत लक्षणो के आधार पर रचनाये निबद्ध करने मे विश्वास नही रखते थे लेकिन फिर भी उनकी कृतियों राजस्थानी हिन्दी की अमूल्य कृतिया है

---

१. चोउ चदन रुडा फूलडा रे पान बीडीय अमूल/सा./५०/पृष्ठ संख्या २०१.
२. उह्लालि लू उह्ली वाय, तपन ताप तनु सह्यु न जाय ॥ १७३/ ,, १९१.

और उनमें वे सभी तत्त्व उपलब्ध होते हैं जो किसी एक काव्य मे मिलने चाहिये।

प्रस्तुत पुष्प मे पांच कवियों की अब तक उपलब्ध सभी ३७ कृतियों के पाठ दिये गये है जिनमे से अधिकाश कृतिया प्रथम बार सामने आयी हैं। वास्तव मे जैन ग्रंथागारों मे राजस्थानी/हिन्दी ने अभी तक सैकडो कृतियां हैं जिनके अस्तित्व का हमे पता नहीं है परिचय मिलना तो बहुत दूर की बात है। राजस्थान एव गुजरात के शास्त्र भण्डारो मे इन पाच कवियो की और भी कृतिया मिल सकती है।

आभार

पुस्तक के सम्पादक मे डा. महेन्द्रसागर जी प्रचडिया अलीगढ, भाषा–शास्त्री श्री नाथूलाल जी जैन एडवोकेट जयपुर एव श्रीमती डा. कोकिला सेठी का जो सहयोग मिला है उसके लिये मे उनका पूर्ण आभारी हू। डा. प्रचडिया जी ने सम्पादकीय लिखा है जो कितने ही दृष्टियो मे अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मैं अकादमी से सम्पादक मंडल के प्रमुख सदस्य एव सहयोगी प. अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ का भी आभारी हूँ जिनका मुझे साहित्यिक कार्यों मे पूर्ण सहयोग मिलता रहता है।

अमृत कलश, किसान मार्ग
बरकत कालोनी
टोंक ब्रिज जयपुर,

डा कस्तूर चन्द कासलीवाल

८ अगस्त १९८२

विषय सूची

पूर्व पीठिका

इस भाग में सवत १५१५ से १५६० तक होने वाले पाच हिन्दी जैन कवियो का जीवन, इतिहास एव उनका मूल्याकन प्रस्तुत किया जा रहा है। ये कवि हैं आचार्य सोमकीर्ति, सागु, यश कीर्ति, गुणकीर्ति, एव ब्रह्म यशोधर । इसके पूर्व दूसरे भाग मे हमने सवत् १५४० से १६०० तक के प्रतिनिधि कवियो—बूचराज, छीहल, ठक्कुरसी, चतुरुमल एव गारवदास का जीवन परिचय एव उनकी कृतियो का मूल्याकन प्रस्तुत किया था साथ ही मे उन कवियो की सभी छोटी बडी कृतियो के के पाठ भी दिये थे जिससे सभी पाठक गण उसके काव्यो का रसास्वादन कर सके।

सवत् १५१५ से १५६० तक के काल को हिन्दी साहित्य के इतिहास मे दो भागो मे विभक्त किया है। मिश्रबन्धु विनोद ने सवत् १५६० तक के काल को आदिकाल माना जाता है तथा १५६१ से आगे वाले काल को अष्टछाप कवियो के नाम से सम्बोधित किया है। रामचन्द्र शुक्ल ने भी इस काल का अष्टछाप नामकरण किया है। लेकिन वास्तव मे यह काल भक्ति युग का आदिकाल था। एक ओर गुरु नानक एव कबीर जैसे सत कवि अपनी कृतियो से जन-जन को अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे तो दूसरी ओर आचार्य सोमकीर्ति, भट्टारक यश: कीर्ति, सागु एव ब्रह्म यशोधर जैसे हिन्दी भाषा के जैन कवि अपनी कृतियो के माध्यम से समाज मे अर्हद् भक्ति, पूजा, एव प्रतिष्ठाओ का प्रचार कर रहे थे। समाज मे भट्टारक परम्परा की नीव गहरी हो रही थी। उनकी जगह-जगह गादिया स्थापित होने लगी थी। भट्टारक गण एव उनके शिष्य भी अपने आपको भट्टारक के साथ-साथ मुनि, आचार्य, उपाध्याय, एव ब्रह्मचारी सभी नामो से सबोधित करने लगे थे। साथ ही मे वे सब सस्कृत के साथ-साथ राजस्थानी एव हिन्दी भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बना रहे थे। देश पर मुसलमानो का राज्य था जो अपनी प्रजा पर मनमाने जुल्म ढा रहे थे। ऐसी स्थिति मे भी भट्टारको एव उनके शिष्यो ने समाज के मानस को बदलने के लिए तत्कालीन लोक भाषा मे छोटे बडे रास काव्यो, का पद एव स्तवनो का निर्माण किया। दूसरे भाग मे निर्दिष्ट कवियो के अतिरिक्त इन ४५ वर्षों मे १५ से भी अधिक जैन एव जैनेतर कवि हुए जिनमे कुछ के नाम निम्न प्रकार है—

जैन कवि		जैनेतर कवि	
१. आचार्य सोमकीर्ति	स १५१८	१ गुरुनानक	स १५२६–१५९६
२. कनकप्रभसूरि	स १५३०	२ कबीरदास	,, १५७५ से पूर्व
३ उपाध्याय ज्ञान सागर	स १५३१	३ चरणदास	,, (१५३६)
४ भट्टारक यश कीर्ति	स १५३८	४ अनन्तदास	,, (१५५८)
५ ब्रह्म यशोधर	स १५८५ से पूर्व	५ हरिराम	,, (१५५८)
६ मागु कवि	स १५५०	६ पुरुषोत्तम	,, (१५५८)
७ गुणकीर्ति	स १५२०		
८. सवेग सुन्दर उपाध्याय	स १५४८		
९ वाचक मतिशेखर			

गुरु नानक एव कबीरदास से सभी परिचित हैं। ये कवि भारतीय जन मानस के कवि बन चुके हैं। अनन्तदास कबीर के शिष्यो मे से थे जिन्होने रैदास की परिचई कबीरदास की परिचई एव त्रिलोचनदास की परिचई जैसे काव्यो की रचना की। हरिराम की गीताभानु प्रकाश (स १५५८) तथा पुरुषोत्तम की धर्माश्वमेध (स १५५८) रचनाये मिलती है। इसी समय कुतबन शेख ने मृगावती तथा सेन कवि ने भी अपनी कविताओ के माध्यम से भक्ति रस की धारा को प्रवाहित किया।[1]

जैन कवियो मे ज्ञानसागर ने सवत् १५३१ मे श्रीपालरास की रचना की थी[1] इसकी एक प्रति राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर मे उपलब्ध है। सवेगसुन्दर उपाध्याय ने सवत् १५४८ मे सारसिखामन रास की रचना की थी तथा रामचन्द्र सूरि ने रर्जाष चरित की सवत् १५५० मे रचना की थी। यह समय महाकवि ब्रह्म जिनदास से प्रभावित युग था जिन्होने पचास से भी अधिक रासकाव्यो की रचना करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था। इसलिए अधिकाश जैन कवि उन्ही के पद चिह्नो पर चलकर रास नामान्तक काव्यो की रचना करने मे लगे हुए थे।

---

१ मिश्र बन्धु विनोद-प्रथम भाग-पृष्ठ सख्या 111–113

आचार्य सोमकीर्ति

आचार्य सोमकीर्ति इस काल के प्रमुख प्रतिनिधि कवि थे। वे अपने युग के उद्भट विद्वान प्रमुख साहित्य सेवी एव सर्वोच्च सन्त थे। वे योगी थे। आत्म साधना मे तल्लीन रहते और अपने शिष्यो एव अनुयायियों को उस पर चलने का उपदेश देते थे। वे प्रवचन करते, साहित्य सर्जन करते एव अपने शिष्यो को साहित्य निर्माण करने की प्रेरणा देते। सोमकीर्ति प्राकृत, सस्कृत, राजस्थानी, गुजराती एव हिन्दी के प्रकाड विद्वान थे। उन्होंने सस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओ को अपनी रचनाओ से उपकृत किया। उनका राजस्थान एव गुजरात दोनो ही प्रमुख क्षेत्र रहे तथा जीवन भर इन क्षेत्रों मे विहार करके जन-जन के जीवन को आत्म-साधना एव अर्हद् भक्ति की ओर मोडते रहे। उनकी प्रेरणा से कितने ही मन्दिरो का निर्माण सपन्न हुआ। बीसो पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाए उनके निर्देशन मे सपन्न हुई तथा हजारों जिन प्रतिमाए प्रतिष्ठित होकर राजस्थान एव गुजरात के विभिन्न मन्दिरो मे विराजमान की गई। आचार्य सोमकीर्ति श्रमण सस्कृति, साहित्य एव शिक्षा के महान् प्रचारक थे। ऐसे सन्त पर किस समाज एव राष्ट्र को गर्व नही होगा।

लक्ष्मीसेन के दो शिष्य थे। एक भीमसेन एव दूसरे धर्मसेन। दोनो ने ही अपनी अलग-अलग भट्टारक गादिया स्थापित की थी। इन्ही भीमसेन के सोमकीर्ति प्रमुख शिष्य थे। काष्ठासघ की एक गुरुनामावली मे भीमसेन का परिचय निम्न प्रकार दिया गया है—

श्री लक्ष्मसेन पट्टोधरण पावपक छिपिप नहीं।
जे नरह नरिंद्दे बन्दिवि, श्री भीमसेन मुनिवर सही ।।2।।
सुरगिरि सिरि कौ चडं पाउकरि अतिबलवंतौ
केवि रणीयर तीर, पुहत उय तरंतौ।
कोई आयास पमाण, हत्य करि गाहि कमतौ ।।
कट्ठसघ सघगुण परिलहि वुविहु कोईलेहतौ
श्री भीमसेन पट्टह धरण गच्छ सिरोमणि कुलतिलौ
जाणति सुजाणह जाण नर श्री सोमकीर्ति मुनिवर भलौ ।।3।।

सोमकीर्ति भीमसेन के कब सपर्क मे आये तथा प्रारम्भ मे उनके पास कितने वर्षो तक रहे इसकी जानकारी नही मिलती। इसके अतिरिक्त सोमकीर्ति के माता-पिता, जन्मस्थान, एव शिक्षा-दीक्षा के बारे मे भी कोई इतिहास उपलब्ध नही होता। लेकिन इतना अवश्य है कि उन्हे सवत् १५१८ मे काष्ठासंघ नन्दीतट गच्छ की भट्टारक गादी पर अभिषिक्त किया गया था। उस दिन आषाढ सुदी अष्टमी थी। वे

८७ मे भट्टारक थे ।[1] उनका पट्टाभिषेक गुजरात के सोजित्रा नगर में शांतिनाथ के मन्दिर मे हुआ था। भट्टारक श्री भूषण ने सोजित्रा का वर्णनकरते हुए लिखा है–

श्रीगुर्जरे प्पस्ति पुर प्रसिद्ध सोजित्र नमाभिधमेवसार[2]। सोजित्रा जैनधर्म एवं सस्कृति का केन्द्र था तथा काष्ठा सघ के भट्टारकों की वहा गादी थी। सोमकीर्ति सवत् १५१८ से प्रकाश मे आये और अपने अन्तिम जीवन तक समाज के जगमाते नक्षत्र रहे। श्री जोहरापुरकर ने अपने भट्टारक सम्प्रदाय मे इनका समय सवत् १५२६ से १५४० तक दिया है जो इस पट्टावली से मेल नही खाता। सभवत उन्होने यह समय इनकी सस्कृत रचना सप्तव्यसनकथा के आधार पर दिया मालुम देता है क्योंकि कवि ने इसे सवत् १५२६ मे समाप्त की थी।

सोमकीर्ति ने भट्टारक गादी पर बैठते ही गुजरात एव राजस्थान के विभिन्न भागो मे विहार किया तथा जन-जन से सम्पर्क करके उन्हे अहिसा धर्म के परिपालन पर जोर दिया। उस समय देहली पर लोदी वश का राज्य था। बहलोल लोदी दिल्ली का सुलतान था। ये मुस्लिम शासक इतने धर्मान्ध एव असहिष्णु थे कि उन्हे मन्दिरो, मूर्तियो एव ग्रन्थो के विध्वन्स के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नही लगता था। हिन्दुओ एव जैनो मे इतना भय व्याप्त था कि उन्हे अर्हद् भक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नही दिखता था। भट्टारक उनके सरक्षक थे जिनका सम्बन्ध इन बादशाहो से भी अच्छा था। भट्टारक सोमकीर्ति के लिये ब्रह्म श्रीकृष्णदास ने लिखा है कि वे "यवनपतिकराभोज सपूजितांघ्रि थे अर्थात् भट्टारक सोमकीर्ति का यवन बादशाह भी सम्मान करते थे। इससे सोमकीर्ति के प्रभाव एव यश मे और भी वृद्धि हो गई। पहिले सन्त फिर प्रकाण्ड विद्वान, वक्ता और फिर बादशाह पर हाथ। वे तो सर्वगुण सम्पन्न हो गये। वे अत्यधिक प्रभावशाली थे। जहा विहार होता वही उनके भक्त बन जाते। साहित्य रचना वे स्वय करते और समाज से व्रत विधान एव प्रतिष्ठा विधान कराते। राजस्थान के मन्दिरो मे उनके द्वारा प्रतिष्ठित पचासो मूर्तिया मिलती है। मूलसंघ के क्षेत्र मे काष्ठासघ का इतना जबरदस्त प्रभाव उनके स्वय के व्यक्तित्व का सुपरिणाम था।

---

१ पनरहसिअठार मास आशाढह जाणु
अक्कवार पचमी बहुल पख्यह परवाणु।
पुव्वाभद्द नक्षत्र श्री सोभीत्री पुरवरि
सन्यासी पर पाट तणु प्रबन्ध जिणि परि ।।

प्रतिष्ठा विधान

संवत् १५१८ मे वे भट्टारक पद पर आसीन हुए। इसके पश्चात् उन्होने देश मे पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठाए सम्पन्न करवाने मे रुचि ली।

डूगरपुर जिले के सुरपुर (सुर्यपुर) के मन्दिर मे शीतलनाथ स्वामी की ४०"×४८" अवगाहना वाली श्याम पाषाण की भट्टारक सोमकीर्ति द्वारा सवत् १५२२ मे प्रतिष्ठित प्रतिमा है। इस प्रतिष्ठा मे आचार्य श्री वीरसेन उनके सहायक थे तथा प्रतिष्ठा कराने वाले पडित पदमा, समधर, खेड्आ सा. लखमा भीमा आदि श्रावक थे। राजस्थान मे यह प्रथम मूर्ति है जो सोमकीर्ति द्वारा प्रतिष्ठित प्राप्त हुई है।[1]

सवत् १५२५ में इन्ही के द्वारा प्रतिष्ठित जयपुर के समीप जयसिंहपुरा खोर के मन्दिर मे भगवान पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। जयसिंहपुरा खोर प्राचीन समय मे जैनो का प्रसिद्ध केन्द्र था। पहाडियो के मध्य मे स्थित होने के कारण यह साधुओ के लिए चिन्तन मनन का अच्छा केन्द्र था। जयपुर का क्षेत्र मूल-सघ के भट्टारको का गढ रहा है। इसलिए काष्ठासघ के भट्टारको द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति को विराजमान करना सोमकीर्ति एव उनके शिष्यो के प्रभाव को सूचित करता है।

इसके पश्चात् सवत् १५२७ बैशाख बुदी ५ को इन्ही भट्टारक द्वारा प्रतिष्ठित चौबीसी की प्रतिमा जयपुर के सिरमोरियो के मन्दिर मे एव दि० जैन मन्दिर सभव-नाथ उदयपुर मे विराजमान है। दोनो चौबीसियो मे आदिनाथ स्वामी की मूलनायक प्रतिमा है। यह प्रतिष्ठा नरसिंहपुरा जातीय श्रावक द्वारा सम्पन्न करवायी गयी थी। आचार्य वीरसेन भट्टारक सोमकीर्ति के सहयोगी थे।[2]

---

१ सवत् १५२२ वर्षे पौष सुदी ५ तिथौ श्री काष्ठासघे भट्टारक सोमकीर्ति प्रतिष्ठित श्री शीतलनाथ बिम्ब पडित पदमा समधर खेड्आ सा० लखमा भीमा कारापित शिष्य आचार्य श्री वीरसेन युक्तं।

२ सवत् १५२७ वर्षे वैशाख बदी ५ गुरौ श्री काष्ठासघे नन्दीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री सोमकीर्ति आचार्य श्री वीरसेनयुग के प्रतिष्ठित नरसिंहपुरा जातीय पडनहरगोत्रे सा मोहनसी भार्या तेजु पुत्र ५ कडुआ भार्या २ बाछुआ, रुपा। भार्या रुपा पुत्र भाऊ पुत्र जूठउ नादू पुत्र २ सवरु। सी डलुवी भार्या लक्ष्मी पुत्र सरवण सा. मुदरा भार्या भासु मो सहदूगाम भार्या नालू साकडआ, खेमाआ, काकण श्री आदिनाथ विम्ब करापित।

भट्टारक सोमकीर्ति ने सवत् १५३३ फागुण शुक्ला ७ बुधवार को फिर एक पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा का नेतृत्व किया। जयपुर के ठोलियो के मदिर मे भगवान पार्श्वनाथ की धातु की उक्त पञ्चकल्याणक मे प्रतिष्ठित मूर्ति विराजमान है।[1] इसके एक वर्ष पूर्व सवत् १५३२ मे भी वीरसेन सूरि के साथ एक शीतलनाथ की मूर्ति का प्रतिष्ठा करवायी थी।[2]

सवत् १५३५ माघ सुदी ५ को सोमकीर्ति अहमदाबाद गये। वहा विशाल स्तर पर ५२ जिन बिम्बो की प्रतिष्ठा की गयी। इस प्रतिष्ठा मे भी सोमकीर्ति के साथ आचार्य वीरसेन और उनके शिष्य ब्र. नाना प्रमुख थे। प्रतिष्ठा कराने वाले थे प्रागवाट जातीय··· ·········राणीसुत जोगदास।[3]

यद्यपि भट्टारक सोमकीर्ति का काल मुस्लिम काल था जिसमे मन्दिर एव मूर्ति को तोडना जिहाद समझा जाता था लेकिन सोमकीर्ति का अपना प्रभाव था। वे श्रावको के लिये रक्षक का कार्य करते थे तथा धार्मिक विधि विधानो को बडे ठाट से सम्पन्न कराया करते थे। सवत् १५३६ मे इन्होने दो प्रतिष्ठाओ को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। सर्व प्रथम बैशाख सुदी १० बुधवार को चतुर्विशति तीर्थंकर प्रतिमा की प्रतिष्ठा करायी इसमे प्रतिष्ठाकारक थे हूबड जातीय वध गोत्र वाले गांधी भूपा भार्या राज सुत गाधीमना। मनागाधी की धर्मपत्नी का नाम काऊ था तथा पुत्र एव पुत्र वधु का नाम रुडा एव लाडिकी था। वर्तमान मे चौबीसी की प्रतिमा जयपुर के पाण्डे लूणकरण जी के मन्दिर मे विराजमान है। जयपुर के पहिले यह प्रतिमा सभवत आमेर मे होगी। इससे यह पता चलता है कि बागड प्रदेश मे सम्पन्न इस प्रतिष्ठा मे आमेर, सागानेर के जैन बन्धु भी सम्मिलित हुए थे। इस प्रतिष्ठा मे भी भट्टारक सोमकीर्ति के प्रमुख शिष्य आचार्य वीरसेन साथ थे। इसी वर्ष दूसरी प्रतिष्ठा माघसुदी १५ गुरुवार को नरसिह जातीय सापडिया

१. सवत् १५३३ वर्षे फागुण शुक्ला ७ बुधे श्री काष्ठासघे नद्याम्नाये भ भीमसेन तत्पट्टे भ श्री सोमकीर्ति प्रणमति।

२. सवत १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ५ रवौ काष्ठासघे नदीतट गच्छे भ श्री भीमसेन तत्पट्टे सोमकीर्ति आचार्य श्री वीरसेनसूरी युक्त प्रतिष्ठित नरसिह जातीय बोरडेक गोत्रे चापा भार्या परगू। भट्टारक सम्प्रदाय - पृष्ठ २६५

३ सवत् १५३५ वर्षे माघसुदी ५ गुरौ श्री काष्ठासघे नदितट गच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री भीमसेन तत्पट्टे भ श्री सोमकीर्ति शिष्य आचार्य श्री वीरसेन युक्तैः प्रतिष्ठित अहमदाबाद वास्तव्ये श्री प्राग्वाट जातीय·· ··· ·· राणी सुत जोगदासेन आचार्य श्री वीरसेन।

गोत्र वाले साह खेभारा झाझू के पुत्र सीवा ने सम्पन्न करायी थी। नरसिंहपुरा जाति प्रतापगढ की ओर रहती है। इसलिए सोमकीर्ति ने उधर ही किसी स्थान पर यह प्रतिष्ठा सम्पन्न करायी होगी। इस प्रतिष्ठा मे उनके शिष्य वीरसेन प्रमुख थे। चौबीसी की एक प्रतिमा जयपुर के ही चौधरियो के मन्दिर मे विराजमान है। चौबीसी मे श्रेयान्स नाथ स्वामी की मूलनायक प्रतिमा है।[5]

प्रतिष्ठाओ का यह क्रम बराबर चलता रहा। भट्टारक सोमकीर्ति ने अपने जीवन में कितनी प्रतिष्ठाए सम्पन्न करायी इसकी निश्चित सख्या बतलाना तो कठिन है क्योंकि राजस्थान के अभी सैकडो मदिर ऐसे हैं जिनके मूर्ति लेखो पर कार्य नही हो सका है लेकिन इतना अवश्य है कि अपने २५ वर्ष के भट्टारक काल मे सोमकीर्ति ने ५० से अधिक पचकल्याणक प्रतिष्ठाए सम्पन्न करायी होगी। अन्तिम प्रतिष्ठा जिसका हमे उल्लेख मिला है वह है सवत् १५४० की बैशाख बुदी १० के शुभ दिन की प्रतिष्ठा जिसको नरसिंहपुरा जातीय मोकलवाड सा महिपा एव उसके परिवार के सदस्यो ने सम्पन्न करायी थी। इस प्रतिष्ठा मे प्रतिष्ठित भगवान सभवनाथ की एक प्रतिमा उदयपुर के दि जैन मन्दिर सभवनाथ मे विराजमान है। ऐसा मालुम होता है कि इस मदिर का नामकरण इसी प्रतिष्ठा के साथ जुडा हुआ है।

विहार—

भट्टारक सोमकीर्ति कभी एक स्थान पर जम के नही रहे। उनका अधिकाश समय एक नगर से दूसरे नगर मे विहार करने मे ही समाप्त हुआ। राजस्थान एव गुजरात प्रदेश के ग्राम एव नगर उनके विहार के प्रमुख स्थान थे। कभी वे विधान सम्पन्न कराने जाते तो कभी प्रवचन के लिये उन्हे जाना पडता। कभी समाज पर आने वाली विपत्तियो को निवारणार्थ वे जाते तो कभी अपनी कृतियो के विमोचन समारोह मे सम्मिलित होते। उनके विशाल व्यक्तित्व के सहारे समाज अपने आपको आश्वस्त मानता था। 'सोझित्रा' नगर उनका प्रमुख केन्द्र था। यहा उनकी गादी थी और पट्टाभिषेक हुआ था। मारवाड का गुढली नगर भी उनकी गतिविधियो का केन्द्र था। वहा शीतलनाथ स्वामी का मदिर था जिसमे उनकी भट्टारक गादी थी। यशोधर

---

१ सवत् १५३६ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ श्री काष्ठासघे नदितटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री भीमसेन तत्पट्टे भट्टारक श्री सोमकीर्ति शिष्य आचार्य श्री वीरसेन युक्तैः प्रतिष्ठित नरसिंह जातीय सापडिया गोत्रे सा षेभारा भांझू पुत्र लीबा भार्या लाडी पुत्र ४ मोडण रणधीर शिवादेवा सा शिवा श्री श्रेयान्स नित्य प्रणमति।

रास एवं यशोधर चरित्र दोनो को उन्होंने उसी नगर एवं मन्दिर मे समाज किया था।

स्वागत

आचार्य सोमकीर्ति का जब विहार होता तो समाज मे आनन्द का वातावरण छा जाता। हजारो स्त्री-पुरुष नगर के बाहर उनके स्वागत के लिए एकत्रित होते और बडे समारोह पूर्वक उनको अपने यहा ले जाते। विविध वाद्य यत्र बजाये जाते और बधावा गाये जाते। स्त्रिया कलश लेकर उनका स्वागत करती। उनकी आरती उतारी जाती। इस प्रकार सोमकीर्ति का विहार समाज मे एक नये उत्साह को लेकर आता।

व्यक्तित्व

वे स्वय विशाल व्यक्तित्व के धनी थे। उनके दर्शन मात्र से ही विरोधियो का मद गल जाता। जब वे प्रवचन करते तो श्रोताओ को अध्यात्म रस मे डुबो देते। कथाओ के माध्यम से अपनी बात कहते तो लोगो को अर्हद पूजा, दर्शन एव स्तवन का महात्म्य बतलाते। जीवन को सप्त व्यसनो से रहित बनाने पर जोर देते। भट्टारक रामसेन एव भट्टारक भीमसेन दोनो का ही उन्हे आशीर्वाद प्राप्त था। वे सस्कृत, प्राकृत, गुजराती, राजस्थानी एव हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान थे। वे वक्ता एव लेखक दोनो ही थे। एक ओर वे सस्कृत मे काव्य रचनाए करते तो वही राजस्थानी मे उससे भी अधिक काव्य कृतिया लिखना उनके लिए बहुत सरल कार्य था। वे किसी भी क्षेत्र मे अपने आपको योग्यतम सिद्ध करते। यही कारण है कि तत्कालीन मुस्लिम शासक भी उनका पूर्ण सम्मान करते थे और उनका गुणानुवाद करते। समाज पर उनका वर्चस्व स्थापित था इसलिए जो भी कार्य चाहते उसे वे सरलता से सम्पन्न करा देते।

कृतित्व—

आचार्य सोमकीर्ति सस्कृत एव राजस्थानी दोनो के ही प्रकाण्ड विद्वान एव लेखनी के धनी थे इसलिए दोनो ही भाषाओ मे उन्होने रचनाये निबद्ध की है। उनकी सस्कृत एव राजस्थानी कृतियो के नाम निम्न प्रकार है—

सस्कृत रचनाए

१ सप्तव्यसन कथा समुच्चय
१ प्रद्युम्न चरित्र
३ यशोधर चरित्र।

४ अष्टान्हिका व्रत कथा ।
५ समवसरण पूजा ।

राजस्थानी रचनाएं

१ यशोधर रास ।
२ गुरु नामावली ।
३. रिषभनाथ की धूल ।
४ त्रेपन क्रिया गीत ।
५ आदिनाथ विनती ।
६ मल्लिगीत ।
७ चिन्तामणी पार्श्वनाथ जयमाल ।

सोमकीर्ति की सस्कृत रचनाओ का सामान्य परिचय निम्न प्रकार है—

१ सप्तव्यसन कथा समुच्चय

यह कथा साहित्य की अच्छी कृति है। कथा समुच्चय मे सात व्यसनो के आधार पर सात कथाए दी हुई है। सात व्यसनो मे जुआ खेलना, चोरी करना, शिकार खेलना, वेश्या सेवन, परस्त्री सेवन, मद्यपान, एव मास खाने को गिनाया गया है। इसमे सात सर्ग हैं। पूरी कृति दो हजार सडसठ श्लोको मे बनाकर समाप्त की गयी है। कथा समुच्चय भट्टारक रामसेन की कृपा मे रचित ग्रन्थ है। कवि ने इसे सवत् १५२६ मे समाप्त किया था। सभवत कवि की यह सस्कृत मे निबद्ध प्रथम रचना है। राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो मे सप्तव्यसनकथा की पचासो प्रतिया मिलती है जो इसकी लोकप्रियता की ओर सकेत करती हैं। सबसे प्राचीन प्रति डूंगरपुर के शास्त्र भण्डार मे हैं जो सवत् १६०५ की लिखीहुई है।[1] कथा समुच्चय का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

नन्दीतटाके विदिते हि सघे श्रीरामसेनस्य पदप्रसादत् ।
विनिर्मितो मदधिया ममायं विस्तारणीयो भुवि साधुसघैः ।।६६।।

यो वा पठति विमृश्यति भव्योपि (सु) भवनायुक्तः ।
लभते स सौख्यमनिशं ग्रन्थ (श्री) सोमकीर्तिनारचितं ।।७०।।

---

१ राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्रन्थ सूची भाग पञ्चम-पृष्ठ संख्या ४६२ ।

रसनयनसमेते बाणयुक्तेन चन्द्रे (१५२६)
गतवति सति नूनं विक्रमस्यव काले ।
प्रतिपदि धवलायां माघ-मासस्य सोमे ।
हरिभदिनमनोज्ञे निर्मितो ग्रन्थ एषः ।।७१।।

सहस्रद्वयसंख्योऽय सप्तषष्ठिसमन्वित (२०६७) ।
सप्तैव व्यसनाद्यश्च कथासमुच्चयो ततः ।।७२।।

यावत्सुदर्शनो मेरुर्यावच्च सागराधरा ।
तावन्नन्दत्वय लोके ग्रन्थो भव्यजनाश्रितः ।।७३।।

इति श्री इत्यार्षे भट्टारक-श्री धर्मसेनाभ श्री भीमसेन देवशिष्य-आचार्य सोमकीर्ति -विरचिते सप्तव्यसनकथासमुच्चये परस्त्रीव्यसनफलवर्णनो नाम सप्तम सर्ग । इति सप्तव्यसनचरित्रकथा सपूर्णा ।

२ प्रद्युम्न चरित्र

प्रद्युम्न का जीवन चरित्र जैन कवियो के लिये बहुचर्चित रहा है । अब तक अपभ्रंश, सस्कृत, राजस्थानी एव हिन्दी भाषा मे २५ कवियो के प्रद्युम्न चरितो का पता लगाया जा चुका है [1] इस काव्य मे श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के जीवन का वर्णन किया गया है । प्रद्युम्न की माता रुक्मणी थी । प्रद्युम्न की गिनती पुण्य पुरुषो मे की जाती है । प्रस्तुत प्रद्युम्न चरित्र १६ सर्गों म विभक्त है जिसका रचनाकाल सवत् १५३१ पौष बुदी १३ बुधवार है । यह काव्य कवि ने अपने गुरु भट्टारक भीमसेन के प्रसाद से लिखा था ।

श्री भीमसेनस्य पदप्रसादत् सोमादिसत्कीर्तियुतेन भूमौ ।
रम्य चरित्रं वितत स्वभक्त्या सशोध्य भव्यै. पठनीयमेतत ।।१६८।।

संवत्सरे सत्तिथिसज्ञके वै वर्षेऽत्र त्रिशैकयुते (१५३१) पवित्रे ।
विनिर्मित पौषसुदेश्च तस्यां त्रयोदशी या बुधवारयुक्ता ।।१६६।।

३ यशोधर चरित

भट्टारक सोमकीर्ति ने यशोधर के जीवन पर सस्कृत एव हिन्दी दोनो मे

---

१ देखिये—प्रद्युम्न चरित की प्रस्तावना पृष्ठ—१३ ।
साहित्य शोध विभाग श्री दि जैन अ क्षेत्र श्रीमहावीरजी की ओर से प्रकाशित ।

रचनायें निबद्ध की हैं। इससे पता चलता है कि यशोधर की कथा उस समय बहुत ही लोकप्रिय थी। प्रस्तुत यशोधर चरित्र आठ सर्गों में विभक्त काव्य है जिसका रचना काल सवत् १५३६ है। इसकी रचना कवि ने गोढिल्ल मेदपाट (मेवाड) के भगवान शीतलनाथ के सुरम्य मन्दिर मे की थी। कवि ने इसको निम्न प्रकार लिखा है:—

नन्दीतटाख्यगच्छे वंशे श्री रामसेनदेवस्य।
जातो गुणार्णवैकश्च (वश्चैक) श्री मांश्च (मान्) श्रीभीमसेनेति ॥६१॥

निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधरसंज्ञकं।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याऽधीयतां बुधा ॥६१॥

वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथि पहगणनायुक्तसंवत्सरे (१५३६) वै।
पंचम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तरास्थे ही चन्द्रे।
गोंढिल्या मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये।
सोमादिकीर्तिनेदं नृपवरचरितं निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥६२॥

कवि की अष्टाह्निकाव्रत कथा एव समवसरण पूजा लघु रचनाए हैं तथा कथा एव पूजा विषयक हैं।

राजस्थानी कृतिया

भट्टारक सोमकीर्ति की राजस्थानी भाषा मे निबद्ध सात रचनाओ की खोज की की जा चुकी है। लेकिन राजस्थान एव गुजरात के अभी कुछ ग्रन्थ-भण्डारो का सूचीकरण होना शेष है इसलिए सभव है कवि की और भी कृतियो की उपलब्धि हो सके। फिर भी जो कृतिया उपलब्ध हो चुकी है वे कवि की राजस्थानी भाषा पर अगाध विद्वत्ता की द्योतक है। सोमकीर्ति के पास सस्कृत एव हिन्दी जानने वाले दोनो ही तरह की समाज आती थी इसलिए उन्होने दोनों ही भाषाओ मे काव्य रचना करना श्रेयस्कर समझा। वैसे उस युग मे इस तरह की परम्परा भट्टारक सकलकीर्तिने डाली थी और उसका अनुकरण किया महाकवि ब्रह्म जिनदास, भट्टारक ज्ञानभूषण एव भट्टारक शुभचन्द्र ने। सोमकीर्ति ने भी अपने पूर्ववर्ती मूलसघ मे होने वाले भट्टारको का अनुसरण किया और अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की।

कवि द्वारा राजस्थानी भाषा मे निबद्ध सात रचनाओ मे यशोधर रास सबसे बड़ी कृति है। इस काव्य का रचना काल नही दिया हुआ है। हाँ रचना स्थान का अवश्य उल्लेख किया हुआ है जो मेवाड का गुढली नगर है। जहा आपने

संवत् १५३६ मे सस्कृत में यशोधर चरित्र की रचना की थी इसलिये यह सम्भव है कि इस काव्य की रचना भी सवत् १५३६ के आसपास ही हुई होगी ।

१. यशोधर रास

राजा यशोधर का जीवन जैन साहित्यकारो के लिए अत्यधिक रुचिकर रहा है। प्राकृत सस्कृत, अपभ्र श, राजस्थानी एव हिन्दी सभी भाषा के कवियो ने यशोधर के जीवन पर खूब लिखा है । महाकाव्य, चम्पूकाव्य, खण्ड काव्य, रास काव्य, चौपईबन्ध काव्य, वेलि, फागु एव चरित नामान्तक सभी तरह के काव्य मिलते हैं । यशोधर के जीवन ने श्रावक समाज को इतना अधिक प्रभावित किया कि जब तक कोई कवि यशोधर के जीवन पर कलम नही चला ले तब तक उसे कवियो की कोटि मे स्थान मिलना कठिन है । यही कारण है कि अपभ्र श के महाकवि पुष्पदन्त ने भी जसहरचरिउ छन्दोबद्ध किया तथा आचार्य सोमदेव ने सस्कृत मे यशस्तिलक चम्पू लिखकर विद्वानो के समक्ष प्रस्तुत किया । हिन्दी, राजस्थानी मे तो बीसो यशोधर चरित लिखे गये हैं जिनमे ब्रह्म जिनदास का यशोधर रास विशेषत उल्लेखनीय है । आचार्य सोमकीर्ति तो यशोधर के जीवन वृत्त से इतना अधिक प्रभावित थे कि उन्होने पहले सस्कृत मे यशोधर चरित्र एव फिर राजस्थानी मे यशोधर रास की रचना करके जैन कवियो के समक्ष एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया ।

रचना काल एवं स्थान

राजस्थानी भाषा मे इस रास काव्य को आचार्य सोमकीर्ति ने गुढली नगर में शीतलनाथ स्वामी के मन्दिर मे कार्तिक बुदी प्रतिपदा बुधवार के शुभ दिन समाप्त करके जन-जन के समक्ष स्वाध्याय के लिए प्रस्तुत किया ।[1] कवि ने रास काव्य के समाप्ति काल का महिना, वार एव स्थान तो दिया है लेकिन सवत् का उल्लेख नही किया । कवि ने सस्कृत के यशोधर चरित्र की रचना सवत् १५३६ पौष बुद्धि पचमी रविवार को समाप्त की थी । रचना स्थान दोनो का समान हैं अर्थात् सस्कृत काव्य को भी गुढली नगर एव शीतल नाथ स्वामी के मन्दिर मे ही लिखा गया था । सस्कृत भाषा मे कवि ने काव्य की रचना को अधिक प्राथमिकता

---

१ कातीए उजली पाखि पडिवा बुधवार कीउ ए ।
सीतलूए नाथ प्रासादि गुढली नगर सोहामणु ए ।
रिधि वृद्धिए श्री पास पोसाउ हो जो निवि श्री सघह घरिए ।
श्री गुरुए चरण पसाउ श्री सोमकीरति सूरि भण्यू ए ।।

दी थी इसलिए ऐसा लगता है कि संस्कृत मे यशोधर चरित्र की रचना करने के पश्चात् राजस्थानी में यशोधर रास की रचना की थी। इस आधार पर रास की रचना संवत् १५३६ के बाद की मानी जा सकती है।

यशोधर रास को कवि ने सर्गों एवं अध्यायो में विभक्त, नहीं करके ढालो मे विभक्त किया है। जिनकी संख्या १० है। इससे दो प्रयोजन सिद्ध हो गये। एक तो काव्य मे १० प्रमुख छन्दो—रागो में निबद्ध करना तथा दूसरा ढालों के माध्यम से अध्यायों मे विभक्त करना। हिन्दी के अधिकांश जैन कवियो ने इसी परम्परा को अपनाया है। कवि ने ढाल के अन्त मे वस्तुबन्ध छन्द का प्रयोग किया जो ढाल समाप्ति का सूचक माना जाता है।

कवि ने रास का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया है जिसमे पच परमेष्ठियों को नमस्कार करने के पश्चात् यशोधर रास रचने का सकल्प व्यक्त किया गया है।

कथा सार

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे यौध देश था। वहां राजपुर नगर एवं मारदत्त उसका राजा था। जो सुन्दरता मे तथा दान देने मे इन्द्र के समान लगता था। वह छह दर्शन के सिद्धातो पर विचार करता लेकिन कौनसा दर्शन तारने वाले तथा कौनसा डुबाने वाला है इसको वह नही जानता था। उसी नगर के दक्षिण दिशा की ओर देवी का मठ था। जहा देश विदेश के स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ आते थे। देवी का नाम चण्डमारि था। उसका रूप कज्जल के समान काला था। भक्तगण आसोज, एव चैत्रमास मे, नवरात्रा मे उसकी विशेष पूजा करते थे। लोग पशु पक्षियो को लेकर आते थे।

जब चैत्र मास आया सभी पेड पौधे पल्लवित एव पुष्पित हो गये। तभी वहा एक जोगी आया। उसके वहा कितने ही शिष्य शिष्याए बन गये। मूर्ख लोगो को वह कितनी ही तरह से बहकाने लगा तथा कहने लगा उसको राम, लक्ष्मण, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि दिखायी देते हैं। यह सुनकर राजा ने भी उसे दरबार मे बुलाया। जोगी अपने सात शिष्यो के साथ वहा आया। राजा ने सम्मान पूर्वक उसे आसन दिया। परस्पर मे चर्चा हुई और उस जोगी ने कहा कि वह मोहनी, वशीकरण एव स्तम्भन मन्त्र जानता है, आकाश गामिनी विद्या जानता है, यही नही सभी रसायन मन्त्र तन्त्र का वह ज्ञाता है। राजा उसकी बात सुनकर बडा प्रसन्न हुआ। और उससे आकाश गामिनी विद्या देने की प्रार्थना की। जोगी ने उसे आशीर्वाद दिया और अपना शिष्य घोषित कर दिया तथा कहा कि चण्डमारी देवी के आगे जितने भी जलचर, थलचर एव नभचर जीव हैं उनके युगल लाये जावें। इतना सुनते ही राजा ने अपने सेवकों द्वारा सैकडो जीवों के युगल देवी के मन्दिर मे लाकर

एकत्रित कर दिये इसमें हरिण, रोझ, हाथी, घोड़े, बकरी, भैंस, गाय, बैल, बगुला, सारस चकवा आदि न जाने कितने जीव थे। राजा मन्दिर मे गया और सिंहासन पर बैठ गया। वहा आने पर जोगी ने राजा से कहा कि वह बत्तीस लक्षण युक्त नर युगल का अपने हाथो से बलिदान कर सके तो उसे उसी क्षण देवी की कृपा से आकाशगामिनी विद्या सिद्ध हो जायेगी। राजा ने फिर अपने सेवकों को चारों ओर भेजा।

तीन दिन पूर्व ही दिगम्बर मुनि सुदत्ताचार्य का सघ वहां आया था और वन में ठहर गया था। मुनि के प्रभाव व वह जगल सघन हो गया। फूल खिल गये और कोयल मधुर गान गाने लगी। इसको देखकर वह मुनि ध्यान के लिये श्मशान मे चले गये। श्मशान का विभीत्सता देखते ही डर लगता था। स्थान स्थान पर अस्थियो के ढेर लगे हुए थे। लेकिन मुनि प्रासुक भूमि देखकर वही ध्यानस्थ हो गये। उस दिन चैत्र सुदि अष्टमी थी इसलिए उपवास ले लिया। इतने मे ही एक क्षुल्लक एव एक क्षुल्लिका गुरु के पास आये और दोनो प्रोषधोपवास व्रत लेने की प्रार्थना करने लगे। मुनि ने उनकी लघु आयु देखकर नगर मे जाकर आहार लेने के लिए कहा। वे दोनो आहार के लिये नगर की ओर चल दिये।

राजा के सेवक भी ऐसे ही नर युगल की तलाश मे थे। वे दोनो को देखते ही प्रसन्न हो गये और उनको चण्डमारी देवी के मठ मे ले गये। राजा ने उन दोनो को देखकर प्रसन्नना व्यक्त की लेकिन उनके सलोने रूप को देखकर आश्चर्य प्रगट किया और क्रोधित होकर अपनी तलवार सम्हालने लगा। लेकिन जैसे ही दोनो क्षुल्लिक, क्षुल्लिका युगल ने राजा को शुभाशीर्वाद दिया, उसके यश की कामना की तथा करोड वर्ष तक जीने का आशीर्वाद दिया इससे राजा का क्रोध कम हुआ। उन दोनो के रूप को देखकर वह दग रह गया और इतनी छोटी उम्र मे साधुवेष अपनाने का कारण जानना चाहा लेकिन क्षुल्लक ने कहा कि वह जानकर क्या करेगा। वह तो पाप बुद्धि मे फसा हुआ है। उसके हाथ मे तलवार है। ससार को पाने की उसकी इच्छा है। लेकिन राजा ने उससे फिर निवेदन किया। राजा की प्रार्थना को सुनकर क्षुल्लिक ने अपने जीवन का इतिवृत्त कहना प्रारम्भ किया।

उज्जयिनी का राजा यशोध था। चद्रमती उसकी रानी थी। दोनो ही सुन्दरता की मूर्ति, सम्यक्त्वी एव श्रावक धर्म को पालने वाले। जब चन्द्रमती के पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ तो उसका नाम यशोधर रखा गया। नगर मे विभिन्न उत्सव किये गये। पाच वर्ष का होने पर उसे उपाध्याय के पास पढने भेजा गया।

तथा वहां उसने सभी विद्याओं में पारगता प्राप्त की। काव्य, अलंकार, तर्कशास्त्र, सिद्धांत, नाटक, ज्योतिष, वैद्यक, आदि सभी शास्त्रों का अध्ययन किया। यही नहीं संगीत, नृत्य आदि मे प्रवीणता प्राप्त की। उपाध्याय को इस उपलक्ष मे एक लाख दीनार भेंट की तथा अपना पूरा आभूषण उतार करके दिया। यौवन प्राप्त करते ही विवाह के प्रस्ताव आने लगे। एक दिन कैशक राजा के यहां से विवाह का प्रस्ताव लेकर एक दूत आया। राजा ने विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तथा अपने पुत्र का विवाह कर दिया। विवाह के उपलक्ष मे नगर को सजाया गया। बिन्दोरिया निकाली गयी। तेल चढाया गया। तथा गीत गाये गये। उद्यान मे जाकर विवाह किया गया। जब वधु का रूप देखा गया तो सभी प्रसन्न हो गये। वधु को लेकर राजमहल मे गये और सब सुख से रहने लगे। बहुत वर्षों तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् राजा यशोध अपने पुत्र यशोधर को राज्य देकर स्वय ने जिन दीक्षा धारण करली।

यशोधर एव रानी यशोवती राज्य करने लगे। जीवन आनन्द से बीतने लगा। एक तो योवन, फिर सुन्दरता, राज्य वैभव एव परस्पर मे घना प्रेम, सब कुछ दोनो के पास था। इसलिए वैभव मे दिन व्यतीत होने लगे। एक रात्रि को जब राजा-रानी एक पलग पर सो रहे थे। अर्धरात्रि का समय आते ही रानी अपने पलग से उठी और पूरे आभूषण पहिन कर महलो से नीचे चलने लगी। राजा को जब जाग हुई तो वह भी तलवार लेकर रानी के पीछे-पीछे चलने लगा। राजा ने देखा कि रति के समान रानी एक कोढी के पास गयी तथा उसके चरण पकड कर जगाने लगी। कोढी के हाथ-पाँव गल गये थे। शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी। उस कोढी ने रानी को देर से आने पर उसे खूब मारा लेकिन रानी ने ऊफ भी नही कहा और देर से आने के लिए क्षमा मागने लगी। राजा ने जब यह सब अपनी आखो से देखा तो क्रोधित होकर उसे तलवार से मारने लगा लेकिन फिर सम्भल गया। और वापिस अपने महल मे जाकर सो गया। जिस रानी के साथ जीवन बिताने मे राजा को आनन्दानुभूति होती थी अब उसे वह जहर के समान लगने लगी।

प्रातः काल होने पर जब उसकी माता जिन पूजा आदि से निवृत होकर राजमहल मे आयी तो राजा ने रात्रि स्वप्न की बात कही तथा स्वप्न की भयकरता को देखते उसने वैराग्य लेने की इच्छा प्रगट की। लेकिन माता ने उसे कायरता बतलाया तथा कहा कि कुलदेवी के आगे बलि चढ़ाने से सारे उपद्रव दूर हो सकते हैं। लेकिन यशोधर ने किसी भी जीव की बलि देने से साफ इन्कार कर दिया। माता

ने उसे पुनः समझाया तथा जगत मे जीवो के जन्म मरण की बात कही लेकिन यशोधर ने एक भी नहीं सुनी। अन्त मे आटे का कुकुडा बनाकर देवी के मन्दिर में गया और देवी के आगे उसे मार दिया और इस प्रकार हिंसा का बन्ध कर लिया।

जब रानी को राजा के दीक्षा लेने की बात मालूम पड़ी तो वह शीघ्र राजा के पास गयी। कहने लगी कि एक बार उसके हाथ का प्रिय भोजन करके वैराग्य लेना वह भी उन्ही के साथ तपस्विनी बन जावेगी। तथा 'तप करसा दोउं' इस प्रकार अपनी मार्मिक रीति से भावना व्यक्त की। राजा ने रानी की बात मानली। राजा जिन पूजा के पश्चात् रानी के महल मे गया। रानी ने सोने के थालो मे राजा के लिए भोजन परोसा। विविध प्रकार के व्यञ्जन परोसे गये लेकिन उनमे विष मिला दिया गया। तभी रानी ने कहा कि एक आवश्यक कार्यवश उसे अपने पीहर जाना है। सात दिन बाद वापिस आजावेगी। रानी ने दो विष मोदक बनाये। एक माता के लिये और एक राजा के लिए। दोनों को विष के लड्डू खिला दिये। माता चन्द्रावती तो तत्काल ही मर गयी और राजा भी वैद्य-वैद्य करता मर गया। रानी ने फिर त्रिया चरित्र दिखलाया।

इम चोंती हा हा करी छोडीय केश कलाप।
मूरछ मसि उपरि पडी होयडलि आणीय पाप।।

दोनो का दाह सस्कार किया गया। ब्राह्मणो को दान दिया गया। इसके पश्चात् राजा यशोधर एव माता चन्द्रमती के भवो का क्रम प्रारम्भ होता है—

राजा यशोधर मर कर स्वान हुआ और चन्द्रमती मोर हुई। एक शिकारी ने उस स्वान को पकड लिया और उज्जैनी नगरी मे आकर राजा के पास ले गया राजा ने स्वान को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की तथा कुत्ते को सोने की जजीर से बाध दिया। एक दिन कुत्ते ने रानी को कुबडे के साथ कुकर्म करते हुए देख लिया। देखते ही कुत्ते को जाति स्मरण हो गया। वह अत्यधिक क्रोधित होकर तथा सांकल को तोड कर मोर का गला पकड लिया। राजा ने तत्काल श्वान को मार दिया। मोर भी मर गया। मोर मर कर काला साप हुआ तथा स्वान सेहलु हुई। दोनो ने जब एक दूसरे को देखा तो फिर लड मरे और दोनो ही मर गये। अगले भव मे सेहलु मर कर बडा मगर हुई तथा साप रोही हो गया। एक दिन राजा की दासी उस तलाब पर नहा रही थी तभी उस मगर ने दासी को पकड़ लिया और जब राजा को खबर लगी तो उसने धीवर से मगर को पकड़ने का आदेश दिया। रोही ने जाल डाल कर उसे पकड़ लिया और उसे खूब मारा गया। अत मे वह मर

कर बकरी हुई। दोनों मर कर बकरा हुआ। जब वह बकरा दूध पीने लगा तो उसे देखकर बड़ा क्रोध आया और उसे मार डाला गया। लेकिन वह फिर बकरा हो गया। बकरा मर कर पुनः भैंसा हो गया। जिस को भरदत्त बरगजारा भार लादने का काम लेने लगा। उसके पश्चात् वे दोनों मर कर मुर्गा मुर्गी की योनि में पैदा हुए। उस मुर्गा मुर्गी ने मुनिराज से व्रत लिये। लेकिन राजा उनके बोलने से अप्रसन्न हो गया इसलिये दोनों को शब्दबेधी बाण से मार दिया। वे दोनों फिर रानी के गर्भ मे आकर पुत्र-पुत्री हुए, जिनका नाम अभयरुचि एवं अभयमति रखा गया।

एक दिन राजा यशोमति बसत ऋतु आने पर अपनी रानी के साथ बन भ्रमण को गया। उसी बन मे सुदत्त मुनि ध्यानस्थ थे। मुनि को देखकर वे भी उनके पास जाकर बैठ गये और अपने पूर्व भवों का वृतान्त जानने की इच्छा प्रकट करने लगे। मुनि ने जगत की असारता, पापों की भयानकता एवं अहिंसा धर्म पालन की महत्ता बतलाई साथ ही आटे के कुकुट युगल को मारने की भाव हिंसा करने से यशोधर को कितने भवो तक जन्म धारण करके दुःख सहन करने पड़े इस बारे मे विस्तार से कहा।

एक दिन वह शिकारियों को साथ लेकर बन में गया। वहा ध्यानस्थ मुनि को देखकर क्रोधित हो गया तथा मुनि के ऊपर जंगली कुत्ते छोड़ दिये। उधर से एक कल्याण नामक बणजारा अपने बैलों के साथ जा रहा था। जब उसने मुनि को ध्यानस्थ देखा तथा उस पर राजा द्वारा छोड़े हुए कुत्ते को देखा तो उसने राजा से मुनि महात्म्य के बारे मे कहा। तो राजा ने मुनि के शरीर की ओर सकेत करते हुए कहा कि जो कभी स्नान नही करता, दात साफ नही करता वह कैसे पवित्र हो सकता है। बणजारे ने इसके पश्चात् विस्तार से मुनि जीवन की विशेषताए बतलायी तथा कहा कि "मुनिवर सदा पवित्र मगल परमए जाण जे।" साथ मे यह भी कहा कि ये मुनि कलिंग राजा सुदत्त हैं। कल्याण बणजारा मुनि के चरणो के समीप बैठ गया। मुनि के वचनो के प्रभाव से राजा को भी वैराग्य हो गया। जब उसके दो पुत्रों को राजा के वैराग्य की मालूम पड़ी तो तो उन दोनों ने भी वैराग्य धारण कर लिया और वे अभयरुचि एव अभयमति के रूप में सामने हैं। कल्याण ने भी जिन दीक्षा धारण करली।

मुनि सुदत्ताचार्य ने कषायो, लेश्याओं की उग्रता, नरक योनि के दुःख के बारे में विस्तार से बतलाया तथा जिन पूजा, पात्र-दान, णमोकार मन्त्र का जाप, सत्य भाषण, आदि की जीवन में उपयोगिता के बारे में बतलाया।

बारह प्रकार के व्रतो, दश धर्मों, अष्टमूलगुणो पर विस्तृत प्रकाश डाला और उन्हें जीवन मे उतारने पर जोर दिया। राजा मारिदत्त यशोधर के पूर्व भवों की कथा को सुनकर जगत से भयभीत हो गया और क्षुल्लक क्षुल्लिका के पाँव पड़ गया। उधर सुदत्ताचार्य भी वहां आ गये। अभयरुचि ने उनसे राजा को दीक्षा देने के लिये निवेदन किया। मारिदत्त ने मुनि दीक्षा लेकर स्वर्ग प्राप्त किया। योगी ने भी हिंसावृत्ति को छोड कर जिनदीक्षा धारण कर ली। देवी के मन्दिर को स्वच्छ कर दिया गया और जीव हिंसा सदा के लिये बन्द हो गयी। अभयरुचि एव अभयमति तपस्या करते हुए मर कर स्वर्ग मे इन्द्र प्रतीत हुए। बरणजारा कल्याण ने भी जिन दीक्षा धारण कर स्वर्ग प्राप्त किया। इस प्रकार यशोधर रास मे सूक्ष्म हिंसा से भी कितने भवो तक कष्ट सहने पडते हैं, इसका विस्तृत वर्णन किया है। इस रास काव्य को जो पढ़ता है अथवा सुनता है उसे अपूर्व पुण्य की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार का यशोधर रास के कथानक को कवि ने बहुत ही सीधी सादी एव तत्कालीन बोलचाल की भाषा मे निबद्ध किया है। कवि ने काव्य के मूल कथानक मे यद्यपि कोई परिवर्तन नही किया है किन्तु अपने काव्य को लोकप्रिय बनाने के लिये उसके वर्णन मे नवीनता लाने का अवश्य प्रयास किया है। उसमे सामाजिक पुट स्थान स्थान पर मिलता है तथा तत्कालीन जन भावनाओं की अभिव्यक्ति भी मिलती हैं। प्रकृति वर्णन, नगर वर्णन, शासन वर्णन आदि भी स्थान स्थान पर मिलते हैं। उस समय की अध्ययन अध्यापन स्थिति का भी काव्य से पता लगाया जा सकता है साथ ही मे राजा एव प्रजा के सम्बन्धो पर भी कहीं कहीं प्रकाश डाला गया है। काव्य के अन्त मे हिंसा से मुक्ति पाने के लिये उसके अवगुणो का विस्तृत वर्णन मिलता है तथा जीवो की स्थिति, उत्पत्ति, एव विविध योनियो का अच्छा वर्णन किया गया है।

कवि ने श्मशान एव देवी मडप की विभित्सता का बहुत अच्छा वर्णन किया है जिसे पढते ही मन मे ग्लानि होने लगती है। राजपुर के श्मशान का चित्र प्रस्तुत करते हुए कवि ने लिखा है—

ठामि ठामि सब तरणीय गंधि अति अस्थि असंख।
काक सेह सीयाल स्वान सिहा आवि पंख ।। २६ ।।

इसी तरह देवी के मठ का वर्णन देखिये—

देवीय मंडप विचतु दीठउ, सुन तणु भय मन माहि मिठउ
ठामि ठामि बीहामणए ।। ३१ ।।

अस्थि तणा की ही डूंगर दीसि
अस्थि सिघासणि जोगी बइसि
अस्थि दंड ले कर लेइए ।। ३२ ।।

अमिष तणा ढगला अति पुरण ।
अमिष ठाम दीसिह्नि अति घरण ।
अमिष मर्या पक्षी चुरिणए ।। ३३ ।।

लेकिन जब प्राकृतिक छटा का वर्णन करने लगता है तो कवि उसमें भी जीवन डाल देता है—

कोइल करइ टहूक भमरा रुण झुण ध्वनि करि रे
सखी फूल्या केसु फूल सहकारे मांजिर घणी रे ।[1]

इसी तरह उसने क्षुल्लिक क्षुल्लिका के सन्दौर्य का वर्णन किया है—

कइ इन्द्र इन्द्राणी बेहू ।
यस कीरति धुरि आवि बेहू ।
चन्दा रोहिणी सुं मिलिए ।। ४३ ।।

सूरयरना देव सरीसु मारखल ।
रूपन हुइ ईसु ।
कामि सहित सुं रति हुइए ।। ४४ ।।

सामाजिक स्थिति मे कवि ने तत्कालीन विवाह विधि का विस्तृत वर्णन किया है—

कुमार यशोधर के विवाह का प्रस्ताव लेकर ऋथकैशक राजा के यहां से दूत आता है। दूत का प्रस्ताव सुनकर राजा उससे उज्जयिनी आकर ही विवाह करने का प्रस्ताव रखता है। दूत राजा के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है। तथा राजा, राजपरिवार एव कन्या सहित वन में आकर ठहर जाते हैं।

---

१. ढाल आठमी ।

विवाह का प्रारम्भ बिन्दोरी से होता है। घर-घर बिन्दोरियां निकलती हैं तथा मंगलगीत गाये जाते है। सौभाग्यवती स्त्रियां तेल चढ़ाती हैं। शांति विधान करती हैं। यशोध राजा सपरिवार तोरण मारने के लिये बरात सजा कर चलते है। उस समय खूब दान दिया जाता है। जब लगन बेला आती है तो तोरण की विधि पूरी की जाती है। वर कन्या का मुख देखता है। वर कन्या का हाथ से हाथ मिलाया जाता है। हथलेवा होता है। जब हथलेवा छोड़ते हैं तो श्वसुर आशीर्वाद देता है। विवाह के पश्चात् वर वधु मन्दिर जाते हैं। इस प्रकार विवाह के सामाजिक दायित्व को पूरा किया जाता है।

इसके पश्चात् जब वर-वधु घर आते हैं तो सास श्वसुर उन्हे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एव परिग्रह व्रत के पालन की शिक्षा देते हैं। इसके साथ ही रात्रि को भोजन नहीं करने पर जोर दिया जाता है।

धर्म अहिंसा मनि धरिए, मा० बोलिस कूडीय साखि ।। ११० ।।
चोरीय बात उ मां करे से मा० परिनारी सही टालि ।
परिग्गह सख्या नितु करिए, गुरुवाणी सदा पालि ।। १११ ।।
न्याय पाले लोकह सहूए, रमणीय भोजन वारि ।।

शिक्षा—अध्यापको को उपाध्याय कहा जाता था। जैन उपाध्याय होते थे। पाच वर्ष का होते ही यशोधर को पढने भेज दिया गया था और पन्द्रह वर्ष की अवस्था तक वह पढता रहा था। उपाध्याय के पास उसने किन किन विषयो का अध्ययन किया इसका निम्न पक्तियो मे विवरण देखिये—

वृत्ति काव्य अलकार तर्क सिद्धान्त प्रमाण ।
भरह नइ छद सुपिंगल नाटक ग्रन्थ पुराण ।। ६६ ।।

आगम यौतिष वैदिक हय नर पसुयनुं जेह ।
चैत्य चैत्यालां गेहनी गढ मढ करवानो तेह ।। ६७ ।।

माहो माहि विरोधीइ रूठा मनावीइ जेम ।
कागल पत्र समाचरी रसोयनी पाईइ केम ।। ६८ ।।

इन्द्रजाल रस भेबजे भूयनइ भूझनु कर्म ।
पाप निवारण बावन नखन माहि जे मर्म ।। ६९ ।।

नारी निन्दा

१६ वीं १७ वीं शताब्दि में हिन्दी कवि नारी निन्दा जनक पद्य अवश्य लिखते थे। आचार्य सोमकीर्ति ने भी अपने काव्य यशोधर रास में नारी निन्दा निम्न शब्दों मे की है—

नारी विसहर वेल नर बंचेवाए घडी ए।
नारीय आमख मेल्हि, नारी नरक प्रतोलडीए।
कुटिल पणानी खाणि, नारी नीचह गामिनीए।
सांचु न बोलि बाणि, बाघिण सापिण अगनि शिखा।
वर आलणीय एह दोष निधाने पूरीउए॥

लेकिन एक दूसरे प्रसग में कवि ने नारी की प्रशंसा भी की है—

सखी नारी बहु गुणवंत कुल लक्षण दायि भली रे।
सात भूमि जे गेह राज दिधि मोरिम घणी रे॥

मृत्यु के समय

आचार्य सोमकीर्ति के समय मृत्यु के पहिले गाय, भूमि, एवं स्वर्ण दान में देने की प्रथा थी। राजाओ का दाह सस्कार चन्दन से किया जाता था। ब्राह्मणों को भोजन एव दान दक्षिणा देने की प्रथा भी थी।[1] राज परिवार मे श्राद्ध होता था और उसमे ब्राह्मणो को भोजन कराया जाता था।[2]

हिंसा दो प्रकार की होती है। एक भाव हिंसा एव दूसरी द्रव्य हिंसा। मन में हिंसा का विचार मात्र ही भाव हिंसा कहलाती है फिर चाहे उसमें अपने हाथ से जीव हिंसा मरें या नही मरें। द्रव्य हिंसा—साक्षात् प्राणिघात का ही नाम है। प्रस्तुत यशोधर रास की रचना छोटी से छोटी हिंसा के कितने भयानक परिणाम भुगतने पडते हैं इसी बात को दर्शाने के लिये की गयी है। राजा यशोधर स्वयं हिंसा में विश्वास नहीं करता। वह हिंसा कार्य से बचना चाहता है लेकिन अपनी मां के आग्रह से वह आटे का कुकडा कुकडी बनाकर उनकी हत्या कर डालता है। इसलिये चाहे उसने वास्तविक जीवित कुकडा कुकडी को नहीं मारा हैं किन्तु आटे मे कुकडा कुकडी की स्थापना करके उन्हें मारने का उपक्रम

---

१. ढाल छट्ठी
२. ढाल सातवीं

अवश्य किया था। इसी हिंसा के कितने परिणाम अनेक जन्मों तक भुगतने पड़ते है यही यशोधर रास के कथानक की मूल वस्तु है।

२ गुरु नामावली

सोमकीर्ति की यह दूसरी रचना है जिनमे उसने अपने संघ की पट्टावली नामोल्लेख किया है तथा उसका ऐतिहासिक परिचय दिया है। काष्ठा संघ की उत्पत्ति एवं उसमे होने वाले अपने पूर्व भट्टारकों के नाम, किसी किसी भट्टारक की विशेषता साथ ही मे नरसिंहपुरा जाति एवं भट्टपुरा जाति की उत्पत्ति का वर्णन भी दिया गया है। गुरु नामावली की पूरा विवरण निम्न प्रकार है—

सस्कृत मे मगलाचरण के पश्चात् सोमकीर्ति अपनी शक्ति अर्थात् ज्ञान के अनुसार अपने गुरुओ की नामावली कहने की इच्छा प्रकट करते है।

भगवान आदिनाथ के ८४ गणधर हुए और महावीर स्वामी के ग्यारह। भरतेश्वर जिस प्रकार चक्रवर्तियो के शिरोमणि थे उसी प्रकार काष्ठासघ अन्य सभी सघो मे शिरोमणि था। लाड बागड गच्छो मे नन्दी तट सज्ञक सघ प्रसिद्ध है। अर्हद्वल्लभसूरि उस गच्छ के प्रथम आचार्य थे। उस गच्छ मे पाच गुरु हुये। वे हैं गगसेन, नागसेन, सिद्धान्तदेव, गोपसेन, नोपसेन।

दक्षिण देश मे नन्दी तटपुर मे नोपसेन मुनि रहते थे। उनके पाचसौ शिष्य थे उनमे चार शिष्य प्रमुख थे। रामसेन प्रथम शिष्य थे जो वाद एव शास्त्रार्थ करने मे पटु थे। अपने शिष्य की विद्वत्ता एव शास्त्रार्थ पटुता को देखकर नोपसेन ने कहा कि यदि वह नरसिंहपुरा जाकर वहा के निवासियो मे व्याप्त मिथ्यात्व को दूर कर सके तब उसकी शास्त्रार्थ पटुता को समझी जावेगी। बागड देश मे मथुरा नगरी मे तथा लाड देश मे मिथ्यात्व फैला हुआ है। गुरु की वाणी को मन मे धारण कर वहाँ से वे चारो शिष्य चले।[1]

मुनि रामसेन नरसिंहपुरा नगर मे आये। नगर के बाहर सरोवर के किनारे मासोपवासी बन कर ध्यान करने लगे। उसी नगर मे भाहड नामक श्रीमन्त था जिसके सात पुत्र थे लेकिन पौत्र एक भी नही था। सेठ मुनि की वन्दना करने वहा आया और हाथ जोडकर बैठ गया। तथा महामुनि के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। मुनि ने मिथ्यात्व दूर करके जिनधर्म फैलाने की इच्छा प्रकट की

---

१. रामसेन के अतिरिक्त तीन शिष्यों का नाम नही दिये गये हैं।

तथा मन्दिर बनवा कर उसमें भगवान की प्रतीमा की प्रतिष्ठित करने की बात रखी। मुनि ने उत्तर बाडुपुर जाने को कहा तथा अपनी तपस्या के प्रभाव से नरसिंहपुरा एवं उत्तर बाडुपुर के निवासियों को सम्बोधित किया और जैन धर्म में दीक्षित कर नरसिंहपुरा जाति की स्थापना की तथा उसे २७ गोत्रों मे विभक्त किया

रामसेन वहां से चित्तौड आये। रामसेन के साथ उनके शिष्य नेमिसेन मुनि भी थे। जो प्रायश्चित् स्वरूप छह महिने का उपवास कर रहे थे। रामसेन ने अनशन करने की बात छोडने के लिये कहा। गुरु की बात को ध्यान मे रख कर वहा से वे जाउर नामक प्रसिद्ध स्थान पर आ गये तथा अन्न, जल त्याग करके ध्यानस्थ हो गये। इस प्रकार सात दिन व्यतीत हो गये। एक दिन मुनि नेमसेन के ऊपर से पद्मावती देवी निकल गयी। उधर से कैलाश से सरस्वती देवी भी सामने आती हुई मिल गयी। दोनों मे भेंट हुई तथा बातचीत हुई। नेमिसेन मुनि अपनी काया को क्यों कष्ट दे रहा है। यह कह कर दोनो देवियां मुनि के सामने जाकर खडी हो गयी। मुनिवर ने दोनो को देखकर कहा कि वे क्यो कष्ट कर रही है इस पर दोनो देविया उससे प्रसन्न हुई। सरस्वती की प्रसन्नता के कारण उसे शास्त्रो का अपार ज्ञान प्राप्त हुआ तथा पद्मादेवी के कारण, आकाश गामिनी विद्या प्राप्त हुई। प्रात काल नेमसेन ने अनशन तोड दिया। मुनि ने उसके पश्चात् प्रतिदिन शत्रुजय, रैवताचल, तु गेश्वर, पावागिरी, एव तारगा क्षेत्र की यात्रा करने के पश्चात् हो आहार ग्रहण करने का नियम ले लिगा।

नेमसेन वहा से चित्तौड आये। वहा आकर अपने गुरु की वन्दना की। गुरु ने आशीष देते हुये कहा कि मेवाड देश मे भट्टपुरा नगर है वहाँ के लोगो मे मिथ्यात्व फैला हुआ है तथा वे धर्म के मर्म को नही समझते। तुम विशेष ज्ञान के धारक हो इसलिये वहां जाना चाहिये। नेमसेन ने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य की। चित्त मे उस कार्य का चिन्तन किया तथा शीघ्र ही भट्टपुर नगर मे पहुच गये। वे नगर मे गये और लोगो मे फैले हुए मिथ्यात्व को देखा तब उसे नष्ट करने का सकल्प किया। वहा के नागरिको को अपने ज्ञान से सम्बोधित किया। एक भट्टपुरा जाति की स्थापना की। भट्टपुरा मे चौबीस तीर्थकरो की प्रतिमाओ को भ० नेमसेन ने प्रतिष्ठापित किया।

नेमसेन भट्टपुरा से चल कर अपने गुरु के पास आये। भक्ति पूर्वक वन्दना की। तथा भट्टपुरा के सम्बन्ध मे पूरा विवरण सुनाया। इसके पश्चात् सोमकीर्ति नेमसेन के पट्ट मे भट्टारको के नामोल्लेख करते हैं जो निम्न प्रकार हैं—

१. अर्हद् बल्लभ सूरी	२. गगसेन
३. नागसेन	४. गोपसेन
५. नोपसेन	६. रामसेन
७	८ ....
९..........	१० ....[1]
११. नेमसेना	१२. नरेन्द्रसेन
१३. वासवसेन	१४. महेन्द्रसेन
१५ आदित्यसेन	१६ सहस्त्रकीर्ति
१७. श्रुतकीर्ति	१८ देवकीर्ति
१९. विजयकीर्ति	२०. केशवसेन
२१. महासेन	२२. मेघसेन
२३ कनकसेन	२४. बिजयसेन
२५. हरसेन	२६. चारित्रसेन
२७. वीरसेन	२८. ऋषभसेन
२९ मेरसेन	३० शुभकरसेन
३१. नयकीर्ति	३२ चन्द्रसेन
३३. सहस्त्रकीर्ति	३४ महाकीर्ति
३५. यश.कीर्ति	३६ गुणकीर्ति
३७. पद्मकीर्ति	३८ त्रिभुवनकीर्ति
३९ विमलकीर्ति	४०. मदनकीर्ति
४१, मेरुकीर्ति	४२ गुणसेन

४२ वे भट्टारक गुणसेन महा मुनीश्वर थे। एक रात्रि को जब वे ध्यानस्थ थे तब सर्पाधिराज ने प्रत्यक्ष होकर वचन दिया कि वे बड़े शक्तिशाली है इसलिये उनके वचन व पीछी जिस पर फेर दी जावेगी उसके सर्प का विष कभी नही चढ़ेगा। मुनीश्वर ध्यान से, विद्या से, तप से, इतने प्रभावशालो थे कि स्वयं बृहस्पति भी उनसे हार मान लेता था।

---

१. चार के नाम नहीं लिखे हुये हैं।

४३. रत्नकीर्ति
४४. जयसेन
४५. कनककीर्ति
४६. भानुकीर्ति
४७. संयमसेन
४८. राजकीर्ति
४९. विश्वनन्दि
५०. चारुकीर्ति
५१. विश्वसेन
५२. देवभूषण
५३. भूषणकीर्ति
५४. लभकीर्ति
५५. श्रुतकीर्ति
५६. उदयसेन
५७. गुणदेव
५८. विशालकीर्ति
५९ अनन्तकीर्ति
६० महसेन
६१. विजयकीर्ति
६२ जिनसेन
६३. रविकीर्ति
६४. अश्वसेन
६५. श्रीकीर्ति
६६. चारुसेन
६७. शुभकीर्ति
६८. भवकीर्ति
६९. भवसेन
७०. लोककीर्ति
७१. त्रिलोककीर्ति
७२. अमरकीर्ति
७३. सुरसेन
७४ जयकीर्ति
७५. रामकीर्ति
७६. उदयकीर्ति
७७. राजकीर्ति
७८. कुमारसेन
७९. पद्मकीर्ति
८०. भुवनकीर्ति
८१. भावसेन
८२. वासव सेन
८३. रत्नकीर्ति
८४. लक्ष्मसेन
८५. धर्मसेन
८६. भीमसेन
८७ सोमकीर्ति

सोमकीर्ति के पूर्ववर्ती भट्टारक रत्नकीर्ति, लक्ष्मसेन भी बड़े प्रभावशाली भट्टारक थे। उनके बारे मे सोमकीर्ति ने निम्न पंक्तियां लिखी हैं—

कहि कहि रे संसार सार। म जाण तहने असार।
अ छि अति असार। सेव करि। पूजु पूजु रे रे अरिहंत देव।
सुरनर करि सेव। हुवि मसाड थेव भावभरी।
पालु पालु रे अहिंसा धम्म। मधमनु लाघ जम्म।

म करु कुत्सित कम्म । भवह् वरणे ।
तव तव रे उत्तम जन अवर म आणु मनि ।
ध्याउ सर्वज्ञ धम । लछमसेन गुरु एम भणे ।।४।।
दीठि दीठि रे अति आणद । मिथ्यातना टालि कंद ।
गयण विहूणउ चंद । कुलहि तिलु ।
जोइ जोइ रे रयणी दीसि । तत्व पद लही कीशि ।
धरि आवेश शीसि । तेह भलु । तरि तरि रे ससार ।
करतिज गुरु मूकिइ मूकिइ मोकलु कर दान भणी ।
छंडि छंडि रे रठडी आल । लेइ बुद्धि विशाल ।
वाणीय अति रसाल । लछमसेन मुनिराउ तणी ।।५।। ६७ ।।

उक्त भट्टारको मे ८० वें भट्टारक भुवनकीर्ति ने दिल्ली के बादशाह महमूद शाह के सभा मे अपनी विद्यावश पालकी आकाश मे चला दी थी • जिस कारण महमूदशाह ने उन्हे बडा सम्मान दिया था । भुवनकीर्ति ने बादशाह की सभा मध्य सभी मिथ्यात्वियो को शास्त्रार्थ मे जीत लिया तथा जैन धर्म के यश को द्विगुणित किया था ।

८२ वें भट्टारक वासवसेन ने यद्यपि मलिम ग्राम वाले थे लेकिन उनके नामकरण से तथा पिच्छी के स्पर्श मात्र से कुष्ट का रोग दूर हो जाता था ।

८३ वे भट्टारक रत्नकीर्ति भी निर्मल चित्त वाले तथा कामदेव पर विजय पाने वाले थे ।

रचना काल—

"गुरु छन्द" को सोमकीर्ति ने सवत् १५१८ आषाढ सुदी पचमी रविवार को समाप्त किया था । रचना स्थान सोभित्रापुर था जो भट्टारक सोमदेव का केन्द्र स्थान था । वही उनकी गादी थी तथा वही उनका पट्टाभिषेक भी हुआ था ।

रचना की विशेषता—

गुरुछन्द ऐतिहासिक कृति तो है ही साथ में भाषा की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है । सोमकीर्ति ने छन्द के प्रथम तीन पद्य संस्कृत मे निर्मित किए है । फिर राजस्थानी भाषा मे पद्य एव गद्य दोनो निर्मित हैं । राजस्थानी गद्य को कवि ने बोली लिखा है जो तत्कालीन बोलचाल की भाषा थी ।

उस समय १५ वीं शताब्दी में इस प्रकार की रचना स्वयं मे ही महत्त्वपूर्ण है। १५ वी शताब्दी में निबद्ध राजस्थानी गद्य-पद्य का नमूना अच्छी तरह से देखा जा सकता है। पूरा छन्द १०४ पद्यो में पूर्ण होता है इसके अतिरिक्त बोली वाला भाग अलग है।

दूहा बंध, दूहा पाधडी अर्ध-त्रोटक, छन्द हवि दूहा, छन्द त्रिवलय, आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि को दूहा छन्द प्रिय था इसलिए उसने दूहा बध, दूहा, हवि दूहा के नाम से प्रयोग किया है। इसी तरह बोली हवि बोली इन दो नामो से राजस्थानी गद्य का प्रयोग अपने आप मे ही उज्जवल पक्ष हैं।

(३) रिषभनाथ की धूल

यह एक लघु काव्य कृति है जिसमे भगवान आदिनाथ के पाचों कल्याणको का वर्णन किया गया है। इसमे चार ढाल हैं। यद्यपि कवि ने इस लघु कृति की रचना आदिनाथ की जीवन गाथा वर्णन करने से उद्देश्य से की थी लेकिन कही-कही उसने अपने काव्य कौशल का परिचय दिया है। प्रारम्भ मे नाभि राजा की रानी मरुदेवी की परिचर्या मे देविया किस प्रकार लगी हुई थी इसका एक वर्णन देखिये—

> केवि सिर छत्र धरंति करंति केवि भूषणाए।
> केविउ गढ देइ अगि, सुबंगी पूजा घणी ए॥
> केवि सपन अनि आसन, भोजन विधि करिए।
> केवि खडगधरी हाथि सो, साथइ नितु फिरिए॥

तीर्थंकर ऋषभ को पाण्डुक शिला पर स्नान कराने के पश्चात् इन्द्राणी बडे भाव से उनका श्रृंगार करती है। उन्हे सोलह प्रकार के आभूषण पहिनाती है। इन्द्र स्वयं तीर्थंकर के अगूठे मे अमृत डाल देता है। खूब उत्सव होते हैं तथा देव एव देविया तथा अयोध्या के नर नारी खुशी से नाच उठते है।

> इन्द्र इंद्राणीय करि अभिषेक, आप आपुणि रंगि रचियां विवेक।
> स्नान कराविय सोल विभूषण, भूषीं ते जिनवर सहि जु सुलक्षण।
> इन्द्र अंगूठि अमृत देइ, आनीय चमंवदन नवि लेइ॥

कवि ने रचना के अन्त मे अपने नाम का उल्लेख किया है लेकिन कृति का रचना काल नहीं दिया है—

राजा राजिम सखि सुख सहूए,
श्री सोमकीरति कहि दिउ बहूए ।
भूल श्री ऋषभनु गाइसिग,
तहां चितत फल सहू पाइसिए ।।

(४) त्रेपन क्रिया गीत

इस लघु गीत मे श्रावकों द्वारा त्रेपन क्रियायें पालने पर जोर दिया गया है। इन क्रियाओ के पालन करने से मनुष्य का जीवन सात्विक बनता है तथा उसे स्वर्ग एव मुक्ति की प्राप्ति होती है। पूरे गीत मे ६ अन्तरे हैं तथा गीत के अन्त मे कवि ने अपने नाम का भी उल्लेख किया है। पूरा गीत निम्न प्रकार है—

त्रेपन क्रिया गीत

सरसित स्वामिणि अह् निशि समरी जिरण चुवीस नमी जि ।
सहि गुरु चलरण कमल प्रणमीनि किरीया त्रिपन लीजि ।।
सहिए त्रिपन किरिया पालु पाप मिथ्यातज टालु ।
साचु समकित हृदय धरीनि श्राविकुल अजूयालु सही ।।१।।
रूडु समकित ते एक कीजि तेस उपमा कुरण दीजि ।
ईग्यार प्रतिमा निरमल भणीइ, ते साचि चित कीजि ।।सही।।२।।
दर्शन ज्ञान चारित्रि चाहु, मुगती जु उमाहु ।
रत्नत्रय भडार करीमि निज मन निश्चल साहु ।।सही।।३।।
आठ मूलगुरण निश्चल जाणु व्रत बारि बखाण्उ ।
बाह्याभितर तपबिहु भेदे, छुछुते मनि आणु ।।सही।।४।।
च्यार दान त्रिहु पात्रा सारु जल गालरण तिणि वार ।
एक अणथमी अति चणु सूची, तु तिरसु ससार ।।सही।।५।।
सोमकीर्ति गुरु केरी वाणी, भवकि जीव मनि आणी ।
त्रिपन किरिया जे नर गाइ, ते स्वर्ग मुगति पंथ थाई।।सही।।६।।

गुटका पत्र संख्या १३७

आदिनाथ गीत

गागर में सागर भरने के समान प्रस्तुत गीत में आदिनाथ स्वामी के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार के गीत लिखने में जैन कवि बड़े चतुर थे। छोटे-छोटे गीतों के माध्यम से वे विविध विषयों पर अपनी काव्य शक्ति का प्रदर्शन करते थे। आचार्य सोमकीर्ति भी इस प्रकार के गीत लिखने में सिद्ध-कवि थे। प्रस्तुत गीत भी इस प्रकार का एक गीत है। इसमें २१ पद्य है। गीत निम्न प्रकार है—

आदिनाथ विनती

नाभि नरिंद मल्हार, मुरा देवी राणी उर रयण।
त्रिभुवन तारणहार, हेलां जिणि जीतउ मयण ॥१॥

नयर अजोध्या वास, कुल इष्वाकह मंडणु ए।
सुर नर सेवि तास, वर्ण सुवर्णह जास सवे ॥२॥

पंचसइ धनु देह, रूप रंग रस रूयडु ए।
गुणह न लाभि छेह, लक्ष चुरासी आयु कही ॥३॥

पूरब तेह विचारि, सतिर लक्षह कोडि तिहा।
छपन सहस मझारि, इणी परि वरसासु एक हुउ ॥४॥

पूरब तेह ज भेउ, जे मिथ्याति वाहीया ए।
किम करी जाणि तेह, बीस लक्ष बाला पणइ ॥५॥

त्रिसिठ राज अभ्यास, एक पूरब चारित्र धरीय।
भवयां पूरीय आस, अपछरा देखि वैराग भउ ॥६॥

छोड़ीय तब निज राज, च्यार सहस नरपति समुय।
कीधु तब निज काज, वरस दिवस पारणु अजुए ॥७॥

धरि श्रेयांसह आइ, ईक्षु रसि आहार लीउ।
अजलि महूठ प्रमाण, सहस वरस गया उपनुए ॥८॥

निरमल केवलज्ञान, प्रातिहार्य आठि हुया ए।
अंनत चतुष्टय च्यार, अतिसितीस विराजनू ए ॥९॥

त्रिहू आगलि सविचार, समोसरण स्वामी तणउं।
दीसि जोयण बार, बीस सहस पग थारीयां ए ॥१०॥

वेदी अतिहि विसाल, सिंघासन हीरे जड्यु ये ।
ते पुण अतिहि विसाल, छत्रत्रण सिर भमभमियां ।।११।।
चुसठि चमर वीजत, सुरनर गण गंध्र्व मिलीया ।
जन्म सफल कीजंति, नाटक नाचि देवीया ए ।।१२।।
तुंबर गेह करंति, वापी वन अति षातिका ए ।
पोल प्रवेस राजंति, चुरासी गणधर हूया ए ।।१३।।
वाणीय सप्तविभंग, दिन दिन उच्छव इम हुइये ।
पूजीय मन तणि रंगि, भावना भाविसुं आपणीया ।।१४।।
सुण स्वामी मुझ वात, दुःख निवारण तुं धणीया ।
तुं माता तुं तात, तु बाधव तु जगह सुरो ।।१५।।
भवि भवि भम्यु अपार, जन्म जरा मरणादिषय ।
सहियां दु.ख सविवार, इन्द्री पांचे निरजण्यु ए ।।१६।।
मनह तणिरे विनाण, मयण पापी घणुरो लव्यु ए ।
मोह माया नि मान, गर्भवास दुख बहु सह्या ए ।।१७।।
थावर त्रसह मझारि, नरक सात निगोदीया ए ।
मानव देव संसार, पंचमिथ्याति वाहीउ ए ।।१८।।
कुगुरु कुदेव अनत, अवरदेव सवे जोयता ए ।
मिसुं दीठु माहत, तिणि कारणि तुझ पय कमलो ।।१९।।
सरण पयठउ हेव, राषि क्रिया करे माहरीये ।
राय करू किकेवि, नव निधि जस घरि सपजिए ।।२०।।
अहनिशि जपतां नाम, आदि तीर्थंकर आदि गुरु ।
आदिनाथ आदिदेव, श्री सोमकीर्ति मुनिवर भणिए ।
भवि भवि तुझ पाय सेव, चरणकमल वदन करू ।।२१।।

इति श्री आदिनाथ वीनती समाप्त.

मल्लि जिनगीत

प्रस्तुत गीत में तीर्थंकर मल्लिनाथ का स्तवनात्मक वर्णन किया गया है। यह एक लघु गीत है। इसलिये उसे अविकल रूप से पाठको के पठनार्थ यहां दिया जा रहा है—

मल्लिजिन गीत

स्वामीय श्रीय मल्लि जिणवर देव तोरा गुण गाउं
तोरा नित नित पायवी सेव प्रति घणु प्राउ ।।चडाव्
ध्याउं प्रति घणु तह्म पाये सेवा चिहुं गति माहि भमीउ ।
कुगुरु कुदेव पासांइ रुलीउ जु जिण घर मन रमीउ
राग द्वेष मनमथमय भोल्यु बुधि करीय यणु लामी ।
जोतां जोतां मित्तु लाधु मल्लिनाथ जिन स्वामी ।।१।।
चुरासीय लक्ष जीवा योनि भमी भमी भागु
वली पुण्यतणि परिमाण ठाकुर तह्म पीये लागु ।।
तह्म पाइ कमले लागुं प्रवरन मागु भवि२ तम्ह पाइ सेव लहुं
तोरा गुण अछि अनंता एक जीव करि केम कहुं ।
थावर त्रसह नगोदि भमीउ गति सघलीयमि वासी ।।२।।
पंच महाव्रत पच सुमति मति गुपति न पाल्या
चारित्र दूषण जे ते स्वामी म टाल्या ।।
नवि टाल्या दूषण करम मूसाइ मूढ पणि प्रति भोल्यू
इंद्री मनह विकारि दमीउ मोहि प्रति भंखाल्यु
समकित रयण चारित्र नवि आण्या धुरि न सूधु संच ।
सहि गुरु पाय कमल घणु सेव्या पाल्या महाव्रत पंच ।।३।।
देव दया करु स्वामी संभाल सेकनीय कीजि ।
जिम२ जिणवर वीय वाणि सांभलि मोरू मन भीजि ।।
मोरू मन भीजि ते परि की जितु गिरि पुरवा राज ।
वैराग्य रग रसि घणुं रातु प्रवर नही मुझ काज ।
आठ मद ते मनि था छांडी वीनवुं छुं हेव ।
श्री सोमकीरति गुरु इणी परि बोलि भवि भवितु मुझ देव ।।४।।

गुटका पत्र संख्या ५४-५५

लघु चिंतामणि पार्श्वनाथ जयमाल

आचार्य सोमकीर्ति का यह चिंतामणि पार्श्वनाथ जयमाल स्तवनात्मक है। इसकी एक विशेषता यह है कि जयमाल अपभ्रंश भाषा में है। १५ वीं शताब्दि में अपभ्रंश का प्रचलन था तथा कविगण कभी-कभी अपभ्रंश मे भी अपनी कृतियों की रचना करते थे। इसलिये सोमकीर्त्ति ने भी अपना अपभ्रंश के प्रति प्रेम प्रदर्शित करने के लिये इसकी रचना की हो अथवा पार्श्वनाथ के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करने की दृष्टि से कवि ने इस जयमाल का निर्माण किया गया दिखता है।

आचार्य सोमकीर्ति की कृतियाँ

१. यशोधर रास

२ गुरु छन्द

३. रिषभनाथ की धूलि

४. त्रेपन क्रिया गीत

५. आदिनाथ विनती

६. मल्लिजिन गीत

७. लघु चिंतामणि पार्श्वनाथ जयमाल

यशोधर रास

श्री जिनह स्वामी श्री जिनह स्वामी पाउ प्रणमेवि ।
सिद्धह आचारिय नमु उवज्झाय वली साधु मुनिवर ।
सरसइ जिनमुख निग्गइ गुरुह जिन पयकमल मधुकर ।।
राय यसोधर जगणिसु रचु रास मन सुधि ।
भवीयण जण तह्मे सभनु जिम पामु घणु रिद्धि ।।१।।

योध देश का वर्णन

जबूदीवह भरहषेत महीयल अति सोहि ।
योधे देश सोहामणुए, तिहा जण मण मोहि ।
वाडी वन सरोवर अपार, नद नदीय विशेष ।
ठामि ठामि जिहा दानसाल, नर रूपडा वेष ।।२।।

अति मोटा ढकडा गाम, सुर नगर समान ।
जे जे आगर वस्तु तणा सवै रत्नहवान ।
नयर मनोहर **राजपुर**[1] ते देश मभारे ।
जु वर्णहु जिमु अछइ तउ लागि वारे ।।३।।

मारदत्त[2] नरनाह तिहा सोहि अति सुन्दर ।
दान मान जस रूप रिधि अभिनवउ पुरदर ।
छह दरसनना शास्त्र जिके ते करइ बिचार ।
किम तिरीइ किम बूडीइए ते जाणि न सार ।।४।।

देवीय मठ[3] दक्षिण दिशि तिहा नयर सोहावि ।
देश विदेश तणा ज लोक यात्रा सवे आवि ।
जाणे कज्जल घडीय एह तस भीषम रूप ।
चंडिमारि[4] तस तणउ नाम प्रणमि सवे भूप ।।५।।

आसोज **चैत्रीय** नुरनाए तिसु पूज करेवा ।
जीव सहित आवीज लोक तस करइज सेवा ।

---

१ नगर का नाम, २ राजपुर के राजा का नाम ३ देवी का मठ, ४ देवी का नाम

चैत्र वसंतज आवीउए वनसपती फूली ।
कामिनि काम बिम्राकुलीए पति देषीय भूली ।।६।।

भैरव जोगी का आगमन :

तिणि अवसर जोगीय एक तिहां आवि पहूत ।
चेला चेली भगति करि अनि लोक बहूत ।
सेरी सेरीय भमइ सहू अनि चरीया गाइ ।
मूरष लोकां भोलवि वली सीगी वाइ ।।७।।

लोकह आगिल ते कहि अह्य वरस बहूत ।
दीठउ राम ज लक्षमण अनि अंजनि पूत ।
ब्रह्मा विष्णु महेस सवे पाडव अह्ये दीठा ।
रोमि ग्रसीया राय जिके मुझ सरण पईठा ।।८।।

सेव कराउ सभालीउ ए स्वामी सुणि वात ।
भैरव राउल[1] आवीउ ए चेला सइ सात ।

राजसभा मे जोगी का आगमन :

जोगीराइ तेडावीउ ए ते आव्यु ताम ।
उठी भूपति मानीउ ए वली करीय प्रणाम ।।९।।

आसीस देईय भूप सहित निज बिठा आपणि ।
वात पूछेवा राउ ताम वली करइ बिमासिणि ।
जोगीय बोलि राउ निसुणिहूँ प्रत्यक्ष देव ।
आपु सपा राज रिद्धि जे करि मुझ सेव ।।१०।।

तुरूसु तु हरउ राज वली करउं जगहिलु ।
जिणि काजि तेडीउ ए ते कहि मुझ विहिलु ।
कामण मोहण वसीयकरण थभण बण जाणु ।
विद्या गयणह गामिनी ए वली ग्रथ वषाणु ।।११।।

सहू रसायण मंत तत ते सघला बूझू ।
मद्य मास अनि छोति चौति ते किमिहि न गूझऊ ।
राजा मन माहि हरषीउ ए जोगी प्रति बोलि ।
कोइ न दीठउ सृष्टमाहि जोगी तुझ तोलि ।।१२।।

---

१ जोगी का नाम

विद्या गयणह गामनी ए तह्मे मुझनि आपु ।
देई हाथ मो मस्तकि चेलु करी थापु ।
जोगीय बोलि राउ निसुणि चडमारी देवी ।
ते आगलि घणा जीव हणी तइ पूज करेवी ।।१३।।

देवी के सामने बलिदान के लिए जीवों का लाना

जलचर खेचर भूमिचर जे जीव कहीजि ।
तेह तणा जे युगल मलिने ते आणीजइ ।
कोटवाल तेडीउ राइ आदेश ज दीध ।
आणु अति घणा जीवरासि प्रणाम ज कीधु ।।१४।।

गउ कोटवाल देश माहि बहु जीव अणावि ।
अति घणा जुगलज आवीयां ए कोइ नाम न जाणि वि।
हरिण रोझ गज अश्व छाग महिषी वृष मेष ।
बक सारस अनइ चक्रवाक जे जीव असख ।।१५।।

देवी मठ सहू पूरीउ ए तेहे जीवे आणी ।
राजा वेगि पधारीउ ए तेहे आव्या जाणी ।
जोगीय आव्या ताम सवे बिठा निज आसणि ।
राजा देवी पाय पडी ए वली माह्मि सिंघासणि ।।१६।।

बिमी मत्री प्रति भणि तुह्मे राउल पूछउ ।
काइ न हणीग्रा जीव अजी किपिअछि उछ्रन ।
पूछयउ जोगी कहिय ताम सभलि तु भूप ।
बत्तीस लक्षण नरह युगमये हुइ सरूप ।।१७।।

ते आणी आपणि हाथ तइ हस करेवु ।
पूजीय देवि सतोष करी सहू विघन हरेवु ।
विद्या गयगह गामनीए तुझ ततक्षण तूसि ।
इम कीधा पापिकहु मुझ देवी रूसि ।
सुणीय बात तिहां भूमिपाल, तलवर हकार ।
बत्तीस लक्षण नरह युगम आणेला इम बार ।।१८।।

आपणि तलवर चालीउ ए नृप करीय प्रणाम ।
सेवक सवे तिणि दहदिशि ए **पाठवीया** ताम ।

संघ सहित सुदत्त मुनि का आगमन :

तिणि दिनि मुनिवर सघ सहित सुदत्तह नाम ।
आवी पुहतु वनह मझि दिन चडिउ याम ।।१९।।

कोइल करइं टहूकडा ए मधुकर झंकार ।
फूली जातज वृक्ष तणीये वनह मझार ।
वनदेषी मुनिराउ भणि इहां नही मुझ काज ।
ब्रह्मचार यतिवर रहितु आवि लाज ।।२०।।
इम जाणी मुनिराउ सही समसान पहूत ।
मुनिवर आशी तास तणि ते अछइ बहूत ।
ठामि ठामि सब तणीय गधि अनि अस्थि असंष ।
काक सेह सीयाल स्वान तिहां आवि पंष ।।२१।।
फासूय भूमि वलोक करी मुनिराउ बइठउ ।
वैराग्य सरीषु ठाम देषि मनमाहि सतुट्ठ ।
चैत्र मास सुदि आठमि सहूलइ उपवास ।
ब्रह्मचार अनिषुडीय एक आव्या गुरु पास ।।२२।।
गुरु प्रणमी कर जोडि दोइ मागि ते प्रौषध ।
ससार दुख निवारवाए ए अछइ औषध ।।
मुनिवर बोलि सुणउ वत्स तम्हे अछउ बाला ।
नयर मझि आहार लिउ वली पुहुचु पाला ।।२३।।

।। वस्तु ।।

ताम षलिकषलिक सुणीय गुरुवाणि ।
प्रणमीय तव बेह चालीया रूपवत पुण अछिबालां ।
लखण सवह विभूषीया हस गमण करि जाइ पाला ।
तव ते तलवर मूलगु मारगि मलीउ जाम ।
देषी दोइ मन चीतवि सरीया सवि मुझ काम ।।

अथ ढाल बीजी

क्षुल्लिका युगल का आना (२)

खुल्लिक युगलं दीठउ जाम । तलवर मनमाहि हरख्या ताम ।।
देवी पूजा होइसि ए ।
इम बोली पाषलि फरिवरीया तलवर सवि भूमि परिवरीया ।
ब्रह्म ते षूडी प्रतिभणिए ।।२४।।
मम कंपि सतु बहिन लगार, अथिर असार अछइ ससार मरण, तणु ब्रह्म भय किस ए ।।२५।।

बहिन हसी भाई प्रति बोलि ।
इसे वयणे मन किमहिन डोलि ।
जउ जिनवर हीयडि बसिए ।।२६।।

कहि तुं राज सरीरह कास ।
मुनिवर न करि कहिनो आस ।
राजा रूठउ सुंकरि ए ॥२७॥
निश्चल हीयडुं बिहुं जणकीधुं ।
सावधि अनसन ततक्षण लीधुं ।
ते तलवरइ सुंभणि ए ॥२८॥
रहृ हेगला तह्मो ब्रह्म आभडसु ।
मुनिवर छबता नरय पडेसु ।
जिहा तेडु तिहा आवसु ए ॥२९॥
दूर थका तलवर सविजाइ ।
षलिक जूडी आगलि थाइ ।
देवीमंडप आवीयां ए ॥३०॥

देवी मन्दिर की दशा

देवीय मंडप विषमु दीठउ ।
सूग तणु भय मनमाहि पिठउ ।
ठामि ठामि बीहामणु ए ॥३१॥
अस्थितणा कीही डुगर दीसि ।
अस्थि सिंघासणि जोगी बाइसि ।
अस्थि दण्ड ते कर लेइ ए ॥३२॥
अमिष तणा ढगला अति पुण ।
अमिष ठाम दीसिछि अतिघण ।
अमिष भषी पंषी चुणिए ॥३३॥
रुधिर तणा तिहां जल आचार ।
रुधिर करी लीपि तिणीवार ।
रुधिर जु कुकुम मडणु ए ॥३४॥
मस्तिक तणी दीसि रूंडमाल ।
जिह्वक तणा तिहा वदरवाल ।
आतर तोरण अति घणा ए ॥३५॥
तिणि मडपि दोइ बालिक लेइ ।
तलवर राउ प्रणाम करेइ ।
करजोडी इम वीनविए ॥३६॥
मंड्यां छइ दोइ सघले लक्ष्यण ।
रूपवंतनि अतिहि विचक्षण ।
स्वाम आदेशि आणीयां ए ॥३७॥

राजा रीसि खडगजु तोलि।
अवरह माणस केरि भोलि।
ततक्षण सनमुख जोईउं ए ।।३८।।

राजा का तलवार उठाना तथा साधु द्वारा आशीष देना :

ब्रह्मचार तव देइ असीस।
राजन जीवे कोडि वरीस।
जस तोरु अति उजलु ए ।।३९।।

जे ये महियल अतिघण निर्मल।
ते ते जाणे धर्म तणु बल।
तिणि धर्मि तो जय घणु ए ।।४०।।

जे तलि राजा सुणी आसीस।
ते तलि मन थी उतरी रीस।
वली वली साम्ह जोइ ए ।।४१।।

राजा द्वारा परिचय पूछना :

सनमुख जोतांही इ विमासी।
अवली बात होइ मोवासि।
कुण थाणक थी आवीया ए ।।४२।।

कइ इद्र इन्द्राणी बेहू।
यसकीरति धुरि आविदेहू।
चंदा रोहिणि सुं मिलिए ।।४३।।

सूरयना देव सरीसु।
माणस रूप न हुइ ईसु।
कामि सहित सुंरति हुइए ।।४४।।

भाणेज युगल ते कारण जाणी।
सहि गुरु केरी सभलि वाणी।
लीधी दीक्षा तेहुइए ।।४५।।

एसा निरदय मोरू चित्त।
पुण्यवत धरे ये सुचित्त।
स्नेह उपनु अतिघणु ए ।।४६।।

राज चिन्हि दीसि सबे अगि।
सामुद्रक बोलिन वररंगि।
ते ते सवि इहा अछिए ।।४७।।

राजरिधि सघली कांइ छांडी ।
बालपणि दीक्षाकांइ माडी ।
एवडु साहस कांइ कीउ ए ॥४८॥

अथवा एवडी काइ विमासणि ।
बिसारी सनमुख बली आसणि ।
पाय प्रणमी पूछउ सहू ए ॥४९॥

राजा षलिक साह्मांमु जोव ।
पाप बुधि सघली ते धोइ ।
विनि करीनि पूछीउ ए ॥५०॥

कवण कुल चेले तह्मे अवतरीयां ।
सूरज जिमि तेजि परिवरिया ।
कुणि कारणि दीक्षा लेइ ए ॥५१॥

जे कारण छि मनमाहि मोरा ।
सम देउ छुंहुं गुरु तोरा ।
जु तुम्हे कांई उलवु ए ॥५२॥

क्षुल्लक द्वारा उत्तर देना

षुल्लक[1] वलतु इम वोलि । जाणे सुरगुरु केरि तोलि ।
काई करू ब्रह्म पूछीइए ॥ ५३ ॥

पाप बुधि छि राजन तोरी । धर्म कथा छि निश्चल मोरी ।
तू आपणउ किम मलिए ॥ ५४ ॥

येह विमास्युं छि निज चित्ते । तेति जाण्यु छइ पुण तत्त्वे ।
हवि विमासणसी करिए ॥ ५५ ॥

षडग कोश तव धरूं राइ । दृष्ट ठवी छि षलिक पाइ ।
कर जोडी ए मु भणिए ॥ ५६ ॥

कहु स्वामि तह्म तणए चरित्त । सहू साभलयो एकि चित्त ।
कोलाहल को मा करूए ॥ ५७ ॥

लोक सवेनि जोगी नाम । देवी पुण चित्त कीधुं ठाम ।
ब्रह्मचार तब इम भणिए ॥ ५८ ॥

पुण्य तथा सहूइ साभलयो । पाप वात माहि छि टलयो ।
सवि सुख पामउ तु सहूए ॥ ५९ ॥

---

1. मूल पाठ—ब्रह्मचार

जे जै मई निज नयरी दीठउं । कंचन वाणी अति घणु मीठउं ।
ते दुःख अंगि भोगव्युए ।। ६० ।।

वस्तु—कहि पुलिक सुणउ सहू वात ।
जिणि कारणिमि दुख सह्यां । जेहि कर्म्म बहु जोणि फिरियां ।
जिणि जिणि भवि जिम भोगव्यउं । जेम जेम वली पाप भरीया ।
ते ते परि सघली कहुं, सहू सांभलयो सार ।
कुमय विमासण सवि त्यजीय, जिम तिरसु संसार ।। ६१ ।।

अथ ढाल त्रीजी

(३)

उज्जयिनी के राजा यशोधर का वर्णन

जंबूदीप वखाणीइ भारत क्षेत्र मझारे ।
मालव देश[1] सोहामणु, नयरी उजेणीय[2] सारे ।। ६२ ।।

गढ मठ मंदिरउ रडा देउल सख न पारे ।
वाजिम वन सर वर घणां वाईय कूप अपारे ।। ६३ ।।

नयर नवेश नदी वहि सिप्रा नामि गंभीरे ।।
राय यशोधर[3] नामि तिहा राज करि अति सूरो ।। ६४ ।।

दाता धर्मी ववेकीय भोगीय गुणह् भडारो ।।
समकित रयण विभूषी श्रावक तणउ आचारो ।। ६५ ।।

चन्द्रमती[4] राणी तिसु जाणे नारि अनगो ।।
भोगवि सौख्य विवधि परितेहसु नव नव रगो ।। ६६ ।।

चडतियो वनराउनि राणीनी पूगीय आसो ।
उदर तणि दुख वसतोला पूरा मुझ नव मासो ।। ६७ ।।

पुत्र जन्म

दसमि मासहु जनमीउ उत्सव हुइ अनन्त ।
जिनवर बिंबज पूजीनि दान सु दीधा बहुत ।। ६८ ।।

जे जिणि याचक वांछीउ ते ति सुदीधो लु ं दान ।
कुटंब लोक सजन तिणि आपीय वस्त्रनि पान ।। ६९ ।।

सातमइ दिवस सजन मिली मिली दीधु ं तव मुझ नाम ।
पुत्र यशोधर एहज करसि तातनु ं काम ।। ७० ।।

---

1. मालवा प्रदेश
2. उज्जयिनी नगर
3. राजा का नाम
4. रानी का नाम ।

जिम रहु तिहां ऊछरूं तिम तिम राउ उबास ।
वाधि सोवन गयवर हयवर केरडा ह्रास ।। ७१ ।।
पच वरस इणी परि गयां व्युल्यंउ बालापण आम ।
राइ जिणेसर पूजीनि भणवा मूकीउ ताम ।। ७२ ।।

उपाध्याय के पास पढ़ने जाना

जैन उपाध्या भणावतां भणीयमि विद्याते सार ।
पनरवरस लगि हुं भण्यु पाम्यु भणवानु पार ।। ७३ ।।
राउ कह्नि मुझ लेई गउ पंडित नीपनु जाणी ।
राइ पडित मानीउ बोलीउ मधुरीय वाणी ।। ७४ ।।
राइ तवहूं पूछीउ कहु वत्स भणवानी बात ।
कुण कुण ग्रंथ ज जोईया कुण कुण शास्त्रनी जात ।। ७५ ।।
राउ प्रति तव मइ कह्यु सुणउ नरेसर आज ।
पंडित जे हु भणावीउ कीधो लु जे मुझ काज ।। ७६ ।।

पढ़े हुए विषयों का नाम

वृत्तनि काव्य अलंकार तर्क सिद्धांत प्रमाण ।।
भरह नइ छंद सुपिंगल नाटक ग्रन्थ पुराण ।। ७७ ।।
आगम योतिष वैद्यक हय नर पशुयनुं जेह ।
चैत्य चैत्याला गेहनी गढ मढ करवानी तेह ।। ७८ ।।
माहो माहि विरोधीइ रूठा मनावीइ जेम ।
कागल पत्र समाचरी रसोयनी पाईइ केम ।। ७९ ।।
इन्द्रजाल रस भेद जे जूयनइ झूझनु कर्म ।
पाप निवारण वादन नत्तन नाछि जे मर्म ।। ८० ।।
वली वली काहु पूछसू जे जे विद्या विसेष ।
जे जे यहुय भणावीउ नही पडित थोडनी रेष ।। ८१ ।।
पडितनि तूठउ दिइ लाष दीनार ।
वस्त्र ते झीलतणा सबे आपीय सार शृंगार ।। ८२ ।।
किम करी शास्त्र जमुकीय झालीय अगने वार ।
छत्रीस आयुधजे अछिते परिजाणीय सार ।। ८३ ।।
इम करी यौवन पामीय वुल्यु बालापण जाम ।
विवाह करवा कारणि राउ विमासिछि ताम ।। ८४ ।।

राज वे कय कैशकि तरिए तीरिए पाठवीउ वे दूत ।
देस विदेस छाडी करी नयरी उजेणी पहूत ।। ८५ ।।

राज सभा माहि आवीय बइठउ करीय प्रणाम ।
आदर राइ पूछीउ आव्यु तूं कुण ठाम ।। ८६ ।।

कर जोडी ते वीनवि सुणउ नरेसर काम ।।
कय कैशक नरपति अछि भूपाल तेहनुं नाम ।। ८७ ।।

नारीय रूपि आगली राणी श्रीमती आस ।
अमृत महादेवी अछि किन्या रतन ते तास ।। ८८ ।।

यशोधर कुमार का विवाह

कुमर यशोधर कारणि देवा किन्या ते सार ।
मोकल्यु राइ तहा तणु देसका बसह आवार ।। ८९ ।।
दूत तणी भूपति सुणी बोलिव राय उछाह ।
इहा आणी कन्या तुम्हे करउतु सहीय वीवाह ।। ९० ।।
दूति कोशल पालवा राइ सतोषवा तेह ।
वस्त्र विभूषण आपीनइ मोकल्यु कैशक एह ।। ९१ ।।
पहिलु लगन पठावीनइ बहु दल मेल्यु छि राइ ।
सजन लोक सोहासणि नाचि गीति ते गाइ ।। ९२ ।।
राउ राणी सजन सहू मेली बहु दल जाम ।
कन्या सहित महोत्सवि आव्या ऊजेणीय नाम ।। ९३ ।।
वस्तु— ताम नयरी ताम नयरी भउ उत्साह
पुरह लोक सब सवि मिल्यु घरिहि घरिहि अक्षाणाय ।
ल्यावीया राउ जसोधज हरषीउ वनह मझि सुणीयान आवीय
तलीया तोरण उतीर्या सूडी ते बसरवाल ।
कन्या वरह वधावीइ भरी करी मोती थाल ।। ९४ ।।

अथ ढाल चउथी

(४)

वधीला घरि घरि हुइए मालंतडे उछव सहित अपार ।
सुणि सुंदरे उछव सहित अपार । तेल चडावि कामनीए मा०
गीत गांइ अति सार ।। सु० ।। ९५ ।।

नाहीय धोईय उठीउए । मा० । आणीय सवि सिणगार । सु० ।।
पहिरीय उठीय नीसरयु ए । हूउ तिहां
जय जयकार । सु० ।। ९६ ।।

शांतिक पौष्टक भ्रवि करीए। मा०। चउडीउ गय वर पूठि। सु० ॥
राउ राणी सहू चालीयाए। मा०। दान देउ भरी मूठ ॥ सु० ॥ ९७ ॥
वनह माहे तव आवीया ए। मा०। हुई यछि लगन नी वार ॥ सु० ॥
तोरणि पहु तुहु वरू ए। मा०। कीधु मगल चार ॥ सु० ॥ ९८ ॥
जव कन्या मि पेषीइ ए। मा०। अपतु अतिहि आणंद ॥ सु० ॥
रूपनी ऊपमा किम कहु ए। मा०। मुख जिसु पूनिम चद ॥ सु० ॥ ९९ ॥
हाथ वालुभलीउ ए। मा०। चापीउ पाणि सु पाणि ॥ सु० ॥
किन्या मुरकलु देई हसीए। मा०। बोलीय अमृत वाणि ॥ सु० ॥ १०० ॥
हाथे वालु मूकता ए। मा०। सुमरि आपीय रिद्धि ॥ सु० ॥
पाये लागी आसीस देइए। मा०। बहू वर पामयो वृद्धि ॥ सु० ॥ १०१ ॥
वीवाह उत्सव वरतीउ ए। मा०। दीधोलु दान बहूत ॥ सु० ॥
कन्या लेई सजन सु ए। मा०। मदिर वेगि पहूत ॥ सु० ॥ १०२ ॥
वेवाहीय बुलावीया ए। मा०। जसहर करीय पसाउ ॥ सु० ॥
तुतर्या जन सहू परिगर्या ए। मा०। पूजीया करीय बहुभाव ॥ सु० ॥
॥ १०३ ॥
सुख सागर झीलु सदा ए। मा०। जातु न जाणु दीह ॥ सु० ॥
अमृत महादेवी लहीए। मा०। सिहनी पामीउ सहि ॥ सु० ॥ १०४ ॥
इणी परि राज करतडा ए। मा०। वूलीउ अति घणु काल ॥ सु० ॥
राइ सिणगारज पहिरीउए। मा०। तिलक ते
रचीयो लु भालि ॥ सु० ॥ १०५ ॥
बइठउ राजा जसोहरु ए। मा०। सथली सभायते पूरि ॥ सु० ॥
सुरतर सरीषु दान गुणिए। मा०। दालिद्र करइ ते दूर ॥ सु० ॥ १०६ ॥

यशोधर द्वारा दीक्षा ग्रहण का विचार

आरीसि मुख जोयता ए। मा०। कान सधा णिराउ ॥ सु० ॥
पलीउवाल पेषी करीए। मा०। हीयइ बहु उपनु भाउ ॥ सु० ॥ १०७ ॥
जरा इवि गोउ लोक सहू ए। मा०। कीजि आपणु काज ॥ सु० ॥
दीक्षा लेउ हु जिनतणी ए। मा०। बेटा देईय राज ॥ सु० ॥ १०८ ॥
हु तव राइ हकारीउ ए। मा०। देवा लागु सीष ॥ सु० ॥

पुत्र को शिक्षा देना

आपणि कुल जे उपजिए। मा०। वडपणि लेइ ते दीष ॥ सु० ॥ १०९ ॥

समकित रयण सुं पालजे ए । मा० । टालीय सयल मिथ्यात ॥ सु० ॥
धर्म अहंसा मनि धरी ए । मा० । बोलिम कूडीय साषि ॥ सु० ॥ ११० ॥
चोरीय वाल तुं मां करे से । मा० । परनारी सही टालि ॥ सु० ॥
परिग्गह संख्या नितु करि ए । मा० । गुरुवाणी सदा पालि
॥ सु० ॥ १११ ॥
न्याय मार्गे लोकेह सहू ए । मा० । रयणीय[1] भोजन वारि ॥ सु० ॥
वली वली बेटउ सीषविए । मा० । राउ तें कुलह आचार
॥ सु० ॥ ११२ ॥
इणी परि पुत्रह सीषव्युए ॥ मा० ॥ दीधुं तव मुझ राज ॥ सु० ॥
राइ तव दीक्षा लेई ए । मा० । कीधुं आपणु काज ॥ सु० ॥ ११३ ॥
राउ राणी सवि विस कीया ए । मा० । करीयनि युध बहूत ॥ सु० ॥
देश विदेश जीपी[2] करीए । मा० । आपणि गामि पहूत ॥ सु० ॥ ११४ ॥
आण न लोपि मुझ तणीए । मा० । राजनुं एह ज सार ॥ सु० ॥
तव मुझ राणी पुत्र जण्यु ए । मा० । उद्धरवा कुल भार ॥ सु० ॥ ११५ ॥
आगि राणी वल्लही ए । मा० । पुत्र करीय विसेष ॥ सु० ॥
रूपरगिरस रूपडी ए । मा० । कर इछइ नितु नवा वेष ॥ सु० ॥ ११६ ॥
जाणे सो निसुं घडयु ए । मा० । राणी केरडु देह ॥ सु० ॥
दिन दिन वाधि अति घणु ए । मा० । राणीय सरिसु वेह
॥ सु० ॥ ११७ ॥
पुत्र जसोमति[3] वाधतु ए ॥ मा० । आप्यु पद्मा हाथि ॥ सु० ॥
शास्त्र सवे भणावीया ए ॥ मा० ॥ आवीउ पंडित साथि
॥ सु० ॥ ११८ ॥
अति घणु धनमि आपीउ ए ॥ मा० ॥ पडित निमि रीझ
॥ सु० ॥ ११९ ॥
जु मुझ पुत्र पढावीउ ए ॥ मा० ॥ काज अह्मारउ सीझ ॥ सु० ॥
योवन करीय विभूषीउ ए ॥ मा० ॥ मागीय किन्या म ॥ सु० ॥ १२० ॥
सुकिन्या परणावीउ ए ॥ मा० ॥ लगन हूए कि ठाम ॥ सु० ॥
यसोमति कुमरज रूयडुए ॥ मा० ॥ मुझ सुं अतिहिं सनेह
॥ सु० ॥ १२१ ॥
बेटउ किम नवि वल्लहु ए ॥ मा० ॥ आपणु बीजु देह ॥ सु० ॥
इणी परि राज करतडा ए ॥ मा० ॥ दिवसह पश्चिम भाग
॥ सु० ॥ १२२ ॥

---

1. रात्रि भोजन मत करना
2. विजय
3. रानी का नाम

हुं बिठउ सभा पूरी करीए । मा० । चित्त लायुं धरि राग ।। सु. ।।
तब राणी गुण सांभरयाए । मा० । मोहनुं बडउ विनाण ।। सु. ।। १२३ ।।
राणी गुणि रस बेधीउ ए । मा० । मूकी सघलुं माण ।। सु. ।।
राणी विण जे जीवीइ ए । मा० । ते विण किसउं प्रमाण ।। सु. ।। १२४ ।।
जे घडी जू जूयां विसीइ ए । मा० । तिणि खिणि आवि हाणि ।। सु ।।
आज विहाणि देइसुं ए । मा० । यसोमति नीयराज ।। सु ।। १२५ ।।
राणी विण जु खिण रहुं ए । मा० । तु मुझ आवि लाज ।। सु. ।।
पहर एक रमणी गई ए । मा० । बिठोलां सभाहा मझार ।। सु ।। १२६ ।।
आरती अवसर तव हूउए । मा० । मालंतडे बोलाव्यु पडीहार ।। सु. ।।
पान देईनि मोकल्याए । मा० । नरपति सहूय अवास ।। सु. ।।
सभाह बिसरजी ऊठीउए । मा० । पुहुतु मंदिर पासि ।। सु. ।। १२७ ।।

वस्तु

ताम पुहुतु २ गेह द्वारति
तिहा उभी वर कामनी, तेह मझि जय शब्द बोलि ।
परि २ पगथीहु चडयु, तेह गेह सुर भवन तोलि ।
सातमी भूमि बुली करो, आठमी भूमि मझारि ।
तिहां थी राणी उत्तरी, करती जय जयकार ।। ४ ।। १२८ ।।

अथ ढाल पंचमी

पगि लागी राणीयिणि लीए, नारे सूया राइ साही हाथि ।
राजभवन माहे गयाए, नारे सूया राइ साही हालि ।। १२९ ।।
अवरन बीजी साथि, बिठउ राजा सेजतलिए ।
राणीय अंकि बिसारि, हसि रमि राजा रसिए ।। नरे ।। १३० ।।
व्यापु काम विकार, कामरंग सुख भोगवीए ।
पुढयु हु नरनाह, भुज पंजरि राणि करीए ।। नरे ।। १३० ।।
मन माहि उपनी नात, च्यार जात नारी तणीए ।
ते माहि पद्मनी जाति, चद्रं थकुं मुख रूपडुंए ।। नरे ।। १३१ ।
नयणे अतिहि विशाल, आठिय चद्रं सरीखडुंए ।
दीसि सुंदर भाल, जसु सोनुं तापव्युए ।। नरे ।। १३२ ।।

जाणे नारि प्रबंध, राणी गुणे मति मोहीउए ।
नींद न आवि ताम, कलह कमालिहुं मबुए ।। नरे ।। १३३ ।।

हुईयविमासण ताम, जु चंपासि हाथ मुझ ।
बायूय पूछसि अंति, जु आगु तु जगसिए ।। नरे ।। १३४ ।।

रूप तणु होसि अंग, इम जाणी निज सास धरीए ।
कूडीयं नीदज कीध, येम रंगस्स आकुलीए ।। नरे ।। १३५ ।।

तब राणी मन दीध, हूं सउ राणी जाणीउए ।
राणी विमासिए मा, मुज नींडी किम नीसरुए ।। नरे ।। १३६ ।।

रानी का चुपचाप कोढ़ी के पास आना

सेज ज छाडु केम काय संकाची कामिनीए ।
शिनि शिनि नीसरी हेवि, जिम सापिण छोडि कांचलीए ।। नरे ।। ।। १३७ ।।

नीसरी बार उघाडि, जु स्त्री मारग छांडीउए ।
नथी कहिनि पाडि, इम देखीहुंउ पठीउए ।। नरे ।। १३८ ।।

खडगज हाथ धरेवि, अंधार पछेडउ उठीउए ।
पूठि नीसरीउ एव, तव ते राणी उतरीए ।। न ।। १३९ ।।
पुहुती बोलि बार, केहि थकु हुं चालीउए ।
जाता न लागी बार, तिहां सूतउ छि पोलीउए ।। न ।। १४०।।
तेहनी कुष्टी देह, हाथ पाय सवे गलि गयाए ।
दुसह भाषण एह, उडीय आंखिज रातडीए ।। न ।। १४१ ।।
अपि कुलक्षण जाम, राणी येमवि आकुलीए ।
पग तिल बिठी ताम, मोडि अपूठउ जगावीउए ।। न ।। १४२ ।।
साहीय झुटे तेण, जु तु मुडी आवीयए ।
तु तु तेडीय केण, साकलि घाइ ताडीइए ।। न ।। १४३ ।।
जीय जीय जंपि ताम, पापी राउ न छुटीउए ।
किम कटि आवु स्वामि, कोप्पु जु मुझ उपरिए ।। न ।। १४४ ।।
विहिली आवें सनाह, हसउ रमउ करूणा करुए ।
नीयतु आंहिडी साहि, इसु चरितमि पेखीउंए ।। १४५ ।।

खडगउ लास्युं ताम, खडमज तब ते बडमडयुं ए ।
हू ईय विमासख ताम, विरीय वृंद निपातीयाए ।। १४६ ।।
वाहीय खडगज एह, कोढीय नारी उपरिए ।
किम करी वाहु तेह, आणी यौवनि आपीउए ।। न ।। १४७ ।।
पुत्र यसोमति नाम, माइ बाप जे मुझ दीइए ।
तेह हणी कुण काम, एम विमासी हू गउए ।। न ।। १४८ ।।
वेगि पहूतु ग्रवास, खडग मूकीनि पुढीउए ।
रीसि मूकीनी सास, नारी पापज आणडीए ।। न ।। १४९ ।।

नारी निन्दा

नारी विसहर वेल, नर वचे वाए घडीए ।
नारीय नामज मेल्हि नारी नरक यतोलडीए ।। न ।। १५० ।।
कुटिल पणानी खाणि, नारी नीचह गामिनीए ।
साचुं न बोलि वाणि, वाघिण साघिण अगनि शिखा ।। न ।। १५१ ।
वर आलगीय एह, दोष निधाने पूरीउए ।
नारी केरु देह, साहस माया नितु वसिए ।। न ।। १५२ ।।
कामिनी काय मझार, नवधारा शुचि श्रावणीए ।
धिग धिग नामज नारि, इम चितवता पापणीए ।। न ।। १५३ ।।
मूक्यू सघलु वेश, जिम जिम पहिलु नीसरीए ।
तिम तिम कीयउ गवेस, साहस एसु पेखीउए ।। न ।। १५४ ।।
मन माहि हूईय अतिभ्र त, नारी साहस पार नहीए ।
नारी छाड्यु माहंत, पेरवी लक्षण तेह तणाए ।। न ।। १५५ ।।
मलीय पुराणी मीत, नारी चंचल जाणीइए ।
पतव ऊतरीय चित, दैव दैव करतडांए ।। १५६ ।।
तव हूउ परभात, गांइ गीत पचम सरिए ।
मगल वदरिण जात, तव सिज्या थकु उठीउए ।। न ।। १५७ ।।
कीघु मात सनान. वस्त्राभरण विभूषीउए ।
चीउ चीउ पूख वान, गुख उतरती आहणीए ।। १५८ ।।

फूल बीम्बइ नारि, चेत रहित धरणि पडीए ।
मूरछ वसि तिणी वारि, हसीय करी तवमि भण्युं ए ।। न ।। १५६ ।।
जोउ नारि विचार, समुद्र तणां बिंद जोयतांए ।
नारीय चरित न पार, सोकल थाइ माहृलीए ।। न ।। १६० ।।
जीय जीय जीव भणंति, फूल बीम्बि मूहवीए ।
मूरछी धरणि पडंति, ततखण तव ते उठीयए ।। न ।। १६१ ।।
हुं पण नासीय जाम, सभा मझारज आवीउए ।
विठउ सिंघासणि ताम, नारे सूया राइ साही हाथि ।। १६२ ।।

वस्तु

जाम बिठउ जाम बिठउ सभा पूरेवि
जिहां पुण सकल शास्त्र लेई वली व्यास आव्यु ।
वाचतु सिद्धांत मझह, मनि ते नैव भाव्यु ।
तव माता मुझ पालखी बिसी आवी जाम ।
सभा सहित उठी करी, बिठउ करीय मणाम ।। १६३ ।।

अथ ढाल छठी

माता से वार्त्ता करना

सतूठी मुझ देख करि, माता दियई आसीस ।
पुत्र परिवार सजन सहू, हीडोलिडारे जीव यो कोडि वरीस ।। १६४ ।।
माता तब हू पूछीउ, कुशल विहाणी रात ।
शिर धूणी निमि भणउही, ही माता म पूछ सुवात ।। १६५ ।।
माता मु मति इम भणि, कहु वत्स केहा काज ।
तवमि माता सुं कहयुं, ही. सोयणडउं लाधो लुं आज ।। १६६ ।।
वनि जाई दीक्षा लेउं, देईय बेटा राज ।
घरि रहु तु उपजि, हीडोलिडारे जीणि अविमुझ लाज ।। १६७ ।।
माता मु मति इम भाणि, संभलि तु मुझ बात ।
पूजिसुं गोत्रिज आपणी, सोयणडउं वारसि तात ।। १६८ ।।

माता का उत्तर

जल थल नाजे जीवडा, बलि बाकल नैवेद्य ।
कात्यापनी देवीय छि, ही. सोयणडु छेदसि तेह ।। १६६ ।।

हसा वचनज सम्भली, काप्यु हीयडि ताम ।
मुं आगलि ए काइलीउही, हसा केरडु नाम ।। ही ।। १७० ।।

शिरधूणी माता मतिमि वयणज बोल्यु सार ।
कुल शुद्ध राजकुमर हुइ, हीडोलिडारे तेनवि बीलि मार ।। १७१ ।।
पापी इ पापी हुइ, धम्मो इ धम्मी होइ ।
राजा पदवी जिन लही, इम बोनी सहू कोइ ।। १७२ ।।
माता मु मति इम भणि, मूरख पणउ निवार ।
राज वाटजु जाणीइ, पापन लागि लगार ।। १७३ ।।
वेद स्मृति वाणी इमी, कारण पुण्यंज होइ ।
ऊखध माहि विष खाइताही, तीणि मरइ न कोइ ।। १७४ ।।
माइ तायजु मागीइं, अनि जीवह केरी राम ।
मन माहि नवि आणीइ, पाप न लागाइ ताम ।। १७५ ।।
बिहु करे करणज ढाकीयामि बोल्यु तव सार ।
काया वाचा मनि करी, हसी हो वयण निवार ।। १७६ ।।
जुतो हसा वल्लही नीयसिर आपु तोड ।
जिम जाणि तिम तु करे, जीवन मारउ तोइ ।। ही ।। १७७ ।।
माता तव विलखी हुई, मुझ मुख वयण सुणेवि ।
कणिकनी पाउ कूकडु तीणि तु पूजे देवि ।। १७८ ।।
पाप मति मि मानीउ, लेईय एकाकार ।
लेईय पीठमि कूकडु, पहुतो ला देव दुवार ।। १७९ ।।

देवी के आगे कूकड़े को मारना

देवी आगलि ले हण्यु पीठह कूकड राइ ।
जीव घणा तु मान जो, एसउ बोल्यु माइ ।। ही. ।। १८० ।।

देवी मंडपि नृप देइ सघलुं राजकुमार ।
राणीय तब ते साभल्यूं, तिहां आवी तिणी वारि ।। १८१ ।।
राजा पाय लागी रही, राणीय बोलि ताम ।

रानी द्वारा घर पर भोजन के लिये निमन्त्रण देना

ए बैरागज एवडु, कहु स्वामी कुण काम ।। १८२ ।।
आज मया करी मु यति, मुझ घरि करउ रसोइ ।
दीक्षा कालि लेईनि, तप करसा जण दोइ ।। १८३ ।।
तीणे वयणेमि मानीउ, शीलवंतिशा ते भूप ।
जिन पूजानिवालीउ, जाणसु राणी सरूप ।। १८४ ।।
मुडि मुडि तिहां गउ, राणी तणइ आवास ।
कर जोडी साह्मी रही, बोलिउ ताहारडी दास ।। १८५ ।।
सोवन थालज माडीइ, रूपा आसण दीध ।
माइ सहित बिसारीउ, अति घणी भगतिज कीध ।। १८६ ।।
बेटु बहूयरनु तीया नारीय सघलि मझि ।
जीमाडी आदर करी, कहि नवि आपइ मुझ ।। १८७ ।।
साक पाकस्यू रसवती मूकीय थालि भरे वि ।
माहि विसि राणी जीमावही, हीयडोलि कूड धरेवि ।। १८८ ।।
अघ जमती राणी कहि, स्वामीय साभलि बात ।
पीहर थी काई सूखडी, आव्या हुया दिन सात ।। १८९ ।।
तो विण मो काई जोइवा आगि अछि नेम ।
अवसरि तु नवि पामीउ, तुह्म जोयउ केम ।। १९० ।।

राजा को विष के लड्डू खिलाना

अघ जमती ते उठीय जाईय माहि अवास ।
पेई आणी उघाडीइ, मूकी छिराउनि पास ।। १९१ ।।
विष मोदक दोइ काढिया, एक माय एक राइ ।
रूडा ते बीजा दीया, वेंली वली २ लागि छिपाइ ।। १९२ ।।

कुटकुतवमि चाखीउ, आंणतु व विनाण ।
तिणइ विषि हुंधारीउ, राणी नी लोपी न काण ॥ १९३ ॥
विष धारया धरणी पडयु हूउ एक पोकार ।
पड तिमि तव इय भव्यु, विष तणा वैद हुकार ॥ १९४ ॥
मुझ वाणी जब साभली, राणी चितीताम ।
वैद्य जीवाडि राउनि, तु मो विणसि काम ॥ १९५ ॥

रानी द्वारा विलाप

इम चीती हाहा करी, छोडिय केश कलाप ।
मूरछ मसि उपरि पडी, हीयडलि आणीय पाप ॥ १९६ ॥
तुझ विण राणा राउला, आगुलडीय देखाडि ।
निरधारी तु काइ करि, काइन करइ सभालि ॥ १९७ ॥
मूरछ मसि उपरि पडी, गलइ अंगूठउ देइ ।
चापयि कठ सोहामणु, प्राण रहित कीधां देह ॥ १९८ ॥

राजा का दाह संस्कार करना

राय राणा तव सहू मिल्या, माडीय एक पोकार ।
माइ यसोधर बिहुनि, चदन देउ सस्कार ॥ १९९ ॥
गाइ भूम सोनु देइ, मिलीया सवि परवान ।
ब्राह्मण सवि तेडी करी, अति घणु दीधो लु दान ॥ २०० ॥

यशोमति द्वारा राजा बनाना

राय राणे सघर्षे मिली, कुमार बिठास्यु पाट ।
राउ यसोमति थापीउ, जय जय बोलि छ भार ॥ २०१ ॥

वस्तु

तेह राजन तेह राजन पाप भरि भावि ।
जे जे दुख वसीमि सहां, ओडा परिभव लहीउ ।
जिम जिम जिहां जिहा उपना, जिसी २ गति दुःख भलीया ।
जिणी जिणी परि परि भव्यउ पीठी कूकड काजि ।
ते ते सविहु तुझ कहु, सभलि तु महराज ॥ २०२ ॥

अथ ढाल सप्तमी

गंगा हिमवन अंतरिए, गिरिवर अति उत्तंग तु ।
नाम सुवेलु जेहनु ए, दीसि अतिघणु चंग तु ।। २०३ ।।

मोर का जन्म मिलना

कटाकुल जे संखडाए, काकर कठिन विशाल तु ।
अतिभीषण सुगामणु ए, जाणे नरक निवास तु ।। २०४ ।।
तिणि गिरि ढेल तणि उरिए, उपनु हु ताम तु ।
माता मुझनि पांख करेवि बिढांकी ताम तु ।। २०५ ।।
तिह परवत मु कूकडउंए, अछइ मच्छी गाम तु ।
तिहां थकु एक पारधीए, पुहुतु तिणि ठाम तु ।। २०६ ।।
ततक्षण तीणि बाण हणी, साथ चडावी ढेल तु ।
नाहनु सु मुझ पेख करे, चाल्यु फाटि मेल्हितु ।। २०७ ।।
घरि जाई घर आंगणिए, मूकी खाण मझार तु ।
ढेलवी केवा ते गउए, मलीउ ताम तलार तु ।। २०८ ।।
ढेढऊ दीली तीणी लीइए, ठालु आव्यु गेह तु ।
कामिनी कृत्या तस तणी एकाढय् कूटी तेह तु ।। २०९ ।।
मुलेई नइ पारधीए, मउ तली एरह पासतु ।
माणु सानु तिणि दीउए, हुं दीधि तिणि तास तु ।। २१० ।।
तिसु तलार धरि ऊछरयु ए, पाम्यु पूरू काय तु ।

उज्जयिनी के राजा के पास ले जाना

उजेणी नयरी लीउए, जिहां जसोमति राउतु ।। २११ ।।
भेटणु ते देखी करीय तव मनि हरख्यु भूप तु ।
जे माता साथि मूईए, सांभलि तेह सरूप तु ।। २१२ ।।
करहाटक देशि हुउए, मोटु स्नान कराल तु ।
मोटी दाढे ऊजलुए, मुख तेहनु विशाल तु ।। २१३ ।।
राइ तेह देसइ तणिए, सोवन संकलि जू तउ ।
पारधि रस लिणि आणीउए, राउ जसोमति नित तु ।। २१४ ।।

तीणि तिहां ते पाठव्युए, आव्युं अम्हा मझार तु ।
तेह दर्शन राउ हरषीउए, ओऊ कर्म विचार तु ।। २१५ ।।
लुड मसाणी नइ दीउए, स्वानज पालण काज तु ।
हु पुण गरढीनि दीउए, संतोषि नरराज तु ।। २१६ ।।
एक दिवस मि पेखीउ ए, राणी रमाती रग तु ।
बिठी रलीया इन मईग, कूबड़ तणि उत्संगि तु ।। २१७ ।।
जाती समरि जाणीउए, तव मनि उपनी रीस तु ।
कोधि गयणिहि उडीउए, नख देहणीमां सीस तु ।। २१८ ।।
राणी रीसि मूकीउए, निज भूषणनु घाउ तु ।
पामीय मूरछा ते पड्युए, जिहां बिठउछि राउ तु ।। २१९ ।।
तव राइ एसु भव्यु ए, लिइ लिइ ए सखि जास तु ।
स्वानि सकल ओडि करे, ग्रहीउ कठि ताम तु ।। २२० ।।
तव राइ माथि हव्यु ए, रमता सो गढ स्वान तु ।
तिणि घाइ ते स्वान तणी, जीव हनी हूई हाणि तु ।। २२१ ।।
ते पडिया दोइ पेख करे, राइ विलापज कीध तु ।
तेडी सवि जन आपणाए, दसी सीरवामणि दीधतु ।। २२२ ।।
सस्कार अगरि देउए, देउ सोवर्णह दान तु ।
गगा अस्थिज पाठवुए, मोर तणानि स्वान तु ।। २२३ ।।
स्वर्गि जई सुख भोगविए, जिम बईयाई तात तु ।
कठ गइथि जीवडिए, मितवसुणीयए बात तु ।। २२४ ।।
तीणे ते सहूइ कीउए, तव दोइ छडि सरीर तु ।
गिरि हि सु बेलि भीमवर्नि, गगा केरि तीर तु ।। २२५ ।।

मोर एवं स्वान मार कर सर्प एवं सेहलि होना

मोर मरी निहा उपनुए, कालु मोटु साप तु ।
स्वान वली सेहलु हुउए, भोगवतु निज पाप तु ।। २२६ ।।
एक बार जब दोइ मिल्याए, सेहलि साम्हु नाग तु ।
सापि सेहलु फणि हण्युए, आवर नहीं कोइ लाग तु ।। २२७ ।।

सेहलि पलगं मारीउए, तव तरिछि जे जीव तु ।
नीगाई सेंहलु तव हुण्यु ए, करतु मलिघणु रीवतु ।। २२८ ।।
उज्जेणी तलि जे वहिए, सिप्रा नदी सुतार तु ।
सेहलु मरी तिहाँ उपनुए, महामच्छ सिसुमार तु ।। २२९ ।।
साप मरी तीणी नदी ए, रोहीतणि अवतार तु ।
मछ गला गलि उछरयाए, जाति तणि विचार तु ।। २३० ।।
एक बार रोही चरयु ए, जल माहि सिसुमार तु ।
दासी राजा केरडी ए, झीलेवा तिणि बार तु ।। २३१ ।।
झस देई दासी पडीए, मच्छह उपरि जाय तु ।
हू मूक्यु दासी ग्रही ए, तीरपी बुलाव्यु ताम तु ।। २३२ ।।
दासी बीजी नासि गई, तेहे वीनवीउ राउ तु ।
तुझ दासी माछि गलीए, काई करू उपाय तु ।। २३३ ।।
राइ मछ कडावीउए, मोकलि धीवर धाड तु ।
जो सरि फरी घीसावीउए, तेनही कहि निपाडतु ।। २३४ ।।
राइ माई ते भख्यु ए, जोउ करम विचार तु ।
तवहु नासीनि गउए, बीजाद्रह मझार तु ।। २३५ ।।
एक दिवस तिहां आवीयाए धीवर बाडि विशाल तु ।
तेहे लाख्यु जान्नि पड्यु ए, रोही मछु जाण तु ।। २३६ ।।
बाहिर काढी लांखीउए तेहे मछु जाम तु ।
ढेकल हणता देख करे, बूढउ बोल्यु ताम तु ।। २३७ ।।
मम को एहनि मारसुए, रोही मझ उ नाम तु ।
मि जाण्यु मूका वसिए सरयु, अम्हारू काम तु ।। २३८ ।।
आज हण्यु धुक्तिणासखिए, लेईय चालु गेह तु ।
ते सवि लेई घरि गयाए, लाख्युऊ करडी तेह तु ।। २३९ ।।
तिहा रह्या बहु दु:ख सह्याएं, सपतु परभात तु ।
राजभवनि लई गयाए, जिहा राजानि मात तु ।। २४० ।।
राजा माता मति भणिए, रोही मभु छउ एह तु ।
करउं श्राद्ध ता तह तणु ए, स्वर्गह कारण तेह तु ।। २४१ ।।

तिणी पापणी वली तिम किउं ए, तेडी बंभणसार तु ।
आती समरण मुभ हुउए, राजन तीणी वार तु ॥ २४२ ॥
हवि भंतिज बाहि ऊछक' ए, नयरी उजेणी पास तु ।
अस्थि चर्म रोमह निलुए, जाणो नरक निवास तु ॥ २४३ ॥

सिसुमार मर कर बकरी होना

सिसुमार माछु मरीय हुई, छाली तिणि ठाम तु ।

रोही मर कर बकरा होना

रोही मरी वली उपनुए, ते छाली उरि ताम तु ॥ २४४ ॥
मोटु बोकड तेहूउए, तिसु पय पान करत' तु ।
जूथा नाथि विलोकिउए, मनि धरि क्रोध अपार तु ॥ २४५ ॥
कूखि सींगि सु' हण्यु ए, सुक्र सहित तीणि वार तु ।

बकरा मर कर फिर बकरा होना

तीसरी जीव तिहा हूउए, छाली उयरि मझार तु ॥ २४६ ॥
आपि आपनी पाईउए, जोउ ससार विचार तु ।
तेह गर्भ मोटु हुउए, जणवा तणि यसगि तु ॥ २४७ ॥
तेह छाली सु' जूथ धणी, करिबा लागु संगि तु ।
राउ जसोमति आवीउए, पारधि ध्युतिणिसेवितु ॥ २४८ ॥
क्रोधि बाणज मूकीउए, तिणि हणीयां ते बेवितु ।
राजा धाई आवीउए, उदर फडाव्यु' तास तु ॥ २४९ ॥
बालक बाहिर काढीउए, साजु पूरे मास तु ।
प्रजापाल मति राउ भणिए, जोनि रहित ए आज तु ॥ २५० ॥
आवर माइ पय पान करे, इणि ऊछेरि काज तु ।
राजभवनि राजा गउए, लागु राज व्यापार तु ॥ २५१ ॥
पाप रिधि घणु मोहीउए, पारधि करि अपार तु ।
पारधि जाता गाउ वली, मान्याभिसा बीस तु ॥ २५२ ॥

जु यो पारधि सफलहुसि तुमि देवा देस तु ।
देवयोगि ते सफलूई मारवाभिसा राई तु ॥ २५३ ॥
केला बिहिची आपीया ए वेवी केरि ठाइ तु ।
सूयारि राजा वीनव्यु ए सांभलितु भूपाल तु ॥ २५४ ॥
भिसा सवेवि टालीया ए स्वान अनि सीयाल तु ।
श्रुतयोगई बंभण भणिए योल रहित जे छाग तु ॥ २५५ ॥
श्राद्धयोग भिसा हुई ए लागि ते हुनि पाग तु ।
राउ विमाम्भी आणीउ ए चद्रमृत्य जे नाम तु ॥ २५६ ॥
तव तलवर ते आणीउ ए राजा भोजन ठामि करतु ।
श्राद्ध राजा दिइए आजीजन कहू नाम तु ॥ २५७ ॥
अह्म न कांई पामीउ ए तरस भूख दुख ताम तु ।
बभण जीमीनि गया ए राजा सपरिवार तु ॥ २५८ ॥
बइठे जिमवा उपनु ए जाति समर तिणि बार तु ।
घर पुर नारी पुत्र सहू ए, माहारु अच्छि एह तु ॥ २५९ ॥
एकन देखु प्राण प्रियाए अमृत महादेवी तेह तु ।
तिणि अवसिर दासी भणि ए सुणि सखी वचन विचार तु ॥ २६० ॥
एह गधभिसा तणु ए तुही अच्छि अपार तु ।
बीजी सखी तिहां इम कही नहीं ए भिसागध तु ॥ २६१ ॥
मीनासनि कोढिण थई ए राणी अति दुरगध तु ।
शिरघुणी भीजी भणिए नही मीनासन एह तु ॥ २६२ ॥
विश देई नाहू मारीउ ए पाप तणु फल एह तु ।
खरखरति गलि बोलीउ ए राणी तामसूयार तु ॥ २६३ ॥
साथल कापी आपि मुझ छाला सेकि अंगार तु ।
तिणि पापी तव तिम कीउं ए बेटा संरसी मात तु ॥ २६४ ॥
घावा लागां श्राद्ध करी मुनि बोलि इसी बात तु ।
तिणि अवसरि वली उपनु ए माता तणउ विचार तु ॥ २६५ ॥

छाली मरी तव उपनी ए कलिंगह देस मझार तु ।
भिसु भारावह हूउए वहितु हीडि भार तु ।। २६६ ।।

बकरी मरकर भैंसा होना

वणजारा वरदत्त तणा ए वस्त्र गुणति एीवार तु ।
लेइ उजेणी आवीयाए डाली गुणज ठामि तु ।। २६७ ।।
ताप कर चाल्यु ते गउए सिप्रा नदीयज नाम तु ।
झीलति तिणि आवीउ ए राजासन तोषार तु ।। २६८ ।।

कूखि सिंगि सु हव्यु ए जाणि तणि आचार तु ।
अश्वपालिइ राइ वीनव्यु ए जाण्यु अश्व विचार तु ।। २६९ ।।

कोपि राइ पाठव्याए भिसा लेयण तलार तु ।
तिणि आणी दृढ बाधीउ ए राजा भोजन ठाम तु ।। २७० ।।

हीग लूण पाणी भरीय घरीय कडाही ताम तु ।
रडिपडइ लोटि घणुए मूकि अति पूतकार तु ।। २७१ ।।

तब रांइ बोलावीउ ए आगलि रह्यु सूयार तु ।
पाकु पाकु छेद करे आणिनला इमवार तु ।। २७२ ।।

तिणि पापी वली तिम कीउ ए जाकुडि छाडी ग्रीव तु ।
ते छालु तिहा सेकीउ ए करतु अतिघणु रीव तु ।। २७३ ।।

अतिकष्टि ते बे मूयां ए सुणि राजन आचार तु ।
एक जीव वध पामीउ दुःख घणा ससार तु ।। २७४ ।।

वस्तु

ब्रह्म बोलइ ब्रह्म बोलइ सुणि न भूपाल ।
जेणीथु ढूकडुं जेह अच्छि अंतिवासु ।
पापक लोक करि पूरीउ पाप कर्म वली नरय पासु ।
कूकडी तिहा जेन्मीया पाप विशेशि बेह ।
जणता मात बिलालेईतु पापतणां फल एह ।। २७५ ।।

अथ ढाल आठमी

राग राज वल्लभ

सखी कूकड युगलुं तेह चुणत चुणतां वृद्धि गउरे ।
वली उछरीयां बेह तेह सर्व कलापे पूरीया रे ।। २७६ ।।

एक दिवस तलार वन जाई पाछउ वल्यु रे ।
सखी दीठां तिणि ते बेह अंगि लक्षणवली सविमरयारे ।। २७७ ।।

लेईय ताम तलार राउ जसोमति भेटीउरे ।
सखी वली तेहवां देखि राजा हरषि व्यापीउरे ।। २७८ ।।

आप्यां तेहनि ताम तु ऊछेर माहरां रे ।
होसि रमवा काजि हाथली एहनां पीलकारे ।। २७९ ।।

सखी बोल्यु महा पसाउ तिणि दोइ पंजरि घातीया रे ।
सखी लेई वेगि तलार निज मन्दिर वली आविया रे ।। २८० ।।

सखी कण चणतां जल पान एक दिवस सुखिनी गम्यु रे ।
सखी आव्यु ताम वसत वन बन वृक्ष जमुरीया रे ।। २८१ ।।

कोइल करइ टहूक भमरा रुण झुण ध्वनि करि रे ।
सखी फूल्या केसू फूल सहकारे मांजिर घणी रे ।। २८२ ।।

नाम जसोमति राउ राणी सुंवली वनि गउरे ।
सखी साभलि तेह तलार ततक्षण वन भणी साचरचारे ।। २८३ ।।
अह्मनि लेईय साथि पजिर थावला वनि गउ रे ।
सखी आव्यु ते वन माहि जिहां राजानां घर अच्छि रे ।। २८४ ।।
सात खणा रे आवास राणी सुं नरपति रह्यु रे ।
सखी तेह आगलि पटसाल वस्त्र तणउ गुडउ कीउ रे ।। २८५ ।।
सखी पंजर तिणि थल मांडि वन जोवा मणी सामह्यु रे ।
सखी दीठउ तिणि असोक कूकडलु सुरतर समुरे ।। २८६ ।।
तेह तलि मुनिवर राउ ध्यान धरी आसण कीउंरे ।
सखी पंच महाव्रय धार, पंच सुमतिहि विभूषीउरे ।। २८७ ।।

देषी तेह तलार मनमांहि कोपि परजल्यु रे ।
सखी ते काढवा उपाय अतिघणु चितइ चीतविरे ।। २८८ ।।
ए नागु निरलज राउ राणी रमता वनिरे ।
देखी अति घणु कोप करसि मुझ उपरि वलीरे ।। २८९ ।।
नीधु तेणि उपाय मुनिवर वन थी काढिवारे ।
सखी कूडी पूछउ बात कहिसि ते नवि मानिवु रे ।।२९०।।
ईम चीतवी तलार कूडि मुनिवर पगि पड्युरे ।
सखी बिठउ आगिल जाइ मुनिवर ध्यानज मूकीउरे ।।२९१।।
पूछि ताम तलार कहु स्वामी सु चीतव्यु रे ।
सखी बोलि मुनिवर राउ दुष्टपणउ तिसु जाणतुरे ।। २९२ ।।
काया जीव विचार जू जू भाविजे अच्छिरे ।
सखी चीत्यु ते वली वेद जिम जिम करी जू जूया अत्थि रे ।। २९३ ।।
काया भितर स्वभावि जीव स्वभाविछि जूउरे ।
सखी करमि बध्यु जीव किम बाझि किम छूटीइरे ।।२९४।।
वलतु कहि न लार सुणि मुनिवर कुलि भोलव्यु रे ।
सखी कायानि जीव एक मम जाणे तु जूजूया रे ।। २९५ ।।
चोर एक मिलेवि नादिमाहि मइ घातीउरे ।
सखी ते बीडी वली लाख जीव नीसाह जोईउ रे ।। २९६ ।।
मु उ माहि चोर जीवन दीठउ नीसर्युरे ।
सखी इम जाणे बेह एक ते काया ते जीवड उरे ।। २९७ ।।
बोलि मुनिवर ताम साभलि तलवरइ मनही रे ।
पुरुष एक सख हाथि नादि माहि वली घातिउरे ।। २९८ ।।
सखी बीडी ते वली लाषि सखनाद माहि कीउ रे ।
सखी साभल्युं बाहिर लोक जोउ ते कांइ न पेखीउरे ।। २९९ ।।
तिम जाणे ए भेद काय जीव बेजूजूयां रे ।
सखी बोल्यु वली तलार सुणि मुनिवर तु वीसर्युरे ।। ३०० ।।
सखी चोर एक मिलेवि घटि घाती नइ तोलीउरे ।
तेय हणी करी ताम वली तीणि घटित इम कीउरे ।। ३०१ ।।

जे तु जीव सबेल जीव रहित ते तुजूहउरे।
सखी तिणि कारणि तु जाणि काया जीवन जूजूयां रे ।। ३०२ ।।

बोलि मुनिवर राउ सुणि न तलारजेहु कहुं रे।
सखी आणी एक नियंम ते पुण पवनि पूरीरिया तो ।। ३०३ ।।

स्युघट धरी तेंह ऊतारीनि जोईउं रे।
सखी जे ती पूरी वाउ, वाउरहित ते ती हुई रे ।। ३०४ ।।

तिणि कारणि तु जाणि कायानि जीव जूजूया रे।
सखी बोलि ताम तलार सुणि मुनिवर डाहुनही रे।। ३०५ ।।

चोर एक वच माहि लेईनि तिल तिल षडीउरे।
सखी जोउं तह शरीर जीवक हीनवि पेषीउरे ।। ३०६ ।।

इणि भेदि तु जाणि जीव काया न बि जूजूया रे।
सखी मुनिवर पभणि ताम साभलि भद्र जेहू कहू रे ।। ३०७ ।।

लेई अरणी काठ तिलपांइ नाह्नी षंडीउरे।
सखी जोई आगनि मभार लोक सवहू वसतु कहिरे ।। ३०८ ।।

नवि दीसि जोवत तिम काया माहि जीवडउरे।
सखी नवि दीसि जोवंत तिम जणे सहू जूजूयां रे ।। ३०९ ।।

बोलि ताम तलार सुणि स्वामी निरू तरहूउरे।
सखी देउ आदेश ज नाथ विउं करुहुं तुझ तणु रे ।। ३१० ।।

बोलि मुनिवर राउ सुणिन वत्स तुझनि कहुंरे।
सखी करिन करिन जिनधर्मी हिंसा रहीत सोहामणु रे ।। ३११ ।।

जपि तलवर स्वामि धर्माधर्म मझ फल कहु रे।
सखी जिम हु जाणु बेह जे रूडउं ते आचरु रे ।। ३१२ ।।

बोलि योग निरिंद प्रति रूडउंति पूछिउरे।
सखी नारी बहु गुणवंतकुल लक्षण रूपि भलीरे।। ३१३ ।।

सात भूमि जे गेह राज रिधि मोटिम घणी रे।
सखी पुत्र पौत्र सताव विनय विवेकादिक सहूरे।। ३१४ ।।

हाथी घोडा जेह रतन जात वली जे अस्थि रे।
सखी जिनधर्म्म तणु फल ए जाणि न जे स्कु अस्थि रे।। ३१५ ।।
पाप तणि परमाणि बहु बोली वली बठ कणी रे।
सखी काली अनि कुहाडि नीचे लष्यण कामनी रे।। ३१६ ।।
कुपिता जुञ्छिल गात्र निरखर माइ बांधव वली रे।
सखी निरधन कांणा खंज रोग रास करी आकुलारे।। ३१७ ।।
जे जे दुखद जाणि ते ते फल पापह तणु रे।
केतु कहुं विचार कहितां पार न पामीइ रे।। ३१८ ।।
पचाणुव्रत जाणि च्यार जे सख्याव्रत कह्यां रे।
सखी तीन अस्थि गुणव्रत ए बारि व्रत उचरे रे।। ३१९ ।।
समकित साचु पालि दयाधर्म वली जे अस्थि रे।
सखी सुणी सहू बोलि तलार हिंसा रहित ए पालिवुरे।। ३२० ।।
हिंसाकुल व्रत जाणि किम करी ते छाडीइ रे।
सखी बोलि मुनिवर राउ सुणिन वत्स जे हुं कहु रे।। ३२१ ।।
हिंसा तणि प्रभावि कुल धम्मइ वली घणु रतां रे।
सखी कूकड युगलु जाणि जाणि परि दु:ख बहु सह्यारे।। ३२२ ।।
पगि पडित पूछित लार कहु स्वामी ते किम हूयारे।
सखी कीणी परिभम्यां ससार कहि मुनिवर सहू साभलि रे ।। ३२३ ।।
जेह जसोधर राउ ऊजेणी नयरी हूउरे।
चन्द्रमती तिसु मात पीठमि जीव अणावीउ रे।। ३२४ ।।
यसोमति केरि पाटि देवी मडपि ते लाउरे।
सखी हणीउ ताणइ राउ माइ आदेशि सवि काडरे।। ३२५ ।।
मार्‌या राणी बेह घरि लेडी मोदिक दीयारे।
सखी विषह तणि रे विनाश मरीयनि तिहा उपनां रे।। ३२६ ।।
पहिलि भवि ते स्वान मोर बेहू ते उपना रे।
सखी बीजि भवि ते बेह सेहलु निविसह रहूयारे।। ३२७ ।।

सखी त्रीजि भवि ते बेह सिसुमार रोहो हूया रे।
सखी चुथि भवि वली तेह छागु छाली दोइ हुया रे॥ ३२८॥
भिसु छागु बेह जिणी परि दुःखज अति सह्यारे।
सखी तु' पुण जाणि तेह परिसघली वली जिम मूयां रे॥ ३२९॥
तिहां थका ए बेव कूकड युगलु' ऊपनां रे।
सखी पजरि घाती बेह तिए वन माहि आणीयां रे॥ ३३०॥
बोलि ताम तलार कंपतु मुनिवर प्रति रे।
सखी ए सहू आपणि डाल कींधु निकरा बीउ रे॥ ३३१॥
राति भोजन नीम तिन्न वार जल गालिसु'रे।
सखी समकित सहित विशेष तिणि तलवर पणि पडिलीउं रे
॥ ३३२॥
नीय भव समरी ताम कूकड युगलि पुण लीउ रे।
सखी तीणी दिसी नमी मुनिराउ समकित स्यु'जे व्रत कह्यां रे
॥ ३३३॥
पामीय धर्म विचार हरषि युगलु' वासीउरे।
सखी खीजी राजा ताम सबद बेध करी दोइ हण्यां रे॥ ३३४॥
कुश.मावलि उरि बेह मरी तिहां थी उपनां रे।
सखी राजा यशोमतितात धर्म पसांइ पामीउ रे॥ ३३५॥
उयरि वसंता ताम माता निडोहलुहुउ रे।
अभय दाननी आणि देश नयर राजा दीइ रे॥ ३३६॥

वस्तु

ताम नर वयर नयर उजेण पूरे मासे।
जनमीयां माइ बाप वली नाम दीधां।
अभयरुच अभयमती कला कुशल बाधंत कीधां।
कन्या पंच विवाहीउ वाध्यु मुक राउ देषि।
कन्या कथ कैशक विहड जगत रह्यावी रेष॥ ३३७॥

अथ ढाल नवमी

विणजारा रे एक दिवस वनमांहि राजा पारधि सांचरयु वणजारा रे।
। वि।
वाग्युरीयां सइ पाच पाइक साथि ते लिया ।। वि० । ३३८ ।।
वृक्ष असोक ज हेठ मुनिवर दीठउ ध्यान रह्यु । वि०।
देषी मुनिवर राउ राजा कोपि परजल्यु विण ।। वि० । ३३९ ।।
पारिधनि फली आज मुनिदर्शन था होइ सइ । वि०।
मुंक्या रांइ स्वान पाचसइ मूठि मूकीया ।। वि० ।। ३४० ।।
ते सघला वली स्वान मुनिवर पाषलि परिवरया । वि०।
मस्तक भूमिश्र डाडि जाणे व्रत लेवा रह्या ।। वि० ।। ३४१ ।।
कल्याण मित्र ज नाम विणजारु देशाउरी । वि०।
राजतणु जे मित्र बालद लेई आवीउ ।। वि० वि० ।। ३४२ ।।
मुनिवर जाण्यु तेण वन माहि ध्यानि रह्यु । वि०।
वदे वा मुनिराउ बालिद छाडी नीसरयु ।। वि० ।। ३४३ ।।
दीठउ तेण नरिंद भेट घणी लेई आवीउ । वि०।
भेटिउ तेणि नरिंद राउ साहांमा पगला भरि ।। वि० ।। ३४४ ।।
पूछी खेम समाधि पान मान नरपति दीइए । वि०।
राइ प्रति ते मित्र वचन मनोहर उचरिए ।। वि० ।। ३४५ ।।
आवु यसोमति राउ मुनिवर वदण कारणि । वि०।
रूठउ बोलि राउ साभिल मित्र जेहूं कहुं ।। वि० ।। ३४६ ।।
स्नान रहित अपवित्र नग्न अमगल जाण जे । वि०।
निग्रह करवा जोग्य हुं भूमिपाले वदीउं ।। वि० ।। ३४७ ।।
ते मुझ एह प्रणामतु वाछिय कराविवा । वि०।
जु इम बीजउ कोइ कहि तुमि मारिवु ।। वि० ।। ३४८ ।।
ए सु राउ वचनसांभली तेमनि कम कम्पु । वि०।
विमास्युं मनि साच राजामि प्रतिबोधिवु ।। वि० ।। ३४९ ।।

बोलि किल्याण मित्र साभली राजा हुं कहुं । वि० ।
स्नानि पवित्र न होइ जे आचारि बाहिरा ।। वि० ।। ३५० ।।
मंत्र जाप बलि होम दिनकर वायु काल परोइं । वि० ।
माटी निबली बार पवित्र पत्रगा कह्या भेद छि ।। वि० ।। ३५१ ।।
बंभग एक सुजाण वेद स्मृत सहुइ भण्यु । वि० ।
बाटिते जल हीरा कसु न पगा लगि ते मूउ ।। वि० ।। ३५२ ।।
कहु न तम्हे भूपाल कवरा गति ते दिज गउ । वि० ।
जु गउ नरक ज तेह वेद भण्यु तेनि फलयउ ।। वि० ।। ३५३ ।।
जु गउ तेह ज स्वर्गि जातह निफल जल सौचियउ । वि० ।
मुनिवर सदा पवित्र मंगल परम ए जाग जे ।। वि० ।। ३५४ ।।
नग्न अछि महादेव परमहंस नाग्यु अस्थि । वि० ।
बोल्युं सघले धर्म नग्न पणु दोहिलु अस्थि ।। वि० ।। ३५५ ।।
स्त्रीय परीसह जेह तेह भागा भूला भमि । वि० ।
सील रहित नरनारि ते पहिर्‌या नागा सही ।। वि० ।। ३५६ ।।
सील सहित नरनारि ते नागां पहिर्‌या सही । वि० ।
मगलमि जे जेह शकन ते मुनिवर जाण जे ।। वि० ।। ३५७ ।।
श्रवण तुरगम राउ मोर कुंजर वृषभि सही । वि० ।
जातां वलतां एह परम सकुन तुं जाणजे ।। वि० ।। ३५८ ।।
तिजे बोल्यु बोल निग्रह मो करिवा तणु । वि० ।
बालक ना जिसु बोल मुनिवर कुण हणी सणकि ।। वि० ।। ३५९ ।।
पाणिउ चामि मेर सायर बांहि जे तरिवि । वि० ।
मुनिवर कांई केण कर वावली वालि नही ।। वि० ।। ३६० ।।
जेति कहिउ भूपहुं भूमिपाले प्रणमीउं । वि० ।
देश कलिंगह राउ नाम सुदत्त बखाणीइ ।। वि० ।। ३६१ ।।
योवन पाम्यु चोर तलवरि राउ आणिल धरयु । वि० ।
राइ पूछया विप्र अपराध एह चर तु कहु ।। वि० ।। ३६२ ।।
तेहे बोल्युं ताम चाचरियु पंड कीजीइ । वि० ।
तेह सुणी नि भूप बैरागि राज बेटा देइवि ।। वि० ।। ३६३ ।।

लीधी दीक्षा जेह् ते ए वन माहि आवीउ। वि०।
कहि जसोमति राउ चालु न ते जोईइ ॥ वि० ॥ ३६४ ॥
किल्याण मित्र ति राउ साथि मुनिवर प्रणमीह। वि०।
ततक्षण पूरियोगइ धर्मवृद्धि बिहुं जण दीइ ॥ वि० ॥ ३६५ ॥
मुनिवर सरषु चित्त सत्तु मित्र राइ पेषीउं। वि०।
राउ थउ वैराग धर्म गेह ए मुनि अस्थि ॥ वि० ॥ ३६६ ॥
एह तणाय शरीर जेमि विनाश विमासीउ। वि०।
तेह छेदे वा पाप शिर षंडी पूजा करू ॥ वि० ॥ ३६७ ॥
तुह छूटउं आज अवर उपाय न को अस्थि। वि०।
मूक्या ते सवि स्वान राउ दयारसि परिवर्‍यु ॥ वि० ॥ ३६८ ॥
मुनिवर राउ नु चित्त ज्ञान प्रभावि जाणीउ। वि।
मुनिवर बोलि ताम राउ विमासण मन करू ॥ वि० ॥ ३६९ ॥
आतम हित्या पाप शिरछेदंतां लागसि। वि०।
राउ सुणी मुनि वाणि मनि आचार्यि पूरीउ ॥ वि० ॥ ३७० ॥
मित्र तणु मुख जोइ शिर धूणी बोलि वली। वि०।
किम जाणी मुझ बात जे मइ मन माहि चीतवी ॥ वि० ॥ ३७१ ॥
मित्र ज बोलि ताम ए मुनिवर ज्ञानी अस्थि। वि०।
माइ ताइ तुझ बात पूछि भवंतर प्रणमीनि ॥ वि० ॥ ३७२ ॥
हरष्यु मनि भूपाल कर जोडी मुनि वीनवि। वि०।
माजु आजीता तमाइ सहित ते किहां गया ॥ वि० ॥ ३७३ ॥
आजु जसोधर राउ पलित केश शिर पेषीउ। वि०।
मनि उपनु वैराग राज ताम तोनि दीउ ॥ वि० ॥ ३७४ ॥
लेई दीक्षा तेण अणसण पाचि तिणि कीया। वि०।
पहुतउ माहेद्र स्वर्गि देवी सुं लीला करि ॥ वि० ॥ ३७५ ॥
जे वली तोरी मात विश देई तिणी प्रीय हण्यु। वि०।
पामीय तीणीय कुष्ट मरीय नरकि वली ते गई ॥ वि० ॥ ३७६ ॥
जे आजी अनि तात चंद्रमती यशोधरा बहू। वि०।
देवीय आगइल तेह पीठी कूकड मारीउ ॥ वि० ॥ ३७७ ॥

विष देई तुझ माइ विषहु प्रभावि मारीयां । वि० ।
मरीय करीते बेहु स्वान मोर होई आवीया ।। वि० ।। ३७८ ।।
सेहलउ निवली सांप सिसुमार रोहीं हूया । वि० ।
छालु छाली बेहु छालु भिसु वली हूया ।। वि० ।। ३७९ ।।
कूकड युगलु जेहु शब्द वेघ करीति हण्यु रे । वि० ।
कुशमावली उरि तेह बेटउ बेटी तुझ हूयां ।। वि० ।। ३८० ।।
हवडा ते तुझ गेह राजरिद्धि सुख भोगवि । वि० ।
राजा दूह विरण चित्त अति आणि लोटि रडि ।। वि० ।। ३८१ ।।
एकह जीवह पाप एवडां दुख एहे सह्यां । वि० ।
इणि रांइय अनेक मारया जीवकेयु हसिइ ।। वि० ।। ३८२ ।।
बोलि किल्याण मित्र रोइ राजन पामीइ । वि० ।
करि नउं जिनवर सार हिंसा पाप छांडी करी ।। वि० ।। ३८३ ।।
राउ ज बोलि मित्र मुनिवरनि तुह्मे वीनवु । वि० ।
जिम दिइ दीक्षा वेगि काजन संसारि अतिथ ।। वि० वि० ।। ३८४ ।।
वैराग विशिष्यु राउ मुनिवर पगि लागी रह्यु । वि० ।
कुइ राजा घरि वात दीक्षा राउ लेवा तणी ।। वि० ।। ३८५ ।।
मूकी अघ सिणगार राजलोक वनि आवीउं । वि० ।
बहिन भाई अह्मे बेहु पालिबविसी वनि गयां ।। वि० ।। ३८६ ।।
दीठउ ताम नरिंद वैराग्य मनि साहसउ रह्यु । वि ।
पूछि सघली नारि वैराग्य कारण प्रभ कहु ।। वि० ।। ३८७ ।।
राउ भणि सुणु नारि जे जे आपुण पेषीउं । वि० ।
बेटा बेटी जन्म अजी तात नासाभल्या ।। वि० ।। ३८८ ।।
अह्मे भव साभल्या जाम ताम बेहू मूरछी पडया । वि० ।।
माइ करिय विलाप हाहाकार सहू करिवि ।। वि० ।। ३८९ ।।
सीतल करि उपचार सजन लोके अह्मे जागव्यां । वि० ।
पूछि ताम विचार कुणि कारणि तह्मे मूरछयां ।। वि० ।। ३९० ।।
जे जे भोगव्यां दुख ते ते सघलां वीनव्यां । वि० ।
राउ कहि सुणि मित्र दीक्षा ले उंतावली ।। वि० ।। ३९१ ।।

पुत्र देउ तह्मे राज आज असूरज का करू । वि० ।
राज सुणी ब्रह्म बात तात ज वेगइ वीनवु ।। वि० ।। ३९२ ।।
सुणीम ब्रह्मारा जन्म वैराग्य तह्मनि उपनु । वि० ।
ते आह्म किम ल्यु राज काज करे सु आपणु ।। वि० ।। ३९३ ।।
मित्र ज बोलि ताम मारग ए एसु अत्थि । वि० ।
देई बेटा राज बाप दीक्षा पहिली लिइ ।। वि० ।। ३९४ ।।
पिउ तह्मे एह राज बाप दीक्षा लेवा देउ । वि० ।
ब्रह्मे विमास्यु चित्त पिता पहिलु दीक्षा लेउ ।। वि. ।। ३९५ ।।
कालि आह्म वली वेह दीक्षा लेस्यु आर्हती । वि. ।
ब्रह्म नइ देई राज तात माइ दीक्षा लेई ।। वि. ।। ३९६ ।।
कल्याण मित्र धरी आदि राज पांचसिव्रत लीउ । वि. ।
नारी सहसज एक कुशमावलि सु दीपीया ।। वि. ।। ३९७ ।।
घणा महोत्सव साथि नयर माहि ब्रह्मे गया । वि. ।
पाच दिवस रहि राज अवर माइ सुत तेडीउ ।। वि. ।। ३९८ ।।
तेहनि देई राज गुरु पामि तव हुइ गया । वि. ।
मागी दीक्षा सार सुरु राजा वलतु भणिवि ।। वि. ।। ३९९ ।।
वच्छ अच्छ तम्हे बाल जिन दीक्षा अति दोहिली । वि. ।
स्वल्यक व्रत ल्यु आज महाव्रत पाछि लेउ ।। वि. ।। ४०० ।।
ब्रह्मे विमास्यु ताम गुरु वाणी किम लोपीइ । वि. ।
लहुडी दीक्षा वेगि गुरु आदेसि ब्रह्मे लेई ।। वि. ।। ४०१ ।।
तेहज मुनिवर राउ विहरतु महीयल फिरि । वि ।
आज जवडिति दीह ते गुरु तुझ वनि आवीउ ।। वि. ।। ४०२ ।।
आठिम दिवस ज आज उपवासी सघलो यती । वि. ।
ब्रह्मे जाई गुरु पास उपवास बिहु जणे मागीउ ।। वि. ।। ४०३ ।।
गुरु जी बोलि ताम उपवास तह्मनि नवि घटि । वि. ।
गुरु आदेस ज पामि आहार लेवा पुण भमि ।। वि. ।। ४०४ ।।
चाल्यां मारगि जाम ताम तलारे भेटीया । वि. ।
ब्रह्मनि लई तेह तुझ कह्मिए आणीयां ।। वि. ।। ४०५ ।।

हिंसा उपरि विचार देवि तेमि मुझ कह्या वि । वि. ।
जे तुझ आवि विचार ते तुं अहनिशि नृप करेवि ॥ वि. ॥ ४०४ ॥
सांभली बलक वाणि देवी मन सुधि रीझइवि । वि. ।
छांडीय भीषण रूप प्रत्यक्षु लेई आवीइ वि ॥ वि. ॥ ४०५ ॥
देई प्रदक्षण ताम पवि लागी तिसु वीनवि । वि. ।
बह्म सुणु तह्मे बाल अति घणी हिंसामि करी वि ॥ वि. ४०६ ॥
ते छूटे वा पाप जिनवर दीक्षा मुझ देउ वि । वि. ।
क्षुल्लक बोलि ताम देवीय दीक्षा नवि हुइ वि ॥ वि ॥ ४०७ ।

वस्तु

कहिय षलिक कटिय षलिक सुणि न तुं देवि
जिहां जिहां जीवां नरक गइ जेह
जेह वली तरी वासु जे जे दिवस सुख भोगवि
देवि विमान देवी सुं आसइ तेह तेह दीक्षा नवि हुई
संभलि देवि विचार व्रत सु समकित पाल जे जिम तिरीइ संसार ॥ ४०८ ॥

अथ ढाल दशमी

जे धरइ ए च्यार कषाइ रौद्र ध्यानि वली वीटीयाए ।
जे दहिए वनहनि गाम हिंसा कर्मि आगला ए ॥ ४०९ ॥
जे वली ए गुरु हनि स्वाम वंचक पापइ पूरीया ए ।
लेस्याए कृष्णज तह्म जे परनारी लपट्ये ॥ ४१० ॥
ते बहूए पाप पसाउ नरया वासइ उपजि ए ।
छेदनइ ए भेदन तेह ताडन हनन बहु सहिए ॥ ४११ ॥
लोहमिए ताती नारि तेस्युं आलिंगन करिए ।
तातुं ए करीयक थीर तरस्या ध्यांते पाईइए ॥ ४१२ ॥
छेदीइए तास सरीर मूर्छा सोइय बाडीइए ।
इणि परिए दुःख अनंत नरयावासि भोगविए ॥ ४१३ ॥

ते नरां ए जिनवर दीष दुःख घणां थी नवि छूटइए।
आरतु ए ध्यांन करंति नील लेस्याए बीटीया ए ।। ४१४ ।।
रस तणा ए भेद करति कूडि मापि बहुर ताए ।
कूडीए साखि देयंति थापणि मोसु जे करिए ।। ४१५ ।।
धामसिए पजेह अह निशि अतिघणुं जे पुलइ।
जेहनिए नवकार न मंत्र देवपूजावली नवि रचिए ।। ४१६ ।।
अति घणा ए पाप पसाउ तिर्यंच गति ते नर लहिए ।
छेदनए अंग दोह ताडन पाटन जे सहिए ।। ४१७ ।।
भूषिए तसइ तेह ताढिजे ताप न भोगवि ए ।
अति घणउं ए भारा रोपमाइ बहिन जाणि नहीए ।। ४१८ ।
ते नरा ए दीक्षा देवि तिर्यंच किम दीजीइए ।
लेस्या ए पदम ज जेह धर्म ध्यानि जे वासीया ए ।। ४१९ ।।
पूजा ए जिनवर जेह पात्र दान ते अति दिइए ।
जपिए मंत्र नवकार पर उपकारज जे करिए ।। ४२० ।।
साचीए बोलि वाणि कूडीय सीष ते नवि भणिए ।
ते नर ए जाइ स्वर्गि देवी वृंदे सेवीइ ए ।। ४२१ ।।
बिठाए फरइ विमान मानस सुख अति भोगविए ।
यौवन ए निश्चल ताह जरा न आवि ढूकडी ए ।। ४२२ ।।
अति सुषए केरडी षाणि सुखसागर भीलि घणउ ए ।
ते नरा ए होइ न दीष भोगासक्त पणें थकी ए ।। ४२३ ।।
मानवी ए जाति लहेवि अंगोपांगि पूरीया ए ।
ब्राह्मण ए क्षत्रय जाति जे वली वैश्यह कुल तिलाए ।। ४२४ ।।
तेह नरा ए होइ नमाइ दीक्षा जैनेश्वर तणी ए ।
हवितुं ए समकित पाल टालि मिथ्यात जे पाछलउ ए ।। ४२५ ।।
अरिहंत ए माने देवि गुरु निग्रंथ वषाणीइ ए ।
जे जिन ए बोल्युं धर्म दश लक्षण ते जाणीइ ए ।। ४२६ ।।
जे व्रत ए बारह देवि ते ते पाले निर्मलां ए ।
पालजे ए साचि चित्त मूलगुंण वली आठ छिए ।। ४२७ ।।

रातिए सोवन वारि जीव तणी जयणा करे ए ।
सांभली ए देवि विचार पाप पछी ते सहूलीउं ए ।। ४२८ ।।
सोवन ए जल भृंगार पगिलाणीनि वीनविए ।
व्रतयतीए विद्यसार लेउ तह्मे गुरु वक्षण भणीए ।। ४२९ ।।
बोलिए षुलिक तामहुं विद्याइसुं करूं ए ।
देवी ए लीधानीम जाणे ते तलि सहु करयुं ए ।। ४३० ।।
बोली ए देवी ताम लोभ रहित तब देषीउ ए ।
सांभलु ए राउ सहित लोक सहू योगी सहित ए ।। ४३१ ।।
पालुए धर्म अहिंस हिंस नाम म लेयस्युं ए ।
ये कोए हिंसा नाम देषि ता हरि बलीं लेयसिए ।। ४३२ ।।
पोषली ए मरकी माद देश शघलि वली थाइसिए ।
मू किवाए सघला जीव अभयदान वरतावीउ ए ।। ४३३ ।।
प्रणामीय ए क्षुलक पाउ देवी वेगि अदृष्ट थई ए ।
ते तलिए मारदत्त राउ प्रणमीय पाय क्षुलक तणी ए ।। ४३४ ।।
मागिए दीक्षा वेगि अगि वैरागिहि वासीउए ।
देउ प्रभ ए दीक्षा आज ससार सागर जिम तरिए ।। ४३५ ।।
बोलिए षिलक ताम सुणि भूपति येहूं कहूए ।
अह्मे नहीए देवा जोग्य दीक्षा श्री जिनवर तणीए ।। ४३६ ।।
जे अत्थि ए अह्म गुरु राउ ते तुझ दीक्षा देइसिए ।
साभलीए ताम नरिंद चीतवि मन माहि आपणाए ।। ४३७ ।।
हु नृप ए नृपतणु राउ लागउ देवीपय कमले ।
देवी ए क्षुलक पाउ पणमि भगति करी घणीए ।। ४३८ ।।
ते हूए देष विवेग गुरु कह्नि लेई जाइवी ए ।
श्री जिन ए धर्म विशेष हू उन होसिएह समु ए ।। ४३९ ।।
ते तलिए मुनिवर राउ षलिक चरित ज आणीउ ए ।
आवीउ ए संघ समेत देवी वनि उतावलउए ।। ४४० ।।

षुलिक ए सहित ते राउ श्री गुरु केरा पगि पडूयु ए।
षुलिक ए कहि गुरु स्वामि दीक्षा देउ ताह्म राउनिए।। ४४१ ।।
भूपतीए आठ समेत मारदत्त दीक्षा लेइए।
राणीए सइं तिहां आठ लीधी दीक्षा जैननीए।। ४४२ ।।
क्षलक ए षुडीय समेत प्रणमीय पायज गुरु तणा ए।
मागीए दीक्षा सार गुरु तूठउ तियां दीद ए।। ४४३ ।।
श्री गुरु ए विहार करंति पुहुतां भवीया बोधिवा ए।
ते बहूए तीणि ठामि लेई दीक्षा तव रह्या ए।। ४४४ ।।
अभयरुचीए मुनिवर राइ अभयमती आज्ञा हुई ए।
ते वेहूए अणसण लेवि पाष दीहाडा पालीउं ए।। ४४५ ।।
सातमइए स्वर्ग पहूत इद्र प्रतीद्र ज ते हूया ए।
देवीए वृंदज माहि सार सौख्य अति भोगविए।। ४४६ ।।
सुदत्त ए मुनिवर राउ सोलमइ स्वर्ग ज ते गउ ए।
किल्याण ए मित्र ज आदि घरीय करी जे मुनि सोहू ए।। ४४७ ।।
पुहुता ए तेह्ज स्वर्गि पुण्यमानि आ पापणिए।
योगीए सघले ताम मिथ्यात हिंसा छांडी करीए।। ४४८ ।।
पुहुता ए तेह सु ठाम कर्म मानि वली आपणिए।
दयानिधिए एहज रास पढइ गुणि जे सांभलिए।। ४४९ ।।
नवनिधिए मंदिर तास कामधेन तस आगणिए।
पापहए तणउ विनाश धर्मतरूयर वाधि सदाए।। ४५० ।।
कुबुधए केरडु नास बुधि रूडी सदा उपजइए।
चांद्र ए सूरज मेरु महीधरूए ।। ४५१ ।।
ता रहुए एहुज रास राउ यसोधर केरडु ए।

तां रहुए एहज रास राउ यसोधर केरडु ए ॥ ४५२ ॥
सुणीयस्य ए जे नरनारि जेह कवेसर क्यडा ए ।
सोधीए एह ज रास करीय साचु वली थापिचु ए ॥ ४५३ ॥
कातीए उजलि पाखि पाडिवा बुधवारि कीउए ।
सीतलुए नाथ प्रासादि सुडली नयर सोहामणुए ॥ ४५४ ॥
रिधिवृद्धि ए श्री पास पासाउ हो जो निति श्रीसंघह घरिए ।
श्री गुरु ए चरण पसाउ श्री सोमकीरति भणु ए ॥ ४५५ ॥

॥ इति श्री यशोधर रास समाप्त ॥
॥ संवत् १५८५ वर्षे ज्येष्ट सुदि १२ रवौ ॥

गुरुनामावली

मंगलाचरण –

नमस्कृत्य जिनाधीशान् सुरासुरनमस्कृतान् ।
वृषभादिवीरपर्यंतान् वक्षे श्रीगुरुपद्धितम् ।। १ ।।
नमामि शारदां देवीं विबुधानन्ददायिनी ।
जिनेन्द्रवदनाभोज हृसिनी परमेश्वरीम् ।। २ ।।
चारित्रार्णवगंभीरान् नत्वा श्रीमुनिपुंगवान् ।
गुरुनामावली वक्षे समासेन स्वशक्तितः ।। ३ ।।

दूहा बंध

जिण चुवीसह पाय नमी, समरवि शारद माइ ।
काष्ठसंघगुणवर्णवुं, पणमवि गणहर पाइ ।। ४ ।।
एक जीह[1] किम बोलीइ, कट्ठसघ गुण सार ।
सुर गुर बुधि जे समु, ते नवि लाभि पार ।। ५ ।।
चुरासी[2] गणहर हूया, आदि जिणंदह जोइ ।
तिणि अनुक्रमि वदतां, बीर एयारह होइ ।। ६ ।।
चुवीसह जिणवर तणे, गणहर पाय मुनिदिस ।
सिर वालि ते जोयता, चौदिसि तेवन्न ।। ७ ।।
वीर जिणंदह पट्टिपुण, बिठा गौतम स्वामि ।
नवनिधांन घरि सपजि, पाप पणासि नामि ।। ८ ।।
सौधम्मह मुनिवर हूउ, जंबू स्वामि वषाण ।
एत्रहु सरसुं सुंपीऊं, रूपड्डुं केवल नाण ।। ९ ।।

---

1. जीभ, जिह्वा

2 भगवान आदिनाथ के ८४ गणधर थे

चौदह पूरव जे धरि, दश पूरव ना जाण ।
बहु विहि रिधि बुद्धीया, को कहि तेह पमाण ॥ १० ॥

अथ बोली

अहो श्रावको पुण्य प्रभाव को। निरमल चित्त करी, जिनवाणी मनिधरी सावचेत थाई, जिन भवनि जाई। श्रीकाष्ठासंघना जे, मुनिवर तेहनु अनुक्रम तेहनां गुण सांभल्यां थकां, संसार समुद्र तारण परम महासुखना कारण इस जे गुरु सांभलु ।

अथ छंद पाथडी

श्री वीर नाह अनुक्रमि जाण । मुनिवरनि तेजिंजिसुहु भाण ॥
सहू व्रत माहि जिम ब्रह्मचार । गिरवरह माहि जिम मेर सार ॥ ११ ॥
चिंतामणि रयणह मज्झि जाण । सब नाण माहि केवलह नाण ॥
चिंतामणि रयणह मझि एक । आचार सवहूं सोहि विवेक ॥ १२ ॥
ग्रह गणह मझि जिम चंद[1] सूर[2] । जल रास माहि सायरह[3] पूर ॥
जिम देव सवह माहि ज इंद । महीयल माहि सोहि नरेंद ॥ १३ ।
पदवी सवहूं तिथयर जेम । तस उपम दीजि कहु केम ॥
भरहेसर जिम सवि चक्कयार । हवि काहु पुछसि वार-वार ॥ १४ ॥
कप्पतरु[4] तरवरह चग । तिम सघ सरोमणि कट्ठ संघ ॥ १५ ॥

अथ दूहा बंध

संघ सरोमणि संघ ए, जोवे तेह विचार ।
नरह नरेंदे वंदीया, गछा गच्छ चीयार ॥ १६ ।

श्लोक—श्रीनंदीतटगच्छाख्यौ, माथुरो बागडाभिधः
लाडवागड इत्येसे गच्छाश्च विबुधैस्तुताः ॥१ ॥

---

1. चन्द्रमा
2. सूर्य
3. समुद्र
4. कल्पवृक्ष

तेषु गच्छेषु विख्यातः श्री नंदीतटसंज्ञकः ।
शीलसौभाग्यसंयुक्तो विद्यां गुणगुणां निधिः ।। १७ ।।

दूहा बंध

गणहर मुनिजनवर्णतां, पढमहु एह विचार ।
अर्हद्वल्लभसरिनु इणि गच्छ हूउ उवयार ।। १८ ।।

छंद पाघडो

तेह पट्टधर अछि एह । नामि पंचगुरु कहुं तेह ।।
श्री मगसेन नामि पहाण । तेह नरनरिंद बहु दिइं माण ।। १९ ।।
श्री नागसेन नामि प्रसिद्ध । देवाहवि जेहनी भगति किद्ध ।।
पंचमि पट्टि सिद्धांत देव । धरणेंद्रि आवी किद्ध सेव ।। २० ।।
श्री गोपसेन मुनिराउ जाण । बोलंतां वयण अमोघ वाणि ।।
सत्तमि पट्टि श्री नोपसेन । नीय भुजबलि जीतु मयण जेण ।।
दक्षणह देश देशह मभारि । श्री नदी तट पट्टणह सार ।। २१ ।।

दूहा

दक्षिण देश मभारि जु, नंदी तट पुर जाण ।
नोपसेन मुनिवर रहिनीय तेजि जिम भाण ।। २२ ।।
तेह मुनिवरनि रुयडा, पंचसइ वर सष्य ।
नीय बुधि प्रतिबोधीया, तेहनि दीधी दक्ष ।। २३ ।।
से सष्य माहि रुयडा, मुनिवर च्यार प्रसिद्ध ।
रामसेन आदि धरी, वाद केरि निजबुद्धि ।। २४ ।।
वाद करता दिठु जु तु गुरु दीधु बोल ।
माहो माहिसुं लवु, तह्मे मूरषनिटोल ।। २५ ।।
वादी तु तह्मे जाणीउ, विद्या बल घणुं चंग ।
देश च्यार प्रतिबूझवी, रवि तल राहावु रंग ।। २६ ।।
नरसिंहुर पुर जाणी, देश मभि मेवाडि ।
ते मिथ्याति वाहीउं, नथी कहि निपाडि ।। २७ ।।

बागड़ देस सु जाणीइ, नयरी मथुरा सार।
आठ देस मांहि अछि, तिहां मिथ्यात अपार ॥ २८ ॥

छंद त्रोटक

वाह्या सविहीडि लोक घने । पडिता सवि दीसि भवह जले ।
प्रतिबोध सु नीय बुधि बले । जस राषु तु रवि चक्क तले ॥ २९ ॥

दूहा

श्री गुरु वाणी संभली, विमासि नीय चित्त ।
करवुं आपुण एह जु, नही अछि इहां भांति ॥ ३० ॥
गुरुह चरण वंदी करी, चाल्या सप्त वीयार[1] ।
सु सु चेलाथि जु, लीधा एह विचार ॥ ३१ ॥

अथ छंद

पणमविनीय गुरु चरणं सरणं, चित्तेव जिणवरं चित्ते ।
श्री रामसेन मुणि वंदो, आयो नयरम्मि घरवि आणंदो ॥ ३२ ॥
आणदह घरवि ताम सपत्ता, वर नयरे नरसिंहपुरे ।
सरवर वर तीर नीर अलोवई, तिहां बिठा मुनि ध्यान धरे ॥ ३३ ॥
मासो उपवास तेण उचरीयौ, धम्म धनुह वर गहव करे ।
श्रीरामसेन मुनिवर सुमरतां, नासि पाउ ते विवह परे ॥ १ ॥ ३४ ॥
तस नयर पुरमि मझे, भाहड नामेण नवसए सिट्ठी[2] ।
सत्तह[3] पुत्त संयुत्तो, पुत्तह पुत्रं न लभये कहवि ॥ २ ॥ ३५ ॥
पुत्तह चापुत्त कहवि, नवि लभि तव सेठी उदेग भयं ।
बहुयर उवेस तथ संपत्तौ, जत्थ सुवदि मुणिंद मयं ॥ ३६ ॥
धींतीय नीय काज लाज नवि, आणी अगलि बिठउ लग्ग पय ।
श्रीरामसेन तव ज्ञान महावलि मनि आठवीया नाम लीयं ॥ ॥ ३७ ॥
तह वयण सुणवि सेट्ठी, पुच्छि कज्जं च कहवि मुणिराउ ।

---

१. चार २ श्रेष्टि
३ सात

हुतूय दुख पुत्त वालपडीय, धीय कूप नथि संदोह्रो ।। ३ ।। ३८ ।।
संदेह विणासण जब ते दिठुउ, तव लोकह आचभ भयं ।
बे कर जोडवि अति बहु भक्ति, मुनि आदेशज सरसिलय ।। ३९ ।।
बोलि तह सेट्ठी कहि तो कज्ज, मो मदिर छि दिव्य घण ।
श्री रामसेन मुनिवर सुपयपि, करु धर्म्म श्री जिनह तणं ।। ४ ।। ४० ।।
मिथ्यात दूर दवडीय थापीय जिन धम्म नयर मभिम ।
चुसठसि कुल रोपवि पतट्ठीउ देव बहुरुउ ।। ५ ।। ४१ ।।
बहुरुव पतट्ठीय जिनवर भवने तव मुनिवर चलति खणं ।।
पूछि तव सेट्ठी सीस पय नामी कवण कज्ज चलति तणं ।। ४२ ।।
हवि रेण वृष्ट कारण अति संभलि पडसि तूय नयरे पवरे ।
श्रीरामसेन मुनिवर इम बोलि जाउ उत्तर वाडपुरे ।। ४ ।। ४३ ।।
नरसिंहपुर नयर तजीय ते तिथ पहूता ।
गामह नामि नाम न्याति याति रवितलि सुपविता ।। ४४ ।।
सत्तावीसह गोत्र तेण थिरु करि थप्पीय ।
नरसिंहुराय गुण ताम जिण धम्मह अप्पीय ।। ४५ ।।
श्रीशांति नाथ सुपसाउ करि श्रीरामसेन उवएस धरि ।
द्रुमंडलिदणीयर तपि । तां रिषि वृद्धि श्रावयह घरे ।। ५ ।। ४६ ।।

हवि बोली

हवि तेह श्रीरामसेन देव तणा गुण समुद्र नि पार पाम वा कुण समरथ जिणि श्री रामसेनि जिन शासणा न्याननि बलि करी चित्त सदेह भांजी प्रत्यक्ष दृष्टांत देखाली । चुसठि सि कुलि नरसिंहपुर पाटण । तेह तणा संपूर्ण मिथ्यात्व कुलि थका प्रतिबोधी श्रावक नु धर्म लेवाडयु अनि श्रीरामसेनि बली ज्ञाननिबलि धूल वृष्ट हती जाणी । उत्तरवाडि समस्त श्रावक अनणारी । नरसिंह पुरा सत्तावीस गोत्र संयुक्त न्यात थापी । तेह गुरुना अनंत गुण बोलतां पार न पामीइ ।।

दूहा

रामसेन मुनि तिहां थका चित्रकोट संपत्त ।
देश विदेशे जाणीइ श्री गुरु केरी वत्त ॥ १ ॥ ४७ ॥

श्री रामसेन मुनिवर तणि नेमिसेन मुनि तास ।
एक भणंतां पडिकमामि सपता छमास ॥ २ ॥ ४८ ॥

गुरु बोलि सव्यह प्रति, संभलि तुं मुझ वात ।
तप करी काया षेट वे मूकी भण वात ॥ ३ ॥ ४९ ॥

तव गुरु वाणी संभली, मनि हूउ उच्चाट ।
गुरु वांदीनि नीसर्यु, मूकी भणवा वात ॥ ४ ॥ ५० ॥

आउर नाम प्रसिध जे, तेहना विषमा खोह ।
तिहां आवी मुनिवर रह्य, मूकी सघला मोह ॥ ५ ॥ ५१ ॥

अन्न उदक सवि परिहरी, बिठु निजघरी ध्यान ।
जु विद्या दिइ सारदां, तुहू मूकु मान ॥ ६ ॥ ५२ ॥

सात दिवस इणी परिगया, तप करतां मुनिराउ ।
काया लागी सूकवा, तुहि न मूकि भाउ ॥ ७ ॥ ५३ ॥

एक दिवस पद्मावती, मुनि उपरि जायति ।
तव सरसति बाह्मी मली, कैलासह आवति ॥ ८ ॥ ५४ ॥

पद्मावती सरसति, प्रति वयणज बोलि ताम ।
ए मुनि काया षेटविरक्तहु सुंदरि कुण काम ॥ ९ ॥ ५५ ॥

पद्मावती अनि सरसती ते बिहू तिहां संपत्त ।
उभी रही बोलावीउ मुनिवर माहाजमरत्ति ॥ १० ॥ ५६ ॥

तब मुनिवर सरसु भणि काइं करि तु कष्ट ।
पद्मावती अनि सरसती अह्मे बे तुझनि तुट्ठ ॥ ११ ॥ ५७ ॥

सरसति तूठी आपीउ, शास्त्र तणु भडार ।
विद्या सयलाह आमनी, पद्मावती सु विचार ॥ १२ ॥ ५८ ॥

तु मुनि अणसण मूकीउ सपतु पर भात ।
विद्या बिहूं विभूसीउ, संभलि तेहनी वात ॥ १३ ॥ ५९ ॥

अथ बोली

तदनंतर तिणि मुनिस्वरि तदाकाल निसमि इसी प्रतिज्ञानु उच्चार कीधु, पंचतीर्थं विन प्रति नमस्कार करवा । श्रीशेत्रुञ्जय । श्री रैवतकाचल । श्री तुंगेस्वर । श्री पावागिरि । अनि श्री तारंगाचल । ए पंच तीर्थनी यात्रा कीधा विना दिन प्रति आहार नु नयम । पंच तीर्थनी यात्रा करी श्री गुरुना चरण वांदवातणि कारणि जिरा कोटि पहुता । तदाकाल श्री गुरु अनुवंदना देई समुन्ख बोलवा लागा ।

अथ पाघडी

देस मज्झि मेवाड देश, भट्टपुर पट्टण विशेस ।
तिहां वसि लोकमिथ्यात पूर, धम्मह थानासिज दूर ।। ६० ।।
तु जाणुंतो विद्या विशेष, परसनउ तुझ नार सेष ।
तब नेमसेन बोलि विचार, मि करवुं स्वामी वयण सार ।। ६१ ।।
तिहा सहि गुरु चाल्यु करी प्रणाम, चित्तह आठवीया एह काम ।।
पट्ट पुर पट्टण मझारि, गया नेमसेन न लगि वार ।। ६२ ।।

अथ छंद

नेमसेन मुनि नाह्यो पुहुतु भट्ट उर नयर मझमि ।
नय दीठउ अवलोक विलोकह धरि बहुल मिथ्यात ।। १ ।। ६३ ।।
जरे बहुल मिथ्यात देषी मुणिंदो, महापाप तम नासवा एह चंदो ।
नीय न्याम पबोह्योया तेण सबे, श्री नेमसेनस्य बहु सत्ति तबे ।। ६४ ।।
जरे नामभट्टउरा न्यात थापी, महापाप मिथ्यातनी वेल मापी ।
पतिट्ठीया तीर्थ चुवीस प्रासाद माला, श्रीनेमसेनस्य कीर्ति विशाला ।।६५।।
जरे जिणह चुवीस पयकमल भत्ता, तह कज्ज चउवीस गुत्ते संयुत्ता ।
भटे उरे विंब चउवीस तित्थइ, पतिट्ठीया नेमसेनस्य हत्थइ ।६६।
सजो गच्छ नदीय नामि मह्लावि, श्री नेमसेनस्य गुरु पासि आवि ।
आवीसहि गुरुपासि भक्ति परणाम सुकिट्ठो ।। ६७ ।।

पडिबोहीय ए ज्ञात अमर जस इणी परिलिद्धो ।
भट्टे उर नामेण ताम भट्टे उर किधा । पछंडावी मिथ्यात्व नेम श्रावकना दिधा ।। ६८ ।।
जयवंता परीवण पत्तसुं । श्री आदिनाथ सुपसाउ करि ।
श्री नेमसेन उपदेस तु थिर लछी श्री संघ घरि ।। ६९ ।।

श्लोक

तस्य श्रीसेमसेनस्य पट्टे ये मुनिपुंगवाः ।
तेषां व्यावर्णनां कुर्वे भव्या श्रण्वंति सादरा. ॥१ ॥७०॥

अथ पाधडी बंध छंद

श्री रामसेन पट्टि सुजाण । श्री नेमसेन मकुड पमाण ॥
श्री नरेन्द्रसेन नामि पवित्त । वासवसेन मुनिमयणजित्त ॥७१॥
माहेंद्रसेन मुनिवर सुजाण । आदित्यसेन निज तेज भाण ॥
श्री सहस्रकीर्ति नामि प्रसिद्ध । श्रुतकीर्ति अतिघणु कीर्त्तिलिद्ध ॥७२॥
श्री देवकीर्त्ति सोलमि पाटि । तिहां नरसेन आव्या अघाट ।
श्री विजयकीर्ति किर्त्तिहिं विशाल । चारित्त लीउ पंचमिकालि ॥७३॥
केशवसेन लहूउ सुचंग । सहसलेन मुनिवर अभंग ।
श्री मेघसेन निर्मल सुगंम । कनकसेन राज्यु सुरंग ॥७४॥
श्री विजयसेन सुपवित्र चित्त । हरसेन नामि महीयल वदित्त ॥
चारित्तसेन चारित्राचार । वीरसेन जित्तो वेगमार ।
कुलभूषण भूषणहसेन । तिममेर वदित्तौ मेरसेन ॥७५॥

अथ दूहाबंध

शुभकरता मुनिवर हूउ, सेन सुभंकर नाम ।
नयकीर्त्ति सुंवर्णवुं, चन्द्रसेन गुणधाम ॥१॥७६॥
श्री सोमकीर्ति गुरु पाए नमुं, सहस्रकीर्त्ति सुविजाण ।
महकीर्त्ति गुरुवर्णवु मयण मनाव्यु आण ॥२॥७७॥
यसकीर्ति यस ऊजलु, जिम गयणांगणि चन्द ॥
गुणकीर्त्ति गुण बोलीइ, धरी मणी परमाणंद ॥३॥७८॥
पद्मकीर्ति गुण बोलता, किमिहि न आविछेद ।
त्रिभुवनकीर्ति मुनिवर तणउ, तपकरी निरमल देह ॥४॥७९॥

श्री विमलकीर्ति नामि हुउ, भवनकीर्ति मुनिराउ।
मेरुकीर्ति सहि गुरु तणे, सुरनर नमीया पाय ॥१५॥८०॥

अथ बोली

हवि छितालिसमि पाटि श्री गुणसेन इसि नामि माहा मुनिस्वर हुया। तुकिसा ते मुनीस्वर। ध्यान नइ बलि रात्रि समि सर्प्पाधिराज प्रत्यक्ष थाई वाचा दीधी। तु किसी वाचा स्वामी संभलि। अतुं इवडु साहसीक मल्ल तु जिहां ताहरु वचन। ताहरु भवन। ताहरी पीढी जिहां करिसी को ताहरी आज्ञा धरि। तेहनि सर्प्पनु विषवूकडु न थाइ। ए सहि आले। उते मुनिस्वरना ध्यानना विद्याना तपना इत्येवमादि अनेक श्रुण बोलतां सुर गुरु वृहस्पति आदिउ पार न पामइ॥

श्लोक

रत्नकीर्ति ततो जातो मुनिर्जयसेनकः।
कनककीर्त्तिश्चतत्पट्टे भानुकीर्त्तिर्गुणोज्ज्वल ॥१॥८१॥
तत सयमसेनाख्यो राजकीर्तिर्लघुस्मृतः ॥
विश्वन दिमुनीन्द्रोऽभूत् चारुकीर्तिस्य कीर्तिभाक् ॥२॥८२॥

दूहा

एकावनमि पाटि जु विश्वसेन सुबद्दु॥
देवभूषभूषण समु ललतकीर्ति सतुट्ठ ॥१॥८३॥
श्रुतशीलि जे पूरीउ, श्रुतकीर्ति मुनिराउ॥
जयदेविमयण हरावीउ,उदयसेन भडिवाउ॥२॥८४॥
गुणगाहा रसि पूरीउ, श्री गुणदेव विसेष॥
विशाल कीर्ति वादिकरी, जगति रहावीरेष॥३॥८५॥

अथ बोली

श्री अनंतकीर्ति तुऊ गुणसिट्ठमिपाटि। अनंत महिमा।

अनंतगुण अनंतज्ञानी । अनंत देव आदि गुण चरणोकमल्ल । शीतल मयण जल्य । एवं विधि ते मुनिस्वर हुवा । तेहनि पाटि श्री महसेन आचार्य बिठा । तीणि महसेनाचार्य वादिविटंबन । वादी गजांकुश । महावादी मस्तकशूल । मिथ्यात्व कुंदकुंदाल । इसा बिरद कहाव्यां । अनेक ग्रंथनासमूह बांधी । आपणु नाम रहाव्यु तेहना गुणावली अनेरा अनंत प्रवर्तिइ । अनि तेह गुरुनु नाम प्रभाति काल स्मरण मात्रि अनेक सुखनुवाता प्रवर्त्ति ।

अडूं त्रोटक

श्री विजयकीर्त्ति निजकीर्त्ति रसे । जिनसेनइ आण्यु मयण वसे ।
रविकीर्त्ति कीर्तितेजिय घणु । जिणिनाद उतारयु मोह तणु ।।१।।

श्लोक

अश्वसेनगुणांभोधि. श्रीकीर्त्ति चारुसेनकः ।।
शुभवःशुभकीर्त्तिश्च भवकीर्त्ति भवांतकृत् ।।१।।८७।।
श्रीभावांतकसेनाख्यो लोककीर्त्ति जगन्नुतः ।
श्रीमत्त्रिलोककीर्त्तिश्च मुनीन्द्रोऽमरकीर्त्तिक : ।।२।।८८।।

अथ दूहा

श्री सुरसेन मुनिंद जउ, जयकीर्ति गुणरासि ।
रामकीर्ति गुरुप्रणमतां, जाइ ते पातिक नासि ।।१।।८९।।
श्री उदयकीर्ति उदउ भलि, राजकीर्ति गुरु जोइ ।
कुमारसेन गुण बोलतां, पार न पामि कोइ ।।२।।९०।।
पूरव रिषि कलउ धरण, पद्मकीर्ति सुप्रसिद्ध ।
पद्मसेन पछि हूउ, पद्मावतीवर सिद्ध ।।३।।९१।।

अथ बोली

तेह श्री पद्मसेन पट्टोधरण संसारसमुद्र तारण तरण । सन्मार्गाचरण । पंचेन्द्रिय विसिकरण । एकाशीनइपाटि

श्री भुवनकीर्ति रावल उपना। पुनकिजि श्री भवनकीतिइ। ढोलीनयर मध्य शुल्तान श्री बडा महिमुंदसाह समीसरि आपणी विद्यानि प्रमाणि निराधार पालखी चलावी। सुलताण महिमुंदसाह संहयइ मान दीधुं। तेहनयर मध्य पत्रालंबन बांधी पंचमिथ्यात्व वादी वृंद राजसभाइ समस्त लोक विद्यमान जीता। जिन धर्म प्रगट कीधुं अमरजस इणी परिलीधु। अमितेह श्री गुरुतणि पाटि श्री भावसेन मनि श्री वासवसेन हूया। जे श्री वासवसेन मलमलिन गात्र चारित्र पात्र नित्य पक्षोपवास। मनि अंतराइ निसंयोग मासोपवास इसा तपस्वी इणि कालि हूया न कोहसि। मनि तेहनि नामि तथा घोछीनि स्पर्शि समस्त कुष्टादिक व्याधि जाती। तेह गुरुना गुण केतला एक बोलीइ। हवि भावसेन देव तणि पाटि श्री रत्नकीर्ति उपन्ना।

अथ छंद त्रिवलय

श्री नदीतट गच्छे, पट्टे श्री भावसेनस्य।
नयसाथा शृंगारी, उपपन्नो रयणकीत्तीयो ॥१॥६२॥
उपनु रयणकीर्त्ति, सोहि निम्मलचित्त।
हूउ विख्यात क्षिति। यति पवरो जीतु ॥
जीतुरे मदनबलि संक्यु न वाही छलि।
जिनवर धम्मवसी धुराधरो ॥६३॥
जाणि जाणि रे गौयम स्वामी। तम नासिजेह्नामि ॥
रह्यु उत्तम ठामि मडीयरणं। छाड्यु र रे दुज्जंय कोध।
अभिनवु ए हू योध। पंचे इंद्रीकीधु रोध एक क्षणं ॥२॥६४॥
उद्धरण तेह पाट। नरयनी भांजी वाट। मांडीला नवा मभाट विवह
पार। आणि माणि रे बेनमाण। सर्व विद्या तणु जाण।

आणि आणि रे जेनमाण । सर्व विद्या तणु जाण ।
नरवर वहि आण । इंगमरे । कीसिदीसिरे अति क्रूकार ।
हेला माटि जीतुमार । मदीय न लावीबार । वरह गुरो ।
इणीपरिप्रतिसोहि । भवीयण मनमोहि । ध्यान हुय बारीहि ।
श्रीलष्मसेन आणंद करो । ॥३॥६५॥

कहि कहि रे संसार मार । मजाणु तह्मे असार ।
अछि अति असार। भेद करी । पूजु पूजु रे अरिहंत देव ।
सुरनर करि सेव । हविमलाउ येव भावधरी ।
पालु पालु रे अहंसा धम्म । मलायम् लाधु जम्म ।
म करु कुत्सित कम्म । भवहवणे ।
तरु तरु रे उत्तम जन । अवरम आणु मनि ।
ध्याउ सर्वज्ञ धन । लष्मसेन गुरु एम भणै ॥४॥६६॥

दीठि दीठि रे अति माणंद । मिथ्यातना टालि कंद ।
गयण विहूणउचंद । कुलहि तिलु ।
जोइ जोइ रे रयणी दीसि । तत्त्व पद लही कीशि ।
धरि आदेश शीसि । तेह भलु । तरि तरि रे संसार
करतिज गुरु मूकिइ इ मोकलु कर दान भणी ।
छडि छडि रे रढडीबाल । लेइ बुद्धि विशाल ।
वाणीय अतिरसाल । लष्मसेन मुनिराउ तणी ॥५॥६७॥

श्री रयणकीर्त्ति गुरु पट्टि तरणि साउज्जल तपै ।
खंडावी पाषंड धम्मि मारगि आरोपै ।
पाप ताप संताप मयण मछर मय टाली ।
क्षमायुक्त गुणरासि लोभ लीला करि राली ।
बोलिज वाणि अम्मी अगली सावय जन मन चित्त हर ।

श्री लख्मसेन मुनिवर सुगुरुयल संघ कल्याण कर ॥६॥९८॥
सगुण अगुण भंडार गुणहकरि जण मण रंजै ।
उवसम हयवर चडवि मयण अडवाइ भंजै ॥
रयणायर गभीर धीर मन्दिर जिम सोहै ।
लख्मसेन गुरु पाटि एह भवियण मन मोहै ।
दीपंति तेज दणीयर जिसु मच्छती मण माण हर ।
जयवंता चउवय सघसु श्री धर्म्मसेन मुनिवर पवर ॥१॥९९॥
पहिरवि सील सनाह तवह चरण कडिकछीय ।
क्षमा षडग करि धरवि गहीय भुजबलि जय लछी ।
काम कोह मद मोह लोह आवंतु टालि ।
कठु सघ मुनिराउ गछ इसी धरि अजूयालि ।
श्री लख्मसेन पट्टोधरण पाव पंक छिप्पि नही ।
जे नरह नरिंदे वदीइ श्री भीमसेन मुनिवर सही ॥१००॥
सुरगिरि गिरि को चडै पाउ करि अति बलवंतो ।
कवि रणायर तीर पुहुतउय तरंतो ॥
कोइ आयास पमाण हत्थ करि गहि कमंतो ।
कट्ठसंघ संघ गुण परिलहि दुविह कोइ लहंतो ।
श्री भीमसेन पट्टह धरण गच्छ सरोमणि कुल तिलो ।
जाणंति सुजाणह जाण नर श्री सोमकीर्त्ति मुभलो ॥१०२॥
पनरहसि अठार मास आषाढह जाणु ।
अक्कवार पचमी बहुल पष्यहं वषाणु ।
पुव्वाभद्द नक्षत्र श्री सोमकीत्रि गुरवरि ।
सत्यासी वर पाट तणु प्रबध जिणि परि ॥
जिनवर सुपास भवनि कीउ श्री सोमकीर्त्ति बहुभाव धरि ।
जयवंतउ रवि तलि विस्तरू । श्री शांतिनाथ सुपसाउ करि ॥१०३॥

इति श्री गुरुनामावली

रिषभनाथ की धूलि

प्रणमवि जिणवर पाउ तु, राउ तिहु भवननुए ।
समरवि सरसित देवतु, सेवा सुर नर करिए ।
गाइ सु' आदि जिणंद, आणद अंगि उपजिए ।
कौशल देश मभार तु, सुसार गुण आगलु ए ।। १ ।।

नयर अजोध्याहां वास तु, आस अगि पूरविए ।
नाभि नरिंद सुरिंद जिसु, सुरपुर वरीए ।
मुरा देवी तास अरधंगि सुर गिर भाजिसीए ।
राउ राणी सुखसेजि, सुहे आंइ नितु रमिए ।। २ ।।

माता की सेवा करना

इद्र आदेश सुवेस आवीय सुर किन्यका ए ।
केवि सिर छत्र धरंति, करंति केवि भूपणाए ।
केविड गट देइ अगि, सुगंधी पूजा वणी ए ।
केविउ भर बहू अंगि, आभणीय आण वहिए ।। ३ ।।

केवि सयन अनि आसन, भोजन विधि करिए ।
केवि षडग धरी हाथि, सो साथइ नितु फिरिए ।
मुरा देवी भगति वि काजि, सु लाजन मनि धरिए ।
जू जूया करि सवि सेवतु, मा मन परिहरिए ।। ४ ।।

गरभ सोघ करि भाव तु, गाइ गुण जिन तणाए ।
वरसि अहूठए कोडि करि, जोडि सोवण तणीए ।
दिन दिन नाभिनिबार, सो वारि वा दु:ख धणीए ।
एक दिवस मुरा देवी, सो सेवीइ जक्षणीए ।
पुढीय सेजि समाधि, सु अधि कोइ आसणीए ।। ५ ।।

अथ ढाल बीजी

मुरा देवी सोयणडां पेषि, त्रिभुवन त्रण विम देषि ।

रयणीय पाछलि याम, देषीय जागिली ताम ।। १ ।।
करीय शृंगार सु सार, आवीय सभाह मझार ।
नाभि नरिंद पाए लागि, कर जोडी फल मागि ।। २ ।।

सोलह स्वप्नो का फल

स्वामीय सुयणडा दीठा, दुःख सविहो तूयां अबीठो ।
उज्जल वर्ण सोभाऊ, पहिलि गयवर राऊ।। ३ ।।
बीजि वृषभ ते गाजि, दीठि दालिद्र भाजि ।
वारू सिंघ ते त्रीजि, सबल ऊपम गुण दीजि ।। ४ ।।
चुथि लक्ष्मीय दीठी रयण, सिंघासण बिठी ।
पंचमि पुष्प वी माला, ऊ गुंथीय विवध विशाला ।। ५ ।।
छठि चंद सपूरहु, तिमर करि घण दूरहु ।
सातमि सूर ते दीठु, उदयाचल सिरे बीठु ।। ६ ।।
मच्छ युगल षेलतु आठमि, जल सिरिए झलकतु ।
नुमि पूरण कुंभोउ, अवतरण आरंभो ।। ७ ।।
सरवर जल भर्यु सोहि, दशमि जनम मन मोहि ।
सायर लहर अपार, दीठा सपन ईग्यार ।। ८ ।।
विष्टर भवन मझार, रयणमि सपन ते बार ।
तेरमि अमर बिमान, रिपु सवे होया विमान ।। ९ ।।
चौदमि नागआवास, रंगि करिय विलास ।
पनरमि रयण नापुंज, जाणे मेर नाकुं ।। १० ।।
सोलमि अग्नि अंगीठी, धूम रहित मिय दीठी ।
सोलि सपन विचार बोलि राउ ते सार ।। ११ ।।
तुं उरि पुत्र ते होसि ज्ञानि त्रिभुवन योसि ।
राणी मंदिरे पुहुती दसह कुमारी संयुती ।
गर्भ महोत्सव कीधु सुर मली दाम बहु दीधु ।। १२ ।।

अथ ढाल त्रीजी

जन्म महोत्सव

आउ हो पुत्र हीया दश मास । नाभि नरिंदवी पूगीय आस ।
जनम महोत्सवि सुरपति आया । चउ विध काय सुरासुर राया
॥ १ ॥

इन्द्र ऐरावण विसि पहूत । जय जय शब्द ते करइ बहूत ।
सूत ग्रहिय इद्राणीय जाई । मायामि बालक नवु'यनीपाई ॥ २ ॥

आणीय बालक इन्द्रनि दीधु' । प्रणमीय सुरपति निज करि
लीधु ।
गजपति बइसीनि सुरगिर जाइ । देव देवी जिनवर गुण गाइ ॥ ३ ॥

पाडुक वन कबल सिला नाम । बिसार्‍या जिन करीय प्रणाम ।
क्षीर समुद्र जल कु भ भराव्या । सहस अठोतर सुर वर लाव्या
॥ ४ ॥

इद्र इद्राणीय करि अभिषेक । आप आपणि संगि रचियां
विवेक ।
स्नान कराविय सोल विभूषण । मूक्या ते जिनवर सहि जु
सुलक्षण ॥ ५ ॥

इन्द्रि अगूठि अमृत देइ । आनीय चर्म वदन नवि लेई ।
उत्सव अति घणि आव्या ते ग्राम । सुर नर सज्जन हरषीया
ताम ॥ ६ ॥

आणी इन्द्राणीइ माइनि आप्यु । वृषभ कु वर वर नाम जु
थाप्यु ।
नाचीय सुरपति पूजीया तात । ग्या निज मदिर करता
ते वात ॥ ७ ॥

वाधए कुमर ते नव नव रगि । धनपति भगति करि बहु भंगि ।
यौवन लक्षण गुण करी मड्यु । बाल पणु' जिन सहि जिया
छाड्यु ॥ ८ ॥

इन्द्रि कर्युय वीवाह् अनोपम । नदा सुनदा वोइ नारी
निरोपम ।

ज्ञान विज्ञान ते सघलांयां दाषि । प्रजाय लोक सवेलय थका
राषि ॥ ६ ॥

इणी परिभोगवि सौख्य असख । पूरव वीत त्रियासीय लक्ष ।

वैराग्य भावना

अपछर देषि वैरागिय वास्यु । भोग सौख्यनीया मूकीय आस ॥ १० ॥

स्थिति संसार असार ते जाणी । चारित्र लेवानि निज मति
आणी ॥ ३ ॥

अथ ढाल चुथी

लौकांतिक सुर आवीयाए । तिहा जय जय शब्द वधावीयाए ।

आणीय पालषि सुर घडीए । तिहा रयण हीरेय सोव्रण
जडीए ॥ १ ॥

त्रिसीय जिनवर सचर्याए ।
तिहा जाणे सयमश्री वर्याए ।

तपस्या

वडह् प्रिया गतलि जाई रह्या ए ।
तव लोयतणा दुख अति सह्या ए ॥ २ ॥

दिगम्बर व्रत उच्चरयु ए ।
तिहा वीस सहस्र राए परिवरयु रे ।

वरस दिवस उपवास भउ ए ।
तिहा हथणाउर पुरवर गउए ॥ ४ ॥

राउ श्रेयास वधावीउ ए ।
तिहा आजलि रसह् घटावीउए ।

करम बिरी सघारीयाए ।
तिहा वोष अठारह् वारीयाए ॥ ५ ॥

सबोधि सुर नर वरुये ।
समकित रयणह् थिर करुए ।

कैवल्य होना

सहस्र वरस ध्यान उपनुए ।
समवसरण तिहां नीपुनुए ॥ ६ ॥
जिणवर जस अति महिमबु ए ।
तिहां जिण सासण अति गहि गह्यु ए ।
संबोधि सुर नर वरुये ।
समकित रयणह थिर करू ए ॥ ७ ॥
गिरि कैलासह स्थिति करीए ।
तिहा मुगति रमणि जिनवर वरीए ।
राज राणिम सवि सुख सहूए ।
श्री सोमकीरति कहि दिउ बहू ए ॥ ८ ॥
धुल श्री ऋिषभनु गाइसिए ।
तहा चिंतत फल सहू पाइसिए ॥ ९ ॥

इति श्री रिषभनाथ धूल समाप्त.

लघु चिन्तामरिण पार्श्वनाथ जयमाल

तिहुवरण चूडामरिण जय चिंतामरिण, भुवण कमल सरणेसरु।
नामइहमंडणु दुरियविहडणु, जय जय पास जिणेसरु ।।
जय पास जिणेसर वीयराय, जय जय सयमु सुर णमिय पाय।
जय केवल किरण फुरत देहु, जय हिय मइ तुह वाणी अमोह।
वाणारसि णयरिहि लद्ध जम्मु, पोमावइ पणइणि पाय पोम।
धरनिंदु सुसेविय सामि साल, तुव चलण नमइ पणमत काल।
नदन अश्वसेणु नरेसु राय, वम्मादे माइ पूरवइ आस।
मन वछित पूरण सव्वु सुखु, तुहु पाय णमतह जाइ दुखु।
घरि पुरि गिरि मदिरि अइदुसभि, रणिरावलि देवलि अइ दुसभि।
जलि थलि महियलि जे तुहु सरति, तहु निश्चय दुरिय दुख यहुजति।
जे स्वामि थुणतह गुण असेस, तसु पाय पणासइ खास सासु।
जो दाहविउ चिय कोडु हुति, जे तुह गधोवहि खयहु जति।
जे चलण स्वामि तुहु पय जुवति, जे कर जे तुहु पूजा रचति।
जे नयण धन्नु तुहु मुहु जुवंति, सा जीहजि तुहु पय गुण थुणति।
जे भवणजि तुहु वाणी अमोघ, जम्मणु तुहु हियडइ घरेहु।
जिहि दीठा ण्हासइ भयह पापु, जिहि ध्याया सीभइ मतु जाप।
जिहि थुणियहिं फिटइ भयइ रोग, यहु पूरइ सग्गु पवग्गु भोउ।
हउ पास जिणेसर तणउ भिच्चु, इम भणइ सोम सेवग्ग सज्ज।
फल पदमु तासु मदिरि घरेण, चितामरिण चित्यउ अथु देइ।
जो कामधेनु तहि घरि दुहेइ, जे पासणाहु हियडइ घरेहु ।।

घत्ता

तू भुवण दिवायरु गुणरयणायरु, मइ मोह दुह खंडणु।
तू तिहुवण मडणु, भवदुहखडणु जय जय पास जिणेसरु।[1]

---

1. गुटका सख्या ८–शास्त्र भण्डार श्री दिगम्बर जैन मदिर सोनियों का (पार्श्वनाथ मन्दिर) जयपुर। पृष्ठ 2-3

कविवर सांगु

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो मे कविवर सांगु की एक मात्र काव्य कृति "सुकोसलराय चुपई" नैणवा के शास्त्र भण्डार के एक गुटके मे सग्रहीत है। इसी गुटके मे आचार्य सोमकीर्ति एव ब्रह्म यशोधर की रचनाए लिपिबद्ध है। गुटका प्राचीन है जिसका लिपिकाल सवत् १५८५ ज्येष्ठ सुदी १२ रविवार है। इस गुटके ने गुजरात एवं राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारो की यात्रा की थी। संवत् १६४४ द्वितीय वैशाख सुदी १५ के दिन राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग रणथम्भौर मे इस गुटके पर टीका (सूची) लिखी गयी थी। इसके पश्चात् उसने कहा-कहाँ की यात्रा की थी इसका उल्लेख नही मिलता लेकिन वह रणथम्भोर से नैणवा के शास्त्र भण्डार मे पहुंचा और फिर जयपुर पहुंचा।

सागु का दूसरा नाम सांसु भी मिलता है। कवि कहा के थे किस भट्टारक के शिष्य थे। माता पिता स्त्री सन्तान आदि के बारे मे भी कवि की कृति मौन ही है। लेकिन जिस गुटके में इनकी कृति सग्रहीत है उसकी अन्य कृतियो के आधार पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि कवि राजस्थान के ही निवासी थे और आचार्य सोमकीर्ति एव ब्रह्म यशोधर से इनका निकट का सम्बन्ध था। यद्यपि चुपई मे कवि ने अपने नाम के उल्लेख के अतिरिक्त किसी दूसरे विद्वान् का नाम नही दिया है। लेकिन उन कवियो के साथ इनकी रचना का सग्रह होना ही इनके पारस्परिक सम्बन्ध को प्रकट करने वाला है।

रचना काल

यद्यपि इस दृष्टि से भी "सुकोसलरायचुपई" मे कोई उल्लेख नही मिलता लेकिन लिपिकाल के आधार पर इस कृति को हम सवत् १५४० के आसपास की रचना मान कर चलते हैं। इस कृति को एक पाण्डुलिपि देहली के एक शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है जिसका उल्लेख श्री कुन्दनलालजी ने किया है।[1]

काव्य परम्परा

सुकोसल का जीवन जैन जगत मे पर्याप्त रूप से लोकप्रिय रहा है इस कथा का मूल स्रोत हरिषेण कृत "वृहत् कथाकोश २ के १२७ वें एव १५२ वें

---

1 देखिये

2. वृहत्कथाकोष (सिंघी जैन सीरिज बम्बई संस्करण १९४३)

3. वही पृष्ठ ३०५-३१४,

आख्यान मे मिलता है लेकिन अपभ्रंश के महाकवि रइधू' ने सर्वप्रथम सवत् १४९६ मे सुकौसल के जीवन को "सुक्कोसल चरिउ" के नाम से खण्ड काव्य के रूप मे प्रस्तुत करके उसकी लोकप्रियता मे चार चाद लगाये। इस खण्ड काव्य मे चार सधियाँ हैं जिनमे ७४ कडवक है। रइधू ने महाराजा नाभिराम से कथानक का सम्बन्ध जोडकर अपने चरित नायक को भी इक्ष्वाकुवशीय आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव का वशधर सिद्ध किया है। इसलिये खण्ड काव्य की प्रथम दो सधियो मे ऋषभदेव का ही जीवन वृत्त दिया गया है। काव्य की शेष दो सधियो मे सुकोसल का जीवन काव्यमय शैली मे प्रस्तुत किया गया है।[1] रइधू के समकालीन ब्रह्म जिनदास हुये जिन्होने अनेक रास काव्यो की रचना करने का यश प्राप्त किया। ब्रह्म जिनदास के इस काव्य के एक पाण्डुलिपि डूगरपुर के शास्त्र भण्डार मे मुझे देखने का अवसर मिल चुका है।

ब्रह्म जिनदास के पश्चात् सागु कवि ने सुकोसल जीवन कथा को आकर्षक ढग से प्रस्तुत किया। उसे काव्य रूप प्रदान किया तथा सुकोसल को युद्ध भूमि मे भेज कर तथा सभी देशो के राजाओ पर विजयश्री दिलवा कर उसने जीवन को एक नया मोड दिया। उसने रइधू के समान अपने काव्य को महाराजा नाभिराय से आरम्भ कर दिया किन्तु मगलाचरण के पश्चात् ही अयोध्या का वर्णन आरम्भ कर दिया तथा उसके राजा कीर्तिधर एव रानी महिदेवी को पाठको के समक्ष प्रस्तुत करके कथा को लम्बी नही की तथा साथ ही पाठको को आरम्भ से ही सुकोसल के जीवन कथा को सुनने की रुचि पैदा करने मे सफलता प्राप्त की। यही नही काव्य के अन्त तक पाठको की रुचि बनाये रखने मे भी वह किसी अन्य कवि से पीछे नही रहना चाहता। सुकोसल का जन्म, शिक्षा-दीक्षा, युद्ध एव विजय का विस्तृत वर्णन, विभिन्न विजित देशो के नामो का उल्लेख, विजय प्राप्ति के पश्चात् नगर प्रवेश, प्रजाजनो द्वारा स्वागत, राज्य सुख, अकस्मात् वैराग्य होना, घोर तपश्चर्या, व्याघ्रिनी द्वारा शरीर भक्षण, कैवल्य एव निर्वाण आदि घटनायें एक के बाद दूसरी जिस क्रम मे आती है उससे पूरा काव्य ही रुचिकर बन गया है।

काव्य का अध्ययन

कवि ने अपने इस चुपई काव्य मे सभी वर्णनो को सजीव बनाने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम वह 'अयोध्या नगरी' की महिमा एव उसके निवासियो की समृद्धि का वर्णन करता है। वहाँ ऊचे-ऊचे महल हैं जो ऊचाई मे विन्ध्याचलके काल

---

1 विस्तृत परिचय के लिये डा राजाराम जैन का "रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन" देखिये।

के समान लगते हैं। नगर के घरों पर गुडियां उछलती रहती है। वहा की कामनिया अपने आपका श्रृंगार करने में ही व्यस्त रहती है। घरो मे मोतियों के ढेर लगे रहते हैं जैसे मानों वे उसी नगर में पैदा होते हों। नगर के निवासी स्वर्ण दान बहुत करते हैं। वहां के प्रत्येक घर मे वैभव बरसता है उनमे लक्ष्मी निवास करती है। यही वर्णन कवि के शब्दो मे निम्न प्रकार है—

घिरि घिरि वन्ध्याचरि के काण, घिरि घिरि राउत गुडि निसाण।
घिरि घिरि नारी करि सिणगार, घिरि घिरि बदी जय जयकार
॥ ६ ॥

घिरि घिरि सोवण दीजि घणा, घिरि घिरि नही मोती नीमणा।
घिरि घिरि रयण अमूलइक जेह, घिरि घिरि नही लक्ष्मी नु छेह
॥ ७ ॥

सुकोमल का युग सात्विक युग था। विषय वासना, भोग विलास एव खान-पान मे रुचि आयु ढलने के साथ-साथ स्वतः कम हो जाया करती थी और राजा महाराजा भी अपना अन्तिम समय राज पाट त्याग कर साधु जीवन के रूप मे व्यतीत करना चाहते थे। इसलिये राजा कीर्तिधर ने भी अपनी यही इच्छा व्यक्त की

धन योवननि जाषिम घणुं, सहिजी शरीर नही आपणु।
अह्मे दीक्षा लेसु वनि जाई, पच महाव्रत पालु सही।
मुगति तणा सुख जो वा काजि, तिणि कारणि हू मेहण राज ॥ १४ ॥

लेकिन तब तक कीर्तिधर पुत्र विहीन थे। इसलिये मन्त्रियो एव महाजनो ने पुत्र होने तक राज्य काज करते रहने की प्रार्थना की। राजा के मन मे बात बैठ गयी और उन्होने वैराग्य लेने के विचार को कुछ समय के लिये स्थगित कर दिया। रानी के गर्भवती होने के पश्चात् पुत्र जन्म का भेद खुल ही गया। फिर क्या था चारो ओर उत्सव आयोजित किये गये। मगलगीत गाये गये। ब्राह्मणो को एव याचको को खूब दान दिया गया। इसी की एक झलक कवि के शब्दो मे देखिये —

नयर माहि गूडी उछली, रायतणी मनि पूगी रली।
बध्यामणि ब्रह्मणिनि दीध, जन्म लगि अचानक कीध।

एक ओर पुत्र जन्म के उत्सव आयोजित हो रहे थे तो दूसरी ओर राजा ने नवजात शिशु को राज्य भार सौप कर मुनि दीक्षा धारण कर ली। चारो ओर

प्रसन्नता के स्थान पर हाहाकार मच गया। सबसे अधिक बेदना एवं दु:ख रानी को हुआ। वह रोने पीटने लगी और अपने मन के भाव निम्न प्रकार प्रकट करने लगी—

महिदेवी झूरि घणु, हीयडा आगिल बाल।
रे रे कुयर सलक्षणा, किम नीगमसु काल ॥ २६ ॥
अतेतुरऊ घघलु, जभी मेल्ही आवि।
एकह पीयडा कारणि, हूवि हूया निर नाथ ॥ २७ ॥

रानी को अपने पुत्र के लिये पति विरह के दु:ख को भुलाना पड़ा। वह पुत्र पालन एवं उसकी शिक्षा दीक्षा मे लग गयी और आठ वर्ष की आयु मे ही उसे सब कलाओ मे दक्ष बना दिया। उसका रूप निखर गया तथा उनके मनोज्ञ व्यक्तित्व को देख कर सभी ने उसे अपना राजा स्वीकार कर लिया।

वरस आठनु थउ जे जलि, सर्व कला सीख्यु ते तलि।
सोव्रणनी परि झलकि देह, सेवक सजन सहू नव नेह ॥ ३२ ॥

सुकौसल बालक राजा थे इसलिये राज्य मे दुश्मनो ने तोड-फोड़ आरम्भ कर दी। प्रजा मे खलबली मचने लगी। कौन अपनी जान जोखिम मे डाल कर शत्रुओ का मुकाबला करे। लेकिन जब सुकौशल को उपद्रव की बात मालूम हुई तो उसने शत्रुओ को अच्छा सबक सिखाने का निश्चय किया। माता ने उसे बालक जान कर रोकना चाहा लेकिन सुकोसल ने माता से निम्न शब्दो मे अपना दृढ निश्चय व्यक्त किया--

कुयर कहि तु सभलि मात, पिसुण तणी छि थोडी बात।
भाजि नयर देश लूटीइ, शूरणी पिठा किम छूटीइ ॥ ३६ ॥

सुकोसल ने युद्ध की पूरी तैयारी की। सेना को सब शास्त्रों मे सज्जित किया गया। हाथी, घोड़ा, पदाति, रथ आदि की सेना तैयार की। इसके पूर्व सब राजाओ को सन्देश भेजे गये जिनमे उन्हे सुकोसल की अधीनता स्वीकार करने के लिये कहा गया। लडाई के बाजे बजने लगे। सुकोसल स्वय रथ मे बैठे तथा पैदल सेना को सबसे आगे रखा गया। समुद्र के समान उसकी सेना दिखाई देने लगी। इतनी धूल उडी की सूर्य का दिखना बन्द हो गया।

चड्यां कटक जिस सायर पूर, खेहा रवि नवि सूझि सूर।

सुकौसल यद्यपि आयु में बहुत छोटा था लेकिन उसकी वीरता, साहस एवं पराक्रम देखते ही बनता था। उसकी सेना अत्यधिक दक्ष एवं सगठित थी तथा शत्रु सेना को परास्त करने में सक्षम थी इसलिये अधिकांश राजा महाराजा बिना युद्ध के ही अपनी पराजय मान कर सुकौशल की शरण में चले गये और यथोचित दण्ड देकर उसकी पराधीनता स्वीकार करली। वह अपनी सेना के साथ गुजरात, सौराष्ट्र, कोंकण, महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि सभी प्रदेशों को रौंदता हुआ उन पर विजय पताका फहरायी।

> गूजर सोरठ प्राणि लीध, नयीयाडा बंदर बिसकीध।
> भाजि तस्पर पाडि वार, साध्यु कुंकणनि करणाट ।। ५८ ।।
>
> लाड देश मरहठ मलहार, साध्यां कन्नड तिणि वार।
> कुंडलपुर नु कहीइ त्रीस, आपी साव्रण नामी शीस ।। ५९ ।।

सुकौसल राजस्थान के मेवाड एव मारवाड भी गये तथा हस्तिनापुर एव मुलतान भी गये। वे गौड देश एव खुरासाण भी गये और वहाँ के सभी राजाओं को सहज ही वश मे कर लिया। जिसने भी उसका मार्ग रोकना चाहा उसीको बन्दी बना लिया गया।

> मेदपाट मुरकु मुलताण, खांडा बाले माध्यु खुरसाण।
> मरुस्थली बहुली बहु जाण, गौड चौडणा जणु बखाण।।
> हथणा डर सुं साध्या देश, पोयणपुर कीधु परवेश ।। ६३ ।।

इस प्रकार सुकौसल ने चारों दिशाओं को जीत लिये। सब जगह उसकी आज्ञा मानी जाने लगी। उसे अनगिनत लक्ष्मी, सम्पदा एव सम्पत्ति प्राप्त हुई। हाथी, घोडा आदि की तो सख्या ही नही थी। कितनी ही राजकुमारियों से भी उसने विवाह कर लिया।

> राह देश सब साधिया उत्तर दिक्षण जाणि।
> पूरब पश्चिम साधिया, चिहुं दिशि वरती आणि ।। ६९ ।।
>
> लक्ष्मी आणी लक्ष गणी, धन कण कंचणसार।
> परणी अलीयल पद्मणी, हय गय रयण भंडार ।। ७० ।।

सुकौसल अयोध्या आकर सानन्द राज्य करने लगा। चारों ओर सुख-

शान्ति थी। प्रजाजनों को अपार सुख था। नगर मे कहीं कोई दुःखी एवं निर्धन नहीं दिखता था।[1]

सुकौसल की रानियां भी क्या थी सौन्दर्य एवं लावण्य की मानो प्रतिमूर्ति ही थी। वे विभिन्न प्रकार के शृंगार करती और अपने प्रियतम का मन प्रसन्न करने का उपक्रम करती। कभी वे काले वस्त्र पहिनती, कभी पीले कभी केसरियां रंग के और कभी दूसरे रग के। वस्त्रो का पूरा मैचिंग रहता। वैसे ही आभूषण, एवं वैसा ही रंग सभी मिल कर इतनी अधिक सुन्दर लगती कि उनका सौन्दर्य देखते ही बनता था।

पीला सोवण सोहती ए, पीली चूडी बांहि तु।
पीली झालि झलामलीए पीलां केर त्यांह तु॥
उजल झफार झलकती ए, उजल रयण अपार तु।
उजल दरपण नरपती ए, उजल मोतीय हार तु।

इस प्रकार अपार सुख सम्पत्ति को भोगते हुए पर्याप्त समय निकल गया। समय को जाते हुये देर नहीं लगती। पुण्य की महिमा को कौन नही जानता। पुण्य से ही यश, कीर्त्ति, धन सम्पत्ति तो मिलती है।

पुन्यि कीरति उजली, पुण्यि जस भंडार।
पुणिइ पिसुण पीडि नाहीं, पुण्य पृथ्वी माहि सार॥

सुकौसल के लिये १६ वें वर्ष मे राज्य सम्पदा त्याग कर वैराग्य लेने की भविष्यवाणी थी। इसलिये राजमाता ने नगर मे साधु मात्र के लिये प्रवेश बन्द कर दिया था। कुछ समय पश्चात् मुनि कीर्त्तिध्वज आये लेकिन वे भी नगर प्रवेश नही पा सके। राजमाता सहिदेवी का हृदय मात्सर्य से भर गया। लेकिन जब सुकौसल को यह बात मालूम हुई तो शीघ्र ही नगर के बाहर गये और मुनि महाराज को विनय सहित नगर मे लाने का निश्चय किया। सुकौसल ने वहां जाकर निम्न प्रकार निवेदन किया—

जई सकौसल नामि मोस, तम्हे कहि उपरि आणु रसि।
काया कष्ट करवा घणुं, राज रिधि सहूइ तम्ह तणु।
माहारि नहीं ससारि काज, तिणि कारणि मि छोड्युं राज।

1. प्रजा सहू सुख भोगवि सा० दुखीय न दीसइ कोइ।

सुकौसल ने भी वैराग्य लेने का निश्चय कर लिया। उसके वैराग्य लेने की सूचना तत्काल चारों ओर फैल गयी। नगर में हाहाकार मच गया। जिसने सुना वही रोने बिलखने लगा। रानियों के विलाप का हृदयविदारक दृश्य था। कवि ने इन सबका अच्छा एवं प्रभावोत्पादक वर्णन किया है—

एक झूरि एक करि विलाप, एक कहि इम लागु पाप।
हा हा करीनि कूटि हीउ, आज अतेउर सुनु थऊं।
एक अबला लाखि सिणगार, एक तोडी नवसर हार।
चीर दोर एक भाजि वाली एके धरणि पडी टल वाली।

सुकौसल के वैराग्य लेने के पश्चात् सारा घर ही चौपट हो गया। राजमाता महिदेवी बुरी तरह विलाप करने लगी और महल से गिरकर आत्मघात कर लिया। वह आर्तध्यान से मरने के कारण अगले जन्म मे व्याघ्रिणी बनी।

इस प्रकार पूरा काव्य विभिन्न वर्णनो से ओतप्रोत है। सभी वर्णन स्वाभाविक है। नगर वर्णन, सुकौसल जन्म, शिक्षा-दीक्षा, शत्रु देशो पर आक्रमण एव उनमे विजय, सौन्दर्य वर्णन, विषय दु ख वर्णन, विरह वर्णन, तपस्या वर्णन, परिषह वर्णन, आदि सभी वर्णन एक से एक निखरे हुये हैं। कवि ने उनमे जीवन डाला है इसलिये वे सभी सजीव बन गये हैं।

सुकौसल यद्यपि राजकुमार थे। दु ख को कभी जाना ही नहीं था। लेकिन जब तपस्या करने लगे तो गर्मी, सर्दी एवं वर्षा की भीषणता की जरा भी परवाह नही की। भाद्रपद मास मे डास एव मच्छर भयंकर रूप मे सताते लेकिन वे तो आत्मध्यान मे रहते। सर्दियो मे जब ठण्ड से सारा शरीर कांपता था तब भी वे एकाग्रचित्त होकर नदी किनारे ध्यान करते रहते। गर्मियो मे दोपहर की वेला, तपती हुई शिलाए और तेज धूप सभी तो एक से एक बढ कर ध्यान मे बाधक थे। कवि ने इन सभी का अपने लघु काव्य मे अच्छा वर्णन किया है—

ताती वेलू तपती सिला, ते उपरि तप साधि भला।
माथा उपरि सूरज तपि, निभर कर्म घणेरा खपि॥

एक ओर वह व्याघ्रिणी सुकौसल के शरीर को खाने लगी। दूसरी ओर सुकौसल मुनि आत्म ध्यान मे इतने लीन हो गये कि शारीरिक कष्ट का उन्हें भान ही नही हुआ। और वे कर्मो की निर्जरा करने लगे। अठारह दोषो से रहित होकर पाच महाव्रतो का पालन करने लगे।

कर्म टालि टालि अतिहि सुजाण

अटवी मांहि एकलु मन माहि आतम ध्यान आणि ।

परमानन्द सेवि सदा जाणि धर्म विचार ।

तिहि मुनिवर प्रति सूयडा हुवि लेंसू भव पार

व्याघ्रिणी द्वारा भयकर आक्रमण का एक वर्णन देखिये—

वाघिणी घर हरि तिणि अबर थरहरि

पीडा न जाणिए ना तरतणीए ।

एह पापिणी पीड न जाणि मडलां एहना करणी

पु छउ लाली उंची उडि थर थर धूजी धरणी ।

छन्द—प्रस्तुत काव्य में चौपई एवं दोहा छन्द की प्रमुखता है लेकिन अन्य छन्दो मे ढाल हीडोलानी, वस्तुबन्ध छन्द का भी प्रयोग हुआ है । पूरा काव्य गेय काव्य है जो गाया जाकर जन मानस मे सुकौसल के प्रति श्रद्धा के भाव उंडेलता है ।

भाषा--भाषा की दृष्टि से काव्य राजस्थानी भाषा का काव्य है । मांगु, लागु, घिरि घिरि सिणगार, आपणु, जनम्यु सु घु जैसे क्रिया-पदों एव अन्य शब्दो का प्रयोग बहुतायत से हुआ है । सागु कवि का यद्यपि गुजरात से सम्बन्ध था लेकिन गुजराती भाषा का प्रयोग नही के बराबर हुआ है । फिर भी कही कही क्लिष्ट शब्द भी प्रयोग हुआ है उससे यह काव्य सामान्य पाठको के पल्ले नहीं पडता ।

नगरों का वर्णन

अयोध्या के विशेष वर्णन के साथ २ अपने इस काव्य मे कितने ही प्रदेशों एव नगरो का उल्लेख किया है । इससे काव्य के प्रति आकर्षण सहज ही बढ गया है । गोपाचल (ग्वालियर) उज्जयिनी, गुर्जर देश, सोरठ (सौराष्ट्र) कोकण, लाड, मरहठ (महाराष्ट्र), कन्नड (कर्नाटक) मेदपाट (मेवाड) मुलतान, खुरासाण, मरुस्थली (मारवाड), हथणाउर (हस्तिनापुर) पोयणपुर (पोदनपुर), चम्पापुर, पावापुर, अगदेश, बगदेश, मगध, चीण (चीन) पचाल, राजग्रही, आदि के नाम उल्लेखनीय है ।

समाज वर्णन—सुकौसल चुपई मे सामाजिकता वर्णन के प्रसग बहुत कम आये हैं । पुत्र जन्म, आदि के अतिरिक्त कोई विशेष वर्णन नही मिलते । लेकिन

राजा भी राजपाट छोड़ कर साधु जीवन ग्रहण कर लेते थे तथा कभी-कभी छोटी अवस्था मे भी वे मुनि जीवन अपना लेते थे। साधुओं का समाज पर विशेष प्रभाव था।

इस प्रकार 'सुकौसल चुपई' हिन्दी के आदिकाल की एक उत्तम कृति है। जिसके प्रचार प्रसार की आवश्यकता है। काव्य की पूरी कथा का सार निम्न प्रकार है।

कथा

इस पृथ्वीतल पर असंख्यात द्वीप हैं। उनमें जम्बूद्वीप सबके मध्य में स्थित है। उसी जम्बूद्वीप मे भरत क्षेत्र है जिसकी विशेष महिमा है। उसमे अयोध्या नगर है जहाँ दान पुण्य होता रहता है। धनिक लोगों की जहाँ घनी बस्ती है। गरीब तो कहीं दिखता ही नहीं। नगर में चौरासी चौपड हैं तथा दुकानों की तो सख्या करना भी कठिन है। नगर की पूरी लम्बाई–चौड़ाई १२ योजन प्रमाण है। वहाँ ऊंचे-ऊंचे मकान थे जिन पर ध्वजाएं फहराती रहती थी। महलों मे बैठी रमणियां शृंगार करती रहती थी तथा जिनमे अमूल्य धन राशि संग्रहीत थी। नगर उद्यान, सरोवरों से युक्त था तथा जिसमे अनेक महल थे।

इसी अयोध्या नगरी मे 'कीर्तिधवल' राजा सपरिवार राज्य करता था। उसकी रानी महिदेवी थी जो सुन्दरता की खान थी। एक दिन कीर्तिधवल के मन मे जगत से वैराग्य हो गया तथा उसने मुनि दीक्षा लेने का भाव प्रकट किया। उसने अपने मन्त्रिमण्डल के सदस्यो को बुलाया और दीक्षा लेने के विचार उनके सामने रखे। वे उस समय तक पुत्रहीन थे इसलिये प्रधानमन्त्री ने उनसे पुत्रोत्पत्ति तक वैराग्य नही लेने के लिये निवेदन किया। क्योंकि पुत्र के अभाव मे सारा राज्य ही समाप्त हो जावेगा। कुछ समय के पश्चात् रानी गर्भवती हो गयी। रानी ने पुत्र जन्म दिया तथा उसका नाम सुकौसल रखा गया। बालक को छिपाकर रखा गया जिससे राजा को पता नही चल सके। एक बार सरोवर पर बालक के वस्त्र धोने गयी थी तभी बात ही बात मे एक ब्राह्मण से दासी ने कह दिया कि रानी सुकौसल को पाल रही है। ब्राह्मण के मन मे बात कब रुकने वाली थी। उसने तत्काल राजा से पुत्र होने की बात जाकर कह दी।

सारे नगर मे पुत्रोत्सव मनाया गया। गुडी उछाली गयी। राजा ने ब्राह्मणों को खूब दान दिया। याचको को वस्त्राभूषण से तृप्त कर दिय.। रानी महिदेवी राजमहल मे गयी। राजा ने बालक को गोद मे लिया। उसे खिलाया, पालना झुलाया तथा प्रजा की पालना करना ऐसा कहा और उसका राजतिलक करके राजभवन से चल दिया। राजा के इस आचरण से नगर में हाहाकार मच गया।

रानी महिदेवी के दुःख का ठिकाना ही नही रहा। वह विलाप करने लगी कि किस प्रकार राजा के बिना उसका जीवन कैसे व्यतीत होगा। वह पति होते हुये भी अनाथ हो गयी।

जैसे तैसे करके रानी ने अपना मन लगाया। पुत्र का पालन होने लगा। आठ वर्ष का होने पर उसने सभी कलाओ को सीख लिया। कुछ दुष्ट राजाओ ने जब उसके राज्य मे लूटमार प्रारम्भ की तो सुकौशल बालक होने पर भी लड़ने को तैयार हो गया। माता ने उसे बहुत मना किया। लेकिन सुकौसल ने एक नही मानी। उसने सभी मित्र राजाओ को पत्र लिखा। और सेना एकत्रित करके युद्ध के लिये प्रस्थान कर दिया। चतुरगिनी सेना तैयार हो गयी घुडसवार, रथ सवार, आदि योद्धा तैयार होकर चलने लगे। ढोल ढमाके बजने लगे। सख फूक दिया गया। एक रथ मे स्वय राजा बैठे। उसके साथ ही अन्य वाद्य यन्त्रो के साथ शहनाई बजने लगी।

राजा सुकौसल अपनी सेना के साथ सर्व प्रथम मथुरा नगरी पहुँचा। वहाँ हाहाकार मच गया। यमुनापुरी को नष्ट कर दिया गया। उसके पश्चात् अयोध्या नगरी आये। वहाँ से गगा किनारे पर आकर पड़ाव डाला। गोपाचल के राजा से दड लेकर छोड दिया गया। इसी तरह उज्जैन नगरी के मामले मे भी दण्ड स्वरूप उसे अपने मे मिला लिया। चारो ओर सुकौशल की जय जयकार होने लगी। कोई अपनी कन्या देकर, कोई हाथ पैर जोडकर अपनी जान बचाने लगे। इसके पश्चात् गुजरात, सौराष्ट्र, कर्णाटक, लाडदेश, महाराष्ट्र, काशी देशो पर विजय प्राप्त की। विद्याधरो के साथ उसने लका पर विजय प्राप्त की।

सुकौसल का मेदपाट (मेवाड मुलतान, हस्तिनापुर, पोदनपुर, पाटलीपुत्र, आदि नगरो मे जोरदार स्वागत हुआ। अष्टा पद (कैलाश) के चैत्यालयो की उसने वन्दना की इसके अतिरिक्त अगदेश, बगाल, मगध, पचाल, राजगृही नगरी के राजाओ से दण्ड लेकर उन्हे छोडा गया। इस प्रकार चारो दिशाओ मे अपूर्व विजय प्राप्त करके पद्मनी रानी से विवाह करके, हाथी, घोडे, रत्नभण्डार एव विशाल सेना के साथ सुकौसल ने नगर मे प्रवेश किया। राजा के स्वागत के लिये स्थान-स्थान पर तोरण द्वार लगाये गये, मगल गीत गाये गये। महिदेवी माता ने दौड करके पुत्र को गले लगाया।

राजा सुकौसल आनन्दपूर्वक राज्य करने लगे। तथा उसकी रानिया राजा को अपने विभिन्न हाव भाव शृगार आदि से प्रसन्न रखने लगी। एक-एक बरस व्यतीत होने लगा। सोलहवे वर्ष के आते ही माता ने अपने रक्षको से

कहा कि यदि कोई साधु नगर मे आता हुआ दिखलाई पडे तो उसे नगर मे प्रवेश नहीं मिलना चाहिए।

कुछ समय पश्चात् कीर्तिधवल मुनि उधर आये। नगर के बाहर ठहर गये। मुनि के शरीर पर घाव का चिह्न देखकर महिदेवी ने उसे पहिचान लिया। वह रोने लगी। सुकौसल राजा ने इस बात को सुन लिया। अपने पिता मुनि को आहार न मिलने की बात से उसे और भी दुःख हुआ। और वह भी दुखित मन से वहीं चला गया जहाँ मुनि बैठे हुए थे। सुकौसल ने वन्दना की तथा मुनि से उपदेश सुना। और स्वयं ने वैराग्य लेने की घोषणा कर दी। अपने प्रिय पुत्र के वैराग्य लेने के समाचार से उसकी माता को अत्यधिक पीडा एवं संताप हुआ और परिणामो की सक्लेशता के कारण वह मर कर व्याघ्रि योनि मे उत्पन्न हुई।

सुकौसल मुनि तपस्या करने लगे। ग्रीष्म ऋतु में पहाड की शिला पर, वर्षा-ऋतु मे गिरिकन्दरा में, शीत ऋतु मे बर्फ पर उन्हे आत्मध्यान करने में बडी प्रसन्नता होती। बारह भावनाओ का वे निरन्तर मनन करते, आर्त्तध्यान एव रौद्रध्यान का उन्होने सर्वथा परित्याग कर दिया, अठारह दोषो से वे रहित होने लगे। चारो कषायो को छोड दिया, आठ प्रकार के मदो का त्याग कर दिया, बाईस प्रकार की परिषहो एव पन्द्रह प्रकार के प्रमादो से वे मुक्त हो गये। इस प्रकार की अवस्था को प्राप्त होने पर जब वे एक दिन तपस्या मे लीन थे वह व्याघ्री घूमती हुई उधर आ निकली वह भूखी थी इसलिये उसने तपस्या मे लीन मुनि के एक-एक अग को खा लिया। लेकिन मुनि का ध्यान भी सर्वोच्च था। वे जरा भी विचलित नही हुए और तेरहवे गुणस्थान मे पहुँच गये। उन्हे कैवल्य हो गया और तत्काल मुक्ति पद को प्राप्त किया तथा जन्म मरण, सुख दुःख से सदा के लिये मुक्ति हो गये।

व्याघ्रिनी ने शरीर को खाने के पश्चात् जब उसने अंगों के निशान देखे पाव के नीचे का कमल चिह्न देखा तो उसको पूर्व भव का भान हो आया। वह स्नेह विह्वल होकर रोने लगी। एक मुनि के उपदेश से उसने जीव हिंसा न करने का निश्चय ले लिया और अनशन करके देह त्याग दिया और स्वर्ग प्राप्त किया।

सुकोसल राय चुपई

जिन मुख्य वाणी २ मनि धरेस ।
पाय लागी पूंजा रचुं सदा सिद्धि समत्ति मागुं ।
अनुकपा करु अह्म तणी देवाध्यदेव तह्म चलणि लागुं ।
कर जोडी सांगु कहि सदगुरु सेब कर्‌योस ।
कुयर सकोसल चुपही हुं सख्येप भण्योस ।। १ ।।

दूहा

भाव भगति मनसु धरी सेवुं सीमंधर स्वामि ।
सागु कहि मनमा हरि जिम सरिस सवि काम ।। १ ।।
भूत भाव्य सम्रनि वर्त्तमान सिद्ध साधु जेह नाम ।
अरिहत अर्या आरीया तेहनि करू प्रणाम ।। २ ।।

चुपई

अवनी दीप असंख्या जाण, ते मध्य जबूदीप प्रमाण ।
भरत क्षेत्र जे नामि सुणु, तेह तणु महिमा अति घणु ।। ३ ।।
तेह मध्य नयर अयोध्या एक, दाम पुण्यनु लहि बवेक ।
धनवत लोक दीसि अति घणा, प्रभव नही तिहा कोही तणा ।। ४ ।।
चउरासी चहुटा अतिसार, सेरी हाट तणु नही पार ।
जोयण वार ते फिरतु बसि, तिणि दीठि नर हीयडु हसि ।। ५ ।।
घिरि घिरि बध्याचरिके काण, घिरि घिरि राउत गुडि नीसाण ।
घिरि घिरि नारी करि सिणगार, घिरि घिरि बदी जय जयकार ।।६।।
घिरि घिरि सोवण दीजि घणां, घिरि घिरि नही मोती नीमणा ।
घिरि घिरि रयण अमूलइक जेह, घिरि घिरि नही लक्ष्मी नु छेह ।।७।।
वावि सरोवर लागु वाद, ठामि ठामि दीसि प्रसाद ।
झालिर ढोल कसाला गुडि, नित परमेसर पूजा चेडि ।। ८ ।।
कविता कहि मुखि जिह्वा एक, नयर तणु किम कहु विवेक ।
ए ऊपम किम जाइ कही, जोता जमलपुरी कां नही ।। ९ ।।

दूहा

अयोध्या नयरी अति भली, उत्तम कहीइ ठाम ।
राज करि परिवार सुं, कीर्ति धवल तस नाम ।। १० ।।
तस घरि राणी रूयडी, रूपवंत सुवसेष ।
सहिदेवी नामि सुणु, भक्ति भरतार बिवेक ।। ११ ।।
एक दिवस मनि चीतवि, मन माहि आण्यं ध्यान ।
बिषय तणां सुख परिहरी, साधि मुगति निधान ।। १२ ।।

चुपई

राइ प्रधान ते डाव्या सही । राज तणी सीषामणि कही ।।
धन योवननि जोषिम घणु । सहिजि शरीर नही आपणु ।। १३ ।।
अह्मे दीक्षा लेसुं वनि जाई । पच महाव्रत पालु सही ।।
मुगति तणा सुख जोवा काजि । तिणि कारणि हु मेल्हुं राज ।। १४ ।।
कहि प्रधान सुणु वीनती । पुत्र बिना किम थासु यती ।।
राज भार सुतनि संभालि । पछि महाव्रत निश्चल पालि ।। १५ ।।
परधानि राजा प्रीछव्यु । नयर मोहि उछव नव नवुं ।।
सहिदेवी ग्रभ धरिउ जिसि । राय मदिर थी टाली तिसि ।। १६ ।।
राइ कहि राणी किहां गई । व्याध विशेषि विह्वल थई ।।
इणि भोलावि राख्यु भूप । जु सुत जन्म्यु असभम रूप ।। १७ ।।
सहिदेवी सुत जन्म्यु जेह । दीधु नाम सकोशल तेह ।।
आपणि मंदिरि छाना बिहि । उग्यु सूर न ढांक्यु रहि ।। १८ ।।
कुयण तणा अबर जे वली । वनि लेई मोहिलीनी कली ।।
ऊजडि रान सरोवर जेह । तिहां जाई वस्त्र पषालि तेह ।। १९ ।।
ते सरपालि ब्राह्मण अछि । तिणि वटतर पूछ्यू पछि ।।
ऊजडि रानि आवि सा भणी । तेविमासण छि मुझ घणी ।। २० ।।
दासि कहि सुणि ब्राह्मण बाल । कुंयर सकोशल पालि मालि ।।
जु सुत जन्म्युं जाणि राउ तु तप लेईनि वनमाहि जाइ ।। २१ ।।
तिणि अवसरि ब्राह्मण वलकल्यु । लेई भेट राजानि मल्यु ।।
तीहारि सुत जन्म्युं संसारि । बणि महोछवि दान दे वारि ।। २२ ।।

नयर माहि गूडी उछली। रायतणी मनि पूगी रली ॥
बधा मणी ब्राह्मणनि दीध। जन्म लगि अयाच कीध ॥ २३ ॥
सहिदेवी राइ मदिर गउ। जाई कुंयर उचेलि लीउ।
खोलि लेई हूलरावि बाल। तुं करजे परजा प्रतिपाल ॥ २४ ॥
तिलक करी राजा सचर्यु। हाहाकार नयर माहि थऊ ॥
राजभार लेई सुंप्यु बाल। लीधी दीख्या परजा पालि ॥ २५ ॥
आस्या वेल होती ब्रह्म तणी। ते छेदी वनि चाल्यु धणी ॥
सहिदेवी दुख आणि घणु। पूरब पुण्य नही ब्रह्म तणु ॥ २६ ॥

दूहा

सहिदेवी झरि घणुं, हीयडा आगिल बाल।
रे रे कुंयर सलख्यणा, किम नीगमसु काल ॥ २७ ॥
अतेउरऊ घधलु, ऊभी मेल्ही आथि।
एकह प्रीयडा कारणि, हवि हूया निरनाथ ॥ २८ ॥
सयम लेवा सचर्या, तज्यु तरण जिम राज।
महल्यु मोह मही तणु, मुगति तणा फल काजि ॥ २९ ॥
पटक लेई गलि बधीउ, कुंयर विसारयु पारि।
आगिए कुल उजलुं, सुदा सुमारग वाटि ॥ ३० ॥

चुपई

सुकोसल की शिक्षा दीक्षा

पुत्र प्रशंसा माता करि। नहाल रूडा हरषि उचरि।
आपणि आणदि वेलि बाल। ते देवी वीसर्‌यु भूपाल ॥ ३१ ॥
वरस आठनु थउ जेतलि। सर्व कला सीख्यु ते तलि।
सोवणनी परिझलकि देह। सेवक सजन सहू नव नेह ॥ ३२ ॥
राय तणी छिल चुवीवेश। दुर्जन मिली विणासि देश।
राय आगिल को न कहि इसि। असन भणी हीउ छांडसि ॥ ३३ ॥
शस्त्र तणुए न लहि स्रम। भूझ तणु छि दारुण कर्म्म।
सेवक बात करि सवि मली। तितलि नृपकाने साभली ॥ ३४ ॥

राइ सकोशल बोलि इसुं । पिसुण मली मुझ करसि किसुं ।
मछरचड्यु बोलि तीणी बार । पिसुण सवे मनावुं हार ।। ३५ ।।
इसुं वाली राजा संचर्यु । तव सहिदेवी वांहि धर्युं ।
तुं लघुवेसी नाहुं बाल । कटक समा किम मलसु ताल ।। ३६ ।।
कुंयर कहिर्युं संभलि मात । पिसुण तणी छि थोडी वात ।
भाजि नयर देश लूटीई । पूणी पिठी किम छूटीइ ।। ३७ ।।

दूहा

राइ प्रधान तेडावीया, राय राणा सहू तेड ।
दुर्जन आव्या ढूकडा, हवि न कीजि जेड ।। ३८ ।।
चीठी वाली चिहूं दिशि, कहि सकोशल धीर ।
आसा आणि अम्ह तणी, ते रहीमपीसु नीर ।। ३९ ।।
वाजित्री बहूतेडीया, देवाडी रण भेर ।
सबल हीउ राजा तणुं, जाणे अचल गिरि मेर ।। ४० ।।
प्रस्थानुं परगट कर्यु, निपूठि दीधुं गाम ।
राइ सकोशल इम कहि, फेडुं दुर्जन ठाम ।। ४१ ।।

चुपइ

सुकोसल द्वारा विभिन्न देशो पर विजय

राजा सीषम साहाणी कही । सार तुरंगम छोडु सही ।
कर डाक्या हाडा नील किसोर् गंगा.जल बहू हरीया छोड ।। ४२ ।।
पवन वेगी पीलाछितुरी । पाणी पथा महूडा हरी ।
कलधा कबर कज्जल देह । हीसारव जिम गाजि मेह ।। ४३ ।।
तुरी पलाणीध्या असवार । तेह तणु नवि लाभि पार ।।
मेगल माता ढलकि ढाल । दुर्ज्जन तणां सला विशाल ।। ४४ ।।
ते उपरि नेजा लह लहि । अंबरि लागी वातह कहि ।
रथ जोप्या जेहवा गिरि माल । ते उपरि बिठा महिपाल ।। ४५ ।।
ढोल धसूके कंपि मही । सुललित संख बजावि सही ।
रौद्रसाद घोरि नीसाण । कंपि कायर पडि पराण ।। ४६ ।।
बंरंगा भेर झालिर झडझडि । तिणि प्रछादि परबत पडि ।
सरणाई बाजि वर सार । अवर वाजित्रनु न लहुं पार ।। ४७ ।।

रथ बिसी राजा सचरयु । पायक परिगह आगलि करयु ।
हीसारव नवि सुणी इसाद । जाणे सायर मेल्ही मरयाद ॥ ४८ ॥
चल्यां कटक जिम सायर पूर । बेहा रवि नवि सूझि रूर ।
विरीतणा उतारि माण । सूरीपुर जई साध्यु प्राण ॥ ४९ ॥
मथुरा नगरी पडीउ त्रास । जमणपुरी नै कीधु नास ।
सामा डामनि सका घणी । साध्यु नयर अजोध्या घणी ॥ ५० ॥
साधि भोम सकोसल वीर । कटक पड्यु गगानि तीर ।
ते आगलि किहां नाठा टलि । दंड देई राजा नि मलि ॥ ५१ ॥
राय तणि मनि पुहुती रली । कटक पहुतु जमणावली ।
गोपाचल नु राजा जेह । देई दड नि मलीउ तेह ॥ ५२ ॥
चालि कटक दोयगम बाट । परवत माहि कीधा घाट ।
जे राजा उजेणी तणु । दड लेई कीधु आपणु ॥ ५३ ॥

दूहा

लक्ष पंचास सुभट तणु, केकी बाहि पराण ।
कोटी भट कहीइ सदा, कवण सहि तेह बाण ॥ ५४ ॥
एक कन्या देइ रूयडी, एके नामि सीस ।
एक रिधि आपि घणी, एक वमता राखि देश ॥ ५५ ॥
साह्मा सूर समुभडि, अवर न घालि घाउ ।
रख्या करि प्रजा तणी, सही सकोसल राउ ॥ ५६ ॥
पुन्यि लक्ष्मी पामीइ, पुन्यि निरमल देह ।
पुण्यइ रिधि आवि, पुण्य तणा फल एह ॥ ५७ ॥

चुपई

गूजर सोरठ प्राणि लीध । नमीयाडा बेदर विस कीध ।
भाजि तरूयर पाडि बाट । साध्यु कुंकणनि करणाट ॥ ५८ ॥
लाड देश मरहट मलबार । साध्या कन्नड तिणि वार ।
कुंडलपुर नु कहीइ ईस । आवी सावण नामि शीस ॥ ५९ ॥

राय विद्याधर मलीयां बहु । चडी विमाण लंकाय्यूं सहु ।
मेघवाहन सुत लंका राइ । मेल्हीं मालनि लागु पाइ ।। ६० ।।
सार त्रिसागी आणि भेट । समुद्र तणां साध्या सहु बेट ।
सूरा तम सहि जिवाचीउ । हेल मात्र साबर साचीउ ।। ६१ ।।
रांइ कटक नु कीधु बंध । अहूठ लाख सवि साधा सिंध ।
मेदपाट मुधु सुवलाख । थांडा वलि साध्युं करलाख ।। ६२ ।।
मरुस्थली वहुलेरे बहु जाण । मौड चोडगा जणु वखाण ।
कृष्णाउर सु साध्या देश । चौपणपुर कीधु परवेश ।। ६३ ।।
विजयारथनुं करूं बखाण ।। बाहोलसु नगरी तह आण ।
नयर नयर घर लिजे कोडि ।। इतलां गाम कहां कर जोडि ।। ६४ ।।
तिणि परवत्ति विद्याधर घग । राय तणि वलि दीठु रग ।
ते प्रससा करि अति घणी । धन जनणी सकोसल तणी ।। ६५ ।।
विजयारथ थु पाछु वलि । नासि देश हुनी खलभली ।
अष्टापद जई नाम्युं सीस । चैत्यालय वधा जगदीस ।। ६६ ।।
चम्पापुर नुं मल्यु नरेस । सहिजि साध्यु डाहल देस ।
चक्रवर्तिनी परिचालि घणुं । पावापुर कीधु आहणुं ।। ६७ ।।
अंग बंग साध्यं बंगाल । मगध चीण सरिसुं पचाल ।
राजगृही नगरी नृप मल्यु । ते दंड लेई रा पाछु वल्यु ।। ६८ ।।

दूहा

राइ देश सब साधिया, उत्तर दिक्षण जाणि ।
पूरब पश्चिम साधिया । चिहुं दिशि वरती आणि ।। ६९ ।।
लक्ष्मी आणी लक्ष मणी, धन कण कचण सार ।
परणी अलीयल पदमणी, हय गय रयण भंडार ।। ७० ।।

विजय के पश्चात् नगर में प्रवेश

नगरि पधारया आपणि, सूरयवंशी राय ।
तालीया तोरण बंधाइ, घरि घरि मंगलचार ।। ७१ ।।
मदिर आव्या मा तणि, अधिक सकोसल सूत्र ।
सहिदेवी साईए मलि, उंडलि लीधु पुत्र ।। ७२ ।।

अथ ढाल हींडोलानी

मंदिर आव्या आपणि साहेलडी रे, घरि घरि मंगलाचार ।
सजन व लोक व बरमशुं सा० । रयण अमूलिक सार ।। ७३ ।।
प्रससा जलणी करि सा० । धन धन साहस धीर ।
देश सविमि साधिया सा० । जीतु सकोसल वीर ।। ७४ ।।
मेघाडबर रूयडु सा० । उपरि छत्र धराइ ।
सिंहासण सोहि भलु सा० । पात्र नचावि नु राइ ।। ७५ ।।
प्रजा सहू सुख भोगवि सा० । दुखीय न दीसइ कोइ ।
देवाले पूजा चडि सा० । भगति करि सहू कोइ ।। ७६ ।।
वाडी निरूपी रूयडी सा० । तरूयर मुहिर गभीर ।
तिहा नि सोहि षडोकली सा० । भरीयां छिति जल नीर ।। ७७ ।।
करि सकोसल भीलशु सा० । तरूणीय तणा रे धलूर ।
पूरव पुणिइ पामीउ सा० । सहीय सकोसल सूर ।। ७८ ।।

वस्तु

वसत आयु वसत आयु अतिहि आणद,
वनसपति वनि गहि गहि ससरसाद कोयल दीसि ।
रामाराती राइसुं नवरग यौवन तरुणि वेसि ।
सामा सवि सोहामणी वश विसूधा नारि ।
राय सकोसल खेलवा सुंदरि कीया शृंगार ।। ।। ७९ ।।

अथ ढाल

राती पगनी धाणही ए दीसि तुंकूलोल ।
तुराता दत दाडिम कली ए राता मुषह तबोल । तु ।। १ ।। ८० ।।
काला काचूं पहिरती ए, काली वेणी देषि तु ।
काली कस्तूरी महि महि ए, काली काजल रेष ।। २ ।। ८१ ।।
लीला चरणा पहिरती ए, दीसि नव नव रंग तु
नीला मणिती मुंदडीए, नीला पान सुरंगतु ।। ३ ।। ८२ ।।
पीला सोवण सोहती ए, पीली चूडी बाहि तु ।
पीली झालि झलामलीए, पीलां केर त्यांह तु ।। ४ ।। ८३ ।।

ऊजल अक्षर झबकती ये ऊजल रयण अपार तु ।
ऊजल दरपण नरखती ए, ऊजल मोतीय हार तु ।। ५ ।। ८४ ।।
झीणि कटिबंध कामिनी ए झीणी सुललित वाणि तु ।
झीणीय बेण बजावती ये झीणा वस्त्र प्रमाण ।। ६ ।। ८५ ।।
चंपु मरुउ मालती ए सोहि सेवंत्री फूल तु ।
वालुवेल सोहामणी ए टोडर अति बहुमूल तु ।। ७ ।। ८६ ।।
केसर तरीय कंवोलडी ए मलयागर महिकत तु ।
छाटखडा प्रीयसु करि ए रयसु रातीय रंभि तु ।। ८ ।। ८७ ।।
पुष्प लेई लेई ताडती ए आपणा स्वामीय अंगितु ।
सोलकला ससि सोहती ए जेहवु पूनिम चंद तु ।। ९ ।। ८८ ।।
अतेउर माहिउ पीउ ए इन्द्राणी माहि इन्द्र तु ।
क्रीडा करी घरि आवीया ए आविल नाचि रंभ तु ।। १० ।।
चोया चंदन महि महि ए मृग मद अतिहि सुरंभतु ।। ११ ।।८९ ।।

दूहा

नित नित इणी परि रमि मुगध समा महीपाल ।
सुख सागर माहि झीलतां जातु न जाणि काल ।। १२ ।। ९० ।।
पुन्यि कीरति ऊजली, पुण्यि अख भंडार ।
पुणिइ पिसुण पीडि नही, पुण्य प्रथवी माहि सार ।। १३ ।। ९१ ।।
सहिदेवी इम उच्चरि, साभिल तु प्रतीहार ।
यती जोए तु आवतु, परिहरि नगर दूयार ।। १४ ।। ९२ ।।
धर्म कथा जु सभलि तु, मनि वसि विराग ।
सोले वरसे सकोसलु तु, करसि सवि त्याग ।। १५ ।। ९३ ।।

चुपई

आव्या मुनिवर आदर नही । राज भवनि रखवाला रहि ।
यती बारे बा कीधु कर्म्म । राइ न जाणि तेह नु मर्म ।। १६ ।। ९४ ।।
छठा मास तणि पारणि । आव्यु पोल तणि बारणि ।
सहिदेवी तस मांडी मीट । कीरत धर तस नमणे दीठ ।। १७ ।। ९५ ।।
सहिदेवी मति मछर थउ । योवन भरि मुझ मेल्ही गउ ।
सेवकनि सीषामणि देइ । तु मुनिवर ज्या पोलि बेह ।। १८ ।। ९६ ।।

चल्या मुनीस्वर बाढि कया । काउसग लेईनि वन माहि रह्या ।
देवी बाव ते कलषी थई । नयणे नीर भरि त्यां रही ॥ १६ ॥ ९७ ॥
तेह रोयंती राजा सुणी । भणि नृप रोइ सा भणी ।
बाघ कहि उधारु बात । आहारज पाम्यु ताहाक तात ॥ २० ॥ ९८ ॥
ते राणी ते सेवक एह । भगति भली परिकतरां जेह ।
सहू सवारथ आपा पखि । स्वामि न राख्यु घरि कारखि ॥ २१ ॥ ९९ ॥
हुं राजकरूं वन सेवि बाप । एता कमि कमि लागि पाप ।
महारुतात मनावी लेस । विवध प्रकारि भगति करेस ॥ २२ ॥ १०० ॥
इसु सुणी सांचरीउ राय । पमला जो तु धालु जाइ ।
रूदन करि मनि विह्वल थउ । जिहा मुनिवर तिहां

राजा गउ ॥ २३ ॥ १०१ ॥

जई सकोसल नामि सीस । तह्मे कहि उपरि आणु रीस ।
काया कष्ट करूकां घणुं । राजरिधि सहूइ तह्म तणु ॥ २४ ॥ १०२ ॥
आहारि नही संसारि काज । तिणि कारणि मि छोड्यु राज ।
राज तणां छि कारण जेह । सांभलि वच्छ

सकोसल तेह ॥ २५ ॥ १०३ ॥

बडे बडे राजे नृप हूत । ते परलोके गया बहूत ।
राज रिद्धि सहूई घरि रही । ते उभी मेल्हीय्या सही ॥ २६ ॥ १०४ ॥
पुत्र कलित्र कहिनु परिवार । कहिना लक्ष्मी कहिनी नारि ।
अभ्र पटल जिम दीसि मेह । तिसु कहीइ संसार सनेह ॥ २७ ॥ १०५ ॥

दूहा

विषय तणां सुष रूयडा, साभलि राय सुजाण ।
सुख हुइ सरस बस, दुःख ते शेर प्रमाण ॥ २८ ॥ १०६ ॥
विषया केरी वेलडी, जेह न छेदी जाणि ।
थारि फूली फल गागेसी, त्यारि दुख देसि निरवाण ॥ २९ ॥ १०७ ॥
जे नर नारी आहीया, सुणि न सकोसल भूप ।
ते नर कहीइ बापडो, पड्या ससारह कूप ॥ ३० ॥ १०८ ॥
विषय तणा सुख परिहरी, छंडेवा भवपार ।
चलणे लागु गुरु तणे, मागि संयम भार ॥ ३१ ॥ १०९ ॥

चुपई

सुकोसल के वैराग्य के कारण विलाप

तिहां मली सहू आव्युं जिसि । पाछा पुर भणी ते उर तिसि ।
राय राणी सहू मागि मान । पायलागी बीनवि प्रधान ॥ ३२ ॥ ११० ॥
असन अकुरा न सहि हेत, बालपणि तप करवु केत ।
हवडा रहु अजोध्या माहि, वृद्धि पणि तप लेयो राय ॥ ३३ ॥ १११ ॥
राई कहिमि छोडी आ साथ, पदक आल्युं परधानह हाथ ।
गर्भाधान प्रसव जेहसि, ते राजा पृथ्वी पालसि ॥ ३४ ॥ ११२ ॥
मेल्हा सोवन जडित अवास, मेहली घरि घोडानी ह्रास ।
मेल्ही छि अबला सवि सती, आपणा स्वामीनि
नरखती ॥ ३५ ॥ ११३ ॥
मेल्हा सजन सहू परिवार, मेल्हा मोती रयण भडार ।
कर्मतणां बहू बंधन टलुं, तिणि संयम लीधु उजलुं ॥ ३६ ॥ ११४ ॥
जे होता राणा राजीया, आप आपणे घरि सहू गया ।
केतला रह्या तप लेइ अबला सहू वलावी देइ ॥ ३७ ॥ ११५ ॥
एक झूरि एक करि विलाप, एक कहि इम लागुं पाप ।
हा हा करीनि कूटि हीउ, आज अंतेउर सुनुं थउं ॥ ३८ ॥ ११६ ॥
एक अबला लाखि सिणगार, एके तोडी नव सर हार ।
चीर दोर एक भाति वली, एके धरणि पडी
टलि वलि ॥ ३९ ॥ ११७ ॥
प्रजा सहू बुबा रव करि, वली वली राजा संभरि ।
भूप तिरस सवि निद्रा गई, सूनुं नयर ते दीसि सही ॥ ४० ॥ ११८ ॥
गुण चडी सहिदेवी जोइ, पुत्र मनावी लावि कोइ ।
नयर तणा जब आव्या लोक, माता मनि धराउ
सोक ॥ ४१ ॥ ११९ ॥

माता की दशा

पुत्र तणी जब छूटी आस, पडी प्रथ्वी मति न लहि सांस ।
घडी बिचार अचेतन हूइ. नाथि बाय तब बिठी थई ॥ ४२ ॥ १२० ॥
मछर चडी मनि आणि रीस, लेई पाथरनि कूटि सीस ।
धरणी लोटि पाडि रीव, हीउं फाटी सनि जाइ जीव ॥ ४३ ॥ १२१ ॥

दूहा

सूनां ते मन्दिर मालीया, सूनु दीसि पाट ।
ए दुख किहि आगलि, कहु तुव सति उठी वाट ।। ४४ ।। १२२ ।।
योवन भरि प्री परिहरी, अनि पुत्रि आप्यु छेह ।
रे रे पामर प्राणीया, अजीय न छोडि देह ।। ४५ ।। १२३ ।।
बुंबा रव बहुली कहि, त्रोडि ते वेणी दड ।
गुख चडी झपावीउ, सरीर करयुं सत षंड ।। ४६ ।। १२४ ।।
आरति पामी अति घणी, आतम घात पसाउ ।
मोह करयु मनि पुत्रनु, वाघणि थई वन माहि ।। ४७ ।। १२५ ।।

वस्तु

सूर सकोसल २मनि धरि भाव भगति विवेक ।
भली करि सेवि सगुद्रु पाय मन माहि जाणी ।
धर्म दया गुण आगलु त्रण गुप्ति मन माहि आणी ।
च्यार कषाय मनि मेल्ह सुं इंद्री दमन कर्योस ।
गर्भवास दुख दोहिला तु मुगति तणा
फल ल्योस ।। ४८ ।। १२६ ।।

चुपई

सुकोसल की तपस्या

वर सालि वृछ हेठल्नि रहि, मेह तणी धारा सहि ।
तरुयर पान पछि नीतरि, तिमतिम कर्म सवे निरजरि ।। ४९ ।। १२७ ।।
भाद्रवडा गिरि किंदर रहि, डास मछर ना चटका सहि ।
झड माझी वरसि विकराल, बाघ सिंघ बह डहि
डढाल ।। ५० ।। १२८ ।।
कासग धरी महाव्रत पाल, वेला चडि वलि सेवा काल
तरूयर जाणी अहि रूवडि, पग तले डाभसी जडि ।। ५१ ।। १२९ ।।
तप साध्यु नयलनि तीर, विस्त्र विहूणा दीसि धीर ।
सीयालि शिर हीमजठरि, तिमतिम तप घणा आचरि ।। ५२ ।। १३० ।।
महा मास घणु जामिहीम, नीझण रहि न लीपि नीम ।
पडिटाढ तिहि अच्छज घलि, मेर तणी परिचिलन
चलि ।। ५३ ।। १३१ ।।

उह्लालि फल वाजि वाय, तडका ताप सहि मुनिराउ।
डुंगर बलि दव दाफि जेह, तरुयर छांह न सेवि तेह ।। ५४ ।। १३२ ।।
ताती वेलू तपती सिला, ते उपरि तप साधि भला।
माथा उपरि सूरज तपि, तिमर कर्म सरीरां षपि ।। ५५ ।। १३३ ।।
कासग लेई उभा निरधार, जाणे थंभ रोप्या तिणी वार।
देसि देह जिर्सा पांजरां, आठ कर्म कीधां जाजरां ।। ५६ ।। १३४ ।।
द्वादश अनुप्रेक्षा अणसरि, बार भेद तप सूधु करि।
आरत रौद्र तज्यु तिणी वार, आतम हंस लीउ
आधार ।। ५७ ।। १३५ ।।
पाचि इन्द्री ते परिहरि, सेष तावीस विषि निरजरि।
दोष अठारह अलगा जेह, पच महाव्रत पालि तेह ।। ५८ ।। १३६ ।।
सहस अठारि पालि सील, मुगति तणा फल लेवा लील।
च्यार कषायना छेद्या मूल, तप करता तृष्णा मई तूल ।। ५९ ।। १३७ ।।
आठा मदनु भाजि मोड, जिणि निरदलीउ काम कठोर।
वावीसह परीसा सवि सहि- पनर प्रमाद न उभा रहि ।। ६० ।। १३८ ।।

वस्तु

व्याघ्री द्वारा सुकोसल का भक्षण

कर्म टालि कर्म टालि अतिहि सुजाण।
अटवी माहिं एकलु मन माहि आतम ध्यान आणि।
परमानद सेवि सदा जाणि धर्म विचार।
मुनिवर अतिसूयडा हवि लेसुं भवपार ।। ६१ ।। १३९ ।।

दूहा

जे जलणी मुनिवर तणी, सहिदेवी री साल।
ते भूषी वन माहि भमि, वाघिण थइ विकराल ।। ६२ ।। १४० ।।
भूष तिरस बहु सेववी, सोधंती वन माहि।
दीठा मुनिवर रूयडा, मछर धरयु मन माहि ।। ६३ ।। १४१ ।।

राग विराडी

सहि गुर बोलि रे मन रषे डोलि रे
सीहिण आवि सूर सलक्षणा ए

मुझ तणी यामनी मुझ तणी कामनी आतम वातिग

वाघिण हुई ए ।। चउपायु ।।

आतम वाति वाघिण थई रे आपण सरसी वालि ।
मछर चडीमलपती आदि पूरव दुःखमनि सालि ।
एह तणा परिसि सहिस पराणा ताहारि कुण कहु तोलि ।
सीहिण आवि सूर सकोसल मुनिवर इणी परि

बोलि रे ।। १ ।। १४२ ।।

वल तुनि इम भणि कांई मधुरी वाणी गुरु सुणि ।
आपुण काया इसु कीजिइए ण्यांरा गति माहि अवतरयु ।
चुरासी लष रउवडयु छेहलानि भवनुए जो वोलीउ रे ।। च. ।।
छेहला भवनु एह वोलीउ हवि आतम सत साधु ।
सद्‌गुरु केरी सेव करी निरूपातीत आराधु ।
सुध चिद्रूप जोया गति जाणु हरष घणु मनि ब्रह्म तणि ।
कासग करीनि अणसण लीधु तु गुरु परति इम भणि ।। २ ।। १४३ ।।
साह्मानि द्रिष्टि रे सीहिण चाहिरे दीठा नि मुनिवर

विहि रूडयाए ।
वाघिणी थरहरि तिणि अवर वरहरि पीडा न जाणिए

तो परतणीए ।। च. ।।
एह पापणी पीडन जाणि मइलां एह ना करणी ।
कुछउ लालीउंची उडि थर थर धूजि धरणी ।
इहि रती डाढा मरि लीधु मछर घणु मन माहि ।
ध्यान धरी गुरु आमलि उभा साहमी दृष्टि काहि ।। ३ ।। १४४ ।।
कांई बल भरीबु किरे नखरतणा घामु किरे ।
ध्यान न चूकि मुनिवरनि न तणुंए ।
मछर चडी मोडिरे घसी रव घघोलि रे पगतणी पडघाए

जो पीडा करिए ।। च. ।।
युग तणे पडिघाइ करीनि मुनिवरनु सिर चूरि ।
किकराली तिहा वलगिविरथि विसमेमहुर वलूरि ।

ए परीसह सहिवा कुण समरथ अऋषि तरुयर मुकि ।
सीह नार्दत करी सिर खंडि बाघिण बल मारी बुकि रै ।। ४ ।। १४५ ।।

वस्तु

हसणि पंडि हसणि पंडि अति बणि
रोस नखरि व डारि देह दहि उपघात करि अति बल प्रमारिण ।
अग छेदन शरीर भेदन मछर चडी तनु तारिण ।
रुहिर पीइ रिण रातडी सोखि सर्व सरीर ।
परीसह सहि बाघिण तणु ध्यान न मूकि धीर ।। १ ।। १४६ ।।

दूहा

चुथि पाइ पड वडिनि, साधि सुकल सध्यान ।
गुणस्थानिक थयु तेरमि, उपनु केवल न्यान ।। १ ।। १४७ ।।
स चराचर व्यापी रह्यु, न्यान करी मह जेह ।
आपि आप जऊ लष्यु, भागु सर्व सवेह ।। २ ।। १४८ ।।
केवल न्यानि नरखतां, व्यापि लोक अलोक ।
हाथ तणी थण लीहडी, तिम देखि त्रिलोक ।। ३ ।। १४९ ।।
बधन काटयां करमनां, जन्म जरानां जान ।
पुण दुःख छूटु संसारनां, पामु मुगति निधान ।। ४ ।। १५० ।।

चुपई

जिहां आकार न दीसि सोई । कर्म तणा नवि बंधण होइ ।
जामण मरण तणां दुख नही, ते ठाम सकोसल
पाम्यु सही ।। ५ ।। १५१ ।।
भूष तिरस नही निद्रा नाम, वर्ण न यथ सदा सुख ठाम ।
रूप न राग निरंजन जेह, पाम्यु ठाम सकोसल तेह ।। ६ ।। १५२ ।।
मुनिवर सरीर पड्यु तिहां सही, बाघिण भक्ष करि
तिहां रही ।
तेह कलेवर करि आहार, भ्रमि चिह्न दीठां तिणि वार ।। ७ ।।१५३ ।।
पग तलि दीठु पयज सार, करतलि दीठव छ प्रकार ।
नयण सुरखा ते नरखती, रातरि रेख दयानि झलकती ।। ८ ।। १५४ ।।

मंसि चिह्न दीठुं ते तणि, चित चमकी मनि आपणी।
खोलि लेई देती पय पान, तिणि अवसरि
ते आवी सानि ॥ ६ ॥ १५३ ॥

ढाल बणजारानी

मुनि द्वारा व्याघ्रिणी को उपदेश

सहि गुरु बोल्या ते बार एवडुं अंखत्र कांइ आदर्युं
चेतहईडलारेनं कसमल भरयु रे भडार।
आज सकोसल वध करयु रे। चेतह। ॥ १५६ ॥
पूरव प्रीति सभारए ताहरी कूषि जो अवतर्युं।
अवतर्यु कूखि, रुहिर सोखि पिंड पोखितुं तणु। ॥ १५७ ॥
ससारि सगपण काई न जाणि पुत्र ए परिभव तणु।
रीस गाढी प्राण काढी वपु वर्यु वाघिण तणु। ॥ १५८ ॥
सिहि गुरु बोल्या तिवारि ए बडु अखत्र काइ आदरयु ॥
वाघिण करि रे विलाप पूरव भव मनि चीतवि ॥ चे ॥ १५९ ॥
मोह धरयु मन माहि ढोर तणी परि ढाढहि ॥ चे ॥
ढाढहि ढोरज तणी पिरि दुख सभारि अति घणुं।
सीस कूटि जीभ त्रुटि उदर फाडि आपणुं। ॥ १६० ॥
परजल्यु पंजर रोस पूरीहोइ दुख सालि सवि।
वाघणि करि रे विलाप पूरव भव मनि
चीतवि ॥ चेत ॥ २ ॥ १६१ ॥
सहि गुरुदेइ प्रतिबोध आप हत्या जीव मा करे ॥
कीधां छि करम कठोर, वलीरे नवा काइ आदरि ॥ १६२ ॥
लागी छि सहि गुरु पाय, मुनिवर वाणी मनि धरि ॥

व्याघ्रिणी द्वारा पश्चाताप एवं अनशन लेना

साभलीय मुनिवर तणीय वाणी रौद्र आरत परिहरि।
क्रोध टाली क्षांति आणी भाव हीयडा सु धरी। ॥ १६३ ॥
अणसण लीधुं काज सीधुं देवलोक ज अवतरी।
सहि गुरुदेइ प्रतिबोध आप हत्या जीव मा करे ॥ ३ ॥ १६४ ॥
काशग लेई निरधार मुनिवर वन माहि तप करि ॥
अचल उभु जाणे मेर देहडी दमि नित आपणी ॥ १६५ ॥

ध्यान धरि महावीर तारन जेहुनि कोइ नहीं ॥ चे. ॥
तीरज तेहनि कोन दीसि महत्त सरिसु मवडि । ॥ १६६ ॥
सुक्ल ध्यान परवेश कीधु गुणस्थानिक म्यु तेरमि । ·
उपनु केवल महा निरमल मुगति नारी ते वरि ।
कासब लेई निरधार मुनिवर वन माहि
तप करि ॥ चे. ॥ ४ ॥ १६७ ॥

दूहा

मुनिवर बिहि मुगति गया, सहिदेवी स्वर्ग सार ।
सांघु कहि इम उच्चरु, जिम पामु भवपार ॥ १६८ ॥

॥ इति श्री सकोसल राय चुपई समाप्तः ॥

ब्रह्म गुणकीर्त्ति

ब्रह्म जिनदास के सात शिष्यथे। जिनके नाम हैं ब्रह्म मनोहर, ब्रह्म मल्लिदास, ब्रह्म गुणदास, ब्रह्म नेमिदास, ब्रह्म धर्मदास, ब्रह्म शान्तिदास एवं ब्रह्म गुणकीर्त्ति। ये सातों ही शिष्यसाहित्यसेवी थे तथा ब्रह्म जिनदास को साहित्य निर्माण में सहयोग दिया करते थे। ब्रह्म जिनदास ने अपनी विभिन्न कृतियों में अपने शिष्यों के नामो का उल्लेख किया है। लेकिन उन्होंने अपनी कृतियों में जिस प्रकार दूसरे शिष्यो के नामों का उल्लेख किया है उस प्रकार ब्रह्म गुणकीर्त्ति का उल्लेख नहीं मिलता है। इससे पता चलता है कि ब्रह्म गुणकीर्त्ति उनके कनिष्ठतम शिष्य थे और उनके सम्पर्क में भी बहुत बाद मे आये थे। यदि ऐसा नहीं होता तो ब्रह्म जिनदास उनका उल्लेख किये बिना नही रहते।

गुणकीर्त्ति नाम के एक भट्टारक भी हो गये हैं जिनका पट्टाभिषेक सवत् १६३२ मे डूंगरपुर मे बडे उत्साह से हुआ था।[1] लेकिन हमारे नायक गुणकीर्त्ति तो ब्रह्मचारी थे। उनके गार्हस्थ एव साधु जीवन के सम्बन्ध मे नामोल्लेख के अतिरिक्त अधिक कुछ नही मिलता। कवि ने अपनी एक मात्र कृति मे चित्तौडगढ के नाम का दो बार उल्लेख किया है इससे यह तो अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि का सम्बन्ध चित्तौडगढ से रहा होगा लेकिन उनका शेष जीवन किस प्रकार व्यतीत हुआ इसकी अभी खोज होना शेष है।

ब्रह्म गुणकीर्त्ति की एक मात्र कृति "रामसीतारास" अभी तक हमारे देखने मे आयी है। इसके अतिरिक्त कवि की और कितनी कृतियां हैं इसके सम्बन्ध मे कुछ नही कहा जा सकता। लेकिन रामसीतारास को देखते हुए इनकी और भी कृतियां कहीं मिलनी चाहिये। ब्रह्म जिनदास ने सवत् १५०८ मे विशालकाय रामरास की रचना की थी। अपने गुरू की विशाल कृति होने पर भी गुणकीर्त्ति के द्वारा एक लघु रास काव्य के रूप में राम के जीवन पर कृति लिखने का अर्थ यही हो सकता है कि पाठकों की संक्षिप्त रूप मे राम कथा को जानने की इच्छा रही होगी।

1. राजस्थान के जैन सन्त–व्यक्तित्व एवं कृतित्व–पृष्ठ १४०

प्रस्तुत रामसीतारास की पाण्डुलिपि उसी गुटके में संग्रहीत है जिसमें भट्टारक सोमकीर्त्ति, ब्र० यशोधर एव अन्य कवियों के पाठ हैं। मुझे तो ऐसा लगता जैसे इस गुटके के पाठों का संकलन मैंने ही अपने उपयोग के लिये कभी किये थे। प्रस्तुत पञ्चम भाग के अधिकांश पाठ इसी गुटके में से लिये गये हैं।

रामसीतारास एक खण्ड काव्य है जिसमें राम और सीता के जन्म से लेकर लंका विजय के पश्चात् अयोध्या प्रवेश एवं राज्याभिषेक तक की घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। इसमें १२ ढालें हैं जो ११ अध्यायों का काम करती है। जैन कवियों ने प्राचीन काल में इसी परम्परा को निभाया था। महाकवि ब्र० जिनदास ने भी अपने रास काव्यों को ढालों मे ही विभक्त किया है। यह गीतात्मक काव्य है जिसकी ढालो को गा करके पाठको को सुनाया जाता था।

समय—रामसीतारास का रचना काल तो मिलता नहीं जिससे स्पष्ट रूप से किसी तथ्य पर पहुंचा जा सके लेकिन ब्र० जिनदास का शिष्य होने के कारण तथा गुटके के अन्य पाठों के समय निर्णय के देखते हुये प्रस्तुत रास को सवत् १५४० के आस पास की रचना होनी चाहिये। ब्र० जिनदास का सवत् १५२० तक का समय माना गया है। प्रस्तुत कृति उनकी मृत्यु के पश्चात् निबद्ध होने के कारण उक्त रचना काल मानना उचित रहेगा। इसी तरह हम इस कृति के आधार पर ब्र० गुणकीर्त्ति का समय भी सवत् १४९० से १५५० तक का निर्धारित कर सकते हैं।

भाषा—रास की भाषा राजस्थानी है यद्यपि गुजरात के किसी प्रदेश में इसकी रचना होने के कारण इस पर गुजराती शैली का प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है लेकिन क्रिया पदो एव अन्य शब्दो को देखने से यह तो निश्चित ही है कि कवि को राजस्थानी भाषा से अधिक लगाव था। विचारीउ (विचारकर) माडीइ (माडे) आवीयाए (आये) यानकी (जानकी) घणी (बहुत) पाणी (हाथ) आपणा (अपना) घालीइ (डालना) जाणुए, बोलए, लीजिए जैसे क्रिया पदों एवं अन्य शब्दो का प्रयोग हुआ है।

सामाजिक स्थिति—रामसीतारास छोटी-सी राम कथा है। कथा कहने के अतिरिक्त कवि को अन्य बातों को जोड़ने की अधिक आवश्यकता भी नहीं थी उनके बिना वर्णन के भी जीवन कथा को कहा जा सकता था लेकिन कवि ने जहाँ भी ऐसा कोई प्रसंग आया उसके वर्णन में कवि ने सामाजिकता को अवश्य स्पर्श किया है। प्रस्तुत रास में रामसीता के विवाह के वर्णन में सामाजिक रीति-रिवाजों का वर्णन मिलता है। राम के विवाह के अवसर पर तोरण द्वार बांधे गये थे।

मोतियो की बांदरवाल लटकायी गयी। सोने के कलश रखे गये। गंधर्व एवं किन्नर जाति के देवों ने गीत गाये। सुन्दर स्त्रियो ने लवाछना लिया। तोरण द्वार पर आने पर खूब नाच गान किये गये। सास ने द्वाराप्रेक्षण किया। जब चंवरी के मध्य आये तो सौभाग्यवती स्त्रियो ने बधावा गाया। लग्न वेला में पंडितों ने मंत्र पढ़े। हथलेवा किया गया। खूब दान दिया गया।

उस समय वृद्धावस्था आते ही अथवा अपनी सन्तान का विवाह होने के पश्चात् संयम लेने की प्रथा थी। संयम लेने के लिये सभी प्रकार के सांसारिक ऋणों से मुक्ति ली जाती थी। कर्ज चुकाया जाता था। दशरथ को भी अपने दिये हुये वचनों को निभाने के लिये केगामती की दोनों बातो को मानना पडा।

नगरों का उल्लेख—राम लक्ष्मण एव सीता जिस मार्ग से दक्षिण मे पहुंचे थे उसी प्रसंग मे कवि ने कुछ नगरो का नामोल्लेख किया है। ऐसे नगरों मे चित्तुडगढ (चित्तौड) नालछिपाटण, अरुणग्राम, बंशथल के नाम उल्लेखनीय है।

वर्णन की दृष्टि से अध्ययन—कवि ने रामकथा की लोकप्रियता, जन-सामान्य मे उसके प्रति सहज अनुराग, एव अपनी काव्य प्रतिभा को प्रस्तुत करने के लिये रामसीतारास की रचना की थी। महाकवि तुलसी के सैकडो वर्ष पूर्व जैन कवियों ने रामकथा पर जिस प्रकार प्रबन्ध काव्य एव खण्ड काव्य लिखे यह सब उनकी विशेषता है। जैन समाज मे रामकथा की जितनी लोकप्रियता रही उसमे महाकवि स्वयम्भु, पुष्पदन्त एव रविषेणाचार्य का प्रमुख योगदान रहा है। तुलसी ने जब रामायण लिखी थी उसके पहिले ही जैन कवियो ने छोटे-बडे बीसो राम काव्य अथवा रास लिख दिये थे। ब्र० गुणकीर्त्ति का रामकाव्य भी इसी श्रेणी का है जिसका सक्षिप्त अध्ययन निम्न प्रकार है—

काव्य का प्रारम्भ—कवि ने सर्व प्रथम जिन स्तुति की है जो ऋषभदेव से लेकर मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर स्तवन के साथ समाप्त होती है। दशरथ साकेता नगरी के राजा थे अपराजिता उनकी महारानी थी। इसके अतिरिक्त सुमित्रा, सुभमती एव केगामती ये तीन और रानिया थी चारो रानियो के एक-एक पुत्र हुये जो राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न एव भरत कहलाये। जनक मथुरा के राजा थे। विदेहा उसकी रानी थी। सीता उसकी पुत्री थी जिसको वैदेही भी कहा जाता था। सीता बहुत सुन्दर थी। कवि ने उनकी सुन्दरता का निम्न प्रकार वर्णन किया है—

ते गुणह ग्राम मन्दिर काम रूपधाम रसातली।
चन्द्रवदना मृगह नयना सघन घन तन पातली।

ते हाव भाव विलास विभ्रम लावण्य ग्राधिका ।
गौरवर्णी सुवर्ण छाया सुगंध परिमल कूपिका ।।७।।

सीता का स्वयंवर रचा गया। अनेक राजा महाराजाओं ने इसमें भाग लिया। धनुष चढाने की शर्त थी लेकिन धनुष चढाने में जब अन्य राजाओं को सफलता नही मिली तो दशरथ ने अपने पुत्र राम से धनुष चढाने के लिये कहा। राम ने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य करके आनन्दित मन से धनुष चढा दिया।

आपणा पिता तणी वाणी सुणनि स्वामी प्रणदीया।
सिह जिस सिंहासण मेल्हीय सकल सुर नर वदीया ।।
वदीय इन्द्र ते कनकधारे रत्न वरिषा करि घणी।
जय जयारव साधु कलिरव ऊधा तब तिहुयण धणी ।।१०।।

× × ×

निरमलह वेदीय उपरि चडि करि वाम हस्ति धनुलीउ।
दक्षिण हस्ति गुण धरिवि रामिवि आवर्त्त चढावीयो।
टणकर नादि दह दिसि, गगन मडल टलटल्या।
पाताल शेषनि असुर सुर नर, दैत्य दाणव खलबल्या ।।१७।।

राम द्वारा धनुष चढाते ही सागर हिलोरे लेने लगा, सुमेरु पर्वत कापने लगा, कितने ही तालाब फूट गये, देवता जय-जयकार करने लगे, सुगन्धित वायु बहने लगी एवं भ्रमर झकार करने लगे।

जयो जयो श्रीराम देवह कठि वरमाला घालीयि।

स्वयम्वर मे वरमाला द्वारा पति स्वीकार करने के पश्चात् राम और सीता का विवाह हुआ। लग्न मडप तैयार किया गया। तोरण द्वार बांधा गया। मोतियों की बादरवाल लटकायी गयी। स्वर्ण कलश रखे गये। स्वय राम भी विभिन्न अलंकारो से सज्जित किये गये। गंधर्व एवं किन्नर गा रहे थे। उनके सिर पर छत्र सुशोभित थे। चंवर ढोले जा रहे थे तथा सौभाग्यवती स्त्रियां मगल गीत गा रही थीं तथा लवाछना ले रही थी।

राम जब तोरण द्वार पर आये तो सब आनन्दित हो गये। उनकी सास ने द्वारा प्रेक्षण किया और जब लगन मंडप में आये तो सौभाग्यवती स्त्रियो ने बधावा

गाया । पंडितों ने लग्न पढ़ा तथा शुभ वेला में विवाह सम्पन्न हुआ । हथलेवा हुआ । चारों ओर जय जयकार के मध्य राम और सीता का विवाह सम्पन्न हुआ ।

विदेहा अक्षाणु लीधु, सासू वर पुंखणु कीधु ।
वर चवरी माहि आव्या साहासरणीयि बधाव्या ।
पंडित बोलए मंत्र, लगन तणा आण्या मंत्र ।
सुभ वेला तिहा जोइ, वरति मगल सोई ।।६।।

अब योग सबलुउ भागु, सुलगनि हथोलु लागु ।
तब हूउ जय जयकार, परणीय यानकी नार ।।७।।

राम के विवाह के पश्चात् लक्ष्मण, भरत एव शत्रुघ्न इन तीनो भाइयो का भी सुन्दर कन्याओ से विवाह हो गया । वे सब मथुरा से अयोध्या लौट आये और राज्य सुख भोगने लगे । कुछ समय पश्चात् दशरथ ने वैराग्य लेने का विचार किया । उन्होने अपने इस विचार को सभी को बता दिया । मन्त्री परिषद् की मीटिंग बुलाकर राम को राज्य तिलक देने की घोषणा कर दी । दशरथ की इस घोषणा से चारो ओर प्रसन्नता छा गयी । लेकिन भरत की माता केगामती को राम का राजा बनना अच्छा नही लगा । उसे चिन्ता हुई कि राम के राजा बनते ही भरत को उनकी आज्ञा माननी पडेगी । पहिले तो उसने भी दीक्षा लेने की सोची लेकिन बाद मे भरत के प्रति मोह के कारण उसने अपना विचार बदल दिया । और राज्य सभा में जाकर दीक्षा लेने के पहिले दिये हुए दो वचनो की पूर्ति करने के लिये दशरथ से कहा ।

वणुयन मागु देव भरत नरेसर थापयो ।
दिउ मुझ पुत्रनि राज, तो स्वामी सयम लीयो ।।१२।।

अब दशरथ ने केगामती के प्रस्ताव सुने तो तत्काल भरत को राज्य देने का निश्चय किया गया । वैराग्य लेने के पूर्व सासारिक ऋणों से मुक्ति पाना आवश्यक माना जाता है क्योंकि जिसके कर्ज होता है उसे दीक्षा नही दी जाती ।

साधारण पिता तणु पुत्र उतारि इस जाणीइ ।
केगामती का पुत्र भरतह राज देवा आणीइ ।
राम स्वामी सुगति गामी पिता भाव तें जाणीउ ।
भरत कुमरह बांहि साही रामि राज सभा माहि आणीउ ।।

भरत को राज्य देने के पश्चात् राम पिता के चरण छूकर तथा धनुषबाण हाथ में लेकर अपने भाई लक्ष्मण एवं पत्नी सीता के साथ वन को चल दिये।

राम पिता पणि वेव लागी, धनुषबाण ते करि लीध।
बन्धव लक्ष्मण सहित स्वामी सीता सांथि वनवास यउ॥

राम वनवास में चले तो गये लेकिन अयोध्या उनके बिना सूनी हो गयी। चारों ओर हाहाकार मच गया। दशरथ तो कितनी ही बार मूर्च्छित हुए लेकिन दोष किसको दिया जावे। कर्मों की लीला विचित्र होती है—

राम गये वनवास कर्मना प्रबर किम छूटिए।
दोस म दीजि काम मूरछा आवी धरणी पर्युए।

राम का वन गमन—

अयोध्या से राम मेवाड देश मे आये और चित्तौडगढ गये। वहाँ से वे तीनों नलकक्षपुर मालछिपाटण) आये। विन्ध्याचल पर्वत को पार करने के पश्चात् रामपुरी बनाने का यश प्राप्त किया। फिर सोमापुर आये और तप एव ध्यान करते हुए कुलभूषण एव देशभूषण पर आये हुए उपसर्ग को दूर किया। इसके पश्चात् दण्डकवन मे आकर रहने लगे। और वहाँ भी दो चारण ऋद्धिधारी मुनियो का उपसर्ग दूर किया।

दण्डक वन मे राम सीता और लक्ष्मण रहने लगे। यहाँ भरत का शासन नही था इसलिये एक अलग ही नगर बसाने की योजना के लिये राम ने लक्ष्मण से कहा। लक्ष्मण उपयुक्त भूमि देखने के लिये निर्भय होकर घूमने लगे। शबुक ने लक्ष्मण का मार्ग रोकना चाहा। इस सघर्ष मे लक्ष्मण द्वारा शंबुक मारा गया। खरदूषण की स्त्री चन्द्रनखा अपने पुत्र की देखभाल के लिये वहाँ जब आयी और अपने पुत्र को मरा हुआ देखा तो रोने लगी। जब चन्द्रनखा ने राम सीता तथा लक्ष्मण को देखा तो उसे अत्यधिक क्रोध आया और वह पाताल लोक मे आकर खरदूषण से आकर शिकायत की। खरदूषण चौदह हजार विद्याधरों के साथ वहीं आये जहाँ राम लक्ष्मण थे। लेकिन अकेले लक्ष्मण के सामने वे क.ई नहीं टिक सके। इसके पश्चात् चन्द्रनखा रावण के पास गयी और उसने राम लक्ष्मण के बारे में पूरा वृतान्त कहा। चन्द्र नखा की बात सुनकर रावण के हृदय मे राम लक्ष्मण के प्रति विद्रोह हो गया और वह पुष्पोत्तर विमान द्वारा वहाँ पहुँचा। उसने सीता को देखा और उसका हरण करना चाहा। वहाँ उसने मायामयी लक्ष्मण का रूप बनाया और वन में सिंहनाद किया।

राम छला किम हूकं ए रामा, तत्क्षण विद्या समरी माया
वामाभेद जणाव्यो

माया रूपि लक्ष्मण कीयो, सिंघनाद तीणी तब दीयो
लीयो धनुषते बाण

रावण ने सीता का हरण कर लिया और उसे अशोक वाटिका मे रहने के लिये छोड दिया। सीता बहुत रोयी चिल्लायी हाथ पैर पीटे लेकिन उसकी एक भी नही चली।

विलाप करती दु ख धरती राम नाम उच्चार ए
स्वामी लक्ष्मण वीर विचक्षण एह सवर टालए ।। १ ।।

कवि ने सीता के विलाप एव रावण के साथ वार्तलाप का बहुत अच्छा किया है। इसी तरह राम के विलाप का कवि ने जो वर्णन किया है उसमे दर्द है, वियोग जन्य वेदना है।

सीता सीता साद करता कीधां कर्म ते सहए।
तरवरह डु गर परति श्रीराम सीता सुधिज पूछए ।।८।।

राम सरोवर के पास जाकर चकोर से पूछने लगे कि उसकी सीता कहा गयी। क्या कोई दुष्ट उसे ले गया अथवा किसी व्याघ्र ने उसका भक्षण कर लिया अथवा किसी सिंह के मुख मे पड गयी।

पूछए सुधि श्री राम नरेश्वर सरोवर काठि ऊभु रही रे।
कहु न चकोर तम्हे चक्रवाकी दीठी सीतल मुझ सहीरे।
सहीय सीता हरण हुवो कवण पापी लेइ गयो।
कि व्याघ्री आवी भक्षण कीध तेह तणो कटिण हीयो।
सार्दूल सकल कि सिंघ स्वापद सती सीता मुखि पडी।
वनह मज्झिम कोई मेहली कवण पुहुती यम घडी ।।६।।

धीरे धीरे सीता हरण का रहस्य खुलने लगा। सुग्रीव ने सीता हरण की पूरी बात राम को बता दी। साथ ही रावण की शक्ति एवं वैभव का भी उसने अच्छा वर्णन कर दिया जिससे राम लक्ष्मण को भी उसकी शक्ति का पता चल जावे। लेकिन राम को तो यह भी पता नही था कि लंका किस दिशा मे है। जब सुग्रीव ने राम की बात सुनी तो वह भी हंसने लगे

राम पूछि कहु न सुग्रीव लंका कवरण दिखाई वसि ।
सुग्रीव तरणो मम वारणी राम तणी सुरग विहसि ॥१४॥

इसके पश्चात् राम ने सुग्रीव की सहायता से युद्ध की बड़ी तैयारी की । सर्व प्रथम हनुमान को अपनी मुद्रिका देकर लका भेजा और उसमें अभूतपूर्व सफलता लाने के पश्चात् राम ने हनुमान को पूरा सम्मान किया ।

रामचंद्र दीउ मान धन धन जनम धन तम्ह पिता ।
धनि जननी कवि भानु । सा० । रामचंद्र दीउ मान ॥

लंका मे अपनी पूरी सेना उतारने के बाद भी राम ने रावण से सीता को वापिस लौटाने का प्रस्ताव किया ।

सीता दीजि प्रीति कीजि राम राउ भावीइ ।

अन्त मे राम रावण के मध्य घमासान युद्ध हुआ । रावण ने चक्र चलाया जो लक्ष्मण के हाथ मे आया । वही चक्र लक्ष्मण द्वारा चलाया गया जिससे रावण का अन्त हुआ ।

युद्ध मे विजय के पश्चात् लंका मे चारों ओर राम की जय जयकार होने लगी । मगल गीत गाये जाने लगे । गरीबो को खूब दान दिया गया । चारो ओर स्वर्ण ही मानो बरसने लगा । इतने मे ही नारद ऋषि ने आकर राम से माता के दु ख एव पुत्र वियोग का वृतान्त कहा । नारद की बात सुनकर तत्काल अयोध्या जाने का निर्णय लिया गया । और पूरे दल के साथ राम लक्ष्मण एवं सीता वहाँ से चल पडे । राम की सेना बल का कवि ने निम्न प्रकार वर्णन किया है—

नव कोडी तोरगमा तु पायदल कोडि पचास तु,
रथ लक्ष बैयालीस तु, गज तेतला गुण रास तु ।
सोल सहस मुगट बध तु, सेवा करि राम पाय तु ।
लच्छ तणी संख्या नही तु बिभीषण आगिल जाइ तु ।

राम ने सपरिवार अयोध्या मे प्रवेश किया । उस समय अयोध्या को खूब सजाया गया चारो ओर तोरण द्वार बनाये गये । बाजे बजने लगे तथा जय जयकार के नारों से आकाश गू ज उठा । कवि ने नगर प्रवेश एव आगे राज्याभिषेक का अच्छा वर्णन किया है ।

वाजि दुंदुभि नाद तु, साद सोहामणाए ।
मदन भेरीय झणकार तु, ढोल नीसारण वजाए ।

कुसम वरसिय अकास तु, पंच शबद नादिए।
झलपत मयगल कुंभि तु, झरइ सुगंध मदए ॥३॥

राज्याभिषेक का एक वर्णन निम्न प्रकार है—

कलस कनकतणां जाणि तु, तीर कने नीरि भरिए।
पंच रतन तणो चुक तु, पूरीउ मनि रखीए।
रयण मणिमय थापितु, सिंघासण तिहां वली ए।

राम ने राज्याभिषेक के पश्चात् लक्ष्मण को युवराज पद, शत्रुघ्न को मदथिन मथुरा का राज्य, विभीषण को लंका का राज्य दिया। हनुमान, नल नील आदि को अलग-अलग उपहार देकर सम्मानित किया।

कवि ने रास समाप्ति पर अपनी लघुता प्रगट करते हुये लिखा है कि रामायण ग्रथ का कोई पार नहीं पा सकता। वह तो स्वय ही मतिहीन है इसलिये राम कथा को अति सक्षेप मे वर्णन किया है।

ए रामायण ग्रथ तु एह नु पार नही ए
हु मानव मतिहीण तु, सखेपि गीत कही ए
विद्वांस जे नर होउ तु, विस्तार ते करिए
ए राम भास सुणेवि तु, मुझ परि दयाकरा ए ॥३४॥

राम को ग्रंथ प्रशस्ति मे कवि ने अपना कोई विशेष परिचय नही दिया है केवल अपने गुरु ब्रह्म जिनदास एव बाई धनश्री एव ज्ञानदास जिनके आग्रह से प्रस्तुत रास की रचना की गयी थी का नामोल्लेख किया गया है—

श्री ब्रह्मचार जिणदास तु, परसाद तेह तणोए।
मनवाछित फल होइ तु, बोलीइ किस्युं घणुए ॥३६॥
गुणकीरति कृत रास तु विस्तस मनि रलीए
बाई धन श्री ज्ञानदास तु, पुण्यमती निरमलीए।
गावउ रली रंगि रास तु, पावउ रिद्धि वृद्धिए।
मनवांछित फल होइ तु, संपजि नवनिधिए।

प्रस्तुत रास मे १२ ढालें हैं जिनकी पद्य संख्या निम्न प्रकार है—

प्रथम ढाल	१३
दूसरी ,,	१५

तीसरी	,,	१४
चौथी	,,	१४
पञ्चम	,,	११
षष्ठम	,,	१८
सप्तम	,,	२४
अष्टम	,,	१६
नवम	,,	८
दशम	,,	११
ग्यारहवीं	,,	१५
बारहवीं	,,	३८
		२०७

इस प्रकार १२ ढालों मे २०७ पद्य है जो अलग-अलग भास रागों में निबद्ध हैं।

रांमसीतारास

ॐ नमः

प्रथमछ प्रणमीइ श्रीय जिन गणहर सारदा
सुंदरि नियगुरूए ।
तस पाय मनिधरी भणबु विविध,
परिसमय सिद्धांतवरी एक चित्त ।

त्रोटक—एक चित्त दृढ करी बदु, भवीयण आदि जिणवर वदूये ।
अजित संभव धर्मह, धामतणो जिन कदए ।
अभयनंदन सुमति पद्मप्रभ जिन सुपासु ए ।
चन्द्रप्रभह पुष्पयंतेह, सीतल श्री गुणवासुए ।१।
गुणहतणा स्वामिश्रेयास जिणवर ।
वासुपूज्य भवहर विमलनाथ ।
अनत धरमनाथ शांति कुंथ अरनाथ ।
मल्लिनाथ जिन मुनिसोव्रत नाथ ।

त्रो०—मुनिहिसोव्रत स्वामि वारि आठमु
हलि उपनु तस तणुय बधव हरि ।
हरषसुं सूरज वसि नीपनु ।
साकेता नयरीय राय दशरथ ।
अपराजिना तस भामिनी ।
लक्ष्मीय मादृस रूप निरुपम ।
चन्द्रवदना कामिनी ।।२।।
चन्द्रवदनी मती सुमित्राए ।
सुभमति श्रीजी राणी केगामती सुप्रजा चुथी ।
च्यारि राणी राया घरे करि ।
राजइणी परे दशरथ पुण्यकरि जयवताए ।।त्रो०।।
जयवत जय जुगिसार सुंदर रामचन्द्र वखाणीइ ।

लक्ष्मीधर वर भरत सत्रुघन चारि पुत्र घर आणीइ ।
कुलकमल दिनकर सकल शास्त्र सुज्ञानवंत महामती ।
देव धरमह गुरु परीक्षण रामचन्द्रह अतिमती ।।३।।
क्षतिपती मथुरांहां नयर नरेसर जनक भूवर वर राज करीए,
तम तणी पटराणी सतीय सिरोमणी,
विदेहा सुंदरी एह गुण धरिए ।
त्रोटक—गुणह तणी जे खाणि वाणी सारद सामिण जाणीइ ।
तेह कूखिधहि सुंदरि यानकीय वखाणीइ ।
कलाज्ञान विज्ञान मपन रूप यूवन अवतरिये ।
जनक तणी पुत्री सीता महादेवो धरमभार तिणी धरये ।।४।।
वरयो धरम आर जनक नरेसर देषीय रूप मनि चमकीउ ए ।।
हक्कारिया परधान राया दीउ बहुमान सयल मली तिहा विचारीउए ।

सीता स्वयंवर

त्रोटक—विचारीउ तिहा सयल भूपति सीता सुयंवर माडीइ ।
अवर राजा दुष्ट दुर्जन तेह तणा मन खाडीइ
नयर बाहिर वन निरोपम मेडा मडप घलावीया ।
ककोतरी चिहु दिश मोकली राय तन सयल भूप बोलावीआ ।।५।।
आवीया सवेमली वशु मुध महाबली ।
धगधरा मडलीक भावीयाए ।
मलीयाए च्यारि वंस छत्रीस ए ।
कुलईश तिहा रामनरेश र आवीयाए ।।त्रोट०।।
आवीया चिहुदिश चपटचुरी कनक केरी तिहां घडी ।
रयण माणिक उर मोतीहल हीरा हीर करण घणी जडी ।
झगमगति दह दिशि मुद्द सरासन अवरी उपरि रुपीया ।
बारहणीयर लघु तेजह तिहा दीणो अनुपे लोपीया ।।६।।
लोपीया शशिकर कर्कावर्त्त प्रहिकर,
सागरावर्त्त वर धनुयनाम ।
सयल शृंगार करी यानकी सुंदरी,
अवनि उपनि परिसुणह नाम ।।

सीता का सौन्दर्य

ते सुणह आज मंदिर काम रूपधाम रसालली।
चंद्रवदना मृगहनयना सघनघन तन पातली।
ते हाव भाव विलास विच मलय लावण्य वापिका।
गौर वर्ण सुवर्ण छाया सुगंध परिमल कूपिका ।।७।।
कूपिका सुघतली सहीयर ए साथि घणी,
वरमाला लेई पाणी आवीयाए।
वेदीय उपरि चढावीय,
इणीपरि यानकी सुंदरि आवीयाए ।।त्रो०।।
आवीया जन मन सयल सुंदर देखि राय चमकीया।
रंभराणी किं तिलोत्तम अंब पदमनि समकीया।
एह पंच सर वर समरभेदीय अनग रंग बहु उपना।
चित्त चपल चलंति चलव सकल मनोभाव नीपना ।।८।।

स्वयंवर का वर्णन

नीपना जय जय पच शबद
घन कलिरव करि जन मन उलास।
बोलए बिरद घना अनेक रायां तणो।
प्रताप सोहामणा गुण निवास ।।त्रो०।।
गुणनिवास सहास बोलवि, सयल भूपति जोवए।
अहकार धरी करी एक उठये धनुष कहि जाई सोवए।
एक राय उपाव चीतवि धनुष साहामु जोवए।
सबल बल अभिमान सुंदर सकल अहंकार खोवए ।।६।।
धोवए पुरुषारथ तब राजा दशरथ।
सबहुं परिसमरथ इम भणिए।
उठउ तम्हे राम देवसुरकरि तह्म सेव,
धनुष चढावू हेव आपणुं ए ।।त्रो०।।

राम द्वारा धनुष चढ़ाना

धनुष्या पिता तणी वाणी सुणिए स्वामि आणंदीया ।
सिहु सिंघ सिंहासण मेल्हीय सकल सुर नर वंदीया ।
वंदीया इन्द्र ते कनक धारे रत्नवरिषा करि घणी ।
जय जयारव साधु कलि रव ऊच्छ्या तव तिहूयण धणी ॥१०॥
त्रिहु बंद तणु राम लागो पिता तणे पाय ।
धनुष साहासु आय मतिवलूए ।
मलपतु पग मेल्हि वरणि टोडर बोलि ।
नही कोइ राम तोलि निरमलोए ॥त्रो०॥
निरमलह वेदीय उपरि चडि करि वाम हस्ति धनु लीउ ।
दक्षिण हस्ति गुणधरवि रामिवि आवर्त्त चडावीयो ।
टणकार नादि दह दिस्सि गगन मडल टलटल्या ।
पाताल शेषनि असुर सुर नर दैत्य दाणव खलबल्या ॥११॥
खलभल्या सायर अष्ट कुल गिरवर कंपीया भूधर तिहां घणाए ।
तडाय फूटां सही थरहरी एह मही जय सही तिहां कही
देवसणाए ॥त्रो०॥
देव अब्द सुणवि सुंदर सार शृंगार मीरावती ।
करहिं माला कुसम परिमल भ्रमर रण झणकारती ।
हंस गमणीय सुभस रमणीय सीता सिवर मालीए ।
जयो जयो श्रीराम देवह कंठि वरमाला घालीयि ॥१२॥
घालीइ वरमाला सोहए कमला ।
राम पासे निरमला सभी रहीए ।
सयल विद्याधर सुर नर नर वर ।
कुसुम आंजलि भरी तिहां रहीए ।
कुसमांजलि लवि भरवि,
राजा राम स्वाम अवसकिया ।

जनकभूपति विदेहा राणी साथि देव वर मन भावीया ।
रयण मणिमय जडित घन घन करीय चरीयल पारती ।
मौतिय थालि भरीवि सखू मनह रंगि वधावती ॥१३॥ (१)

भास मध्यात्व मोडनी

वधावए सविमली निरमली भाभिल भावए पावरे,
धन धन सीतल बहु वर धन धन रामनी मातरे ॥१॥
धन धन एह कुल निरमल सोहए सूरज वंस रे ।
पुरुषोत्तम एह उपनो नीपनो रघुराज हंस रे ॥२॥
सुधन धन राय दशरथ समरथ कौशल्या माए रे ।
रामदेव सेवा मुर करि समरता पातिक जाइ रे ॥३॥
तब जनक राउ हरषीउ नरखीउ वहूवर चंग रे ।
राजागण तव चरचीउ, रचीउए मंडप रंग रे ॥४॥

विवाह वर्णन

थाभ कनक केरी घडीयाए, जडीयाए रयणमिमा तीरे ।
वेल भरी परवाल डेषण, पण हीरलायोति रे ॥५॥
कुसम माला तिहां लह लहे महमहि परिमल वास रे ।
रिमझिम करि भमरला समरला गावए भास रे ॥६॥
तोरणि कोरणी अतिघणी, मोतीडे बन्दरवाल रे ।
मण्डप द्वार समारीया समीचिन नाटक साल रे ॥ ७ ॥
पट्ट कूल बहु आणीय जाणीय मण्डप छाउ रे ॥
राय कनक जनकह तिहा सीतल पिताय उमाह्य रे ॥८॥
थांभला परतिय निरमली सोहजली लह लहे धज रे ।
सोना कलश माणिक जडी सौभाघडी झबकए तेज रे ॥९॥
छत्रीस कुलीय अति भली च्यारि वंसते आव्या रे ।
इन्द फुणेंद सुचदह मानसि श्रीराम भाव्या रे ॥ १०॥
सयल शृङ्गार ते अङ्गहि रगहि रचीया श्रीराम रे ।

मन्बर किमर सुंबर गाबए ते गुण ग्राम रे ॥ ११ ॥
भयमल बेथल अतिबल, ऊपरि ढालि पम्लाडी रे ।
चिहुँ दिशाइ बज मेहुलीय हेलीय ओमबे नारी रे ॥१२॥
गज बर बर आरोहीया सोहीया जिम जयमाब रे ।
पञ्च शबद घन बाजए बाजए अम्बर साद रे ॥१३॥
शिरि गिरी छत्र सोहामणा भामणां बोलए चंग रे ।
चमर ढलि गंगा अबणीय जीवन जाणुए गंग रे ॥१४॥
धवलं देइ बर कामणी भामणी लुछणां कीजइ रे ।
राम नाम संभरंतहा जनमतणा फल लीजिए रे ॥१५॥ (२)

भास श्री हीं ॥

तीसरी ढाल

विवाह उत्सव

लीजइ फल बहुचंग । एक नाचि नव नवरंग ।
कनक धारा मेघ बरसि, देषीय दशरथ हरषि ।
एक आनन्द रस दाखि, बीजीय भावना भावि ॥१॥
छाणबर सहांमु ते चढए, बहु परिस लोका पठए ।
सुललित ते गुणग्राम इसर आलि श्रीराम ॥२॥
बाजां बहु परिवाजिनादि निसाण गाजि
ढोल तिवल भेरी भावा, ताल कंसाल सोहावा ॥३॥
त्रिम तिम बाजि मृदग, तिबलीय साद सुरग ।
इम बर तोरण आव्या, सजन मनि बहु भाव्या ॥३॥

तोरण एव विवाह मण्डप का वर्णन

विदेहा अक्षाणु लीधु, सासू बर पुखणु कीधु ।
बर चमरी माहि आव्या, सोहासणीयि बधाव्या ॥५॥
पण्डित बोलए मन्त्र, लगन तणा आव्या यन्त्र ।
सुभ बेला तिहां जोइ, बरति मगल सोइ ॥६॥
अब योग सघलंऊ भागु, सुलगनि हथोलु लागु ।
तब हुउ जय जयकार, परणांय जानकी नार ॥७॥

सजन दान मान दीधा, जनम तणां फल लीधा ।
आइ वाय होउ आणंद, वाध्यु धर्मनु कंद ॥८॥
इणि परि लक्षमण वीर, अतिबल साहस धीर ।
बीजु अनुप जे अंग, सागरावर्त्त उत्तंग ॥९॥
धनुष तीणि ते चडावी, अठार किन्या तिहां आवी ।
परणीउ लक्षमण चंग, होउ तिहां अभिनवु रंग ॥१०॥
जनक रायां तणो भाई, कनक राजा ते सरवाई ।
तेह तणो बेटी सुभग, परणीउ भरत उत्तंग ॥११॥
अनेक रायां तणी धीय, रूपतणा छइजे लीह ।
शत्रुघ्न कुंवर ते सार, ते परण्यु गुणधार ॥१२॥
च्यारि कुंवरि सोहाव्या, परणीय अजोध्या आव्या ।
दशरथ राय जयवन्त, भोगवि राज महुत ॥१३॥
धरम तणु ए विस्तार, पूजि जिणवर सार ।
पालिए विविध आचार, दान देई भवतार ॥१४॥ (३)

चोथी ढाल

भास वणजारानी—वणजारा रे सूरज वंशीय राय इणी ।
परिराज करि घणुं वणजारा रे ॥४०॥
दशरथ हुवो विराग राज लेवा मुनिवर तणु ।
मुनिवर तणु राज लेवा भावना भावि घणु ।
सुणवि सजन सयल परिवार अन्तःपुररेह घणु ।

राम का राजतिलक करने की घोषणा

हक्कारीया सवि भूप मन्त्री राज देवा कारणि ।
राम नाम कुमार तेडउ राजा दशरथ इम भणि ॥
आण्या कलस भरि नीर सिंहासन तिहां थापउ ।
केगामती तब आणि राज तणो लोभ व्यापीउ ।

केगामती द्वारा विचार

व्यापीउ मनि मान अतिघणु सजन आगिलि ।
किम कहुं कंम पापि सुक तणाए पराभव हुं किम सहु ।
कोसल्या नंदन अगम जीवन राम राजा थावसे ।

बुझ तणु पुत्र हुवि भरत मुर भर, देहतणों मान लोपसे॥२॥वण०॥
लोपसि सुभतणी मारिए तु जीवीनि किसु करू ।
हुवि जाउं कंत पासि पति साथि संयम धरू ॥
संयम लीति तप कीति पुत्र मोह न छूटए ।
काम क्रोधह मान माया सहित करम न मूटए ।
आठ आमला बीस मूल गुण चलण पालण दोहिलु ।
एह देगंबर तणों मारग तप नहीं ए सोहिलु ।।३।।विण०॥
दोहलु अति घोर कंत मनावा आइस्यूं ।
नही मानिजु नाह तु भरतह राज मांगिसु ।
राज पालु दु.ख टालु सुख भोगवु अतिघणा ।
सवी समरथ सयल भूपति सेवक होसि पुत्र तणां ।
राम मंत्री सेहूत लक्ष्मण चमर ढाल सत्रुघन ।
इणी पिरि पुत्र पवित्र अह्मतणो राज भोगवसिए सु मन।४॥व०।।
मनह तणि रे विचार केगामता ऊठी मनि रली ।
राजसभाह मझारि ततक्षण आवी निरमली ।

केगामती का राज्य सभा में आकर अपनी बात कहना

निरमलीय कर कमल जोडवि कांत ने पाये लागये ।
हुलहुलिय नयणा जीवन छंडि आपणु वर मागये ।
रविवंश कमल विकासह जीयर सुणु स्वामी वीनतडी ।
वैरागि गतु मुगति मातु अह्मे किहि तणी बापडी ।।५।।णव०॥
बापडी नारि विचारि कत विहूणी किसु करि ।
शिशियर विण जिम राति तिम प्रभु विण जीव किम धरिवि
किम जीव धरीइ राजकरीइं कत विहूणी कामिनी ।
वेलडी तरवरह पाखि भान, पाखि कमलणी ।
वातड विवेक विहूणी सील विहूणी भामिनी ।
आचार पाखि कीरति स्वामी तिम कंत विहूणी कामिनी ।।६।।व०।
कंत विहूणी नारि चारित्र पाखि मुनिवरो ।

दया करहुवि नाथ संयम भावना परिहरु ।।
नवि तप लीजि राज कीजि सौख्य भोगवु अतिघणां ।
च्यारि राणी च्यार पुत्रह सयल बहूयर तेह तणां ।
सुकमाल कोमल अङ्करगिहि सयन आसन पालीउ ।
पंच इन्द्रीय विषय सयल ते अष्ट भोग मन लालीउ ।।७।।वरण०।।
लालीइ मन अति थोर तपलिषि किमवि सुहुइ ।।
दीक्षा दुरधर जाणि षडग धार ते इम गोउ ।।
खडग धारा उपरि चालि मज्जन भरी छिउ वरीऊ ।
जल वस्त्रह माँहि पयसी कवण नीसरि षइ हरी ।
मयमत्त मय गलकानि साहु किम मलपतु आवए ।
दयदीप्यमान कि अग्नि ज्वाला साइ देवा को भावए ।।८।।वरण०।।
भावीइ मिण मिदान कवण चावि लोहमि चणा ।।
मेर करागलि तोलि तिम चारित्रह भार घणा ।
चारित्र भारते भावि दोहिलु पंच महाव्रत पालता ।
ठामि पाणी भात परिघरि दोहिलु मोह टालता ।
वीर विहूण अग स्वामी दशमशक भू वि घणा ।
भूमिसयन बावीस परीसह कष्ट सहिसु किम तणा ।।९।।वण०।।

दशरथ का उत्तर

कष्ट साध्यइ तप जाणि सुग नारि ।
तपह बिना मुगति हि नही ।।
हवि तप तपसु जप जपसु कर्म्म षपिसु अति घणा ।।
ससार सागर जन्म मरणह दुःख टालिसु जग तणा ।।
चपल घन योवन्न जाणीय सकल कुटम्ब ते कारिमु ।।
जिनवाणीय जाणीय सयल सम्पत्ति छाडीय
तप अह्मे धारिसु ।।१०।।व०।।
नारि केगामती जाणि कत वयण सुणवि करी ।
रुदन करिए अपार मनमाहि कपट माया धरी ।
कपट माया वयण बोलि स्वामी सयम लेईयो ।
अह्म तणो सवरि प्रसने होया तेहवर अह्म देययो ।

केगामती द्वारा दो वचनों की मांग

सांभलीय दशरथ भणि कामिणी वर मांगु तुझ्ह आपणो ।
संयम विना मनह वांछित जे मागु ते देउं घणो ।।११।।व०।।
घणुय न मांगु देव भरत नरेसर आपयो ।।
दिउ मुझ पुत्रनि राज तो स्वामी संयम लीयो ।।
संयम लेवा राय दशरथ नारि बोलविति घरि ।
जो भरत कारणि राज देवा राजा तव आरंभ करि ।
तेडावीया श्रीराम लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न आवीया ।
पिता तणे पगि वेगि लागीय दशरथ पुत्र मन भावीया ।।१२।।व०।
पिताय भणि सुणु राम अनुक्रमि राजए तह्मतणु ।।
तपलेवा हुवि जाउ ऋण उतारू अह्म तणु ।।
वाचा रख पिता तणु पुत्र उतारि इम जाणीइ ।
केगामती का पुत्र भरतह राजदेवा जाणीइ ।
रामस्वामी मुगति गामी पिता भाव ते जाणीउ ।
भरत कुमरह बांहि साही रामि राजसभा माहि आणीउ ।।१३।व०।
राजपालु तह्मे सार बाप तणो ऋण टालीइ ।।
अह्मे य जाउ वन वास बाप तणो बोल पालीइ ।
पालीइ परमाण वाचा भरत राजा थपीउ ।
केगामती को लोक माहि सयल अपजस व्यापीउ ।
राम पिता पगि वेग लागी धनुष बाण ते करि लीउ ।
बंधव लक्ष्मण सहित स्वामी सीता साथि वनवास गउ ।।१४ (४)

पांचवीं ढाल

भास नरेसूवानी

राम के वियोग मे विलाप

रामस्वामी वनवास गया रे नरे सूवालो करिए ।
विलाप जननीस रोवि अति घणुं ए ।।
उदय आव्युं मुझ पाप दशरथ राजा वीनवि ए ।।
अनुक्रम लोप्युमि सार सूरज वंसनु राजीउ ए ।।
राम गयो वनवास कर्मना अक्षर किम टलिए ।।

कोस म दीजि कास मूरछा आवी धरणीपडयुए ।। न. ।।
तव हूवो हाहाकार शीतल उपचारइ करीए ।। न, ।।
चेत वाल्यु तत सार तव दशरथ राइ बोलीउ ए ।। न. ।।
संयम लेवा काजि गुरइ स्वामी तव वीनव्याए ।। न. ।।
ते थाप्यु मुनिराज संयम पालि निरमलोए ।। न. ।।
तप जप ध्यान करेइ मोह मछर सव चूरीयाए ।। न. ।।
महीयल सुजस लेइ राम उपदेशि राज करिए ।। न. ।।
भरत सत्रुघन मानि छत्र सिंहासन पट हस्तीए ।। न. ।।
ते नवि भोगवि जाणि रामनाम तणी रूयडीए ।। न. ।।
वरति आण अपार कोशल देशनु राजीउए ।। न. ।।
पालि अनुक्रम सार जिहां राम तिहां अजोध्याए ।। न. ।।
सोहला रायनि रानि पुण्यबल जीवकारणिए ।। न. ।।
पगि पगि नवह निधान राम स्वामी लीला करिए ।। न. ।
ऊलघि वनह अपार हास विनोद कतूहलिए ।। न. ।।

वनवास

वन क्रीडा करि सार सकल भूषण करी मंडियाए ।। न. ।।
नर भय सिंह समान मेवपाट देश योईउए ।।न. ।।
चीत्तुडगढ ते जाणि ।। ११ ।। ५ ।।

षष्टम ढाल

भास सही की—चीतुडगढ जोई केरी पछि आव्या देशा पुरी ।
वर्जकरण राजा महलावीउए । सहीए ।। १ ।।
नालछि पाटणि आवीया, कल्याणमाला मनि भाविया ।
वालक्षेण राजा तिहा थापीउ रे । सहीए ।। २ ।।
वीझाचल परवत कही, लक्ष भील जीता सही ।
अरुणग्रामि आव्या ते निरमलाए । सहीए ।। ३ ।।
कवि तव दीठा अति घणां, कपि लह आह्य तेह तणां ।
नागकुमार देव ते आवीयोए । सहीए ।। ४ ।।
वज्र घाइ बहिरु कीधु, नाम भरी नाम दीधु ।

रामपुरी वसावी जस लीधुए । सहीए ।। ५ ।।
च्यार महीना राम राखीया, भगति घुण तिहि वाधीया ।
तिहां थका स्वामी ते वली चालीयाए । सहीए ।। ६ ।।
वनमाला लक्षमण वरी, पछि आव्या क्षेमापुरी ।
पंचसांग तिहा लखमण साहीए ।सहीए ।। ७ ।।
क्षेमश्री वरी निरमली, लक्षमणां कुंवरि मनि रली ।
तेह तिहां मूकी निवली चालिमाए । सहीए ।। ८ ।।
वंशथल नयर वली, आवी परवत तेह तली ।
परवत मस्तकि मुनिवर कमकाए । सहीए ।। ९ ।।

कुलभूषण देशभूषण मुनियो के उपसर्ग दूर करना

कुलभूषण देशभूषण, तप जप ध्यान विचक्षण ।
चारित्र पात्र ते चितामणीए । सहीए ।। १० ।।
तेह तणां उपसर्ग टालीया, ध्यान फले कर्म्म बालीया ।
केवलज्ञान स्वामी ते पामीयाए । सहीए ।। ११ ।।
सुर नर सवे तिहां आवीया, राम लक्षमण मनि भाविया ।
धन धन पुरषोत्तम तह्मे अवतरयाए । सहीए ।। १२ ।।
तिहां रहीया महीना च्यारि, सहस्रराय भगति करि ।
पछइए दंडकवन माहि पैठाए । सहीए ।। १३ ।।
करणरवा आवी नदी, भोजन तणी सामधि कीधी ।

चारण ऋद्धिधारी मुनियों को आहार देना

चारण मुनिवर दान दीधुए । सहीए ।। १४ ।।
पंचाचर्य तिहां पामी, हरष वदन श्री रामस्वामी ।
जटा पंखी आवी तिहां मल्युए । सहीए ।। १५ ।।
तिहां थकी आधी कही, करणरवा नदी सही ।
तब राम स्वामी ते तिहां गया ए । सहीए ।। १६ ।।
तिहां परवत एक निरमलो, गुफा सहीत ते सुह जलो ।
तिहां च्यारे जणे स्थिति कीधीए । सहीए ।। १७ ।।

चुमासुं तिहा लीधु, परम ध्यान निरमल कीधुं ।
दीपोछव तिहा वली नीपनुए । सहीए ।। १८ ।। ६ ।।

सप्तम ढाल
मास तीन चुवीसीनीं

राम राया रंग भरि भणि वीर, लक्षमण बाधव साहस धीर ।
सुणउ वचन मुझ सार ।। १ ।।
गहू वन माहि रह्या सुजाण,
इहां नहीं भरतहनी आण जाणी करु विचार ।। २ ।।
नगर एक इहां नीपजावु भूमि,
सकुन निमत्त पारषी तुम्हें कीजि काज अमूल ।। ३ ।।
नगर एक इहा नीपजावु,
ऊबऊ लक्षमण वार मलावु लुभावो मनि रंग ।। ४ ।।
पछि आणोवा तु जाए, कौसल्या सुमित्रा माए ।
राज सूरजबंसि कीजिए ।। ५ ।।
रामवयण सुण्या तव सार, लक्षमण उठ्यु तिहा सुविचार ।
धनुष बाण करि लीधु ।। ६ ।।
भूमि जोवा लक्षमण चग, हेठउ उतरउ मनि रग ।
नरमयं जैसु सिघ ।। ७ ।।
एकलमल हीडइ वनमाहि, निरमल जल सूरी भु इ चाहि ।
वाहि परिमल पूर ।। ८ ।।
परिमल लागु लक्षमण चालि, मयमत्त मयगलनी परिमालि ।
बोलि अलि कुल बंग ।। ९ ।।
आगलि जातां तेज प्रकास्यो, बार दिनकर जिम सकास ।
भासि सूरज हास ।। १० ।।
झगमग तेज दह दिशिदीपि, सूरजहास षड्ग भरि जीपि ।
छीपि अमृत धार ।। ११ ।।
एक छेह लागु गयणगणि, मुष्टि आवी प्रबस्तलि रगणि ।
लक्षमण चाल्यु हाथ ।। १२ ।।
लक्षमण देष षडग करि साह्यु, हरष बदन हुओ ऊरमाह्यो ।

बाह्यो वंसह जाल ।। १३ ।।
वंश जाल छेदतां तूटउ, शबूक तणो आयु ते खूटउ ।
रुठउ जमराज काजि ।। १४ ।।

दंडक वन में शंबूक का वध

सिर तूटी धरणी तव पडीउ, लक्षमण भणिए पातिग चडीउ ।
चडीउए अपराध ।। १५ ।।
षडग लेई रामनि दीधु, आपि नमस्कार तिणि कीधु ।
लीधु प्राश्चित चंग ।। १६ ।।
खरदूषण नी नारि विशाल, चन्द्रनखा आवी गुणमाल ।
करवा पुत्र संभाल ।। १७ ।।
पुत्र पड्यु दीठउ तीणे आप, चंद्रनखा अति करि विलाप ।
पोति आव्यू पाप ।। १८ ।।
लक्षमण मागि मागि जोवती, तीणी गुफांइ आवीय तुरंती ।
उभी रही रोवती ।। १९ ।।
राम लक्षमणनि सीता देखी, इन्द्राणी मन मोहि पेषी ।
कोप चडी ते बाल ।। २० ।।

चन्द्रनखा का खरदूषण के पास जाना

पुत्र मारियो इणि इम जाणी, चाली पाताल लंका भणी ।
बिठी तेह विमान ।। २१ ।।
खरदूषण आगिल कही बात, पुत्र तणु हूवो ते घात ।
दुःख पामीह नाथ ।। २२ ।।
चोदस सहस्र विद्याधर साथे, मयमत्त सुभट उठया एक हाथे ।
चाल्या जिहां छि राम ।। २३ ।।
राम भणि लक्षमण देव उठउ, विद्याधर नियमते रुठउ ।
छूटो लक्षमण वीर ।। २४ ।।
धनुष बाण लीधो साहस, करि सोहि ते सूरय हाथि ।
साहांमु चाल्यु वीर ।। २५ ।।

रौद्र रूक्ष हुउ सविकार, एकलडो लक्ष्मण कुमारे ।
कलहू न लागि पार ।। २६ ।।
तेणि अवसरि ते चंद्रनखा, ततक्षण आईय पुहुतीय लंका ।
शंका रहित ते नारि ।। २७ ।।
रावण बंधवनि तीणी कहीयो, महीयल रूप मर्यादा रहीउ ।
सहीए लक्ष्मी होइ ।। २८ ।।

रावण द्वारा सीता हरण

रावण मनि उपन्नु नेह, नयणडे देखु नारिज तेह ।
जेहनु रूप विशाल ।। २९ ।।
एकलडो तस लागो ध्यान, पुष्पोत्तर रचीयोय विमान ।
सा नगई रूप दीठि ।। ३० ।।
राम छतां किम हरूं ए रामा, ततक्षण विद्या समरी सामा ।
वामा भेद जणाव्यो ।। ३१ ।।
माया रूपि लक्ष्मण कीयो, सिंघनाद तीणी तब दीयो ।
लीयो धनुष ते बाण ।। ३२ ।।
रामि शीतल गुफाइं मूकी, रक्षण मूक्यो जटायु पक्षी ।
सुखी चाल्यो वीर ।। ३३ ।।
रावण गुफा माहि ते पिठो, सीतल हरी विमानज बिठो ।
दीठो ते जटा पक्षी ।। ३४ ।।

अष्टम ढाल

भास श्री ह्री आवकाचारनी

रावण सीता रण ते कीउ, लीयो संग्राम विहंगमि रे ।
कपि मारीय मुगट तिणि, पाड्यो ताड्यो स्रवणें
संगमि रे ।। चडावो०।।
संग्रामि ताड्यो धरणि पाड्यो करां करां करि घणी ।
संतीय सीता मनिहिं चिंता उपनी पक्षी तणी ।

सीता का विलाप

विलाप करंती दुख धरती राम नाम उच्चारए ।

थामि लक्षमण वीर विचक्षण एहू संकट टाल ए ।।१।।
टालु रे संकट मुझ तणा हो देवर सहोदर भाव विद्याधर रे ।
सानधि सयल सुरासुर कीयो लीयो यस सीयल तणो रे ।।च०।।
सीयल सपन देवर सत्रुघन भरत नर वर थावउ ।
तात जनक कनक काका वेगि विहिला पावयो ।
राम राम राम नाम क्षणि क्षणि वलीनि वाचा मूकए ।
बेहू कुल कमल उद्योत किरिणी सतीय सत्त न चूकए ।।२।।
सतीय सीता गयणागणि रावण लालचि करय अपारन रे ।
पचबाण वणु जीवन भेद्यु वेध्यु तह्न रूपि सारन रे ।।च०।।
सार सुदरि सुणवि वाणीय प्रान सुखी तिहा हुई ।
सुण रे दुष्ट कुनष्ट स्वानर तेह नारि लक्षण जुई ।
हु सतीय बहुमति मत कतह राम मुझ तणो आतमा ।
अन्य नर जे सयल तिहूयण मुझनि ते बंधव समा ।।३।।
बधव समा मुझ सुरपति इद्रह धरणेन्द्र रवि शशिकर रे ।
सती सु आलिम करे स हो मूरषा पुरधाम मेह्लै
कुसुम सर रे ।।च०।।
कुशम सर सु भाव परिहरि सील सबल सती तणो ।
जु ध्रव लोटि बज्र फूटि चूरण हुइ गगनिनि घणो ।
सौधर्म्म स्वर्ग जो ठाम छांडि मेर मदिर चाल ए ।
इम जाणी विवेक आणी एहू वयण इम बोलए ।।४।।
बोल्या बोल जु केवलि चूकि मूकि जल जलधेस्वरे ।
अष्ट कुल गिरि पायाल जोपिसि तुहि नवि सीयल
हु परिहरु रे ।।च०।।
परिहरीय सील जे नरह नारि ससार माहि घणु भम्या ।
परनारि लपट दुष्ट कुष्ट ते सातमि नरगि रम्या ।
जिह्वा छेदन भेदन तलीय तापन सूलारोपण अति घना ।
तेत्रीस सागर आयु पामी दुःख भोगवि तिहा तणा ।।५।।
सतीय सीता तणी वाणी सांभली रावण राणु होउ दुःखी रे ।

चिंतातुर थो लंका पैठो प्रमीदावन माहि मूकी रे ।।
मूकीय प्रमदा वनह मभ्मि यानकी दृढ़ चित करी ।

शोक वाटिका वर्णन

असोक तरवर तलि निरमल सती बिठी मासरण पूगी ।
शृ गार परिहरि थडिहि मन धरि नीम लीयो माहार नो ।
राम स्वामी सुद्धि पामु तब करू हु पारणो ।। ६ ।।
पारणो तब जब प्रभु सुधि पामु नामु सीसकत पाय रे ।
एवडउ निरधारिउ यानकी सेबकी हुई राक्षसी खगीरे ।। च० ।।
षरहदूषरण वीर लक्षमरण भणि विचक्षण राम स्वामी भावीया ।
यानकी वनमाहि एकली मूकी काइ तह्मे आवीया ।। ७ ।।
माव्या एकली मेह्ली यानकी कूड कीधु खगि घणु रे ।

राम की व्यथा

हवि वहत बलो राम जगनाथ साथम मेह्ल सीता तणु रे ।।च०।।
सीर्ताह तसु वारिण साभली राम चाल्यु रग भरी ।
आवीय गुफा माझि स्वामी नवि दीठी ते सु दरी ।
सती सीता साद करता कीघा कर्म ते सहए ।
नर वरह डु गर परति श्रीराम सीता सुधि ज पूछए ।।८।।
पूछए सुदि श्रीराम नरेश्वर सरोवर कांठि ऊभु रही रे ।
कहु न चकोर तह्मे चक्रवाकी दीषी सीतल मुभ्म सही रे ।।च०।।
सहीय सीता हरण हवो कवरण पापी लेइ गयो ।
कि व्याघ्र आवी भक्षरण कीधु तेह तणो कविरण हीयो ।
सार्दू ल सकल कि सिंघ स्वापद सती सीता मुखि पडी ।
वनह मज्भमि काइ मेह्ली कवरण पुहुती यम घडी ।।६।।
जम रूठो तीणि अवसरि जाण्यो षरदूषण षग हण्यो रे ।
लक्षमण वीरि सिर तस छेदी भेदीय रिपुदल जाण्यु रे ।।च०।।
जारणीय रिपु दल उपरि कु वर विराधित ते भावीयो ।
विरीय मारीय वहंत लक्षमण राम कन्हि ते आवीयो ।

रामस्वामी सुमति गामी गलि लागी रोयए ।
बेहू बधव वनह मझमि सीता काजि जोवए ।।१०।।
जोतां चिहु दिसि रामलक्ष्मी वरनवि पामि कीही भागु रे ।
तिणि अवसरि वैरी जीपीनि विराधित आवी पगे लागु रे ।।च०।।
भणि विराधित बात बांकी एक काज तो सारीये ।
रावण तणो जमाइ तम्हे ता वर दूषण वग मारियो ।
हवि इमि कीजि ठाम लीजि भेद कुहु हु तीह्ल सही ।
पैयाल लका नही संका सीता सुधि कसू तिहा रही ।।११।।
तिहा रहीनि रामकी जसे सकल काम विमान विसु स्वामी
अह्ल तणे रे ।
विराधित कुमरनी वाणी सांभली राम भणि धन जीवी
तह्ल तणी रे ।।च०।।
धन विराधित दोहिली वेलां परोपकार चडावीया ।
इम कहीय विमान चडीया पाताल लका आवीया ।

सुग्रीव से भेंट

साहस्समल्ल साहस गति खग सुग्रीव कपि मारीयो ।
सुग्रीव तारा सेस भरिनि कपि काज ते सारीयो ।।१२।।
सारीय काज सुग्रीव इम जाणी विमान विसी सीता सुधि गउ रे ।
गयण.गणि थकु दीठु रतन जटी तब आनंद मनमाहि
भयो रे ।।च०।।
भयो आनद आवीय सुग्रीव रतन जटी नि प्राण ए ।
कहु न भ्राता राम काता मुद्रिजु तु जाणए ।
रतन जटी तब भणे सुग्रीव बात सुणु न अह्ल तणी ।
जे जानकी जनक तनया रावण लई मुयो लका धणी ।।१३।।
धणी त्रिभुवन तणु राम भेटावु आवु तह्ले अह्ल साथि
सहोदर रे ।
सयल कथावर्त्तिय सीता तणी राम स्वामी आगिल कहु रे ।।च०।।
कहीय सुग्रीव रतन जटीनि राम कन्हि ते आणीयो ।

सीताय हरण वृतीत सघला राम लक्ष्मणि ते जाणीयो ।
राम पूछि कहु न सुग्रीव लका कवण दिशांइ वसि ।
सुग्रीव तणो मत्र वाणी राम तणी सुण बिहसि ।।१४।।
हसिय रणत्री इम भणि रामचन्द्रह इन्द्र जे दसानउ रे ।
रावण नामि विख्यात विद्याधर अरि परि तपि जिम
भानु रे ।।च०।।
भानुतणो संकास वास विख्यात लंका जाणीइ ।

रावण की शक्ति का वर्णन

राक्षस वस वितस रावण हवि तेह तणो भय आणीइ ।
जिणि इद्र चदनि भानु राजा ग्रह बदी ते राषीया ।
असुर खग नर दैत्य दाणव तेहां अभिमान लांषीया ।।१५।।
लांषीया अहकार सोल सहस राया मुगटबधउ लग करीग ।
नवकोटी बाजीनि मयमत्त मध गल बेतालीस लक्ष तनु
घरिए ।।च०।।
घिरि बितालीस लक्ष रथ वर बियालीस कोटीय पायक ।
सोल सहस जे देश भोगवि तिहु षडनु नायक ।
सुणु न राम अति बीर लक्षमण दोहिलु रावण अति बलो ।
हवि सीतल तणी तह्म आस मूको अजोध्या भणी
पाछा वलो ।।१६।।

नवम ढाल
भास साहेलडानी

मत्रीय वाणि सुणवि चार बोल्यु कवण रावण तणु नाम ।
सयल निशाचर खचर अमर नर लकां सहीत फेडु ठाम ।
साहेलडी राम तणो परसाद लक्षमण धीर गभीर वीर सिरोमणि
भणि अरि जुतारिसु नाद ।
साहेलडी रामतणो परसाद ।।चढावो।।
परसाद साधु सुग्रीव बोलि बाप बलीउ वीर तु ।
एह रामनामि एक लुपुण रावणनिहु जीपि सु ।

सुग्रीव तणी चौद अखोहणी कटक बहु परि मेलए ।
कपि वंश मंडण अरय खडण आवि नल नील वीर ए ।।१।।
नलनील गवय गवखराइ आवि सुग्रीव लेख पठावि ।
चतुरंग दल बल सबल विमान चढी हनमंत वीर तब आवि,
साहेलडीपवन राजा तणो पुत्र अजना उपरि सुहो
रयण मणि रावण पाइ अदभुत साहेलडी । पवन राजा
तणो० ।।चढावो।।

पवन पूत विख्यात ख्यात तलि परोपकार चतुर नर ।
राम नाम दुलभ पामीय पगि लागि जोडीय कर ।
तव राम स्वामी मुगति गामी जाणी आलिंगन दीउ ।
पछि लक्षमण वीर विचक्षण हणमतही पासु लीउ ।।२।।

हनुमान का लंका जाना

लीधो बीडो तिणि रामचन्द्र तणु गुण लीधी राम मुदी ।
लका जाइ ने शाल गढ मोडीय आणी यानकी सुद्धि ।।सा०।।
रामचन्द्र दीउ मान धन धन जनम धन तह्न पिता ।
धनि जननी कुलि भानु साहेलडी रामचन्द्र दीउ मान ।।च०।।
मान दीउ जन्म लीउ कपि वश मड मान्रिया ।
रामस्वामी तणे पासे अनेक राय ते आविया ।
सैन सख्या सुभट लेषा सहस्त्र बि अक्षोहणी ।

राम रावण युद्ध

विमान चढी श्री राम लक्ष्मण आव्या तव लंका तणी ।।३।।
आवीय हय गय रथ रे विविध परि विमान तणु नही पार ।
बीस जोयण तणि फेरि कटक बैठु श्रीराम देवनु सार ।।सा०।।
वाजि भेर नीसाण ढोलति बल घन साद सोहावा ।
कपिवंस राय सुजाण साहेलडी वाजि भेर नीसाण ।।च०।।
भेरीय नाद नीसाण संभलि लंक लोक ते षलभल्या ।
रत्नश्रवानि केकसीतणा चेता कलकल्या ।

अठार सहस्त्र भक्ति राणी मंदोदरी इम बोलए।
सुणि न कत विख्यात भुवि बल अवर नही तुझ तोलए ।।८।।
अवर नही तह्म सम अडि रावण न्यायवंत सबि सविचार।
सतीय सीता तणु हरणति कीधु लीधु अपजस भार ।।सा०।।
आज सपनमि दीठो रामि रावण जम घरि आव्यु।
विभीषण लंका राज थात्यु साहेलडी आज सपनमि दीठो ।।च०।।
दीठो अभिनवु सपन स्वामी कृपा करु मुझ उपरि।
सती सिरोमणि जनक तनया मेह्लि राम अतेउरि।
परि रमणि रली रग ने नर राता ते विगूता बहू परे।
राक्षस वंसि विष वेलडी ए तु आपि आपि ए सुदरि ।।५।।
सुंदरी मदोदरी तणी सुणी वाणी रावण धरि अभिमान।
विभीषण भण भणि सुणु राय दशानन।
हवि य गई तुह्म सान साहेलडी काइ न जाणु तुम्हे आज।
नलनील जवूनाद हनमत सुग्रीव विमान बाधी सिंधु बाज
साहेलडी काइ न जाणु तुम्हे आज ।।च०।।
आज पाज उलघीया श्रीराम लक्ष्मण धावीया।
सकल दलबल चपल वानर सैन सहित ते आवीया।
हवि वेगविहलास विहि पहिला राम राणु मनावीइ।
सीता दीजि प्रीत कीजि एम रूड भावीइ ।।६।।
भावीइ इणी परि रूडा हो बाधव मनि म धरे अहिकार।
अमीय समाण विभीषण बोल बोल्या।
कोप्यु रावण गमार साहेलडी तव जाण्यु विपरीत।
घरि आवी विभीषणह विचार। हवि कीजि जीवहित ।।सा०।।
तब जाण्यु विपरीत ।।च०।।
विपरीत जाणीय हीइ आणीय त्रीस अक्षोहणी दल भावीयु
विमान चढी बहु कणय रयण सु विभीषण वीर ते आवीयो।
कर कमल योडवि मौलि मुगटह राम तणे पगि आपियु।
रामि विभीषण भगत जाणी पचमु बाधव थापियु ।।७।।
थापिउ विभीषण अचल लकापति सतीय सीता मनि भाव्यु ।

तब रावण बहुदलह करीनि लंका थकु रणभूमि प्राव्यु ।।सा०।।
अक्षोहणी सहस चीयार । वीर वीर सरे रण रग भणि ।
प्रासन कीजि पीयारी साहेलडी अक्षोहणी सहस चीयार ।।च०।।
च्यार महस्त्र अक्षोहणी दल मलीय बहु निसाचर ।
सहस्त्र दोइ अक्षोहणी श्रीराम कह्निछि वानर ।
सग्राम भेरी ते सब बहु परिनाद दह दिशि बाजए ।
नीसाण घण सु सद्द सभलि वीर बहु परि गाजए ।।८।।

दशम ढाल
भास राउरीक

युद्ध की भीषणता

गाजि वीर षडग करि साह्ला वाह्यां प्ररि सिर धार ।
दुधड धड धड ऊपरि लोटिय तन हुइ प्रसवार ।।साहेलडी।।
झूझे रघुवसी राम लक्षमण वीर महादल भाजि ।
राक्षसनि नही ठाम साहेलडी झूझे रघुवसी राम ।।१।।
सुग्रीव प्रगद नल नील राज । प्ररु रेवि राक्षित वीर ।
कु भकरण मेघ मय दैत्य इंद्रजित सग्रामि रण रगि वीर
साहेलडी० ।।२।।
रामनाम तणी पाषरि पहिरी हनमत वीर सरि चूवु ।
राक्षस रणि चरचा चरिनाचि जाण्यु यम ए रूठो ।।सा०।।३।।
विभीषण रावण समवडि लागा, भागा रथ रे विमान ।
सकति समरि करि रावण लीधी, लक्षमण धरि प्रभिमान
।।सा०।।४।।
लक्षमण रावण रावण सनमुख रही विभीषण घाल्यु वाशि ।
मूकि शकति रे रावण ता परी दशरथ नदन हसि ।।सा०।।५।।
लकेसर तव कोपि चडीउ सक्ति मेल्ही वीर पाडयु ।
हनमत वीर विशल्या प्राणी शक्ति मेद निणि काढयु ।।सा०।।६।।
तव रावण मनि विलषु होउ समरिउ चक्र विशाल ।
प्रारा सहस्त्र सु तेज पु ज करि प्राव्यु ते गुणमाल ।। सा० ।। ७ ।।
रावण भणि रे बाला लक्षमण काइ यमरू तह्मे प्राज ।
सीता राम रमणि मुझ प्रालु सुखिय प्ररु तह्मे राज
।। सा० ।। ८ ।।

लक्षमण भरिण तुझ मारीय रावण विभीषण लंका राज आपु
जनक तरणीए दुहिता सीता रामचन्द्रनि आपु ॥ सा० ॥ ६ ॥
तव कोपारुण हवो लंकेसर लक्षमण बोल न भाव्यु ।
फेरीय चक्र मेहल्यु तीणि अतिबल लक्षमण हाथि
ते आव्यू ॥ सा० ॥ १० ॥
रामतणे पग लागीय लक्षमण चक्र मूक्यु रे पचारि ।
भेदीय हृदय रावण तीरिण पाडयु राक्षसनि
आवी हारि ॥ सा० ॥ ११ ॥

ग्याहरवीं ढाल
भास भमारुलीनी

लंका विजय पर प्रसन्नता

हारघु राक्षस दह दिसातु भमारुलीनी ठाजिम मृग जारिण तु ।
रघुनंदन दलि जयह बोलु भमारुलीनी
बरतीय राम नीयारण तु ॥ १ ॥
लंका नगर सोहामणुं तु भमारुलीनी तलीयाए तोरण चंग तु ।
धवल मंगल गीत नाद करीतु भमारुलीनी पात्र नाचि
नवरंग तु ॥ २ ॥
घरि मंदिर महोछव हवोतु भमारुलीनी गूडीयम स्वर करेई तु ।
राम नाम राक्षस जपितु भमारुलीनी पिंडित करि तिहा
साति तु ॥ ३ ॥
ढोल तिबल भेरीय तरणा तु भमारुलीनी नाद हुइ घणा जारिण तु ।
रामदेव गय वर बैठा तु भमारुलीनी आगिल बाजि
नीसारण तु ॥ ४ ॥
शिरि वर छत्र सोहमणुं तु भमारुलीनी चमर ढली मझीर तु ।
याचक जन वाछित पूरि तु भमारुलीनी दानदेइ विभीषरण
वीर तु ॥ ५ ॥
देव सयल आनंदीया तु भमारुलीनी कनक धारा वरषति तु ।
प्रमदा वन भरणी चालीया तु भमारुलीनी यानक मनि
हीउ हरप तु ॥ ६ ॥

राम रमणिए रंग भरी तु भमा० साहारीय प्रावीय सार तु ।
राम सीता मेलावड़ु तु भमा० होउ तिहां
जय जय कार तु ॥ ७ ॥

मातु मयगल मलपंतु तु भमा० राम बइठु सीता साथि तु ।
लक्षमण विशला साथि तु भमा० बयठा ए
मलपति हाथि तु ॥ ८ ॥

वेहू बंधव प्रति रूवडा तु भमा० लंका कीयउ प्रवेस तु ।
नव बरसा तिहा रह्या तु भमा० राम लक्षमणह
नरेस तु ॥ ९ ॥

तिणि अवसरि नारद मुनि तु भमा० अजोध्यां थका
आव्या चग तु ॥
तह्य तणी माता दु:ख करि तु भमा० बार बरसह वियोग तु ॥
तह्य विण पामी दुःख खाणि तु ॥ १० ॥

नारद बयण सुणी करी तु भमा० राम मनि हवो आनद तु ।
माता मिलवा कारणि तु भमा० चाल्यु ए
दशरथ नद तु ॥ ११ ॥

नव कोडी तोरगमा तु भमा० पायदल कोडि पचास तु ।
रथ लक्ष बैयालीस तु भमा० गज तेतला
गुण रास तु ॥ १२ ॥

सोल सहस मुगट बध तु भमा० सेव करि राम पाय तु ।
लच्छ तणी सख्या नही तु भमा० विभीषण आगिल
जाइ तु ॥ १३ ॥

पनर दिन पच रत्न तु भमा० मेघ रूपे कीउ वर्षा तु ॥
अजोध्या नयर भलो तु भमा० आण्यो अमरावती
भाव तु ॥ १४ ॥

बारहवीं ढाल
मास एलादेवनी

राम लक्ष्मण का अयोध्या प्रवेश

अमरावती जिम जाणि तु, अजोध्या नयर कीउए ।

तोरण मुलह मडाए तु, ईणी परिजय लीउए ।
सहीय समाणीय चालि तु, मोतिय थालि भरीए ।। १ ।।
राम लक्षमणह बधावि तु, मन माहि भाव धरीए ।
वाजि दुदुभि नाद तु, साद सोहामणाए ।
मदन भेरीय भणकार तु, ढोल नीसाण घणाए ।। २ ।।
कुसम वरसिय अकास तु पंच शबद नावि ए ।
भलपल मयगल कुंभि तु, भरइं सुगध मद ए ।। ३ ।।
इणी परि आव्या श्रीराम तु, पुष्पक विमान विसी ए ।
सोहि इन्द्र जिम जाणि तु, सीता इन्द्राणी जिसी ए ।। ४ ।।
मव घणे थकी बाट जोइ तु, जननीय राम तणी ए ।
भरत सत्रुघन वीर तु, सेना मली अति घणी ए ।। ५ ।।
हय गय रथ सिणगार तु, पायक अति बली ए ।
बेहू बंधव सविचार तु, चाल्या निरमला ए ।। ६ ।।
महाजन सयल विचार तु, नाना विधि भेट लीधीए ।।
रयण मणि मोती आदि तु, आपणी आपणी रिधि ए ।। ७ ।।
इणी परिमल्यु बहुलोक तु, कलिरव करि घणु ए ।।
राम साहा माते जाइ तु, पार नही तेह तणु ए ।। ८ ।।
गगन मडल थका जोइ तु, राम स्वामी निरमला ए ।।
भरत सत्रुघन होइ तु, बधव सुह जला ए ।। ६ ।।
यानकी पूछि श्री राम तु, साह्य आवि माहाजन ए ।
देवर देषु स्वामि तु, भरत सत्रुघन ए ।। १० ।।
राम भणि सुणु नारि तु, पेलु भरत कही ए ।
गयवर उपरि बैठु तु, मुकुट भलकि सही ए ।। ११ ।।
हय वरि असवार वीर तु, पेलो देषु सत्रुघन ए ।
जानकी जोइ मनि रगीतु, देवर धनु धन ए ।। १२ ।।
समीप आव्या सवे जाणि तु, राम स्वामी निरमला ए ।
उतरचा विमान था सार तु, भूमि आव्या सुहजला ए ।। १३ ।।
राम लक्षमण दीठा सार तु, गरूड धजा लहलहिए ।
भरत सत्रुघन वीर तु, सजन सुं गहगहिए ।। १४ ।।

बाहुण छाड्या तब जाणि तु, भूमि चालि प्रति घणा ए ।
मुगट उतारीय बध तु, पबे लाग्या रामतणे ए ।। १५ ।।
राम लखमण एह वीर तु, भरत सत्रुघन ए ।
आलिंगन हवो सविचार तु, पछि भेटया महाजन ए ।। १६ ।।
ति हवो जय जयकार तु, मेघ कनके वूठा ए ।
आज सु धन दिन चग तु, राम देव प्रह्म तूठाए ।। १७ ।।
इणि परि बधव सुसार तु, अजोध्या प्रवेश कीउ ए ।
मायने पगि सिर नामि तु, रामदेव जस लीयो ए ।। १८ ।।
मलीया प्रति बहु रूप तु, विचारि मनि रली ए ।
अगद सुग्रीव हनमत तु, नल नील महाबली ए ।। १६ ।।
विभीषण भणि प्रति चग तु, भरति तप लीउ ए ।
राज रिद्ध सबे छाडि तु, मुगति हि मन कीउ ए ।। २० ।।

राम का राज्याभिषेक

राजपाट देउ सार तु, सयल धरा तणो ए ।
रामस्वामी नि काजि तु, महोछव करु घणो ए ।। २१ ।।
विभीषण तणी सुणी वाणि तु, भूप हरष धरी ए ।
कलस कनक तणां जाणि तु, तीरथ ने नीरे भरीए ।। २२ ।।
पच रतन तणो चुक तु, पूरीउ मनि रली ए ।
रयण मणिमय थापि तु, सिंघासण तिहां बली ए ।। २३ ।।
तिहा राम सीता विसाडि तु, जय जयकार करी ए ।
आणंदि पूरीया भूप तु, कलस त करि धरी ए ।। २४ ।।
धवल मंगल गीत नाच तु, बीइ कर तालीयां ए ।
महोछव सहित ते कु भ तु, राग शिर हाली ए ।। २५ ।।
सयल प्रथ्वी तणो स्वाम तु, रामचन्द्र निरमलो ए ।
युवराजह पद बैठु सार तु, लक्षमण प्रतिबलो ए ।। २६ ।।
लका नगर को स्वाम तु, विभीषण थापियो ए ।। २७ ।।
करण कुंडल हणमत तु, नल नील विषपुरी ए ।
सत्रुघन बधव ते सार तु, दक्षण मथुरा भणीए ।। २८ ।।
जे यथा योग्य होता भूप तु, ते तिहा थापीया ए ।
इणी परि करि राम राज तु, बहु जस व्यापीया ए ।। २६ ।।

अहु निशि करि दया धर्म तु, दान देय मनि रलीए ।
त्रिभुवन माहि जयकार तु, जस बोलि सहुजलीए ।। ३० ।।
सोल धनुष तस देह तु, ऊंचा रामदेव कही ए ।
सत्तर सहस्र वृष आयु तु, तेहु परमाण कही ए ।। ३१ ।।
एतला माहि सविचार तु, श्रीराम अति बली ए ।
च्यार पदारथ सार तु, साध्या निरमला ए ।। ३२ ।।

कवि प्रशस्ति

ए रामायण ग्रंथ तु, एहनु पार नही ए ।
हुं मानव मति हीण तु, सखेपि गीत कही ए ।। ३३ ।।
विद्वास जे नर होइ तु, विस्तार ते करि ए ।
ए रास भास सुणेवि तु, मुझ परि दया धरु ए ।। ३४ ।।
अक्षर मात्र हुं बि तु, पद छद गण चूक ए ।
सरसिति सामिण देवि तु, अपराध मुझ मूकु ए ।। ३५ ।।
श्री ब्रह्मचार जिणदास तु, परसाद तेहु तणो ए ।
मनवाछित फल होइ तु, बोलीइ किस्यु घणु ए ।। ३६ ।।
गुणकीरति कृत रास तु, विस्तारु मनि रली ए ।
बाई धनश्री ज्ञानदास तु, पुण्यमती निरमली ए ।। ३७ ।।
गावउ रली रंगि रास तु, पावउ तु, पावउ रिद्धि वृद्धि ए ।
मनवाछित फल होइ तु, सपजि नव निधि ए ।। ३८ ।।

इति श्री रामसीतारास समाप्त ।।

गटका—पृष्ठ सख्या ६५ से ६१

भट्टारक यशःकीर्ति

भट्टारक यशःकीर्ति नाम के कितने ही भट्टारक एवं विद्वान् हो गये हैं जिनका वर्णन विभिन्न ग्रन्थ प्रशस्तियों मे मिलता है।

इनमे से कुछ भट्टारकों का परिचय निम्न प्रकार है—

(१) प्रथम यश.कीर्ति काष्ठा संघ माथुर गच्छ के पुष्कर गण शाखा के भट्टारक थे जो अपने युग के श्रेष्ठतम साहित्यकार, कठिन तपस्वी, प्राचीन एवं जीर्ण शीर्ण ग्रंथों के उद्धारक एव कथा साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् थे। वे भट्टारक गुण-कीर्ति के शिष्य थे। अपभ्र श के महान् वेत्ता प रइधू जैसे उसके शिष्य थे। जिन्होंने उनकी विद्वत्ता, तपस्या, तेजस्विता एव अन्य गुणों का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। उनके अनुसार वे आगम ग्रन्थों के अर्थ के लिये सागर के समान, ऋषीश्वरों के गच्छ नायक, विजय की सीख देने वाले, सुन्दर, निर्भीक, ज्ञान मन्दिर एव क्षमागुण से सुशोभित थे।[1] महाकवि सिह ने अपने पज्जुण्णचरिउ मे उन्हें सयम विवेक-निलय, विवुध-कुल लघुतिलक, भट्टारक भ्राता कहा है। यश कीर्ति द्वारा प्रणीत चार रचनाएं उपलब्ध होती है जिनके नाम पाण्डव पुराण, हरिवंश पुराण, जिणरत्ति-कहा एव रविवयकहा है। पाण्डवपुराण का रचना काल स. १४९७ एव हरिवंश पुराण का स १५०० है।

यश कीर्ति अपभ्र श के महान् वेत्ता के साथ-साथ ग्रन्थो की प्रतिलिपिया भी करते थे। राजस्थान के शास्त्र भण्डारो मे उनके द्वारा लिपिबद्ध कितनी ही पाण्डु-लिपिया मिलती है।

दूसरे भट्टारक यशःकीर्ति भट्टारक सोमदेव की परम्परा मे होने वाले प्रमुख भट्टारक थे, वे अपने आपको मुनि पद से सम्बोधित करते थे। इनका विस्तृत वर्णन आगे किया जावेगा।

तीसरे भट्टारक रामकीर्ति के प्रशिष्य एव विमलकीर्ति के शिष्य यश कीर्ति हुए। ये भी अपने आपको मुनि लिखते थे। इन्होंने जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला नामक आयुर्वेद ग्रथ की रचना की थी। प्राकृत भाषा मे निबद्ध आयुर्वेद विषय की एक मात्र कृति है जिसकी एक पाण्डुलिपि जयपुर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

---

1 देखिये रइधू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—डा. राजाराम जैन—पृष्ठ ७४–७५.

चौथे यश कीर्ति नागौर गादी पर भट्टारक हुए। जिनका संवत् १६७२ की फाल्गुन शुक्ला पचमी को रेवासा नगर में भट्टारक पद पर पट्टाभिषेक हुआ था। एक भट्टारक पट्टावली मे इनका परिचय निम्न प्रकार दिया हुआ है—

"सवत् १६७२ फाल्गुन सुदी ८ यश कीर्ति जी गृहस्थवर्ष ६ दीक्षा वर्ष ४० पट्ट वर्ष १७ माम ६ दिवस ८ अन्तर दिवस २ सर्व वर्ष ६७ जाति पटनी पट्ट रेवासा।

रेवासा नगर के आदिनाथ जिन मन्दिर मे एक शिलालेख के अनुसार यश कीर्ति के उपदेश से रायसाल के मुख्य मत्री देवीदास के दो पुत्र जीत एव नथमल ने मन्दिर का निर्माण करवाया था। उनके प्रमुख शिष्य रूपा एव डूगरसी ने धर्मपरीक्षा की एक प्रति गुणचन्द्र को भेट देने के लिये लिखवायी थी तथा रेवासा के पचो के उन्हे एक सिहासन भेट किया था।

पांचवें यशःकीर्त्ति ने सवत् १८१७ मे हिन्दी मे हनुमच्चरित्र की रचना की थी जिसकी एक पाण्डुलिपि डूगरपुर (राजस्थान) के कोटडियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।[1]

छठे यश कीर्त्ति भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा मे भ. रामकीर्त्ति के शिष्य हुए जिन्होने धुलेव मे स १८७५ मे चारुदत्त श्रेष्टिनो रास की रचना समाप्त की थी। इसके एक पाडुलिपि दि जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर मे सग्रहीत है। इनका भट्टारक काल सवत् १८६३ से प्रारम्भ होता है।

उक्त यश कीर्त्ति नाम वाले भट्टारको के अतिरिक्त और भी यशःकीर्ति हो सकते है। हमारे चरित्र नायक यश कीर्त्ति १५-१६ वी शताब्दि के विद्वान् थे। वे रामसेन की परम्परा मे होने वाले भट्टारक थे जो भ सोमकीर्ति के उत्तरवर्ती थे तथा सोमकीर्ति के पश्चात् भट्टारक पद पर अभिषिक्त हुये थे। ब्रह्म यशोधर ने नेमिनाथगीत मे एव बलिभद्र चुपई मे इन्हे अपने गुरु के रूप मे स्मरण किया है।[1]

यश कीर्त्ति का समय १५०० मे १५६० तक का माना जा सकता है। सवत् १५८५ मे जब ब्रह्म यशोधर ने बलिभद्र चुपई की रचना की थी उस समय उनके पश्चात् भ विजयसेन और हो चुके थे। यदि एक भट्टारक का काल २५ वष का भी मान लिया जावे तो इस हिसाब से संवत् १५६० ही ठीक बैठता हैं।

---

1 राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्र थ सूची पचम भाग—पृष्ठ स ४१६.

2 श्री यसकीरति सुपसाउलि ब्रह्म यशोधर भणिसार। नेमिनाथ गीत।

साहित्य सेवा---भट्टारक यशःकीर्ति की अभी तक कोई बडी रचना नही मिल सकी है। केवल २ पद, योगी वाणी एव चौबीस तीर्थङ्कर भावना मिली है। जो लघु रचनाये हैं। दो पद उपदेशात्मक है जिनमे मनुष्य भव में अच्छे कार्य करने के लिये कहा गया है। गढ, मठ, मन्दिर, घोडा हाथी कोई भी साथ जाने वाले नही है। केवल धर्म ही साथ जाने वाला है। दोनो ही पद भाषा एव भाव की दृष्टि से अच्छे पद है।

योगी वाणी मे ज्ञान एव ध्यान मे रहने वाले योगियो के चरणों की वंदना करने को कहा गया है। यश कीर्त्ति ने कहा है कि जो शुद्ध ध्यान को धारण करता है उसी योगी के चरणो की वन्दना करनी चाहिये। योगी वाणी मे आगे कहा गया है कि क्रोध, लोभ माया और मान इन सभी को अपने आप से दूर हटा तथा त्रस एव स्थावर जीवो की रक्षा कर, काया से प्रेम मत कर तथा परीषह सहने के डर से चारित्र को मत छोड यही योगियो को वाणी का सार है। योगी सयमी एव सतोषी होते हैं अल्प आहारी एवं अल्प निद्रा लेने वाले होते हैं। योगियो की पहचान योगी ही कर सकते है। इस प्रकार योगी वाणी लघु कृति होने पर भी गूढ अर्थ को लिये हुये हैं।

चौबीस तीर्थङ्कर भावना मे चौबीस तीर्थङ्कर गुणानुवाद है। तथा अन्त मे कहा गया है कि जो नर नारी भाव पूर्वक इनका साधन करेगा गुणानुवाद गावेगा वही भव से पार होगा।

इस प्रकार यश कीर्ति अपने समय के अच्छे कवि थे तथा अपने भक्तो को शुभ कार्य करने की प्रेरणा दिया करते थे।

यशःकीर्ति भट्टारक होते हुए भी अपने आपको मुनि लिखा करते थे इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे सभवतः नग्न रहते हो। सोमकीर्ति भी अपने आपको आचार्य लिखना अधिक पसन्द करते थे इसलिये यशःकीर्त्ति ने अपने गुरु से आगे न बढ कर मुनि लिखने मे सतोष धारण कर लिया।

(१)

राग सबाक

तडकि लागि जिम नेह त्रूटि।
अजलि उदक जिम आउषु छूटि।

---

1. श्री रामसेन अनुक्रमि हुआ, यसकीरति गुरु जाणि।
श्री विजयसेन पदि थापिया, महिमा मेर समाण ।। १८६ ।।
तास शिष्य इम उच्चरि ब्रह्म यशोधर जेह। बलिभद्र चुपई

अथिर धन यौवन नहीं कोए केरा ।
कांई लाई जीवडा करि फोकट फेरा ॥ १ ॥
गढ मठ मंदिर घोडा रे हाथी ।
अंतकाल कोई नावि रे साथी । अथि ।। २ ।।
मानव भवछि अति रे दोहेलु ।
कर एक धर्म जिम पामि सोहेलु । अथि ।। ३ ।।
अह निशि हीडिकांइ हा हा हू तु ।
माया रे जाल कादव माहि षूतू । अथि ।। ४ ।।
काया रे कुटंब सहू भाडूत जाणी ।
पंचि रे इंद्री मन विश करे प्राणी । अथि ।। ५ ।।
सीष सुणु सह एहछि सारी ।
श्री यस रे कीरति गुरु कहि रे विचारी । अथि ।। ६ ।।

(२)

राग आसावरी

मयण मोह माया मदि मातु ।
तु उपरि रमणी रगि रातु ।
रे लक्ष्मी कारणि हीडि घातु ।
जीव जाणेस परिभव जातु ।
काया कारमीए घट काचु ।
जीव करि एक जिन धर्म साचु रे ।। काया का ।। १ ।।
अति काल जाए सजीव नाग ।
काई विषयाचे रस लागु ।
लक्ष चुरासी भमी भमी भागु ।
आतां काढीले सिभागु रे ।। काया का ।। २ ।।
पुत्र परिवार अथिर सवि जाणी ।
अजीय काइ नवि जागि ।
श्री यशकीरति मुनिवर इम बोलि ।
अचीलघ्यां दोटबागि रे ।। काया का ।। ३ ।।

(३)

योगी वाणी

ज्ञान विभूती ध्यान अंघोटा पंच महाव्रत पालि रे ।

झोटा तस योगी ने पाय प्रणमीजि ।

सुद्ध चिद्रूपनु ध्यान धरीजि, तस योगी के पाय प्रणमीजि ॥ १ ॥

आगम सीगी दह दिशि कथा जिनमारग प्रकाशि रे पंथा
तस योगी० ॥ २ ॥

क्रोध लोभ मद मछर टालि, थावर त्रस जीव षट काय पालि
तस योगी० ॥ ३ ॥

काया योगिणा सु माया न मांडि, परीषह मुइ चारित्र न छांडि
तस योगी० ॥ ४ ॥

सयम सतोष काने मुद्रा, अल्प आहारनि अल्पछि निद्रा
तस योगी० ॥ ५ ॥

योगीयतेजे योग ज जाणि, मनमा कड इंद्री वसि आणि
तस योगी० ॥ ६ ॥

श्री यस रे कीर्ति गुरु योग वखाणि डाहु ते ये मन माहि आणि
तस योगी० ॥ ७ ॥

इति योगी वाणी

(४)

चौबीस तीर्थंकर भावना

श्री रिषभनाथ जिन स्वामि नामि रे नव निधि मंदिर पामीइ रे ।

तीर्थंकर चुवीस पूजिइ रे स्वर्ग मोक्ष सुख पामीइ रे ॥ तीर्थं ॥ १ ॥

प्रणमु अजित जिणंद जिणि जीता रे क्रोध लोभ मनमथ घणा रे
॥ तीर्थं ॥ २ ॥

भव भय भंजन नाथ संभव रे निरूड स्वामी भेटीइ रे ॥ तीर्थं ॥ ३ ॥

अभिनदन आनंद पूरि रे सेवक जन संपति घणी रे ॥ तीर्थं ॥ ४ ॥

सुमति सदा फल देव सिद मति रे दाता जुग माहि आणीइ रे
॥ तीर्थं ॥ ५ ॥

पद्मप्रभ गुण ग्राम जपंता रे २ सकट सवि दूरि पुलि रे ॥ तीर्थं ॥ ६ ॥

श्री सुपास मनि आस अवीयण रे २ पूरि स्वामी मन तणी रे
॥ तीर्थं ॥ ६ ॥

चन्द्रप्रभ चन्द्रयोति ध्याइ रे २ पाप तिमर दूरि हरि रे ॥ तीर्थं ॥ ८ ॥

पुष्पयत शिशिवन्न समरि रे २ आठ कर्म दूरि करि रे ॥ तीर्थं ॥ ६ ॥

शीतलनाथ सुरिंद शीतल रे २ वाणी आतपनी गमि रे ॥ तीर्थं ॥ १० ॥

श्रेयांस श्रीदातार श्रीकर रे २ स्वामी भावि भेटीइ रे ॥ तीर्थं ॥ ११ ॥

वासुपूज्य मनि रगि मन रंगि रे २ वासव इंद्रि पूजीउ रे
॥ तीर्थं ॥ १२ ॥

विमलनाथ जिनराउ निर्मल रे २ केवल ज्ञान भूषीउ रे ॥ तीर्थं ॥ १३ ॥

अनतनाथ अनत अनत रे २ चतुष्टय करी भूषीउ रे ॥ तीर्थं ॥ १४ ॥

धर्मनाथ सुधर्म धरम रे २ दाता स्वामी पूजीइ रे ॥ तीर्थं ॥ १५ ॥

सातिनाथ सुभ शाति नामि रे २ शिवसुख निश्चल पामीइ रे
॥ तीर्थं ॥ १६ ॥

कुंथनाथ सुरनाथ सुरवर रे नामि रे दुख दालिद्र सवि वामीइ रे
॥ तीर्थं ॥ १७ ॥

अर स्वामी जिनराउ अरि रिपु रे २ मयणराइ
जिणि गाजीउ रे ॥ तीर्थं ॥ १८ ॥

मल्लिनाथ प्रभु देव सेविइ रे २ मोक्ष पदारथ पामीइ रे ॥ तीर्थं ॥ १६ ॥

मुनिसुव्रत व्रत धार सुव्रत रे २ मारग स्वामी दाखवि रे
॥ तीर्थं ॥ २० ॥

नमिनाथ सुर राइ सुरपति रे २ तीन भुवन सुर भेटीइ रे
॥ तीर्थं ॥ २१ ॥

नेमिनाथ बाल ब्रह्मचार बाल पणि २ संयम वरी रे ॥ तीर्थं ॥ २२ ॥

श्री पासनाथ जिन राउ अतिसय रे २

दीसि महीयल दीपतु रे ।। तीर्थ ।। २३ ।।

श्री महावीर जिनराउ इंद्रि रे २ मेरु सिहर

महिमा कीउ रे ।। तीर्थ ।। २४ ।।

जे जपसि नर नारि भावि रे २ गुणगाइ स्वामी तणा रे ।।

ते पामि भव पार श्री यसकीरति मुनिवर भणि रे ।। २५ ।।

इति चौबीस तीर्थंकर भावना

ब्रह्म यशोधर

ब्रह्म यशोधर १६ वीं शताब्दि के कवि थे। भट्टारक सोमकीर्त्ति के शिष्य एवं भट्टारक यशःकीर्त्ति के प्रशिष्य भ० विजयसेन को इन्होने अपना गुरु माना है जिससे वह स्पष्ट है कि इन्होंने दोनो का ही शासनकाल देखा था[1] और यह भी सभव है कि इन्हे अपने प्रारम्भिक जीवन मे भ० सोमकीर्त्ति के भी पास रहने का सुअवसर मिला हो क्योकि कुछ पदो मे इन्होने सोमकीर्त्ति भट्टारक को भी अपने गुरु के रूप मे स्मरण किया है।[2]

भट्टारक सोमकीर्त्ति की परम्परा के अतिरिक्त, इन्होने भट्टारक सकलकीर्त्ति की आम्नाय मे होने वाले भट्टारक विजयकीर्त्ति का भी गुरु के रूप मे स्मरण किया है और अपने गुरु की प्रशसा मे एक गीत भी लिखा है।[3] इससे यह स्पष्ट है कि ब्रह्म यशोधर सभी भट्टारको के पास जाया करते थे और उनके चरणो मे बैठ कर साहित्य साधना किया करते थे।

जन्म

ब्रह्म यशोधर का जन्म कहा हुआ था। कौन इनके माता पिता थे, कितनी आयु मे इन्होने ब्रह्मचारी पद प्राप्त किया तथा कितने समय तक वे साहित्य साधना करते रहे इन प्रश्नो का उत्तर देना कठिन है क्योकि उन्होने अपनी कृतियो मे इस सम्बन्ध मे कोई प्रकाश नही डाला। साधु बनने के पश्चात् गृहस्थावस्था का सम्बन्ध बतलाना शास्त्र सम्मत नही माना जाता इसी दृष्टि मे ब्रह्म यशोधर ने भी अपना कोई परिचय नही दिया। लेकिन अपनी दो रचनाओ मे रचनाकाल दिया है जिनमे नेमिनाथ गीत मे सवत् १५८१ एव बलिभद्र चुपई मे सवत् १५८५ दिया

---

1. श्री रामसेन अनुक्रमि हुआ, यसकीरति गुरु जाणि।
   श्री विजसेन पदि थापीया, महिमा मेर समान
   तास सष्य इस उच्चरि, ब्रह्म यशोधर जेह ।। १८७ ।।
2. श्री सोमकीर्त्ति गुरु पाट धराधर सोल कला जिमु चद्र रे।
   ब्रह्म यशोधर इणी परि वीनवी श्री सघ करि आणदूरे ।। ७ ।।
3. श्री काष्ठा संघ कुल तिलु रे, यती सिरोमणि सार।
   श्री विजयकीरति गिरुउ यशधर श्री संघ करि जयकार ।। ४ ।।

है। इसी संवत् १५८५ में इन्होंने गुटके में कुछ पाठों की लिपि भी की थी।

जिन भट्टारकों का इन्होंने अपनी रचनाओं में स्मरण किया है। उनके आधार पर ब्र० यशोधर का जन्म संवत् १५२० के आस पास हुआ होगा। इनके जन्म स्थान के बारे मे कुछ नहीं कहा जा सकता। किन्तु इन्होंने अपनी रचनाओ मे बसपालपुर (बांसवाडा) गिरिपुर (डूंगरपुर) एवं स्कधनगर का उल्लेख किया है। इससे पता चलता है कि इनका बागड प्रदेश मुख्य स्थान था और इसलिये जन्म भी इसी प्रदेश के किसी ग्राम अथवा नगर में हुआ होगा।

ब्रह्म यशोधर के पूर्व ब्रह्म जिनदास हो चुके थे जिन्होने राजस्थानी में विशाल साहित्य की सर्जना करके सबको चकित कर दिया था। ब्र० यशोधर भी उन्ही के पद चिह्नों पर चलने वाले साधु थे। यही कारण है कि उन्होंने जीवन के अन्तिम क्षण तक साहित्य देवता को अपने आपको समर्पित रखा।

शिक्षा

ब्रह्म यशोधर ने सर्व प्रथम भ० सोमकीर्त्ति के पास एव उनके पश्चात् भ० यश कीर्त्ति के पास शिक्षा प्राप्त की थी। सस्कृत एव राजस्थानी भाषा पर अधिकार प्राप्त था। सर्व प्रथम इन्होने ग्रन्थो की प्रतिलिपि करने का कार्य प्रारम्भ किया। इनकी लिपि बहुत सुन्दर थी। छोटे एव गोल आकार वाले अक्षर लिखना इन्हें बहुत प्रिय था। इनके स्वय के द्वारा लिखे हुये गुटके मे पाठो का सग्रह मिलता है जैसे इनके अक्षर वैसा ही इनका निर्मल स्वभाव था।

विहार

कविवर ब्र० यशोधर अधिकांश समय भट्टारको के साथ रहते थे या फिर उनकी गादी मे रह कर अध्ययन एव लेखन किया करते थे। स्वतन्त्र रूप से विहार नही होता था वैसे इनका अधिकाश समय साहित्य निर्माण मे व्यतीत होता था।

रचनायें

कवि की अब तक निम्न रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं।

1. नेमिनाथ गीत—(रचना काल स० १५८१)

---

1. संवत पनर एकासीइ जी बसपाल पुर सार। नेमिनाथ गीत
2. गिरिपुर स्वामीय मडणु श्री सघ पूरवि आस रे।। मल्लिनाथगीत
3. सवत पनर पच्चासीइ स्कध नयर मझारि
भवणि अजित जिनवर तणि, ए गुण गाया सार।। १८२ बलिभद्र चुपई

2. बलिभद्र चुपई (रचना स० १५८५)
3. विजयकीर्ति गीत
4. वासुपूज्य गीत
5. वैराग्य गीत
6. नेमिनाथ गीत
7 ,,
8. मल्लिनाथ गीत
9. पद संख्या १८

उक्त रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है--

१. नेमिनाथ गीत

कवि की सवतोल्लेख वाली दो रचनाओं मे से नेमिनाथ गीत प्रथम रचना है जिसका रचना काल स० १५८१ है। रचना स्थान बसपालपुर (बासवाडा) है। प्रस्तुत गीत मे २८ अन्तरे हैं जिनमे २२ वें तीर्थंकर नेमिनाथ की एक झलक मात्र प्रस्तुत की गयी है। गीत मे राजुल नेमिनाथ को सम्बोधित करके अपनी वेदना व्यक्त करती हैं और जब समझाने पर भी नेमि वापिस नही लौटते है तो स्वय भी दीक्षा ले लेती हैं।

नेमिकुमार भड सांचरया जी अलुणा सहिर मझारि।
पच महाव्रत आदरया जी, राल्यु सवि सिणगार।
हे राजिल मम करि मोह अयाण मोह हुइ धरम नीहाण रे राजील।

प्रस्तुत कृति की अपूर्ण प्रति गुटके मे सग्रहीत है। केवल अन्तिम कुछ पद्य उपलब्ध होते है। २७ वा पद्य निम्न प्रकार है—

ब्रह्म यशोधर इम कहि जी भणसि जे नर नारि।
स्वर्ग तणा सुख भोगवी जी लहिसि मुगति दूयार। हो स्वामी।

२. बलिभद्र चौपई—यह कवि की अब तक उपलब्ध रचनाओ मे सबसे बडी रचना है। इसमे १८९ पद्य है जो विभिन्न ढाल, दूहा एव चौपई आदि छन्दो मे विभक्त हैं। कवि ने इसे सम्वत् १५८५ मे स्कन्ध नगर के अजितनाथ के मन्दिर मे सम्पूर्ण[1] किया था।

---

१. सवत पनर पच्यासीइ, स्कन्ध नगर मझारि।
भवणि अजित जिनवर तणी, ए गुण गाया सारि॥ १८८॥

रचना में श्रीकृष्ण जी के भाई बलिभद्र के चरित्र का वर्णन है। कथा का संक्षिप्त सार निम्न प्रकार है—

द्वारिका पर श्रीकृष्णजी का राज्य था। बलिभद्र उनके बड़े भाई थे। एक बार २२ वें तीर्थंकर नेमिनाथ का उधर विहार हुआ। नगरी के नरनारियों के साथ वे दोनों भी दर्शनार्थ पधारे। बलिभद्र ने नेमिनाथ से जब द्वारिका के भविष्य के बारे में पूछा तो उन्होंने १२ वर्ष बाद द्वीपायन ऋषि द्वारा द्वारिका दहन की भविष्यवाणी की। १२ वर्ष बाद ऐसा ही हुआ। श्रीकृष्ण एवं बलराम दोनो जंगल मे चले गये और जब श्रीकृष्ण जी सो रहे थे तो जरदकुमार ने हरिण के धोखे मे इन पर बाण चला दिया जिससे वहीं उनकी मृत्यु हो गई। जरदकुमार को जब वस्तुस्थिति का पता लगा तो वह बहुत पछताये लेकिन फिर क्या होना था। बलिभद्र श्रीकृष्ण जी को अकेला छोड़कर पानी लेने गये थे, वापिस आने पर जब उन्हें मालूम हुआ तो वे बड़े शोकाकुल हुए एव रोने लगे और मोह से छह मास तक अपने भाई के मृत शरीर को लिए घूमते रहे। अन्त मे एक मुनि ने जब उन्हें संसार की असारता बतलाई तो उन्हे भी वैराग्य हो गया और अन्त में तपस्या करते हुए निर्वाण प्राप्त किया। चौपई की सम्पूर्ण कथा जैन पुराणो के आधार पर निबद्ध है।

चौपई प्रारम्भ करने के पूर्व सर्व प्रथम कवि ने अपनी लघुता प्रगट करते हुए लिखा है कि न तो उसे व्याकरण एव छद का बोध है और न उचित रूप से अक्षर ज्ञान ही है। गीत एव कवित्त कुछ आते नही है लेकिन वह जो कुछ लिख रहा है वह सब गुरु के आशीर्वाद का फल है—

> न लहुं व्याकरण न लहुं छन्द, न लहुं अक्षर न लहुं बिंद।
> हू मूरख मानव मति नही, गीत कवित्त नवि जाणु कही ।।२।।

दोहा

> सूरज ऊग्यु तम हरि, जिम जलहर वूठि ताप।
> गुरु वयणे पुण्य पामीइ, झडि भवतर पाप ।।५।।
> मूरख पणि जे मति लहि, करि कवि अतिसार।
> ब्रह्म यशोधर इम कहि, ते सहि गुरु उपगार ।।६।।

उस समय द्वारिका वैभव पूर्ण नगरी थी। इसका विस्तार १२ योजन प्रमाण था। वहा सात से तेरह मजिल के महल थे। बड़े-बड़े करोड़पति सेठ वहा निवास करते थे। श्रीकृष्ण जी याचको को दान देने में हर्षित होते थे, अभिमान नही

करते थे। वहां चारों ओर वीर एवं योद्धा दिखलाई देते थे। सज्जनों के अतिरि दुर्जनों का तो वहा नाम भी नहीं था।

कवि ने द्वारिका का वर्णन निम्न प्रकार किया है—

नगर द्वारिका देश मझार, जाणे इन्द्रपुरी अवतार।
बार जोयण ते फिरतु बसि, ते देखी जन मन उलसि ॥११॥
नव खण तेर खरण प्रासाद, टह श्रेणि सम लागु वाद।
कोटीधज तिहां कहीइ घरणा, रत्न हेम हीरे नही मरणा ॥१२॥
याचक जननि देइ दान, न हीयडि हरष नहीं अभिमान।
सूर सुभट एक दीसि घरणा, सज्जन लोक नही दुर्जरणा ॥१३॥
जिण भवने धज वड भरहरि, शिखर स्वर्ग सु वातज करि।
हेम मूरति पोढी परिमाण, एके रत्न अमूलिक जाण ॥१४॥

द्वारिका नगरी के राजा थे श्रीकृष्ण जी जो पूरिणमा के चन्द्रमा के समा सुन्दर थे। वे छप्पन करोड यादवो के अधिपति थे। इन्ही के बडे भाई थे बलिभद्र स्वर्ण के समान जिनका शरीर था। जो हाथी रूपी शत्रुओ के लिए सिंह थे तथ हल जिनका आयुध था। रेवती उनकी पटरानी थी। बडे-बडे वीर योद्धा उन सेवक थे। वे गुणो के भण्डार तथा सत्यव्रती एव निर्मल-चरित्र के धारण कर वाले थे—

दूहा

तस बंधव अति रूयडु रोहिण जेहनी मात।
बलिभद्र नामि जाणयो, वसुदेव तेहनु तात ॥२८॥
कनक वर्ण सोहि जिसु, सत्य शील तनुवास।
हेमधार वरसि सदा, ईहण पूरि आस ॥२९॥
अरीयण मद गज केशरी, हल आयुध कर सार।
मुहड सुभट सेवि सदा, गिरुउ गुणह भडार ॥३०॥
पटराणी तस रेवती, सील सिरोमणि देह।
धर्म धुरा झालि सदा, पतिसु अविहड नेह ॥३१॥

उन दिनो नेमिनाथ का विहार भी उधर ही हुआ। द्वारिका की प्रजा नेमिनाथ का खूब स्वागत किया। भगवान श्रीकृष्ण, बलभद्र आदि सभी उनक वदना के लिए उनकी सभागृह मे पहुचे। बलभद्र ने जब द्वारिका नगरी के बारे प्रश्न पूछा तो नेमिनाथ ने उसका निम्न शब्दो मे उत्तर दिया—

दूहा—सारी वाणी संभली, बोलि नेमि रसाल ।
पूरव भवि अक्षर लखा, ते किम थाइ आल ॥७१॥

चुपइ—द्वीपायन मुनिवर जे सार, ते करसि नगरी सद्यार ।
मद्य भाड जे नामि कही, तेह थकी वली बलसि सही ॥७२॥
पौरलोक सवि जलसि जिसि, वे बंधव नीकलसु तिसि ।
तह्मह सहोदर जरा कुमार, ते हनि हाथि मरि मोरार ॥७३॥
बार बरस पूरि जे तलि, ए कारण होसि ते तलि ।
जिणवर वाणी अमीय समान, सुणीय कुमर तब चाल्यु रानि ॥७४॥

बारह वर्ष पश्चात् वही समय आया । कुछ यादवकुमार अपेय पदार्थ पीने से उन्मत्त हो गए । वे नाना प्रकार की क्रियाये करने लगे । द्वीपायन मुनि को जो बन मे तपस्या कर रहे थे उन्हे देखकर वे चिढाने लगे ।

तिणि अवसरि ते पीधु नीर, विकल रूप ते थया शरीर ।
ते परवत था पाछावलि, एकि विसि एक धरणी ढलि ॥८२॥
एक नाचि एक गाइ गीत, एक रोइ एक हरषि चित्त ।
एक नासि एक उडलि धरि, एक सुइ एक क्रीडा करि ॥८३॥
इणि परि नगरी आवि जिसि, द्विपायन मुनि दीठु तिसि ।
कोप करीनि ताडि ताम, देर गालवली लेइ नाम ॥८४॥

द्वीपायन ऋषि के शाप से द्वारिका जलने लगी और श्रीकृष्णजी एव बलराम अपनी रक्षा का कोई अन्य उपाय न देखकर बन की ओर चले गये । वन मे श्रीकृष्ण की प्यास बुझाने के लिए बलिभद्र जल लेने चले गये । पीछे से जरदकुमार ने सोते हुये श्रीकृष्ण को हरिण समझ कर बाण मार दिया । लेकिन जब जरदकुमार को मालूम हुआ तो वे पश्चाताप की अग्नि से जलने लगे । भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हे कुछ नही कहा और कर्मों की विडम्बना से कौन बच सकता है यही कहकर धैर्य धारण करने को कहा—

कहि कृष्ण सुणि जराकुमार, मूढ पणि मम बोलि गमार ।
ससार तणी गति विषमी होइ, हीयडा माहि बिचारी जोइ ॥११२॥
करमि रामचन्द वनिगउ, करमि सीता हरणज भउ ।
करमि रावण राज जटिली, करमि लक विभीषण फली ॥११३॥

हरचन्द राजा साहस धीर, करमि अधमि घरि आण्यु नीर ।
करमि नल नर चूकू राज, दमयन्ती वनि कीधी त्याज ।।११४।।

इतने मे वहीं पर बलिभद्र आ गये और श्री कृष्ण जी को सोता हुआ जानकर जगाने लगे । लेकिन वे तब तक प्राणहीन हो चुके थे । यह जानकर बलिभद्र रोने लगे तथा अनेक सम्बोधनो से अपना दुःख प्रकट करने लगे । कवि ने इसका बहुत ही मार्मिक शब्दो मे वर्णन किया है ।

जल विरण किम रहि माछलु, तिम तुझ विणु बघ ।
विरीइ वनडिउ सासीउ, साल्या असला रे सघ ।।१३०।।

छन्द

यद्यपि रचना मे मुख्यतः चुपई एव दोहा छन्द है लेकिन वस्तु बंध छन्द, एव दो ढालो का भी प्रयोग हुआ है । वैसे कवि को दोहा एव चौपई छन्द मे काव्य रचना मे अभ्यस्त था । १६ वी शताब्दि मे दोहा एव चौपई दोनो ही छन्द अत्यधिक लोकप्रिय हो चुके थे तथा पाठक भी इन्ही छन्दो को पसन्द करते थे ।

भाषा

बलिभद्र चुपई राजस्थानी भाषा की कृति है । यद्यपि कवि का गुजरात से अधिक सम्बन्ध था लेकिन राजस्थानी भाषा से उसे अधिक लगाव था । फूल्या (४२) रयण (रत्न) सिंघासण (सिंहासन) ३६, आव्या (आया ४८) मानथभ (मानस्थभ ५६) खच्यु (खेचा १०६) जाग्यु (जगना १२६) जैसे शब्दो को बहुलता से देखा जा सकता हैं ।

बलिभद्र चुपई के कुछ वर्णन तो बहुत ही अच्छे हुए हैं । भगवान नेमिनाथ का समवसरण क्या आया मानो चारो ओर धन धान्य, हरियाली, सघन वृक्ष, बसत जैसी बहार ही आ गयी इसी का एक वर्णन कवि के शब्दो मे देखिये—

फूल्या वृक्ष फली घरण लता अनेक रूप पखी सेवता ।
ठामि ठामि कोइल गहि गहि, मधु पल्लव केतकि महि महि ।।४२।।
जिणवर महिमा न लहु पार, रतु छोडी तरु फलीया सार ।
माग्या मेघ ते वरसि सदा, दुर्भख्य बात न सोयरों कदा ।।४३।।

जैन दर्शन मे कर्म सिद्धान्त पर गहन विवेचन मिलता है । कवि ने भी कर्मो की भाषा का सोदाहरण वर्णन करके कर्मों के प्रभाव की पुष्टि की है । इसी पर आधारित एक पाठ देखिये—

करमि ऋद्धि वृधि पामि बहू एकै निरधन करमि सहूं
करमि करि ते निभ्रि होइ कटम कारण नवि छूटी कोइ ।।११६।।
हरचद राजा साहस धरि, करमि अधम घरि अण्यु नीर ।
करमि नल नर चूकु राज, दमयती बनि कीधी त्याज ।।११४।।

लेकिन धर्म की महिमा कम नही है । जिसने भी धर्म को जीवन मे उतारा उसी का जीवन सफल हो गया । बलिभद्र चुपई मे कवि ने धर्म के महात्म्य का वर्णन करते हुए लिखा है—

धरमि धन बहू संपजि, राजा रयण भडार ।
धरमि जस महीयल फिरि, उत्तम कुल अवतार ।।१८२।।
धरमि मन चीन्त्यु फलि, दूर देशतर जेह ।
हय गज रथ धिरि नित बसि, धर्म तणा फल एह ।।१८३।।
धरमि नर महिमा हुइ, धरमि लहीइ ज्ञान ।
धरमि सुर सेवा करि, धरमि दीजि दान ।।१८४।।
धर्म तणा गुण बहू अछि, ते बोल्या किम जाइ ।
चुगि फेरु टालसि, जो धुरि धर्म दयाल ।।१८५।।

3 **विजयकीर्त्ति गीत**

विजयकीर्त्ति भट्टारक थे तथा भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य एवं भट्टारक शुभचन्द्र के गुरु थे । ये भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा के साधु थे । उनके महान् व्यक्तित्व के कारण परवर्ती कितने ही भट्टारको एव कवियो ने उनकी प्रशसा की है । ब० कामराज ने उन्हे सुप्रचारक के रूप मे स्मरण किया है ।[1] भ० सकलभूषण ने यशस्वी महामना, मोक्ष सुखाभिलाषी आदि विशेषणो से उनकी कीर्त्ति गायी है ।[2] भ० शुभचन्द्र भी उन्हे यतिराज, पुण्यमूर्त्ति आदि विशषणो से अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की है । भट्टारक देवेन्द्र कीर्त्ति[3] एवं लक्ष्मीचन्द चांदवाड[4] ने भी अपनी कृतियो मे विजयकीर्त्ति का गुणानुवाद किया है ।

---

1. विजयकीर्त्तियो ऽभवन भट्टारकोपदेशिन' । जयकुमार पुराण
2. भट्टारक श्रीविजयादिकीर्त्तिस्तदीयदहे वर लब्धकीर्त्ति. । महामना मोक्षसुखाभिलाषी बभूव जैनावनी प्रार्च्य पाद । उपदेश रत्नमाला
3 विजयकीर्त्ति तस पटधारी, प्रगटया पूरण सुखकार रे । प्रद्युम्न प्रबन्ध
4. तिन पट विजयकीर्त्ति जैवत, गुरु अन्यमति परवत समान । श्रेणिक चरित्र

ब्र० यशोधर ने भी भ० विजयकीर्त्ति की प्रशसा मे एक पूरा गीत लिखा है। जिससे पता चलता है कि उनकी विजयकीर्त्ति के प्रभावक जीवन मे पूर्ण श्रद्धा थी। यशोधर ने लिखा है कि बचपन मे ही विजयकीर्त्ति ने सयम धारण कर लिया तथा सकलकीर्त्ति की वाणी को सुन कर प्रसन्नता से भर गये थे। संसार को संसार जानकर पच महाव्रत स्वीकार किये तथा विश्वसेन मुनि के पास जाकर दीक्षा ले ली। वे बाईस परिषहो के सहने लगे।

विजयकीर्त्ति की माता का नाम रगीय था। विजयकीर्त्ति के प्रभाव के सामने अनेक राजा महाराजा नत मस्तक थे जिनमे मालवा, मेवाड, गुजरात, सौराष्ट्र एव सिंध के अनेक राजा थे। दक्षिण मे महाराष्ट्र, कोकण के प्रदेश थे। वे ३६ लक्षणो वाले थे तथा ७२ भाषाओ के जानकार थे। वे काष्ठा सघ के यति शिरोमणि थे।

आगम वेद सिद्धान्त व्याकरण भाषि भवीयण सार।
नाटक छद प्रमाण बूझि नित जपि नवकार ॥
श्री काष्टसघ कुल तिलु रे यती सरोमणि सार।
श्री विजयकीरति गिरुउ गणधर श्री सघ करि जयकार ॥४॥

४ वासुपूज्य गीत

बसपाल (बासवाडा) नगर मे वासुपूज्य स्वामी का जिन मन्दिर था। ब्र. यशोधर की उनके प्रति अतीव श्रद्धा थी इसीलिये सभी समाज से वासुपूज्य स्वामी के दर्शन, पूजा एव स्तवन करने के लिये आह्वान किया है। कवि ने लिखा है कि वासुपूज्य स्वामी के आगे भाव विभोर होकर अष्टमकारी पूजा करने के लिये कहा है तथा निम्न प्रकार पूजा करने का फल बतलाया है—

अष्ट प्रकारी जिनवर पूज करेसि रे।
भावि भक्ति लक्ष्मी सक्ति ससार तेरसि रे ॥
नयर बशवाला मडण तु स्वामी रे
ब्रह्म यशोधर अति घणु वलिवि
देयो तह्म गुणग्राम रे ॥१२॥

गीत की राग कामोद धन्यासी है जिसमें १२ पद्य है।

५ वैराग्य गीत

यह गीत राग धन्यासी मे लिपि बद्ध है। इस गीत मे मनुष्य जन्म की

दुर्लभता का वर्णन करते हुए विभिन्न प्रकार के पापों से बचने के लिये प्रेरणा दी गयी है। गीत बहुत छोटा है।

६ नेमिनाथ गीत

राजुल नेमि के जीवन पर यह कवि का दूसरा गीत है। इस गीत मे राजुल नेमिनाथ को अपने घर बुलाती हुई उनकी बाट जोह रही है। गीत छोटा सा है जिसमे केवल ५ पद्य हैं। गीत की प्रथम पक्ति निम्न प्रकार है—

नेम जी आवु न घरे घरे।

वाटडीयां जोइ सिवगामा (ला) डली रे ॥

७. नेमिनाथ गीत

यह कवि का नेमिनाथ के जीवन पर तीसरा गीत है। पहले गीतो से यह गीत बडा है और वह ६६ पद्यो में पूर्ण होता है। इसमे नेमिनाथ के विवाह की घटना का प्रमुख वर्णन हैं। वर्णन सुन्दर, सरस एव प्रवाह युक्त है। राजुलि–नेमि के विवाह की तैय्यारियां जोर शोर से होने लगी। सभी राजा महाराजाओ को विवाह मे सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रण पत्र भेजे गये। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम आदि सभी दिशाओ के राजागरा उस बारात मे सम्मिलित हुये। इसे वर्णन को कवि के शब्दों मे पढिये —

कुंकम पत्री पाठवी रे, नुत्र आवि अतिसार।

दक्षिण मरहठा मालवी रे, कुंकण कन्नड राउ ॥२२॥

गूजर मडल सोरठीयारे, सिन्धु सबाल देश।

गोपाचल नु राजाउरे, ढीली आदि नरेस ॥ २३ ॥

मलवारी मारुयाडना रे, खुरसाणी सवि ईस।

बागडी उदल मजकरी रे, लाड गउडनाधीस ॥ २४॥

कवि ने उक्त पद्यो में दिल्ली को 'ढीली' लिखा है। १२ वी शताब्दी के अपभ्रंश के महाकवि श्रीधर ने भी अपने पासचरिउ मे दिल्ली को "ढल्ली' शब्द से सम्बोधित किया था।[1]

बारातियों के लिये विविध फल मगाये गये तथा अनेक पकवान एवं मिठाइया

१ विक्कमणरिंद सुपसिद्ध कालि, ढिल्ली पट्टणि धण कण बिसालि।

सनवासी एयारह सरगिह, परिवाडिए वरिसह परिगएहि ॥

बनवायी गई। कवि ने जिन व्यञ्जनो के नाम गिनाये हैं उनमें अधिकांश राजस्थानी मिष्ठान हैं कवि के शब्दो मे इसका आस्वादन कीजिये—

पकवान नीपजि नित नवा रे, माडी मुरकी सेव ।
खाजा खाजडली दही थरा रे, फेवर घेवर हेव ।। २५ ।।
मोतीया लाडू मूंग तणा रे, सेवइया अतिसार ।
काकरी पापड सूधीयारे, साकिरि मिश्रित सार ।। २६ ।।
सालीया तदुल रूपडारे, उज्जल अखंड अपार ।
मूग मडोरा अति भला रे, घृत अखडी धार ।। २७ ।।

राजुल का सौन्दर्य अवर्णनीय था। पावो के नुपूर मधुर शब्द कर रहे थे वे एसे लगते थे मानो नेमिनाथ को ही बुला रहे हों । कटि पर सुशोभित 'कनकती' चमक रही थी। अगुलियो मे रत्नजटित अंगूठी, हाथो मे रत्नो की ही चूडिया तथा गले मे नवलख हार सुशोभित था। कानो मे झूमके लटक रहे थे। नयन कजरारे थे। हीरो से जडी हुई ललाट पर राखडी (बोरला) चमक रही थी। इसकी वेणी दण्ड उतार (उपर से मोटी तथा नीचे से पतली) थी इन सब आभूषणो से वह ऐसी लगती थी कि मानों कहीं कामदेव के धनुष को तोडने जा रही हो—

पायेय नेउर रणझणिरे, घूघरी नु घमकार ।
कटियत्र सोहि रुडी मेखला रे झूमणु झलक सार ।।४३।।
रत्नजडित रूडी मुद्रकारे, करियल चूडीतार ।
बाहि बिठा रूडा बहिरखारे, हीयडोलि नवलखहार ।।४४।।
कोटीय टोडर रूयडु रे, श्रवणे झबकि झाल ।
नलविट टीलु तप तपि रे, खीटलि खटकि चालि ।।४५।।
वाकीब भमरि सोहामणी रे, नयले काजल रेह ।
कामिधनु जाणु तोडीउरे, नर मन पाडवा एह ।। ४६ ।।
हीरे जडी रूडी राखडी, वेणी दड उतार ।
मयणि पन्नग जाणे पासीउरे, गोफणु लहि किसार ।।४७।।

नेमिकुमार ६ खण के रथ मे विराजमान थे जो रत्न जडित था तथा जिसमे हांसना जाति के घोडे जुते हुये थे। नेमिकुमार के कानो मे कुण्डल एव मस्तक पर छत्र सुशोभित थे। वे श्याम वर्ण के थे तथा राजुल की सहेलियां उनकी ओर सकेत करके कह रही थी यही उसके पति हैं ?

नवखणु रथ सोवणमि रे, रयण मंडित सुविसाल ।
हांसला अश्व जिणि जोतर्‌यां रे, लहू लहूधिजाय अपार ।। ५१ ।।
कानेय कुंडल तपि तपि रे, मस्तिक छत्र सोहति ।
सामला अण सोहामणुरे, सोइ राजिल तोरू कंत ।। ५२ ।।

इस प्रकार रचना में घटनाओं का अच्छा वर्णन किया गया है। अन्त मे कवि ने अपने गुरु को स्मरण करते हुए रचना की समाप्ति की है।

श्री यतकीर्ति सुपसाउलि, ब्रह्म यशोधर भणिसार ।
चलण न छोडउ स्वामी तणा, मुझ भवचा दुख निवार ।। ६८ ।।
भणसि जिनेसर सांभलि रे, धन धन ते अवतार ।
नव निधि तस घरि उपजि रे, ते तरसि रे ससार ।। ६९ ।।

भाषा-गीत की भाषा राजस्थानी है। कुछ शब्दो का प्रयोग देखिये—

गासुं-गाऊ गा (१) काइ करू-क्या करू (१ नीकल्या रे–निकला (३) तह्म, ब्रह्म (८) तिहा (२१) नेउर (४३) आपणा (५३) तोरू (तुम्हारा) मोरू (मेरा) (५०) उतावलु (१३) पाठवी (२२)

छन्द—सम्पूर्ण गीत गुडी (गौडी) राग मे निबद्ध है।

८. मल्लिनाथ गीत

डूंगरपुर स्थित दि. जैन मन्दिर मे मल्लिनाथ स्वामी की प्रतिमा के स्तवन के रूप मे प्रस्तुत गीत लिखा गया है। इसमे उनके पच कल्याणको की महिमा का वर्णन किया गया है। गीत मे ९ अन्तरे हैं। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

ब्रह्म यशोधर वनिविह्न हवि तह्म तणुदास रे
गिरिपुर स्वामीय मडणु श्री सघ पूरवि धाम रे ।।४।।

९ पद साहित्य

ब्रह्म यशोधर ने अब तक १८ पद मिल चुके हैं जो विभिन्न राग-रागनियो मे निबद्ध है। कवि ने अधिकांश पदो मे नेमि राजुल का वर्णन किया है। कहीं राजुल की विरह-वेदना है तो किसी में तोरण द्वार से लौटने की घटना पर क्षोभ प्रगट किया गया है। ऐसा लगता है कि ब्रह्म यशोधर भी भट्टारक रत्नकीर्त्ति एवं कुमदचन्द्र के समान नेमि राजुल कथानक से अत्यधिक प्रभावित थे और उनके विविध रूप पाठको के सामने रखना चाहते थे। कुछ पदों मे भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति की गयी है। एक पद अपने गुरु यश कीर्त्ति की प्रशसा मे लिखा गया है।

१७ वी एव १८ वीं शताब्दियो अपने गुरु भट्टारको का गुण गान करने की प्रथा थी। इन पदो मे इतिहास ने कितने ही तथ्य छिपे हुए होते हैं।

राग सवाब मे कवि में कबीरदास के समान ही अपने मे ससार की गहनता पर चर्चा की है तथा चौरासी लाख योनियो में यह प्राणी अनेक पंथों एवं धर्मो में भटकता रहता है लेकिन उसे तारनहार कोई नही मिलता। इसलिये जिनदेव ही एक मात्र तारनहार है इन्हीं तथ्यों पर आधारित यह पद्य लिखा गया है। पद बहुत छोटा है लेकिन सार गर्भित है।

इस प्रकार ब्रह्म यशोधर का सम्पूर्ण साहित्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वे अपने समय के समर्थ कवि थे तथा समाज मे अत्यधिक लोकप्रिय थे। अपनी छोटी-२ रचनाओं के माध्यम से वे पाठको मे अपनी कृतियो के पठन-पाठन मे रुचि पैदा किया करते थे। उन्होने सब से अधिक नेमि राजुल से सम्बन्धित कृतिया लिखी थी फिर चाहे वे छोटी हो या बड़ी।

कवि ने अपना पूरा साहित्य राजस्थानी भाषा में लिखा है। राजस्थानी भाषा से उन्हें अधिक लगाव था और उनके पाठक भी इसी भाषा को पसन्द करते थे। वास्तव मे उस शताब्दि मे होने वाले अधिकाश जैन कवियों ने राजस्थानी भाषा मे अपनी रचना निबद्ध करने को प्राथमिकता दी थी।

बलिभद्र चुपई

प्रणमी जिनवर जिनवर रिसह,
जे नाम जुगला धर्म्म निवारणु।
ससार सागर तरण तारण
सारद सामिण वली नवु सुमति सारहु वेग मागु।
कूड कुबुधि सवि परिहरु हस वाहणि तुझ पाय लागु।
भाव भक्ति पूजा रची सहि गुरु चलण नमेस।
कर जोडी कवियण कहतु हलधर चरित कहेस। १।

चुपई

न लहुं व्याकरण न लहु छंद न लहु अक्षर न लहु बिंद।
हु मूरख मानव मति नही। गीत कवित्त नवि जाणु कही।। २।।
कोइल समरि जिम सहिकार। बप्पहीउ समरि जल धार।
चक्रवाक रवि समरि जेम। गुरु वाणी हु समरु तेम।। ३।।
गुरु वचने अक्षर पामीइ। गुरु वचने पातिक वामीइ।
गुरु वचने मन लहीइ ज्ञान। गुरु वचने धरि नवह निधान।। ४।।

वहा

सूरज उग्यु तम हरि, जिम जलहर वूठि ताप।
गुरु वयणे पुण्य पामीइ, झडि भवंतर पाप।। ५।।
मूरष पणि जे मति लहि, करि कवित अति सार।
ब्रह्म यशोधर इम कहि ते सहि गुरु उपगार।। ६।।
सो ए गुरु वाणी मनि धरी, कवीयणनि आधार।
रास कहु रलीयामणु, अक्षर रयण भडार।। ७।।

चुपई

अवनीय जबूदीप वखाण। भरह क्षेत्र तस भितर जाणि।

सोरठ देश अपूरव कही, अवर देश कोइ ऊपम नही ॥ ८ ॥
नयर अपूरव दीसि घणा, कचण रयण तणी नही मणा।
वनि वनि वृक्ष तणु नही पार, रायण पूग अनि सहिकार ॥ ९ ॥
नागवेल खजूरी एल, दाडिम द्राक्ष मडप घणु केल।
वाव सरोवर कूप अपार, घरि घरि मडया सत्रूकार ॥ १० ॥

द्वारिका नगरी वर्णन

नगर द्वारिका देश मझारि, जाणे इन्द्रपुरी अवतार।
बार जोयण ते फिरतु वसि, ते देखी जन मन उलसि ॥ ११ ॥
नव खण तेर खणा प्रासाद, हट्ट श्रेणी सम लागु वाद।
कोटीधज तिहा कहीइ घणा, रत्न हेम हीरे नही मणा ॥ १२ ॥
याचक जननि देई मान, हीयडि हरष नही अभिमान।
सूर सुभट एक दीसि घणा, सज्जन लोक नही दुर्ज्जणा ॥ १३ ॥
जिण भवने धज वड फरिहरि, शिषर स्वर्ग सु वातज करि।
हेममूरति पोढी परिमाण, एके रत्न अमूलिक जाणि ॥ १४ ॥
जिन चैत्याले मंडी घणी, दीठिया पथयारी वणी।
धर्मवत लोके घण पूर, दु:ख दालिद्र तिहा नासि दूर ॥ १५ ॥
जिन मंदिर ते पूजा करि, भवह तणा पातिग परिहरि।
झालिर ढोल भेर भर हरि, वेणा वस मधुर सरकरि ॥ १६ ॥
नाचि खेला अबला बाल, वा इकासी मरुज बिसाल।
सरणाई रव सोहि घणा, धुलि पाप पूरव भव तणा ॥ १७ ॥
पुरी पाषि लगि रूह प्राकार, सोना सहित कोसी ससार।
च्यार पोल तोरण सह घडी, माणिक मोती हीरे जडी ॥ १८ ॥
समुद्र सरीषी षाई जाण, अभिनवी इन्द्रपुरी परिणाम।
उत्तम लोके पूरी खरी, इन्द्रादेशी धनपति करी ॥ १९ ॥

श्रीकृष्ण महिमा

तस पनि सोई क्रिशन नरेंद, ग्रह गण माहि जिम पूनिमचद।
सवहु परवत मेर गिरीस, छपन कोडि कुल कृष्न अधीश ॥२०॥
बाल पणि षडया सुर बार, धरयु गोवर्द्धन करि तीणी वारि।
गोवत्स रख्या कारणि जेण, संख चक्र धनु साध्यां तेण ॥२१॥

काह्नइ वेगि पंयालि गउ, कमल नालि वासिग नाथउ ।
एकि एकि पद्म सहस्र पखडी, ते लेई आव्यु एकि घड़ी ।। २२ ।।
नाग सेज विसहर जिणी नड्य, दैत्य दाणव असुर सु भड्य ।
कंस मुष्ट चांणु रह काल' सोई मधसूदन नद गोवाल ।।२३।।
दानि कल्पवृक्ष जे कही, वर्णां अट्ठारह पोषि सही ।
सूरपणि अरि जीता घणा, लेई दण्ड कीधा आपणा ।। २३/१ ।
रूपि मयण तणु अवतार, सोल सहस वारु घणि नारि ।
रुषमणि सु पटराणी आठ, नयने मृग जीता वनि आठ ।। २४।।
रूपि रूयडी सीलि सती, पाप दूरकरि धरमि रती ।
देइ दान जिन पूजा सजि, कृष्ण रायनि अह निशि भजि ।।२५।।
सोनाली परिझलकि देह, दिन दिन वाधि नव नव देह ।
सोइ राणी सु विलसी राज, अनोपम अवर नही को आज।।२६।।
माता मेगलछि घरि जास, हेषारव घण घोडा लास ।
इणी परि वलशि अवनी भूप, अवर राइ नही जास सरूप ।२७।।

दूहा

बलिभद्र प्रशंसा

तस बधव अति रूयडु, रोहिण जेहनी मात ।
बलिभद्र नामि जाणयो, वसुदेव तेहनु तात ।। २८ ।।
कनक वर्ण सोहि जिसु, सत्य शील तनु वास ।
हेम धार वरसि सदा, ईहण पूरि आस ।। २६ ।।
अरीयण मदगज केशरी, हल आयुध करि सार ।
सुहड सुभट सेवि सदा, गिरूउ गुणह भण्डार ।। ३० ।।
पटराणी तस रेवती, सील सरोमणि देह ।
धर्मधुरा झालि सदा, पत्ति सु अविहड नेह ।। ३१ ।।
सुख सागर झीलि सदा, जातु न लहि काल ।
बे बधव इणी परि रमि, करि प्रजा प्रतिपाल ।। ३२ ।।

चुपई

गिरिवर गिरूह श्री गिरिनार- समोसरया तिहा नेमिकुमार ।
समवसरण सोहि मझाण, रच्यू धनदत्ते करू वषाण ।। ३३ ।।

समवकरण का प्रभाव

याखिल फिरता त्रण प्राकार, च्यार पोल सोव्रण घणसार ।
ठामि ठामि हीरा झलकति, माणिक रयण पदारथ पति ।।३४ ।।
मानथंभ धजा फरिहरि, स्वर्ग समी जाणे स्पृद्धा करि ।
तेडि भवीयण देइ मान, एतु कहीइ पुण्य प्रधान ।। ३५ ।।
आव्या सुरपति देव बहूत, करि भक्ति वासव सयुत ।
रयण सिंघासण मांडघु चग, बिंठा जिनवर अनोपम अगि ।।३६।।
एके छत्रधरि शिर हेव, चुसठि चामर ढालि देव ।
भेरी रव घंटा एक घणा, सहिजी इन्द्र करि लुञ्छणा ।। ३७ ।।
गुहिरि दुन्दुभि वश विसाल, नाचि अपछरा बहु विधि ताल ।
वांइ वेणा एक गावि गीत, इणी परिरञ्जि जिणवर चित ।।३८।।
गढ भितरछि कोठा बार, नाट साल वेदी वर सार ।
मोती तणा चुक परि गरि, सची इन्द्र जिन पूजा करि ।। ३९ ।।
चिहुँ दिशि च्यार सरोवर भला, निरमल नीर रमि हंसला ।
हाटक हीरे बंधी पाल, कमलणि कमलणि मुधुकर माल ।।४०।।
बाव चतुंमुख बहु आराम, पीइ नीर जिन लेइ विश्राम ।
खेचर सुन नर क्रीडा करि, मुगति तणी पयडी सचरि ।। ४१ ।।
फूल्या वृक्ष फली घण लता, अनेक रूप पषी सेवता ।
ठामि ठामि कोइल गहि गहि, मधु पलव केतकि महि महि ।।४२।।
जिणवर महिमा न लहुं पार, रतु छोडी तरु फलीया सार ।
माग्या मेघ ते वरसि सदा, दुर्मष्य वात न सोयणे कदा ।। ४३ ।।

दहा

गाइ तणा जे वाछरू, करि वाघिण सु खेल ।
ससक समी सीयालणी, हरि कुञ्जर गति गेल ।।४४।।
केकी सु विसहर रमि, नाग नकुल विहुं नेह ।
अवर वात सवि परिहरु, जिणवर अतिसि एह ।।४६।।
सारंगीनि सिंघनां बालक रमलि करंति ।
मांजारीनि हंसलु फरी फरी नेह धरंति ।।४७।।

चुपई

एक दिवस माली वनि गउ, अचरिज देखी उभु रह्यु।
फल्या वृक्ष सवि एकि काल, जीवे वैर तज्यां दुःखजाल ।। ४७ ।।
फरी फरी जोवा लागु वन्न, समोसरणि जिन दीठा वन्नि ।
आव्या जाणी नेमिकुमार, नमस्करी जंपि जयकार ।। ४८ ।।
लई भेट भेटयु भूपाल, कर जोडी इम भणि रसाल ।
रेवि गिरि जग गुरु आवीया, सभा सहित मिव द्रावीया ।।४९ ।
कृष्ण राय तस वाणी सुणी, हरख बदन हूउ त्रिहु खंड धणी ।
आलिलोष पचाग पसाउ, दिशि सनमुख थाई नमीउ राउ ।।५०।।
राइ आदेश भरी रवकीया, छपन कोडि हीयडि हरषीया ।
भव्य जीव धाइ घस मसि, करि षौत एक मनमाहि हसि ।।५१।।
पट हस्ती पाषरि परिगरयु, जाणे ऐरावण अवतरयु ।
घटा रवना घण टणकार, विचि विचि घुघर घम घम सार ।।५२।।
मस्तकि सोहि कुकुम गुञ्ज, झरि दान ते मधुकर गुञ्ज :
वासि ढाल नेजा फरिहरि, सिणगारी राइ आगिल धरि ।।५३।।
चड्यु भूप मेगलनी पूठ, देइ दान मागत जन मूठ ।
नयर लोक अतेउर साथि, धर्मतणि धुरि दीधु हाथि ।। ५४ ।।

दूसरी ढाल। राग सही की।

समहर सजकरी कृष्ण साचरिया, छपन कोडि परिवरिया ।।
छत्र त्रण शिर उपरि धरिया, राही रुषमणी समसरीया ।।
साहेलडी जिणवर वंदण जाइ, नेमितणा गुण गाइ ।
साहेलडी रे जग गुरु वन्दण जाइ ।। ५५ ।।
ढोलतिवल घणु वाजा वाजि, ससर सबद सवे छाजि ।
गुहिरनाद नीसाण ज गाजि, वेगा वस्र विराजि ।सा०।जिण०।५६।
आगलि अपछर नाचि सुरंगा, चामर ढालि चंगा ।
देइय दान ए धार जिम गगा, हीयडलि हरष अभगा ।
।साहेलडी० ।। ५७ ।।

मेगल उपरि चढीउ हो राजा, धरइ मान मन माहिं ।
अवर राय मुझ समउ न कोई, नयणडे निम जिन चाहिं ।
। साहेल० ।। ५८ ।।

मानथंभ दीठि मद भाजि लह लहि धजाय ए रूडी ।
परिहरी कुंजर पालु चालि धरउं मान मति थोडी
।। साहेल० ।। ५९ ।।

समोसरण माहि कृष्ण पधार्या साथि सपरिवार ।
रयण सिंघासण बिठा दीठा सिवादेवी तणउ मल्हार
।। साहेल० ।। ६० ।।

समुद्रविजय ए अवर बहु राजा बसुदेव बलिभद्र हरषि ।
करीय प्रदक्षण कृष्ण सुंनमीया नयनडे नेमि जिन नरखि
।। साहेल० ,।। ६१ ।।

वस्तु

हरषीया यादव यादव मनह आणंदि
पुरुषोत्तम पूजा रचि नेमिनाथ चलणे निरोपम
जल चदन अक्षत करी सार पुष्प चरु अनोपम
दीप धूप सवि फलघणा रचीय पूज घन हाथ ।
कर जोडी करि वीनती तु बलिभद्र बधव साथ ।। ६२ ।।

चुपई

स्तवन करि बे बधव सार, जेठउ बलिभद्र अनुज मोरार ।
करसपुट जोडी अजुली, नेमिनाथ सनमुख सभली ।। ६३ ।।
भवीयण हृदयकमल नुं सूर, जाइ दु ख तुझ नामि दूर ।
धर्म्मसागर नुं सोहि चन्द, ज्ञान कर्ण इव वरसि इदु ।। ६४ ।।
तुझ स्वामि सेवि एक घडी, नरग पंथि तस भोगल जडी ।
वाइ वेगि जिम बादल जाइ, तिम तुझ नामि पाप पलाइ ।। ६५ ।।
तोरा गुण नाथ अनना कह्या, त्रिभुवन माहि घणा गहि गह्या ।
ते सुर गुरु बोल्या नवि जाइ, अल्प बुधि मि केम कहाइ ।। ६६ ।।

नेमनाथ जी अनुमति लही, बल केशव बे बिठा सही ।
धर्म्मादेश कह्या जिन तणा, खचर अमर नर हरख्या घणा
॥ ६७ ॥

एके दीक्षा निरमल धरी, एके राग रोष परिहरी ।
एके व्रत बारि सम चरी, भवसागर इम एके तरी ॥ ६८ ॥

दूहा

प्रस्ताव लही जिणवर प्रति, पूछि हलधर वात ।
देवे वासी द्वारिका, तेवु अति हि विख्यात ॥ ६९ ॥
त्रिहु खड केरु राजीउ, सुर नर सेवि जास ।
सोइ नगरीनि कृष्ण नु, कीणी परिहोसि नास ॥ ७० ॥
सीरी वाणी सभलि, बोलि नेमि रसाल ।
पूरव भवि अक्षर लख्या, ते विम थाइ आल ॥ ७१ ॥

चुपई

नेमिनाथ द्वारा भविष्यवाणी

द्वीपायन मुनिवर सार, ते करसि नगरी सघार ।
मद्य भाड जे नामि कही, तेह थकी वली बलसि सही ॥ ७२ ॥
पौर लोक सवि जलसि जसि, बे बंधव नीकलसु तिसि ।
तह्म सहोदर जराकुमार, तेहनि हाथि मरि मोरार ॥ ७३ ॥
बार वरस पूरि जे तलि, ए कारण होसि ते तलि ।
जिणवर वाणि अमीय समान, सुणीय कुमार तव
चाल्यु रानि ॥७४॥
कृष्ण द्वीपायन जे रषि राय, मुकलाविनि पर षड जाइ ।
बार सवछर पूरा थाइ, नगर द्वारिका आवु राइ ॥ ७५ ॥
ए ससार असार ज कही, धन योवन ते थरता नही ।
कुटब सगीर सहू पपाल, ममता छोडी धम्म सभाल ॥ ७६ ॥
पजून सबुनि भानकुमार, ते यादव कुल कहीइ सार ।
तीणे छोडसु सवि परिवार, पच महाव्रय लीधु भार ॥ ७७ ॥
कृष्ण नारि जे आठि कही, सजनराइ मोकलावि सही ।

ब्रह्मा आदेश देउ हवि नाथ, राजमतीनु लीधु साथ ।। ७८ ।।
वसुदेव नंदन विलखुथई, नमीय नेमि निज मदिर गउ ।

द्वारिका दहन

बार बरसनी अविधज कही, दिन सवे पूग आवी सही ।। ७९ ।।
तरिण अवसरि आव्यु रषि राय, लेईय ध्यान ते रह्यु मन माहि ।
अनेक कुमर ते यादव तरणा, धनुष धरी रमवाग्या घरणा ।।८० ।।
वनषड परवत हीडिमाल, वाजि लूय तप्या ततकाल ।
जोतां नीर न लाभि किहां, अपेय थान दीठा ते तिहा ।। ८१ ।।
तिरिण अवसर ते पीधु नीर, विकल रूप ते थया शरीर ।
ते परवत था पाछा वलि, एकि बिसि एक धरणी ढलि ।। ८२ ।।
एक नाचि एक गाइ गीत, एक रोइ एक हरषि चित्त ।
एक नासि एक उंडलि धरि, एक सूइ एक क्रीडा करि ।। ८३ ।।
इरिण परि नगरी आवि जिसि, द्वीपायन मुनि दीठु तिसि ।
कोप करीनि ताडि ताम, देइ गाल वली लेई नाम ।। ८४ ।।
पाप कर्म्म ते करि कुमार, पुहुता द्वारिका नगर मझारि ।
केशव आगिल कही तीणि बात, द्वीपायन अह्मे ताड्यु तात ।। ८५ ।।

दूहा

कुमर ज वाणि संभली, केशव धरि अणाहि ।
अविहड अक्षर जे लख्या, ते किम पाछा थाइ ।। ८६ ।।

चुपई

केशव हलधर बे बन जाइ, कर जोडी मुनि लागा पाइ ।
दीन वचन बोलि अति घरणा, क्षमु साधु कहि दया मरणा ।। ८७ ।।
कर सज्ञा जारणी तिरिण राइ, अति दुःख आणी नगरी जाइ ।
अग्नि कोप तव दीठु खरु' हलधर कृष्ण उपाय कर्यु ।।८८ ।।
सागर वाल्यु नयरी माहि, तपि तेल जिम घडहड थाइ ।
नयर लोकते करि विलाप, पूपव भवनुं प्रगट्युं पाप ।। ८९ ।।
एक बलतां बु बार व करि, बालक लेइ एक नगरी फिरि ।
एक कहे ऊगायस माइ, एक दुख काया सह्युं न जाइ ।। ९० ।।
एक मोह्या धन धरती धरि, एक लक्ष्मी रषवाला करि ।
क्षमा एक अरणसरण आचरि, एके एक क्षमापन करि ।। ९१ ।।

नयर द्वारिका दीठु नास, हलधर केशव छोड़ी आस।
लेई तात जब गोपर गया, जडीय पाल तब उभा रह्या ।। ९२ ।।

दूहा

देवे वाणी उच्चरी, काइ भोला सारंग पाणि ।
जाणी जिणवर जे कह्य, ते किम हुइ अप्रमाण ।। ९३ ।।
तजीय तात जब नीकल्या, सबल सहोदर वीर ।
केशव बिम्लखु इम भणि, क्षण एक पडखुवीर ।। ९४ ।।

तीसरी ढाल दमयंतीनी

द्वारिका दहन देषी करी, सखी वन खड चालि रे, चालि रे
शालि दुख दोहिल घणीए ।। ९५ ।।
मात तात सजन घणा सखी सपरिवार रे ।
परिवार निसार सवे विघटी गया ए ।। ९६ ।।
लक्षमीय मेल्ही लक्ष गणी सखी रयण भडार रे ।
भडार निसार सोवण सवे तिहा रह्या ए ।। ९७ ।।
पवन वेग तोरगमा सखी मेगल माता रे ।
मातानि विख्यात अजन गिरि जिसाए ।। ९८ ।।
रथवारू रलीयामणा सखी बहूषण सोहता रे ।
सोहता रे निमोहता मन सविविह लीया रे ।। ९९ ।।
नव नव नेह नारी तणा सखी शशिहर वयणी रे ।
वयणीनि मृगनयणी भहली गया ए ।। १०० ।।
अगि आभूषण आवरता सखी वारू य वस्त्र रे ।
वस्त्रनि शस्त्र रह्या सवेक रतणा ए ।। १०१ ।।
हय गज रथ आरोहता सखी सबिका सयूती रे ।
पूती ते पहूती पायन पाणही ए ।। १०२ ।।
रुदन करि पगलां भरि सखी क्षण क्षण भूरि रे ।
भूरिनि पूरि दिन ए दुख तणा ए ।। १०३ ।।
कोशाब वन माहि साचरिबे सुभट सुजाण रे ।
जाणनि प्राण तणु सस हुउ ए ।।१०४ ।।

केशव विलपु इम भणि मुझ पावउ नीर रे ।
नीररनि वीरा वेगी आणीइ ए ।। १०५ ।।
वचन मनोहर उच्चरी सुणु माधव वीर रे ।
नीर हो आणुं वडतलिवीसमु ए ।। १०६ ।।

वहा

नीरज लेवा संचरयु, मनहन मेहिल माण ।
सुख करि सूतु सही, वड तलि सारंग पाण ।। १०७ ।।

चुपई

जरा कुमर जे आगि कह्यु, बार वरसि पहिलु वनि गयउ ।
लक्षु निलाड विधाता जेह, तिणि वनि कुमर पहूतु तेह ।।१०८।।
कृष्ण पाइ तव पद्मज दीठ, जाणे कोइ वनेचर बैठ ।
आणि लक्षुं ते करि सुजाण, धरीय धनुष तव संध्युं बाण ।।१०९।।
करीय रोसनि मक्यं जाम, लाग्युं पगि मनि चमक्यु ताम ।
जाग्यु कृष्ण ते हा हा करी, उपरि कुमर गउ संचारी ।। ११० ।।
धरि दुःख मनि कूटि हीउं, घिग् घिग् दैव तिएसुं कीउं ।
पाप तिमर करी हूं उहूं अंध, करयुं कुकर्म्म मि हणीउ बंधु ।।१११।।
कहि कृष्ण सुणि जरा कुमार, मूढपाणि मम बोलिसमार ।

कर्मों की गति

संसारतणी गति विषमी होइ, हीयडा मांहि विचारी जोइ ।।११२।।
करमि रामचन्द्र वनि गउ, करमि सीता हरण ज भउ ।
करमि रावण राजजटली, करोमि लंक विभीषण फली ।। ११३।।
हरचंद राजा साहस धीर, करमि अधम घरि आण्युं नीर ।
करमि नल नर चूकु राज, दमयंती वनि कीधी त्याज ।। ११४ ।।
राय युधिष्टर वाचा सार सूरवीर रण वढि झूझार ।
द्यूत क्रीडा ते करमि करी, करमि अवनी कौरव हरी ।। ११५ ।।
करमि ऋषि वृधि पामि बहु, एके निरधन करमि सहू ।
करम करि ते निश्चि होइ, करम कारण नवि छूटि कोइ ।। ११६।।
उठउ वद्य मत लाउ वेव, जब लगि नावि बलभद्र देव ।
कौस्तुभ मणि पाली समझाइ, वक्षण मधुरां वेणु वाइ ।। ११७ ।।

पूरव बीतग आइ कहे, राई युधिष्ठर पाखि रहे ।
मोकलावीति गउ सुजाण, तव लगि कृष्णि अंइया माण ।।११८ ।।
हलधर वन माहि जोइ वारि, विरी कंदरनु न लहि पार ।
तोइ तणु तणि दीठु ठाम, पीउं नीर इम चिंति राम ।। ११९ ।।
हीयडा माहि चिंत्युं पछि, बधव पाइ पीउं पाछि ।
कमल पत्र सव दुंदु कीउ, भरीय उदक पाछु वालीउ ।। १२० ।।
पाणी पात्रि करी आवीउ, सुललित वाणी बोलावीउ ।
ऊठउ बधव साहस धीर, मुखह पखाली पीउ नीर ।। १२१।।
करि साद पुण बोलि नही, जाण्यु कृष्ण रिसाणा सही ।
जाणि सहोदर मकरि मणहि, दुख सागर पडतांदि बाहि ।। १२२ ।।
रेवि रमणते चिंति इसु, कृष्ण न उठि कारण किसुं ।
मुख श्वेदर ते पाछु कीउ, सासन देषिवि लघु थीउ ।। १२३ ।।

दूहा

वदन कमल सींचि सही, कंठि न जाइ नीर ।
तनु जोउ बंधव तणु, कुणि वनि पंडव वाउ बीर ।। १२४ ।।
बांहि करी बिठु कीउ, मुखह निहालि तेह ।
एकाकी मेहूली गउ तुं देवि दीधु छेह ।। १२५ ।।
हा हा कार करी घणुं, कूरि बलिभद्र भाइ ।
बाइ अदोल्यु तरु पडि, तिम धरणी पति थाइ ।। १२६ ।।
बे बंधव अवनी ढल्या, अवरन कोइ सहाइ ।
वन पवनि जाग्यु सही, तु हलधर मेल्हि लघाइ ।। १२७ ।।

ढाल

बलिभद्र का विलाप

विलवि वीरा हुं एकलु वनि रहिणु न जाइ ।
तुझ विण घडी एक पाघणी बरसा सु थाइ ।। १२८ ।।
बंधव बोलवि तुझ विण रहिण न जाइ ।
बंधव बोलवि युद्धु बंसीराइ बंधव बोलवि ।। १२९ ।।
जल विण किम रहि माछलु तिम तुझ विणुं बंध ।
विरीइ वनडिउ सासीउ सास्या अवसारे संध ।। १३० ।।

परिभवि कि मुनि हव्याद्र बोल्या कि उपवाद ।
दामोदर दुख देई गउ, रोइ सरलि साद ।। १३१ ।।
किसर फोर्डिमि पालडी, किउ थाप्या अघाट ।
औरग सब पेषु सही, वसति उठोरे वाट ।। १३२ ।।
सतीय शृंगार कि अपहर्या, गुरु जनम लीया रे मान ।
किजिन पूजामि परिहरी, बछवि हिल्यु तुंरानि ।। १३३ ।।
वनदेव तिविरणि कहुं, सुण वड रे अयाण ।
सरणि होतु तह्म तणि, कुणि लीया रे पराण ।। १३४ ।।
ऊलभा कही इन किहनी, किहि सु कीजिन रोस ।
कीधु करमि आपणि, दैवह दीजि न दोस ।। १३५ ।।
रविकर कहुं सुणु वातडी, सुणु निसपति चद ।
विरीगउ किणी वाटडी, जीणि हण्यु रे गोविंद ।। १३६ ।।

दहा

रे हीयडा तुझनि कहु रनडि किमिम रोइ ।
बधव मार्यु आपणु, सोइ अरीयण वनि जोइ ।। १३७ ।।
मोहनी कमि घणु मोहीउ, हृदय कमल थ्यु अध ।
दक्षिण दिश प्रति सचरितु, केशव कीधु कधि ।। १३८ ।।
अन्नज आणि अति भला, वनफल विविध विशाल ।
भोजन करु भाई भणि तु, भरी करी मूकि थाल ।। १३९ ।।
दिन प्रति इम करतां हूंया, हलधरनि षट्मास ।
मोह थकी माया करितु, नवि छोडि सब पास ।। १४० ।।
इन्द्र कहि अमरह प्रति, ज्ञान तणि प्रयोग ।
बलभद्र मरसि मोहीउ, तु लहिसि धर्म वियोग ।। १४१ ।।

चुपई

इन्द्र द्वारा प्रतिबोध

इन्द्र कहि तह्मे जाउ मही, प्रतिबोधु हलधर तिहां रही ।
चाल्या सुरसहि लही आदेस, अवनीय रूप करिय् असेस ।। १४२ ।।

असुर भली बुधी कीधी नवी, पथर उपरि पोयण ठवी ।
सीचि नीर कमल निताम, तिणि अवसरि तिहां पहुतु राम
॥ १४३ ॥

कहि बलिभद्र तह्लें भोला थाइ, पथर उरि मूल न थाइ ।
सुणु कुयर ए मूउ जागसि, तु पथरि पोयण लागसि ॥ १४४ ॥
करीय रोस आघु संचरि, वेलू लेई एक घाणी भरि ।
उभु रही बल पूछि वात, वेलू पीलु सुण हो भ्रात ॥ १४५ ॥
शिक्षा पीक्षण स्नेह न होइ, मूरख हीइ विचारी जोइ ।
वेलू ताढि तेल न तोइ, मूउं मडुं नवि जीवि कोइ ॥ १४६ ॥
रोस करी पगआभरि, असुर उपाय अनेरु करि ।
विषनु वृक्ष एआवि मही, अमृत फल कहि लागि सही ॥ १४७ ॥
सीरी कहि मम बोलि असार, विष अमृत किम होइ गमार ।
विष अमृत नवि हुइ ताम, मुउं मडुं किम जीवि राम ॥ १४८ ॥
बलिभद्र मछर मनि परिहरि, हीयडा माहि विमासणि करि ।
अमर कहि माचुंय सुजाण, मुइ मडि नवि आवि प्राण ॥ १४९ ॥
अज्ञान पणि शब वह्यु सरीर, दहन करु हवि केशव वीर ।
अदह भु इहु पावु जिहा, कान्हड काया जालु तिहां ॥ १५० ॥
शब लेई मूक्यु पृथ्वी जाम, धरणी बोलि सुणि हो राम ।
दहन करे वंचिति ताम, अनेक वार बाल्यु इणि ठाम ॥ १५१ ॥
तु जिहां जिहा जाई उभु रहि, तिहां तिहा अवनी अधिकुं कहि ।
परवत माहि पेषी वाट, चढय् तुंगेश्वर विषमाघाट ॥ १५२ ॥

दूहा

सस्कारि श्रीरंनि, देवी दुर्द्धर ठाइ ।
अनुप्रेख्या बारि भली, तु चिंति हलधर राइ ॥ १५३ ॥
हीयडा सुं हरषि मल्यु, कहिम करेश मोह अयाण ।
मोह थकी जे नर मूया, ते पाम्या दुख खाणि ॥ १५४ ॥
वली वली हुं तुभ्क सुं कहुं, रहे चित्त निज ठाम ।
धर्म अहिंसा सुं रमि सतु, सरसि सुभ्क काम ॥ १५५ ॥

पंच महाव्रत परिवरच्, पंच सुमति सुविसाल ।
संसार तणा संब परिहर्या, तु'मूक्यू' मायाजाल
॥ १५६ ॥

चुपई

तप साधना

पंचेन्द्री नि च्यार कषाइ, मयण मल्ल सु' मु'ज्यु ठाइ ।
लक्ष चुरासी समचित करी, क्षमा खड्ग जीणि करि धरी
॥ १५७ ॥

मद मेगल जे आठइ कही, तप केशरी विदार्या सही ।
मोह मच्छर अहि विषनाम, वैनतेय जिम भज्यु ठाम
॥ १५८ ॥

मन थी माया कीधी दूर, समता रस घणु झीलि पूर ।
क्रोध लोभ बे दोषी जेह, संतोष सेल गही कीधा छेह
॥ १५९ ॥

जिणवर दीक्ष्या लाग्यु वास, हलधर ध्यान रह्यु षट् मास ।
काया स्थिति करवा कारणि, बल मुनिवर उत्तरि पारणि
॥ १६० ॥

भिता पुर पुहुचि रषिराय, ईर्यापथ सोधंतु जाइ ।
रूप तणु नवि लाभि पार, पगि पगि ऊभी नरषि नारि
॥ १६१ ॥

एक कहि ए सुरपति होइ, एक कहि ए नल वर सोइ ।
एक कहि ए नक्षपति चंद्र, एक कहि अहिपति नागेन्द्र ॥ १६२ ॥
एक कहि सावित्री स्वामि, एक कहि सीता पति राम ।
एक कहि गिरजा पति ताम, एक कहि ए रति पति काम
॥ १६३ ॥

निरमल चित बोलि एक नार, सुणु सखी कहुं तह्म वचन विचार ।
पूरब भवि पुण्य कीधु कोइ, तु अह्म इसु बंधव बेटु होइ ॥१६४ ॥
एक नारि मनि धरि विकार, ए हवु' नरह्री हरिण संसार ।
तु मानव भव कहीइ सार, निश्चि लहीइ ए भरतार ॥ १६५ ॥

दूहा

यति मंभी मुनिवर प्रति, मूकि मुखर नीसास ।
कुंभ धरांति कामनि, दिइ बालक गलि पास ॥ १६६ ॥
हलधर करुणा हीइ धरी, देवी बालक फंद ।
मुनिवर कहि सुणि कामनी, हृदय कमल थई धंध
॥ १६७ ॥

चपई

मि देख्यु तुझ रूप प्रसंग, मोह चित्त थंभ्यु जिम थंभ ।
सुणि हो स्वामी कारण तेउ, मोह थकी नवि जाण्यु भेउ
॥ १६८ ॥
तब मुनिवर पाम्यु वैराग, नयर माहि नही जावा लाग ।
अन्न तणु तिणि कीधु त्याग, पग पग जोइ परवत माग ॥ १६९ ॥
चड्यु तुंगेश्वर परवत शृंगि, लीया नाम मन सुधि प्रसंग ।
पिठु गिरिवर किंदर जाइ, ध्यान धरी बिठु रिषिराइ ॥ १७० ॥
वृषा काल वृक्ष मूले रहि, दंसमसक परीसा बहु सहि ।
वरसि मेघनि वाजि वाय, अगि उघाडुहि यतिराय ॥ १७१ ॥
सीतकाल सी वाजि बहू, हेम तणा भर बहुला सहू ।
ठौरि नदीनि वालि रान, तिम तिम मुनिवर लाग्यु ध्यान
॥ १७२ ॥
उह्नालि लू उह्नी वाय, तपन ताप तनु सह्यु न जाय ।
द्वादश दशह परीसह कह्या, सीह तणी परि मूधा सह्या ॥ १७३ ॥
उष्ण शीत वृष त्रहि काल, शरीर प्रादि सुख तज्युं पंपाल ।
ध्यान अग्नि तप साध्या सार, कर्म काष्ट जिम दह्या विकार
॥ १७४ ॥
संयम साध कीउं धर्मध्यान, तजीय तन्नु गउ अमर विमान ।
स्वर पंचमि आई स्थिति करी, अमर बधू जिहि लीलांबरी
॥ १७५ ॥

जय जय कार करि बहु देव, अह निशि करि तह्म पाय सेव ।
बाइ मादल बंश कंसाल, नाचि अपछर बहु विधि ताल ।। १७६ ।।
जरा न आवि तिहा ते कदा, नवयौवन सुखसेवि सदा ।
कनक तेज जिमि झलकि काय, परिपूरण सवि कहीइ आयु
।। १७७ ।।
आधि व्याधि नवि पामि किसी, निरमल देह अमर तिहा तिसी ।
मनवांछित फल देव मझरि, ते सहू धर्मतणु उपगार ।। १७८ ।।
पूरबना तपतणि प्रयोग, अमरी सरसाबलसि भोग ।
ब्रह्म यसोधर दाखि कही, ते तु पुण्यि पदवी लही ।। १७९ ।।
चुथि काल तीर्थंकर सार, अवतरसि सोइ भरह मझरि ।
ध्यान करीनि-मनरोधसि, लहीय ज्ञान भवीयण बोधसि ।। १८० ।।
घाति कर्मनु करीय विणास, मुगति क्षेत्र जाई करसि वास ।
धर्मतणां फल एह ज जाणि, धर्म करता म करु काण ।। १८१ ।।

दूहा

धरमि धन बहू संपजि, राजा रयण भंडार ।
धरमि जस महीयल फिरि, उत्तम कुल अवतार ।। १८२ ।।
धरमि मनचीत्यु फलि, दूरदेशन्तर जेह ।
हय गज रथ घिरि नित वसि, धर्मतणा फल एह ।। १८३ ।।
धरमि नर महिमा हुइ, धरमि लहीइ ज्ञान ।
धरमि सुर सेवा करि, धरमि दीजि दान ।। १८४ ।।
धर्मतणा गुण बहू अछि, ते बोल्या किम जाइ ।
चुगिफेरु टालसि जे, धुरि धर्म दयाय ।। १८५ ।।

प्रशस्ति

श्री रामसेन अनुक्रमि हुया, यसकीरत्ति गुरु जाणि ।
श्री विजसेन पदि थापीया, महिमा मेर समाण ।। १८६ ।।
तास सख्य इम उच्चरि, ब्रह्म यसोधर जेह ।
भूमंडलि दणीयर तपि, तारहु रास चिर एह ।। १८७ ।।

संवत पनर पंच्यासीइ, स्कंध नयर मझारि ।
भवणि अजित जिनवरतणी, ए गुण गाया सार ।। १८८ ।।

वस्तु बंध

भणि भवीयण भवीयण चरित, ए सार हरष करी
हलधर तणु हीया माहि सुणि ज्ञान आणीय
नरभव सुख सेवू अनुभवी सरग रिधि बहु लहि असमाणीय
देवी सुर सेवा करि, इन्द्र तणि अवतार ।
मुगति रमणि अनुक्रमि वरि जिहा सौख्य तण भडार ।। १८९ ।।

इति बलिभद्र चुपई ।।

विजयकीर्त्ति गीत

सरसति सामिणि चलणेह लागुंय मागुय मति अति निरमलीए
गायसुं यतीवर विजयकीरति गुरवर बर
आलु रे माता भारती ए चढावु ।।
वेगि वर वर आलि वाणी हस वाहिणी भामिनी ।।
करिहि कमडलु वेण पुस्तक जाप जपति तु ं स्वामिनी ।
असुर सुर नर खचर दानव पाय पकज नुति करि ।
भाव भगति मनह सकति अनेक योगी अणसरि ।।
सयल कवीयण वि दुख वारू चलण तोरे नित लुलि ।
दिइ विद्या विवेक वाणी तेहनां संकट टलि ।
कमल केतुकि कुंद करणी पूजा करी करू आरती ।
करह जोडी पाय लागु दिउ वर वर भारती ।। १ ।।
भारती तूठीय अक्षर आलए मोरू मन चालिरे गुरु चलणे सही
सहि गुरु स्वामीय तणि परसादिय वाछिय काज केहु नही ए ।।च.।।
वादिय काजि केहु नही रे गाइसुं गुरु राय
एक चिंति मकह सुधि हीइ धरी बहु भाउ ।
बाला पणि बुधि ऊपनी चारित्र लेवा चग ।
श्री **सकलकीरति** केरीय वाणी सुणी हृदि हूउ रग ।
सुणी हृदि हूउ रग रूयडु ज्ञान घ्यान धुरा धरि ।
पच महावय प्रबल प्रौढा तेह लेवा चित करि ।
ससार एह असार जाणी सग सघला परिहरि ।
हेलांह मयण हरावीउ सयम श्री मुनिवर वरि ।। २ ।।
मुनिवर विश्वसेन सहथि थापए सयम आपए रूयडुंए ।
पच महाव्रत पच सुमति त्रण गुपति सहित मुनि ऊजलु ए ।।च०।।
उजलउ मुनिवर सदा सोहि ऊपमा गौतम सार ।
जबूय कुमर ज अवतरयु जाणे लेवा चारित्र भार ।

अनेक वादी विकट कवियरा गूंजता गजराय ।
सीहनी परि सबल सुं फलि भंजीया भडवाइ ।
आठिय मद जे कर्म तितला प्रबल नाम प्रचड ।
सुपर्ण नीपरि रूडपि लीया कायां ते सत षंड ।
काम क्रोधह मान माया मोह रौल्यु जेह ।
बावीस परीषह जीपतु ध्यनिाय निरमल देह ।। ३ ।।
निरमल देहछि एह रषि रायहि माता रंगीय उयरि उपनुए ।
साह भीमिग सुत कुल अजू मालए ।
अनेक राजा चलणे नमिए ।। चढाउ ।।
अनेक राजा चलण सेवि मालवी मेवाड ।
गूजर सोरठ सिधु सहिजि अनेक भड भूपाल ।
दषरा मरहठ चीरा कुकरा पूरवि नाम प्रसिद्ध ।
छत्रीस लक्षण कला बहुतरि अनेक विद्या रिधि ।
आगम वेद सिद्धान्त व्याकरण भाषि भवीयरा सार ।
नाटक छंद प्रमाण बूझि नित जपि नवकार ।
श्री काष्ठ सघ कुल तिलु रे यती सरोमणि सार ।
श्री विजयकीरति गिरूउ गणधर श्री सघ करि जयकार ।। ४ ।।

इति श्री विजयकीर्त्ति गीत ।।

वासुपूज्य गीत

राग-कामोद धन्यासा

सगुण सलूणु वासपूज जिन सोहि रे ।
भव भय भजन जन मन रंजन भवीयरा वा मन मोहि रे ।।
आवु साहेलडी वेगि वारमलावु रे ।
हसता रमता जिन हरि जावु वासुपूज
गुरण गावु रे ।। आवु ।। १ ।।
नरमल जलना कुभ जिनहरि वालु रे ।
स्वामीनि तनु तेह ज ढालु मनना पाप पखालुं रे ।। आवु ।। २ ।।

चदन केशर कपूर घसावु रे।
जेहनि नामि दुःख पुलावु आगी अंगि रचावू रे ।। आवु ।। ३ ।।
सालि सुगंधी तेहना तंदुल वारू रे।
जिनजी आगलि पुंज रचीजि आलि निज गुण
सारू रे ।। आव ।। ४ ।।

वेउल वालु वुल सरीनांहारू रे।
स्वामी निशि निशि पूजा कीजि देइ भवचा
पारू रे ।। आवु ।। ५ ।।

मोतीया लाडू वटक विशालू रेवा फीणि,
अति घरण भीणी घेवर रसालू रे ।। आवु ।। ६ ।।
उह्ले धाने पूरी सोवण घालू रे,
जिनजी आगिल पूजा कीजि स्वामी संकट टालू रे ।। आवु ।। ७ ।।
रत्नयोति जिम आरती अतिहि उत्तगू रे,
मुगति तरणा गुण लेवा कारणि दीवा करू
सुचगू रे ।। आवु ।। ८ ।।
सघर धूप जे कृष्णागर वर सारू रे,
जिनजी आगिल तेह दहीजि टालि कर्म विकारू रे
।। आव० ।। ९ ।।

करणा चारू सोपारी नव सारू रे,
श्रीफल सरसी पूजा कीजि लहीइ सुख अपारू रे
।। आवु० ।। १० ।।
अष्टप्रकारी जिनवर पूज करेसि रे,
भावि भक्ति लक्ष्मी सक्ति ससार तरेसि रे ।। आवु० ।। ११ ।।
नयर वंशवाला मडण नु स्वामी रे।
ब्रह्म यसोधर अतिघणु वीनवि देयो तह्म गुणग्राम रे
।। आवु० ।। १२ ।।

इति वासुपूज्य गीत ।।

वैराग्य गीत

राग धन्यासी

संसार सागर एह गहन छि रे
भमिउ भमिउ चुगि जाण जिणवर रे ।।
परमपुरुष एक नऊ लष्यु रे
जिम छुटुं तरबाण स्वामी रे ।।
त्रिभुवन तारण तुं बडलो रे,
तारु तारु गहन संसार जिणवर रे ।।
समरथ नाणी निमि अणसरयु रे,
जनम मरण दुखटाल स्वामी रे समरथ ।। १ ।।
लाष चुरासी तिहां पांजरां रे
वसीउ वसीउ बार बहुत रे । जिणवर रे ।
धरम न कीधुं एक दया धरीरे ।
पाप पटल पकि षूत, स्वामी जिणवर रे ।। २ ।।
असन पणियमि अतिघणां रे ।
कीधी कीधी जीवविणास जिणवर रे ।
पर नारीय लपट पकिरे पाम्यु पाम्यु नरयावास स्वामी
जिणवर रे ।। ३ ।।
तृष्णा नदीइ प्राणी ताणीउ रे
कीधा कीधा अतिघणा द्रोह, जिणवर रे ।
च्यारे कषाय जीव गलि धर्यु रे
राल्यु राल्यु दुरगति षोह, स्वामी जिणनर रे । ४ ।
पाचे इन्द्रीए प्राणी परिभव्यु रे
मयण धूतारुवली माहि, जिणवर रे ।
पंथि चलाव्यु ए पातिग तणि ए ।
समरथ वाहरि नुं धाइ, स्वामी जिणवर रे ।। ५ ।।
पुन्य पसा इमि तुं पामीउ रे,
सफल जनम हुउ आज, जिणवर रे ।
ब्रह्म यसोधर हरषि इम कहि रे,
अवर नही मुझ काज, स्वामी रे जिणवर रे ।। ६ ।।

इति वैराग्य गीत

नेमिनाथ गीत

राग गुडी

सारद सामणि वीनवु' रे, माग्यु' एक पसाउ ।
दिउ वाणी ब्रह्म निरमली रे, गासु' नेम जिनराउ ।
सामला व्रण वीनवि राजिल नारि पूरव भव नेह सभारि ।
यादव जीवी नवि राजिल नारि मुझ काइ कर निरधारि ।
दयाल राय वीनवि राजिल नारि ॥ १ ॥
वसत रमेवा कारणि रे पुहुता वनह मझारि ।
सोल सहस्र गोपांगना रे सरसा नेमि मोरारि । साम ॥ २ ॥
वाला केरा मांडवा रे सुरतर कुकम पुंज ।
केसूय मरूउ मोगरु रे पाडिल किरणी कुंज । साम ॥ ३ ॥
चपक वेउल वुलसरी रे तेह तणा कठि हार ।
सिर घालि जासूलडां रे कमले ताडिकृष्ण नारि । साम ॥ ४ ॥
चदन केशर घसि करी रे वापीय पूरी सार ।
गलयंत्र सुं वली छांटणां रे रमिते विविध प्रकार । साम ॥ ५ ॥
क्रीडा करी नेम नीकल्या रे वापीय तीरि जाणि ।
भावेज सु' तव इम भण्यु' रे पोतिनी चोउ माणि । साम ॥ ६ ॥
नेमि वयण सुणी करी रे जाबुवती धरि मान ।
ए वितु' ब्रह्मनि न दीजीइ रे, देउर नही तुह्म सान । साम ॥ ७ ॥
उरग सेया सु तह्मे विसकरी रे पूरधु पचायण ।
हे वइणि विति ब्रह्मनि न आदरि रे गोपी केरु देव । सा० ॥ ८ ॥
प्रेषणु' देवाकारणि वली अति्थ तुझ आशि ।
इम जाणु नरवाहु सिरे तु परणु नेमनाथ । सा० ॥ ९ ॥
जाबुवती वयण सुणी रें कोपि थउ रे कुमार ।
मेगलनी परिमल पतु रे पुहुतु आयुध द्वारि । सा० ॥ १० ॥
नागसेया जाई पुढीउ रे पुरधु पचायण हेव ।
तेहनि सब्दि धरा धडहडी रे चमक्यु केशवदेव । सा० ॥ ११ ॥
मुझ उपरि अरि आवीउ रे दैत्य दाणव नर राउ ।
महारु सख कुणि पूरीउ रे तेहनुं फेडुं हु ठाउ । सा० ॥ १२ ॥

कृष्णपुलि उतावलु रे आयुध साल मझारि।
देषीय प्राक्रम नेमनु रे झांपु थयउ अपार। सा० ॥ १३ ॥
अबला बयण सुणी करी नेम ते सुं केहु रोस।
उरख थाइ छइ आकुलु रे एसुं केहु दोस। सा० ॥ १४ ॥
कण्णइ नेम संतोषीया रे पुहुता निज निज गेह।
बलिभद्र सुं आलोचीउ रे अह्म राज हरेसि एह। सा० ॥ १५ ॥
समुद्र विजय रायां मंदिरे रे कान्हउ पहुता जाइ।
प्रणमीय कहि काकीयनि रे करू नेमि वीवाह हो। सा० ॥ १६ ॥
शिव या कहि कृष्ण सांभलु रे तुंछि अह्म कुलि धीर।
तिच्छति अह्म चिंता केही रे परणावे ताहा रु वीर

। सा० ॥ १७ ॥

उग्रसेन राया मंदिरे रे पुहुता देव मोरारि।
धी परणाबु नेमनि रे नेगिम लाउ वार। सा० ॥ १८ ॥
यादव ना कुल नदनि रे लग्न लीउ तिणी वारि।
जूनिगढि द्वारामती रे उत्सव बहुत अपार। सा० ॥ १९ ॥
घरि घरि गूडीय उच्छलि रे घिरि घिरि मगलाचार।
तलीया तोरण उभीया रे गीत मांइ अत इसार। सा० ॥ २० ॥
मोटा मंडप तिहा रच्या रे थांभ कनक केरा सार।
वेल भरी पर वालडेरे रयणमि पोल पगार। सा० ॥ २१ ॥
कुंकुम पत्री पाठवी रे नुत्र आवि अति सार।
दक्षिण मरहठ मालवी रे कुकण कंनड पाउ। सा० ॥ २२ ॥
गूजर मडल सोरठीया रे सिंधु प्रवाल देश।
गोपाचल नु राजींउ रे ढीली आदि नरेस। सा० ॥ २३ ॥
मलबारी मारूधाडना रे षुरसाणी सुविईस।
वागडीउ दल मज करी रे लाड गउडना धीस। सा० ॥ २४ ॥
अंगनि बग तिलगीया रे उर मेवाडु राय।
आद महरमज चीणना रे द्वारावती सहू जाइ। सा० ॥ २५ ॥
षारिक षरडी षारली केला अषोड अदाम।
षांडि सुं रायण भली रे श्रीफल खरजूर जाणि। सा० ॥ २६ ॥

पकवान नीपजि नित नवा रे माडी मुरकी सेव ।
खाजां खाजलडी दहीथरां रे फेवर घेवर हेव । ।। २७ ।।
मोतीया लाडू मगतण्यारे सेवईया अति सार ।
काकरी पापड सूधीया रे साकिरि मिश्रित सार । सा० ।। २८ ।।
सालीया तडुल रूयडा रे उज्वल अखड अपार ।
मुग मडोरा अति भला रे धृत अखडी धार । सा० ।। २९ ।।
विवध वानीना सालना मूकि यादव नारि ।
कर्पू रि वास्यु कर बलु रे छोल प्रीसि एक सार । सा० ।। ३० ।।
वास्या नीर अति निर्मलां रे जाणे जे सु गग ।
चलूय करावि यादव योषिता देसलीय आलि एक चग
। सा० ।। ३१ ।।
उज्वल वस्त्रश कोमला रे करे ते लु छन करति ।
पान सोपारी चेउला रे कपूं रि सु आणी धरत । सा० ।। ३२ ।।
चदन करपूर केसरि रे भरीय कचोली एक जाइ ।
यादव करि वली छाटया रे हीयडलि हरष अपार । सा० ।। ३३ ।।
भान पजूनि सु बलिभद्र रे नेमनि करि सिणगार ।
षु पत्तरि शिरि सोभतु रे काने कुंडल गलि हार । सा० ।। ३४ ।।
मस्तकि सोहि रूडु नवग्रह रे बाहि बाजू बध सार ।
आगलीए रूडी मुंद्रडी रे पहिरयु सवि सिणगार । सा० ।। ३५ ।।
गोपीयपति तब इम भणि रे देवमलाउ वार ।
धव धव तेधु सटपडि रे यादव लेइ सिणगार । सा० ।। ३६ ।।
राही रूपाणि चदाउली रे रुक्मिण केसव नारी ।
शिवा देवी माता मनि रली रे पुंषि नेमिकुमार । सा० ।। ३७ ।।
गय गुडया हय पाषरया रे रथे कीया सिणगार ।
पायक चालि मनिरली रे जानन लाभि पार । सा० ।। ३८ ।।
वाजित्र वाजि अति घणा रे ढोल तिवल कसाल ।
भेरीय सख सोहामणा रे गाजि नीसाण अपार । सा० ।। ३९ ।।
नेम जिन रथि आरोहीया रे होउ जय जयकार ।
याचक जननि मनि मनि रली रे आपिय सोव्रण सार
। सा० ।। ४० ।।

सारथीइ रथ खेडीउ आडी भीनी बाइ ।
झाबीअभैरव झलझले रे मसणु राखा बाइ । सा० ॥ ४१ ॥
बाद उतारि एक कामनी रे पात्र नाचि अति चंग ।
थप-मप-मद्दल रण कीउं रे बेणा ताल सुरंग ॥ सा ॥ ४२ ॥
हय गय रथ सवि सांचरि रे पेहि आस रे अकास ।
पाताल नु रायसल सल्यु रे वनिता देइ एक भास ॥ ४३ ॥
लग्न नु दिन जब आवीउ रे रायमि करि सिणगार ।
याद रहली कांचली रे पहिरणि फाली सार ॥ सा ॥ ४४ ॥
पायेय नेउर रणझणि रे घूघरी नु घमकार ।
कटियत्र सोहि रूडी मेषला रे झूमणु झलकि सार ॥ ४५ ॥ सा ॥
रत्नजडित रूडी मुद्रिका रे करीयल चूडी तार ।
बाहि बिठा रूडा बहिरखा रे हीयडोलि नवलख हार
॥ सा ॥ ४६ ॥
कोटिय टोडर रूयडु रे श्रवणे झबकि झाल ।
नल विट टीलु तप तपि रे षीटली षटकि चालि ॥ सा ॥ ४७ ॥
वाकीय भमरि सोहामणी रे नयणे काजल रेह ।
कामिधनु जाणा ताडी उरे नर मन पाडवा एह ॥ सा ॥ ४८ ॥
हीरे जडी रूडी राखडी रे वेणीय दड उतारि ।
मयणि पन्नग जाणे पासीउ रे गोफणु लहिकि सार
॥ सा ॥ ४९ ॥
मस्तकि मुगट सोहामणु रे सिंहिथि सीदूर पूर ।
चोउ चदन रूडां फूलडां रे पान बीडीय अमूल ॥ सा ॥ ५० ॥
सवि सिणगार साजी करी रे उपरि उठीय घाट ।
धवल देइ वर कामनी रे जय जय बोलि भाट ॥ सा ॥ ५१ ॥

नेमि की बारात

सखी ये राजिल परवरी रे मालीइ पुहुती जाम ।
गुष चडी जोइ जालीए रे कहु सखी केहु मोरु स्वाम
॥ सा ॥ ५२ ॥
नव घणु रथ सोवणमि रे रयण मंडित सुविसाल ।
हीसला अस्व जिणि जोतर्‍या रे लहलहि धजाय अपार
॥ सा ॥ ५३ ॥

कानेय कुंडल सम तपि रे मस्तिक छत्र सोहंति ।
सामला अंग सोहामणु रे सोइ राजिल तोरु कंत ।। सा ।। ५४ ।।
आपणा कंतनि निरषता रे हीयउलि हरष न माइ ।
आण पालीमि जिनतणी रे पाम्यु एहवु नाह ।। सा ।। ५५ ।।
कान्हूडि कूड कपट करीरे जीवे भराव्या वाड ।
तोरणि जब वर आवीउ रे पसूडे करीय रोहाड ।। सा ।। ५६ ।।
नेमि सारथी पूछीउ रे ए जीव विलविकांइ ।
पसूय वधेसि उग्रसेन रे यादव गुरव थाइ ।। ५७ ।। सा ।।
करुणा वाणी जव साभलि रे सारथी तु अवधार ।
धिग धिग पडु इणि परणविरे नही करुं लाख संधार
।। सा ।। ५८ ।।
जिनजी बंधन काटीया रे पसूया मेहल्या रानि ।
रथवाली वेगि वल्यु रे पुहुतु सहसा वन्न ।। सा ।। ५९ ।।

राजुल का विलाप

तव राजिल विलषी हुई रे कहु सखी कवण विनाण ।
केहा अवगुण मि कीया रे चली गउ नाह सुजाण ।। सा ।। ६० ।।
तव राजिल धरणी ढली रे सीतल करि उपचार ।
वाय घालि बर बीजिणे रे चेत वाल्यु तीणीवार ।। सा ।। ६१ ।।
नेम पूठियाली पुलि रे प्रीउ प्रीउ करती जाइ ।
नव भव केरी आगि प्रीतडी रे कोइ वालु मोरु नाह ।। सा ।। ६२ ।।
कंकण फोडि करतणा रे रयण मइ त्रोडि हार ।
काजल लूहिलू हणेरे रालि न गोहुर सार ।। सा ।। ६३ ।।
ससार सग सवि परिहरी रे होउ बाल ब्रह्मचार ।
मुगतिनु पथ जिणि आदर्यु रे लीधु सयम भार ।। सा ।। ६४ ।।
राजिल राणी झूरती रे जाई मली नेमि पास ।
स्वामीइ सयम आलीउ रे रयणमि गलि जास ।। सा ।। ६५ ।।
गिरि गिरिनारि जाई चडयु रे आदर्यु सुलसुध्यान ।
घाति करम सवि चूरीया रे उपनुं केवल ज्ञान ।। सा ।। ६६ ।।
इन्द्रासन तव कापीउं रे नेम नि प्रगट्युं न्यान ।
सुर नर पन्नग आवीया रे रच्यु समोसरण ताम ।। सा ।। ६७ ।।

ज्ञान महोछव नीपनु रे जय जय रव हीउ आम ।
सुर नर पन्नग रमी करी रे पुहुता निज निज आम ॥ सा ॥ ३८ ॥
देशवदेश सबोधीया रे चली आव्या गिरिनार ।
काया कुटीरज परिहरी रे मुगति हीउ भरतार ॥ सा ॥ ६९ ॥
श्री यसकीरति सुपसाउलि ब्रह्म यसोधर भणि सार ।
चलण न छोडउं स्वामी तह्म तणा मुझ भवनां दुःख निवार
॥ सा ॥ ७० ॥
भणसि जे नर सांभलि रे धन धन ते अवतार ।
नवनिधि तस घर उपजि रे ते तरसि संसार ॥ सामला ॥ ७१ ॥
इति नेमिनाथ गीत समाप्त:

नेमिनाथ गीत
राग सोरठा

नेम जी आवु न घरे घरे, वाटडीयां जोइ सिवया माडली रे ।
तुं तु पसूडां देखिदयाल रथ रे वाली रेवि गिरि गउ रे ।
नेमजी आवु न घरे । १ ।
कपट करीय मोरारि नेम रे कारणि रायमि जाई वरी रे ।
मलीयान अपार अपार, जूना रे गढ भणी सामह्या रे ।रूडा नेमि । २
तोरणि आयु वर नेमि २ पसूडा रे करूणावह तिहां रडि रे ।
दया धरी दीनदयाल छोडी रे सहसावन व्रति सांचर्‌या रे ।
नेमजी । ३ ।
उग्रसेन धी ताम, कारण रे जाणी नेमनि वीनवि रे ।
नव भव तुं भरतार, दशमि रे देव दया करू रे । नेमजी । ४ ।
रायमि गई गिरिनार २ नेम रे चलणि तप आचर्‌यु रे ।
भव सागर मुझ तार २ ब्रह्म यसोधर इम वीनवि रे ।
नेमजी आ० । ५ ।

मल्लिनाथ गीत

सरसति स्वामिण वीनवुं मागुं एक पसाउ रे ।
तह्म परसादि गाइसुं रूयडा जिणवर राउ रे ।

मल्लि जिणेसर प्रणमीइ पूजि पातिक जाइ रे।
एक मना जे नितु नमि मुगति तरिण पंथइ थाय रे।
मल्लि जिणेसर प्रणमीइ ॥ १ ॥
पंच पंचो तयाथवी मिथुला लीउ अवतार रे।
प्रजावती राणी कूषि अवतरया कुंभ रायाए मल्हार रे।
मल्लि जिणेसर० ॥ २ ॥

मागसिर सुदि ईग्यारिसि जनम्या जिणवर देव रे।
इन्द्रादिक सुर आवीया करइ महोत्सव हेव रे। मल्लि० ॥ ३ ॥

हेमवरण देह तस तणु धनु पचवीसह काय रे।
अश्वनी नक्षत्रि अवतर्‌या सहस पचवीसह आयु रे।
मल्लि० ॥ ४ ॥

बाल पणि मनमथ नड्यु जीता कामनि कोह रे।
इंद्रीय पांचि विस करी आण मनाव्यु मोहरे। मल्लि० ॥ ५ ॥
मागसिर सुदि ईग्यारिसि तप लीधु तिसु जाण रे।
पोष वदि बीजि वली उपनुं केवल नाण रे। मल्लि० ॥ ६ ॥
समोयसरण धनपति रचि योजन त्रण प्रमाण रे।
केवल ध्वनि तिसु निरमली गणधर करइ वषाण रे।
मल्लि० ॥ ७ ॥

भव्य रास प्रतिबूझवी पुहुता सिवपुर ठाम रे।
सिद्धि रमणि वेगि वर्‌या रूयडा जिणवर ताम रे। मल्लि० ॥ ८ ॥
ब्रह्म यसोधर बीनविहु हुवि तह्म तणु दास रे।
गिरिपुर स्वामीय मडणु श्री सघ पूरवि आस रे। मल्लि० ॥ ९ ॥

इति मल्लिनाथ गीत समाप्तः

पद साहित्य

(१)

राग मल्हार

तोरणि आवी वेगि वल्यु रे पशूडा पारिधि पेखी रे आ; रथ वेडी रेवि चढिउ रे।

राजवि रायमि मेल्हीउ नेमि, राणी राजलि मोकलि
संदेसिड़ा रे।
नाह निरूपम निरूपम नेमिकुमार कि, अबला म मेहलु एकली रे।
हांजी शिवमुख शिवमुख सामल वर्ण। राणी।।१। द्रुपद
अविहड माणि प्रीतडी रे, नवभव केरी नाथ रे आ।
कामण गारी तूं भोलव्यु रे, मुगतिभी कुमति रामिणि लागु साथ
।। राणी ।।।२।
सहिसा वन्न सोहामणु रे, इणि गिरूइ गिरनारि रे।
यादवजी जाई करी रे, तिहां लीधलु लीधलु संयम भार रे
।। राणी ।।।३।
उग्रसेन रायां कुंअरि रे, परिहरीउ परिवार रे आ।
अलजु अगि अतिघणु रे, जाई वांदीला वांदीला नेमिकुमार कि
। राणी। ४।
षोडश भावी भावना रे, आठ करम कीउ पार रे।
ब्रह्म यसोधर इम भणी रे, नेमि पामीला पामीला सवि सुख सार
राणी राजलि मोकल संदेसडा रे।। मा०।। ५।।

(२)

राग आसाउरी

अकल मूरति रे अनोपम स्वामी परगट परस्या पूरि।
इंद नरेंद फुणींद सुसेवित समरत सकट चूरि रे।
अर्यु अलवि अजित जिनेस्वर नवनिधि हुइ जस नामि।
पाप पंक टालण टोडरमल भगत वत्सल गुण ग्रामी रे
।। अरचु० ।। १।।
नयर वनीता विजयानदन वश इक्ष्वाक बखाणु।
जित शत्रु रायां कुलदीपक त्रिभुवन उदउ भाण रे
।। अरचु० ।। २।।
गमीधनयर गुण वेल भणीजि तिहां जिनवर जगदाधार रे।
ब्रह्म यसोधर कहि कर जोडी श्री संघ करि जयकार रे
।। अरचु० ।। ३।।

(३)

प्रणमु नेमिकुमार सार जिणि संयम धरउ ।
प्रणमु नेमिकुमार मयण समरंगणि वरउ ।
प्रणमु नेमिकुमार तजीय जिणि राजलि राणी ।
प्रणमु नेमिकुमार कर्म आठह अति आणी ।
प्रणमतां जनमि आठि प्रहर मुगति नारि जेह चित वसी ।
ब्रह्म यसोधर इम कहि तेह पाप पंक जाइलसी ।। १ ।।

(४)

करु धर्म्म एक सार बार मम लाउ प्राणी ।
वली समरु नवकार भाव ते मन माहि आणी ।
सेवु अरिहंत आदि वाद भाजि भव केरा ।
दया करी दिउ दान ज्ञान पामु बहुतेरा ।
मन वच काया वसि करी आपणपु इम तारीइ ।
ब्रह्म यशोधर इम भणि जिम नरय तणा दुख वारीइ ।।१।।
पुहुवि परगट पास जास वासुग फणि सोहि ।
कमठ उतारयु नाद देव मानव मन मोहि ।
डाकिणि शाकिणि भूत वेगि वितर भय पालि ।
अतिसय अधिक अपार मनहवंछित वर आलि ।
सेवुज स्वाम मूरति सकल अकल रूप आनद करि ।
ब्रह्म यशोधर इम भणि ते सेवता स्वामि दालिद्र हरि ।।२।।

(५)

राग केदारु

पसूडा तोरणि परिहरी, रायमि जीणी परिहरी ।
परिहरि विषयाकेरी वेलडी जी ।। १ ।।
मयणराउ जिणि मोडीय, चाल्यु रथडु मोडीय ।
मोडीय मोह माया अगि आवता जी ।। २ ।।
उग्रसेन मनवा लिहो तेहज मन नवि वालि हो ।
वालि हो मनडु ए मुगति भणी जी ।। ३ ।।
सुर नर मलीया केवडा नेमि गुण गाइ केवडा ।
केवडा गिरिनारी उत्सव करिजी ।। ४ ।।

नेमि संयम पामीयां, केवल रमणी पामीयां।
पामीया सिद्धवधू त्रिभुवन पतीजी ।। ५ ।।
यादव ना गुण बोलि हो ब्रह्म यसोधर बोलि हो।
बोलि हो सिवसुख आपु सामला जी ।। ६ ।।

इति नेमिगीतं

(६)

राग सामेरी

नेमि निरंजन नाथ निरोपम तोरणि पसूडां निहाली री।
सयल जीवबा बंधन टाली चाल्यु रथथु वाली री।
बोलती राणी रायमि नेमि पुहतु गढ गिरिनारी।
मुगति रमणि तणि रगि रातु पूरव प्रीत विसारी री। बोलं ।।१।।
पीउ पीउ करती पूठि चाली सार संयम नेमि आली री।
पंच महाव्रत दुर्द्धर झाली विषय तणी सुख पाली री
बोलं ।। २ ।।
सामला वर्ण सेवक सुख कर्त्ता काम कुंजर मद हर्त्तारी।
ब्रह्म यसोधर वु स्वामी समरथ अविचल पद
सोइ वर्त्तारी ।। बोलंती ।। ३ ।।

(७)

राग प्रभाती

मूरति मोहण बेल भणी जि, अवर उपम्म कहु कुण दीजि।
आवु भवीयण पास पूजी जि, मानव भव फल निश्चिली। आ। १।
चदन केसर घणा घसी जि, अ गीय अ गी अलविरे रची जी
। आ। २।
चपक बेल वुल सरीरे बालु, कुद किरणी करी भव भय टालु
। आ। ३।
चरणि बयो मया सेवा सारि, अलीयवि चन्न आवतडां वारि
। आ। ४।
ब्रह्म यसोधर कहि सिर नामी, सिव सुख दाता त्रेवीसुमि स्वामी
। आ। ५।

(८)

राग प्रभाती

पसूडां कारणि परहर्यु रे राजिल सरसु राज ।
सयल सजन मोकलावी चाल्यु करवा आतम काज ।
बाई रे शिवा देवी कहि माहरु ।
सामलीउ रे वरिषा वनि किम रहिसि ।
अंगि उघाडु एकलडु रे सीता तप किम सहिसि । शि । १ ।
गढ़ गिरिनार जाई तप मंड्यु, मयरण राउ जिणि दड्यु ।
मोह मछर मद हेला षंड्यु, सविहि परिग्रह छाड्यु । शि । २ ।
ध्यान अनल परगट जिरिण पूरी, कर्म काष्ट सब चूरी ।
ब्रह्म यसोधर कहि शिर नामी, मुगति नारि नेमि पामी बाई

(६)

राग गुडी

सकल मूरति ए सोहामणु स्वामीय श्री पास जिणंद रे ।
धरम सायर सोहि चद्रमा दीठडि रे हुइय आणंद रे ।
आवु आवु भवीयण भेटवा, दाबुजीछि देवदयाल रे ।
भाव भगति सु पूजा रचु गीत नृत्य करु अबला बाल रे
। आवु । १ ।
अश्वसेन राया अंगो भमी नयर वाणारसी वास रे ।
वम्मा देवी राणी उयरि उपनु सेवकनी पूरवि आस रे
। आवु । २ ।
नयर जीराउलि मंडणु नाम सुर नर वहि आण रे । आवु । ३ ।
जिनवर कहीइ त्रेवीसमु मोड्यु कमठ चुमाण रे ।
श्री विजय कीरति गुरु पाय नमी अवरन मागउ देव रे
। आवु । ४ ।
ब्रह्म यसोधर हरषि वीनवि भवि भवि तह्म पाय सेव रे
। आवु । ५ ।

(१०)

राग आसाउरी

समुद्र विजय सुत यादव राजा, तोरणि आया करी दिवाजा ।

बांहिडी साहि सुणु समरथ साईं, अवरनाथ हु ं न मागु ं काई
। बांहि । १ ।

हिरण रोझ सवि संबर मेषी, पसुय छोडी नाथ्रो गढ उवेषी
। बांहि । २ ।

बिरह वियापी राजिल नारि, नेमनाथ मेरे जीवन आधार
। बांहि । ३ ।

रेवि गिरि श्री नेम तप करीयु, यसोधर ब्रह्म वु स्वामी
मुगति वरीउ । बांहि । ४ ।

(११)

राग सोरठा

गढ जूनू जस तलहटी रे लाई गिरिसवां माहि सार ।
जेह सिर स्वामि समोसर्‌या लाई राजमती भरतार ।
हो नेमजी सेवकनी करे सार ।
तोरा गुणह न लाभु ं पार तु ं त्रिभुवन तारण हार ।नेम० । १ ।
सिषर पांचि सोहि भलां रे लाइ रेवैया केरि शृ ंग ।
स्वाम पूजन विनायक रे अलणा सहिर अंबाई उत्तंग हो
। नेम० । २ ।
जस पाजि पग माझ तारे लाई हीयडो लि अतिहि आणंद ।
गयंदमि कु ड अग क्षाली रे लाई पूजिवु नेमि जिणंद
। हो नेम० । ३ ।
मानव भवजु पामीउ रे लाई सफल करु रे संसार ।
ब्रह्म यसोधर इम कहि रे लाई सामलु सुख दातार ।
हो नेम० । ४ ।

(१२)

राग धन्यासी

यान लेई नेमि तोरणि आउ, पसू छोडी गउ गिरिनार ।
अब कब आविगु रे, इम बीनवि राजिल नारि ।
नेमि कब आविगु रे । अब० । १ ।
हु ं एकलडी निरधार नाह कब आविगु रे ।
मेरे प्राण जीवन आधार अब कब आविगु रे ।

समुद्र विजय सवंया नंदन थादव कुल सिणगार । अब० । २ ।

ऊजलि गिरि तप लेई जिन सीबु पाम्यु सिवपुर वास । अब० । ३ ।

ब्रह्म यसोधर वली वली वीनवि दुखदहन चलणे राष

। अब० । ४ ।

(१३)

राग सबाब

संसार सागर गहन अपारा ।

लाष रे चुराशी माहि मदिर विहारा ।

चेत रे प्राणी सुणु जिनवाणी, ध्याउ एक परम पुरष

मनि आणी । चे० । १ ।

पंथ घणा तु फिरि फिरि आउ, तारण धरमति एक न

पाउ । चे० । २ ।

मणुय जनमन दोहिली लाधु, तु हवि जीवडा आतम

साधु । चे० । ३ ।

तारण केवली तु जिनदेवा, यसोधर ब्रह्म करि तुझ

पाय सेवा । चे० । ४ ।

(१४)

राग सोरठा

वागवाणी वर मागु माता दि मुझ अविरल वाणी ।

यसकीरति गुरु गाउ गिरिया, महिमा मेर समाणी ॥

आवु आवु रे भवीयण मनि रली रे

चाउल रयणे चुक पूराबु सहि गुरु चलण वधावु । आवु ॥ १ ॥

सोमकीरति गुरु केरी वाणी, बानपणि मनि आणी रे ।

संसार ए अण भंगुर जाणी, चारित्र सु मति माणी रे ॥ २ ॥ आवु ॥

पंच महाव्रत कुंजर धरीया, क्षमा खडग असमरीया रे ।

काम क्रोध माया मद मछर, दूरि सवि परिहरीया रे ॥ ३ ॥ आवु ॥

अभिनवु गौतम शिषि अवतरीउ, मूल मंत्र जिम सोहि रे ।

चिद्रूप चिंतन करि निरंतर, वाणी यजन मन मोहि रे ॥ ४ ॥ आवु ॥

माता लीलावे उमरि उपनु, साहु बीरा मल्हारु रे ।

काष्ट संघ दिन कर जिम सोहि, नंदीयड गच्छ सिरणगार रे
॥ ५ ॥ आवु ॥

देश विदेश विख्यात विभूषण, सात तत्व गुण जाणि रे।
रामसेन कुलदीपक उदउ, सकल सिद्धांत बषाणि रे ॥ ६ ॥ आवु ॥

श्री सोमकीर्त्ति गुरु पाट धोरीधर सोल कला जिसु चंद्र रे।
ब्रह्म यसोधर इणी परिवीनवि श्री संघ करि आणंदु रे ॥ ७ ॥ आवु ॥

(१५)

राग सोरठा

गढ जूनु जस तलहटी रे लाई गिरि सवां माहि सार।
जेह सिर स्वामि समोसर्या रे लाई राजमती भरतार।
हो नेमजी सेवक नी करे सहाय।
तोरा गुणह न लाभु पार, तु तु त्रिभुवन तारण हार
॥ १ ॥ हो नेमजी ॥

शिषर पांचि सोहि भला रे लाई रेवैया केरि शृंग।
स्वाम पूजन विनायकरे अलूआ सहित अंबाई उत्तग ॥ २ ॥ हो नेमजी ॥
जस पाजि पाग माझि तारे लाइ हीयेडोलि अतिहि आणंद।
गयदमि कुंड अगक्षाली रे लाई पूजिवु नेमि जिणंद ॥ ३ ॥ हो नेमजी ॥
मानव भव जु पामीउ रे लाई सफल करू रे समार।
ब्रह्म यसोधर इम कहि रे लाई सामलु सुखदातार ॥ ४ ॥ हो नेमजी ॥

(१६)

राग धन्यासी

प्रीतडी रे पाली राजिल इम कहिरे।
हीय डोलि हरस न माइ घरि घरि गूडी जूलिथढि
उछली रे।
चल्यु रे नीसाणे घाइ ॥ प्रीतडी० ॥ १ ॥

छपन कोडि यादव मिल्या रे।
रथ रे घोडां नहीं पार।
घेहडीयां रे घेर बिछाईउ रे।
पुहुतलारे तोरण बार ॥ प्रीतडी० ॥ १ ॥

सोल रे शृंगार रायमि अंगि करीरे ।
सखीए पर वरी सार ।
मुखरे कडीनि ओड राणी कालीए रे ।
नव भव केह रे भरतार ॥ प्रीतडी० ॥ २ ॥
मुहिर मुहराडु जीवे माडी नेमजी रे सुणी देई कान ।
परिहरी चाल्यु राणी रायमि मेह्लीडा चरतां हो ते रानि ।
प्रीतडी रे पालु पेला भवतणी रे ।
अबला म मेह्लु रे निरधार ।
रथडु रे वाली देव दया करु रे ।
भवि भवि नु भरतार ॥ प्रीतडी० ॥ ३ ॥
दुखरे दहन श्री गिरिवर गउ रे ।
रायमि करि रे विलाप ।
त्रोडि रे नगोदर बाजू बध बहिरखारे ।
प्रीछवि रे उग्रसेन बाप ॥ प्रीतडी० ॥ ४ ॥
नेमरे चलणे तप मांडीउ रे ।
छाडीउ रे काम विकार ।
ब्रह्म रे यसोधर इम बीनवि रे ।
त्रिभुवन तारण मुझ तार ॥ प्रीतडी० ॥ ५ ॥

(१७)

राग बसंत

अगि हे अनोपम वेष रे करी उग्रसेन घरि जाय राजिल वरी ।
बोलि बोलि रे राणी राजमती ।
नवह भवतर नेह तजीनि दशमि नेमि थया यती ॥ बोलि ॥ १ ॥
छपन कोड यादव दल रे साजी,
बार कोडि साढी वाजित्र वाजी ॥ बोलि ॥ २ ॥
अति रे उछाह नेमि तारणि गया,
पसूडां पोकार सुणी उभारे रह्या ॥ बोलि ॥ ३ ॥
नेमजी कहि रे ईणो कवण काज ।
परण्यां गुख तह्मनि यादव राज ॥ बोलि ॥ ४ ॥

सुण रे सारथी तह्मि कहुं रे आप ।
अपर जीवकेरु अनंत पाप ।। बोलि ।। ५ ।।
सुख बइठी राजिल जोइ रे वाली ।
पसूडां बंधन छोडी गउ रथ वाली ।। बोलि ।। ६ ।।
पूरब प्रीतडीयां स्वामी मन पखा ।
दुर्जन ना बोल तह्मे मन थी टालु ।। बोलि ।। ७ ।।
राजिलि नेमि पामी जाई गिरनार ।
ब्रह्म रे यसोधर कहि संसार ।। बोलि ।। ८ ।।

(१८)

राग कालेरु

चेतु लोई २" थिर म कहु दया दान
जे उडय आरोही सिवपुर जामि सोई ।चेतु।१।।
चचल धन तनु चचल जाणु योवन चंचल माणु रे ।
वीज तेज जिम क्षण एक दीसि हीयडि अस्थिर आणु रे ।।चेतु।।२।।
बंधव पुत्र कलित्रज कहि ना पितर माइ परिवारा रे
अबंरि अभ्र पटज जिम दीसि आथिर एह संसारा रे ।।चेतु।।३।।
लक राइ जे रावण राणु नल नहुष परिमाणु रे ।
अवर राइ थर कोई न रहीया हूया होसि जे जाणु रे ।।चेत।।४।।
ज्ञान दृष्टि तह्मे जोउ विचारी परिहस धन परनारी रे ।
ब्रह्म यशोधर ए गुण दासि तेहनि समरथ सरणि राखि रे ।।५।।

नामानुक्रमणिका

ग्रंथानुक्रमणिका

नगर, ग्राम एवं प्रदेशानुक्रमणिका